जाओ और शिष्य बनाओ

प्रगतिशील शिष्यता

भाग 2

द्वारा

डोटा

मैनुएल 4

समूह के अगुवों के लिए

तीसरा संस्करण

परिचय

क्या आप यीशु मसीह के शिष्य के रूप में बढ़ना चाहते हैं?
क्या आप दूसरे विश्वासियों की बढ़ने में मदद करना चाहते हैं?

तब आप **शिष्य निर्माण करने के सम्बन्धा में अगुवों के चार मैनुएल** का अधययन, तथा प्राप्त शिक्षाओं का अभ्यास ज़रूर करें।
जिसे आगे को : मैनुएल 1-4 पुकारा जाएगा।

यीशु ने चेले बनाए। उसने लोगों से कहा, ''आओ और देखो' और ' मेरे पीछे हो लो' (यूहन्ना 1:39,43)। आर हर जगह पर लोग यह ही देखने के लिए आते हैं कि उसने किस प्रकार को जीवन व्यतीत किया और किस कारण उसने अपने प्राणों की कुर्बानी दी। संसार भर के सभी राष्ट्रों में लोग उसकी विशेषताओं और उसके कामों के कारण ही उसका अनुसरण करते हैं। उसने उनके जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है। उसने हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है।

बाद में यीशु ने प्रार्थना के साथ बारह लोगों को चेला बनाने तथा उन्हें तैयार करने के लिए चुना। वह चाहता था कि वे प्रगतिशील अगुवे 'उसके साथ' समय बिताएं, उसकी बातां को सुने तथा उसके जीवन को ध्यान से देखें, उसके जीवन तथा उसकी सेवकाई का अनुसरण करें(मरकुस 3:13-15)।

दो वर्षों के बाद यीशु ने अपने चेलों को लक्ष्य सौंपा ''जाओ और सारी जाति के लोगों को चेला बनाओ''(मत्ती 28:18-20)। और उन्होंने जाकर यरूशलेम से लेकर जगत क छोर तक के लोगों को अपना शिष्य बनाया। ये चेले उनकी बारी (आने पर और भी अनछुए इलाकों तक गये और उन्होंने अन्य चेले बनाये। जो कुछ उन्होंने सीखा था वह दूसरों को भी सिखाया 2 तीमुथियुस 2:2)। अत: यीशु मसीह के चेले वतमान में सारे देष्ठों में नये शिष्यों को बना रहे हैं।
प्रेरित पौलुस बताते हैं कि यीशु मसीह ने खास मसीहियों को एक काम दिया है।

> ''जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया
> जाए और मसीही की देह उन्नति पाए।'' (इफिसियों 4:11-16)

चार मैनुएल का उद्देश्य मसीही समूह के अगुवे की उसकी देख रेख में रहने वाले दूसरे मसीहियों की यीशु मसीह का चेला बनाने मं सहायता करना है।'एक चेला या शिष्य' परिपक्व मसीही होता है।

यह पाठयक्रम समूह के अगुवे को निम्नलिखित बातों के देने के द्वारा शिष्यों के प्रशिक्षण को प्रयोगात्मक बनाता है:
1.प्रत्येक मैनुएल में बारह अध्याय होते हैं जिन्हें तीन माह के अन्तराल में समाप्त किया जा सकता है।
2. बाइबल के महत्वपूर्ण हवाले विद्यार्थियों की मसीह व बाइबल को जानने में सहायता करते हैं।
3. समूह के अगुवे दिये गये प्रश्नों का उपयोग करें तथा विद्यार्थियों से चचा करने से पहले बाइबल के अनुच्छेद को पढ़ने के लिए बोलें।
4. अधययन सामग्री में हर एक प्रष्ठन के लिए संक्षेप में उत्तर दिये गये हैं। इसके द्वारा अगुवे को मार्गदर्शिका प्राप्त होती है।
5.प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों के साथ मिलकर अनुशासन के व्यवहारिक तरीकों का अभ्यास करना सिखाता है।
6.हर एक अधयाय में घर पर तैयार करने के लिए कुछ गृहकार्य होता है, जिसे विद्यार्थियों को दिया जाता है।
7.प्रशिक्षण कार्यक्रम दूसरों तक आगे बढ़ाने के लिए सहज है। 12 अध्याय के इस कोर्स को समाप्त कर लेने के बाद, जो विद्यार्थी दूसरे लोगों क छोटे समूह में इस शिक्षा को बांटेगें, उन्हें अगुवों के लिए तैयार किये गये मैनुएल की एक प्रति दी जाएगी।

हमारी यह प्रार्थना है कि परमेश्वर आपके क्षेत्र में शिष्यों के संख्या को तेज़ी से बढ़ाए और बहुत से लोग यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले हो सकें (प्रेरितों 6:7)।

सारी बातों में परमेश्वर को महिमा मिले! 'क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानयुग होती रहे: आमीन।''(रोमियों 11:36)

डोटा (शिष्यता प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रसारण। यह नाम उस समय की याद दिलाता है जब यह प्रशिक्षण कार्यक्रम केवल रेडियो में ही प्रसारित किया जाता था)

1994 (प्रथम संस्करण)
2009 (तीसरा संशोधित संस्करण)

सर्वाधिकार

चारों मैनुएल के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। उन्हें प्रशिक्षण के लिए नि:शुल्क नकल किया जा सकता है, लेकिन उन्हें बिना लिखित अनुमति के बेचा या किसी दूसरी भाषा में अनुवाद नहीं किया जा सकता।

सिफारिश

इस सामग्री को बहुतायत से इस्तेमाल करने तथा लोगों को आशीषित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। लेकिन क्योंकि इन चारों मैनुएल का उद्देश्य मसीहियों को तैयार या प्रशिक्षित करना है, इसलिए यह सुझाव दिया जाता है कि शिष्य प्रशिक्षण कार्यक्रम के अगुवे जिनती ज़रूरत हो उतनी की प्रतियां बनाएं। जब कोई विद्यार्थी बारह अध्यायों के कोर्स को समाप्त कर ले तब ही उसे मैनुएल की एक प्रति दी जाए और तब ही वह किसी दूसरे व्यक्ति या छोटे समूह को इस कार्यक्रम की शिक्षा दे सकता है।

विषय सूची

समूह के अगुवों के लिए मैनुएल 4

प्रगतिशील शिष्यता -भाग 2

परिचय व सर्वाधिकार

प्रशिक्षण कार्यक्रम 1

3 माह के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम। सप्ताह में डेढ़ से लेकर 2 घण्टे के लिए। समूह 3-10 लोगों तक का ही हो। प्रत्येक कार्यक्रम प्रार्थना के साथ शुरू होकर गृहकार्य देते हुए प्रार्थना के साथ ही समाप्त होता है।

अध्याय 37 आराधना (परमेश्वर की नज़दीकी व उसकी उपस्थिति का अभ्यास करना है)
परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (यहोशू 1-4)
शिक्षा देना (फलवन्त होना)

अध्याय 38 परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (यहोशू)
याद करना (प्रभुता: रोमियों 12:1-2)
बाइबल अध्ययन (संसार में धन। 1तीमुथीयुस 6:3-19)

अध्याय 39 आराधना (परमेश्वर की सुनना)
परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समया बिताना (रूत 1-4)
शिक्षा(मसीही चरित्र । क्षमा करने वाली आत्मा)

अध्याय 40 परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (1शमुएल 9,10,12,14)
याद करना (इनकार करना: लूका 9:23)
बाइबल अध्ययन (संसार में परीक्षाएं, मत्ती 4:1-11)

अध्याय 41 आराधना (परमेश्वर की प्रसशां करना)
परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना(2 शमुएल 15,17,18,22)
शिक्षा देना (सम्बन्ध, माता पिता व बच्चों के बीच सम्बन्ध)

अध्याय 42 परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (नहेमायाह 4,8,9,10)
याद करना (सेवा करना:मरकुस 10:45)
बाइबल का अध्ययन (संसार मे आत्मिक युद्ध। इफिसियो 6:10-20)

अध्याय 43 आराधना (परमेश्वर को धन्यवाद देना)
परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (एस्तर 2,3,4,5)
शिक्षा (प्रभुता। परमेश्वर की इच्छा को पहिचानना)

अध्याय 44 आराधना (ऐस्तर 6,7,8,9)
याद करना (देना : 2 कुरिन्थियों 9:6-7)
बाइबल अध्ययन(संसार में कष्ट। 1 पतरस 2:11-25)

अध्याय 45 आराधना (परमेश्वर की महिमा के लिए जीना)
परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (अय्यूब 1.2.12.14)
शिक्षा (पवित्र आत्मा: पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाना और परिपूर्ण होना)

अध्याय 46 परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (अय्यूब 38,39,40,41,42,)
याद करना (शिष्य बनाना: मत्ती 28:18-20)
बाइबल का अध्ययन(संसार में आत्मा के फल। गलातिया 5513-26)

अध्याय 47 आराधना (परमेश्वर व उसकी शिक्षाओं के प्रति खुद को समर्पित करना)
परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (सभोपदेशक 1,2,3,4)
शिक्षा (अगुवाई। मसीही अगुवे की विशेषताएं)

अध्याय 48 परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना(सभोपदेश 5,6,7,8)
याद करना(शिष्यता से सम्बन्धित पदों का पुनरावलोकन:शिष्यता)
बाइबल का अध्ययन(संसार में अगुवाई को भावी हाथों में सौंपना। प्रेरितों 20:17-38)

परिशिष्ट 16. देना। दशमाशं एंव पुराने नियम की व्यवस्था।

परिशिष्ट 17. मसीही चरित्र। क्रोध व संयम

परिशिष्ट 19. अगुवापन। मसीही कलीसिया में अगुवेपन का ऐतिहासिक विकास।

परिशिष्ट 20 अगुवाई । नये नियम में डीकन।

परिशिष्ट परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताने, बाइबल अधययन करने, मनन व वचन याद करने का तरीका:
समूह के अगुवों के लिए मॅनुएल 1 में परिशिष्टों को देखें

प्रशिक्षण कार्यक्रम 2

गहन कार्यक्रम का इस्तेमाल सप्ताह में एक बार पूरे दिन या 6 दिन के गहन प्रशिक्षण सेमीनार के दौरान किया जा सकता है। पूरे समूह को प्रशिक्षित समूह अगुवे के साथ छोटे समूहों में बांट दें। समूह को 3-10 लोगों के बीच ही सीमित रखें।

सुझावित कार्यक्रम

09.00-09.30	आराधाना (सामुहिक)
09.30-11.00	शिक्षा (सामुहिक)
	अन्तराल
11.30-13.00	बाइबल अधययन (सामुहिक)
	अन्तराल
16.00-17.00	शिक्षा या बाइबल अधययन को पूरा करने, प्रश्नों के जवाब देने, या अतिरिक्त शिक्षा के लिए(सामुहिक)
	अन्तराल
17.30-17:45	मनन व वचन याद करना (दो दो के समूह में)
17:45-18:30	बाइबल पठन (अकेले)
18:30-19.00	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करना (दो दो के समूह में)
19.00-19:45	बांटना और प्रार्थना करना (10 लोगों से कम के समूह में)

दिन 1 (अध्याय 37+38)
प्रार्थना
आराधना (परमेश्वर की नज़दीकी व उसकी उपस्थिति का अभ्यास करना है)
शिक्षा देना (फलवन्त होना)
बाइबल अध्ययन (संसार में धन। 1तीमुथीयुस 6:3-19)
याद करना (प्रभुता: रोमियों 12:1-2)
बाइबल पठन (यहोशू 1-4;5:13-8:35)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समया(दो दो के जोड़े में:यहोशू 1-2)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 2 (अध्याय 39+40)
प्रार्थना
आराधना(परमेश्वर की सुनना)
शिक्षा(मसीही चरित्र । क्षमा करने वाली आत्मा)
बाइबल अध्ययन (संसार में परीक्षाएं, मत्ती 4:1-11)
याद करना (इनकार करना: लूका 9:23)
बाइबल पठन (रूत 1-4; 1 शमुएल 9,10,12,14)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समया(दो दो के जोड़े में: रूत 1-2)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 3 (अध्याय 41+42)
प्रार्थना
आराधना(परमेश्वर की प्रसंशा करना)
शिक्षा देना (सम्बन्ध, माता पिता व बच्चों के बीच सम्बन्ध) बाइबल का अध्ययन (संसार मे आत्मिक युद्ध। इफिसियों 6:10-20)
याद करना (सेवा करना:मरकुस 10:45)
बाइबल पठन (2 शमूएल 15,17,18,22,नहेमायाह 4,8,9,10)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समया(दो दो के जोड़े में:नहेमायाह 851-9:12)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 4 (अध्याय 43+44)
प्रार्थना
आराधना (परमेश्वर को धन्यवाद देना)
शिक्षा (प्रभुता। परमेश्वर की इच्छा को पहिचानना)
बाइबल अध्ययन(संसार में कष्ट। 1 पतरस 2:11-25)
याद करना (देना : 2 कुरिन्थियों 9:6-7)
बाइबल पठन (ऐस्तर 2-9)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समया(दो दो के जोड़े में: ऐस्तर 3-4)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 5 (अध्याय 45+46)
प्रार्थना
आराधना (परमेश्वर की महिमा के लिए जीना)
शिक्षा (पवित्र आत्मा: पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाना और परिपूर्ण होना)
बाइबल का अध्ययन(संसार में आत्मा के फल। गलातिया 5513-26)
याद करना (शिष्य बनाना: मत्ती 28:18-20)
बाइबल पठन (अय्यूब 1.2.12.14.38-42)
परमेश्वर क साथ व्यक्ति समया(दो दो के जोड़े में: अय्यूब 1-2)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 6
(अध्याय 47+48)
प्रार्थना
आराधना (परमेश्वर व उसकी शिक्षाओं के प्रति खुद को समर्पित करना)
शिक्षा (अगुवाई। मसीही अगुवे की विशेषताएं)
बाइबल का अध्ययन(संसार में अगुवाई को भावी हाथों में सौंपना। प्रेरितों 20:17-38)
याद करना(शिष्यता से सम्बन्धित पदों का पुनरावलोकन:शिष्यता)
बाइबल पठन (सभोपदेश 1-80)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समया(दो दो के जोड़े में: सभोपदेशक 1-2)
बांटना और प्रार्थना करना ।

सम्भावित अतिरिक्त शिक्षाएं

परिशिष्ट 16.	देना। दशमाशं एंव पुराने नियम की व्यवस्था।
परिशिष्ट 17.	मसीही चरित्र। क्रोध व संयम
परिशिष्ट 19.	अगुवापन। मसीही कलीसिया में अगुवेपन का ऐतिहासिक विकास।
परिशिष्ट 20	अगुवाई । नये नियम में डीकन।

अध्याय 37

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ परमेश्वर के लिए शिष्य निर्माण करने के इस पाठयक्रम व समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंपे।

2	**आराधना** (20 मिनट) *[स्वभाव का प्रगटीकरण]* **परमेश्वर की नज़दीकी व उसकी उपस्थिति का अभ्यास करना।**

परिभाषा

सिखाएं। आराधना क्या है? आराधना की परिभाषाएं निम्नलिखित हैं:

आराधना: परमेश्वर के प्रति एक भय,प्रसंशा,समपर्ण और अधीनता का *भाव* है,
जिसे दैनिक जीवन की अनेकों भिन्न क्रियाओं के द्वारा *प्रगट किया* जाता है।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए हमें यह जानना ज़रूरी है कि परमेश्वर कौन है? इस अध्याय में हम परमेश्वर की नज़दीकी व उसकी उपस्थिति का अभ्यास करने के द्वारा अपनी आराधना को प्रगट करने के बारे में सीखते हैं।

मनन ।

1. परमेश्वर सर्वव्यापी है।

भजन संहिता 139: 7-10 **पढ़ें।** परमेश्वर सच में विद्यमान है। परमेश्वर सारे जगत में मौजूद है। परमेश्वर हमारे नज़दीक है। लेकिन हम हमेशा उसकी अस्तित्व, उपस्थिति व नज़दीकी के प्रति सर्तक नहीं रहते। इसी कारण हमें परमेश्वर की नज़दीकी व उसकी उपस्थिति का अभ्यास करने की जरूरत है।

2. पूर्ण विवेक के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करें।

भजन 27:4 पढ़ें। हमें एक चीज़ की जरूरत है, हमें उसके लिए प्रार्थना करना, तथा उसकी खोज में लगे रहना चाहिए। और वह एक वरदान यह है कि हम जीवन भर परमेश्वर के भवन में रहने पाएं और यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहें।

हम इस कार्य को व्यवहारिक तौर पर किस प्रकार करते हैं?

- अपनी प्रार्थना और आराधना को थोड़े समय के लिए शान्त रहकर प्रारम्भ करें। उस शान्त समय में अपने आपको याद दिलाएं कि परमेश्वर पास में ही मौजूद है। पूरे समर्पण व विवेक के साथ परमेश्वर की नज़दीकी व उसकी उपस्थिति में प्रवेश करें।
- परमेश्वर की मनोहरता पर ध्यान लगाते व मनन करते हुए लगातार आराधना और प्रार्थना करते रहें। परमेश्वर की मनोहरता में परमेश्वर की विशेषताएं व गुण जैसे, उसकी शक्ति, पवित्रता,धार्मिकता,दया,प्रेम, विश्वासयोग्यता आदि शामिल थे। परमेश्वर को इन विशेषताओं में से एक पर विचार करें। होने दें कि पवित्र आत्मा बाइबल के पन्नों से आप पर परमेश्वर की विशेषताओं को प्रगट करें। निम्नलिखित दो प्रश्नों पर मनन करें:
- परमेश्वर की इस चारित्रिक विशेषता का परमेश्वर के लिए क्या महत्व है?
- परमेश्वर की इस चारित्रिक विशेषता का आपके लिए क्या महत्व है?

3. सचेत अवस्था में परमेश्वर के साथ चलें।

भजन 16:8,11 पढ़ें।

जो काम दाऊद ने किये उन्हीं कामों को आप भी बार बार दोहराएं । दाऊद ने हमेशा परमेश्वर को अपने सम्मुख जाना। उसने हमेशा ध्यान रखा की परमेश्वर की नज़दीकी और उसकी उपस्थिति उसके साथ है।

- अपने जीवन की गतिविधियों में परमेश्वर की उपस्थिति को शामिल करने के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने का प्रयास करें। लोगों से बातें करते हुए परमेश्वर की चर्चा जरूर करें। अपनी योजनाओं और निर्णयों में परमेश्वर को स्थान दें। कार्य करते या अध्ययन करते हुए परमेश्वर को भी शामिल करें।
- खुद को याद दिलाएं कि परमेश्वर आपके दाहिने हाथ पर खड़ा है और वह आपकी कभी डिगने नहीं देगा। इस बात पर गहन विचार करें कि परमेश्वर के आपके दाहिने हाथ पर खड़े होने का आपके लिए क्या मायना है! वह आप पर नजरें

लगाए हुए है और सारी बातों को देखता है। उसके कान आपकी ओर लगे हैं और वह आपकी सारी बातों को सुनता है। वह आपके बारे में सब कुछ जानता है, और आपके बारे में सोचता है। वह यहां पर आपसे मिलने के लिए, आपसे बात करने, आपकी सुनने और आपको कुछ बताने के लिए यहां है। वह किसी खास मकसद से आपके पास मौजूद है।

- अगल अलग परिस्थितियों और अलग अलग समयों में परमेश्वर की उपस्थिति आपके लिए अलग मायने रखती है। कई बार परमेश्वर आपको सचेत करने के लिए तो कई बार आपको डांटने के लिए होते हैं। कई बार परमेश्वर आपको सहारा देने, चंगा करने या आपको शक्ति प्रदान करने के लिए आपके साथ हाते हैं। कई बार परमेश्वर आपको प्रेरित करने, आपको प्रोत्साहित करने के लिए, प्रेरणा देने और आपकी सहायता करने के लिए आपके पास होते हैं। कई बार वह आपको कुछ सिखाने के लिए, किसी बात को आप पर ज़ाहिर करने के लिए या आपके सामने कोई दरवाज़ा खोलने या बन्द करने के लिए होते हैं।
- हनोक व नूह परमेश्वर के साथ चले(उत्पत्ति 5:22; 6:9)। परमेश्वर ने अब्राहम को अपना मित्र कहा(यशायाह 41:8)। यीशु ने अपने चेलों को मित्र कहा(यूहन्ना 15:15)। आइये हम भी परमेश्वर की उपस्थिति व उसकी नज़दीकी में रहने का प्रयास करें।

आराधना। आइये हम 3 मिनट शान्त रहकर परमेश्वर की आराधना करें। परमेश्वर की उपस्थिति व उसकी नज़दीकी के प्रति सचेत रहने का अभ्यास करें।

3.	**बाँटना** (20मिनट)	*[एकान्त समय]* **यहोशू 1:4**

- ***आगे बढ़कर*** (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (यहोशू 1-4)से क्या सीखा।
- अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट)	*[फलवन्त होना]* **खोज करने वाला समूह**

बहुत से तरीके हैं जिनके द्वारा मसीही लोग सुसमाचार प्रचार व शिक्षा प्रदान कर सकते हैं। व्यक्तिगत तौर पर, सामुहिक तौर पर, साहित्य के द्वारा, नाटकों के द्वारा, संगीत व चलचित्रों द्वारा, रेडियो, टेलीविजन व गीतों के द्वारा भी सुसमाचार सुनाया जाता है। लघु समूह द्वारा सुसमाचार सुनाने का एक उदाहरण खोज समूह है। इन शिक्षाओं में आप सीखेगें कि लोगों को एक छोटा समूह अपने लिए सुसमाचार के संदेशों को खोजने किसी प्रकार पर बाइबल पर एक साथ मिलकर मनन व अध्ययन कर सकते हैं।

क.सुसमाचार प्रचार करने के लिए बाइबल आधारित सिद्धान्त

खोजें व चर्चा करें। प्रत्येक बाइबल के अनुच्छेद में सुसमाचार प्रचार करने के लिए बाइबल का क्या सिद्धान्त है?

1. गैर मसीहियों के लिए प्रार्थना।

कुलुस्सियों 4:2-4; (प्रेरितों 16:14) **पढ़ें।**

ध्यान दें। लगातार अन्याजियों से सम्बन्ध रखने वाले अपनी परिवार के सदस्यों, मित्रों, सहकर्मियों व पड़ोसियों के लिए लगातार प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन तक सुसाचार प्रचार करने का अवसर दें और उस सुसमाचार को स्वीकार करने के लिए उनके हृदयों को खोलें। प्रार्थना के द्वारा आप प्रगट करते हैं कि आप लोगों के जीवन व हृदय में काम करने के लिए पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर हैं।

2. गैर मसीहियों का जीवन ।

यूहन्ना 2:12(प्रेरितों के काम 10:38) **पढ़ें।**

ध्यान दें। गैर मसीहियों के जीवन की परिस्थितियों में शामिल होकर उनके प्रति अपनी रूची को बढ़ायें। भविष्यद्वक्ताओं, यीशु मसीह और प्रेरितों ने भी यही किया था। उन लोगों के बीच में रहकर एक आदर्श जीवन व्यतीत करें, उनके जीवन व जीवन

से जुड़ी सारी गतिविधियों में भागीदार हों, उनकी कठिनाइयों व उनकी रूची बांटें तथा उनमें व्यक्तिगत तौर पर रूची लें। उन्हें अपनी जिन्दगी को नज़दीक से व लम्बे समय तक देखने की अनुमति प्रदान करें। आपके जीवन की विशेषता, आपका भरोसेमन्द होना, आपकी विश्वासयोग्यता, वफादारी, मिलनसार होना, सहायक होना, व्यक्तिगत रूची व प्रेम मसीह के लिए उनकी नफरत व उस पर भरोसा न करन को दूर करके मसीह के साथ नज़दीकी रिश्ता बनाने में सहायता कर सकते हैं।

3.अपनी जीवन में गैर-मसीहियों को शामिल करें।

यूहन्ना 1:38-39(प्रेरितों 10:24,27) **पढ़ें।**

ध्यान दें।

अपने दैनिक जीवन में गैर मसीहियों को शामिल करने के द्वारा उनकी रूची बढ़ाएं। अपने घर में ही एक आदर्श जीवन व्यतीत करें, गैर मसीहियों के लिए अपने घर को खोलें, उन्हें यह देखने का अवसर प्रदान करें कि "मसीही कौन हैं" तथा मसीही लोग क्या करते हैं, और दूसरे मसीहियों के साथ आपकी गतिविधियों में आप इन्हें भी शामिल कर लें। गैर मसीहियों को लम्बे समय तक आपके व्यक्तिगत जीवन को नज़दीकी से देखने की अनुमति दें, और उन पर यह ज़ाहिर करें कि परमेश्वर व दूसरे विश्वासियों के साथ सम्बन्ध बनाना सम्भव है और इन सम्बन्धों का आप पर व आपके परिवार पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अपने प्रचार का स्वयं अभ्यास करने से आपका संदेश और भी ज़्यादा शक्तिशाली बन जाता है।

4.गैर मसीहियों के साथ बैठकर बाइबल पढ़ें या अध्ययन करें।

रोमियों 10:14-17; प्रेरितों 8:30-31; 17:2-4 **पढ़ें।**

ध्यान दें। विश्वास सुनने से आता है और सुनना मसीह के वचन से होता है। किसी को विश्वास में आने के लिए, सुसमाचार की उदघोषणा, शिक्षा और सुसमाचार को बांटा जाना बहुत ज़रूरी होता है। गैर मसीहियों को आपके साथ मिलकर बाइबल को पढ़ने और बाइबल में से खोज़बीन करने की अनुमति प्रदान करें। इस तरीके से उन्हें सुसमाचार की समझ और ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

तरीका । उदाहरण के लिए, बाइबल की खोज बीन करने वाले समूह का निर्माण करें; कुछ महीनों या साल भर तक सप्ताह में एक बार ऐसा कर सकते हैं। इस तरीके में प्रेरितों 17 के निम्न तत्व शामिल किये जा सकते हैं:"सवाल-जवाब', 'व्याख्या' और 'साबित करना'।

- सवाल जवाब करने का अर्थ *बाइबल के किसी अनुच्छेद पर चर्चा करना है।* इसका अर्थ बहस करने या वाद विवाद करने से नहीं है।
- व्याख्या का अर्थ (शिक्षा द्वारा) *बाइबल के कठिन भाग को पूरी तरह समझाना।*
- साबित करने का अर्थ *बाइबल के अन्य हवालों द्वारा प्रमाण व तथ्य प्रदान करना* है खास तौर पर,परमेश्वर,मसीह तथा यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान से सम्बन्धित प्रमाण व तथ्य।

लक्ष्य। खोजबीन करने वाले समूह का लक्ष्य बाइबल से परमेश्वर,मनुष्य और जीवन से सम्बन्धित सत्यों की खोज करना है।

शीर्षक। गैर मसीहियों की यह जानने में सहायता करें कि बाइबल इन विषयों पर क्या कहती है, खास तौर पर निम्नलिखित विषयों पर:

- परमेश्वर कौन है और वह हम से किस तरह रिश्ता बनाना चाहता है?
- यीशु मसीह कौन है,उसने धरती पर रहते हुए क्या किया और वह अभी क्या कर रहा है?
- परमेश्वर के बिना जीवन किस प्रकार का होता है और वह मनुष्य को किस ओर ले जाता है?
- परमेश्वर के साथ जीवन किस प्रकार का होता है और वह जीवन हमें किस ओर ले जाता है?
- कोई व्यक्ति किस प्रकार परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बना सकता है?

5. होने दें कि गैर मसीही लोग अपने आप सत्य की खोज करें?

लूका 10:25-28;(प्रेरितों के काम 17:11)**पढ़ें** ।

ध्यान दें। गैर मसीहियों को अपने आप ही बाइबल की सच्चाईयों को तलाशने दें। प्रश्न पूछने के द्वारा तथा बाइबल से पढ़े गये खण्ड के मतलब को समझने में तथा उस वचन को लिखने के अभिप्राय को समझाने के द्वारा भी आप इस कार्य को कर सकते हैं। इस तरह से सत्य उन पर गहरा प्रभाव डालेगा तथा वह उसे बेहतर ढंग से समझ पाएंगे।

6. गैर मसीहियों को अपनी ज़रूरतों के बीच में इन सच्चाईयों को समझने दें।

लूका 4:18-19;(1 कुरिन्थियों 9:19-23)

ध्यान दें। गैर मसीहियों को उनके जीवन से मेल खाने वाली परिस्थितियों में होकर बाइबल की सच्चाईयों की खोज करने दें। जिन बातों को लोग अपने जीवन की जरूरत समझते हैं वे एक दूसरे से अलग होती हैं।

- *कई लोगों की शारीरिक ज़रूरतें होती हैं।* वे बीमार या विंकलाग, थके हुए, भूखे, गरीब,दवाब में या सताव में हो सकते हैं।
- *कई लोगों के पास भावनात्मक जरूरतें होती हैं।* वे अपने आप में असुरक्षित महसूस करते हैं, कुछ लोग अपनी पहिचान खो चुके हैं,वे अपने आप को पसन्द नहीं करते, वे भावनात्मक तनाव में जीवन व्यतीत करते हैं या उनके हृदय में गहरे घाव होते हैं।
- *सभी लोगों की अपनी आत्मिक ज़रूरतें होती* हैं। वे दोष या लज्जा पूर्ण भूतकाल या वर्तमान से परेशान होते हैं, उनका मन किसी के प्रति नफरत व कड़वाहट से भरा हुआ है,वे परमेश्वर के विरूद्ध बलवा करते हैं और पूरी तरह से गुमराह हैं।
- *कई लोगों की जरूरतें उनके व्यवहार से जुड़ी होती हैं।* वे बुरी आदतों या रिश्तों के शिकार हैं, जिनके द्वारा असल में वे सन्तुष्टी को पाना चाहते थे या वे अब किसी प्रकार नये सम्बन्ध बनाने के प्रति अति उदासीन हैं। उन्हें बताएं कि बाइबल में प्राप्त सच्चाईयों को किस प्रकार उनकी विशेष परिस्थितियों में इस्तेमाल किया जा सकता है।

7. गैर मसीहियों की सच्चाई को उनके जीवन से जोड़ने में सहायता करें।

मरकुस 1:14-15; (प्रेरितों 3:19; 2 कुरिन्थियों 6:1-2) **पढ़ें**।

ध्यान दें। गैर मसीहियों को बाइबल की सच्चाई को उनके जीवन से जोड़ने हेतू उत्साहित करें। उन्हें बाइबल के संदेश का प्रतिउत्तर देने की चुनौति दें। उन्हें यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत प्रभु व उद्धारकर्ता स्वीकार करने का अवसर व आमन्त्रण प्रदान करें। परमेश्वर ने बाइबल हमें केवल अपने मन को सन्तुष्ट करने के लिए नहीं, वरन हमारे जीवन को बदलने के लिए दी है। इस प्रकार की गतिविधी सामुहिक वार्तालाप के दौरान नहीं की जाती, वरन यह काम सभा समाप्त होने के बाद व्यक्तिगत तौर पर मिलकर किया जाता है।

ख. खोजबीन करने वाला समूह छोटे समूह में सुसमाचार सुनाने का एक तरीका है।

खोजबीज करने वाले समूह को व्यवहारिक तरीके **सिखाएं।**

1. स्थान, माहौल व गतिविधियां

स्थान। एक साथ जमा होने के लिए घर, एक छोटा कमरा या बाहर कहीं उपयुक्त स्थान का चुनाव करें।

आकार। सभा को आकार में छोटा ही बना रहने दें अर्थात ज़्यादा से ज्यादा चार जोड़ें(एक जोड़े में एक मसीही और उसका गैर मसीही मित्र होता है)।

तरीका। गतिविधियां अव्यवस्थित व अनौपचारिक ही रहें। इसलिए बेहतर रहेगा कि हम इस मिलन में परम्परागत मसीही कार्यक्रम जैसे प्रचार,गीत गाना या प्रार्थना करने को दूर ही रखें। खोजबीन करने वाले इस समूह के मिलने का केवल एक ही मकसद, बाइबल पढ़ना और उस पर चर्चा करना है। हो सकता है कि कुछ स्थानों या संस्कृतियों में गीत गाना या प्रार्थना को समावेशित करना उपयुक्त व सहायक हो। लेकिन दूसरे स्थानों या संस्कृतियों में गीत गाना या प्रार्थना करना लोगों को भयभीत करके मुख्य उद्देश्य से दूर ले जा सकता है, जो वास्तव में अपने आप बाइबल की सच्चाई को तलाशना है। मसीहियों पर सताव करने वाले देशों में, गीत गाना,प्रचार करना या ज़ोर ज़ोर से प्रार्थना करना शत्रुओं को अपनी ओर आकर्षित करती है। इस अवस्था में छोटे समूहों धीमी आवाज़ में बात करना चाहिए ताकि घर के बाहर के लोगों को बिल्कुल भी भीतर की गतिविधो के बारे में पता न चल सके। ऐसी परिस्थिति में कभी भी न तो एक साथ मिलकर आएं और न ही वहां से एक साथ जाएं वरन एक एक या दो दो करके आएं और जाएं। स्वयं चुनाव करें की आपकी परिस्थिति में कौन सा तरीका बेहतर है।

पृष्ठभूमि। सुरक्षित व अति आधुनिक परिस्थिति में, सामुहिक चर्चा से पहले व बाद में कोई भी मधुर संगीत को बजा सकते हैं। यदि सही लगे तो, चर्चा से पहले व बाद में चाय या पेय जल वितरित किया जा सकता है।

समय: समूह के अगुवे को समय का ध्यान रखना चाहिए चाहे चर्चा का समय 60,90 या 120 मिनट का रखा गया हो, अगुवा समय पर शुरू करे व समय पर चर्चा को समाप्त करे। यह बात आधुनिक समाज में बहुत मायने रखती है, जहां पर लोगों को पढ़ना पढ़ता है और उनके अन्य काम भी होते हैं।

2. एक मसीही व एक गैर मसीही मिलकर एक जोड़ा बनता है।

आमन्त्रण। जब कुछ मसीहियों का समूह मिलकर सप्ताह में एक बार खोजबीन करने वाले समूह को कुछ माह के लिए चलाने का निर्णय लेते हैं, तो वे अपने किसी गैर मसीही मित्र को इस समूह में बुलाने का प्रयास करते हैं।

उद्देश्य। लोगों को अवश्य बताएं कि इस सामुहिक चर्चा का उद्देश्य बाइबल पर आधारित परमेश्वर, मनुष्य और जीवन से सम्बन्धित सच्चाईयों को खोजना और उन पर चर्चा करना है।

साथ मिलकर। मसीही जन को सभा के दौरान अपने गैर मसीही मित्र के साथ रहना चाहिए, उसके साथ बैठें, खोजबीन करते समय उसके ही समूह में शामिल हों और अन्त में एक साथ ही वापस जाएं।

3. परिचय।

समूह का अगुवा सबका स्वागत करता है। हर एक जन अपना परिचय देते हैं(केवल अपना नाम, पढ़ाई या अपने काम के बारे में बताएं)। समूह को अगुवा सबके जमा होने के उद्देश्य को तथा खोजबीन व चर्चा करने के तरीके के बारे में वर्णन करता है जो निम्नलिखित है:

उद्देश्य। खोजबीन करने वाले समूह का उद्देश्य बाइबल पर आधारित परमेश्वर, मनुष्य और जीवन से सम्बन्धित सच्चाईयों को खोजना और उन पर चर्चा करना है।

पढ़ना। हम बाइबल से एक अध्याय या खण्ड को दो बार पढ़ेगें: पहले एक साथ मिलकर और फिर शान्त अवस्था में अपने आप। पहले घेरे में बैठा प्रत्येक जन एक एक पद जोर से तब तक पढ़ता है जब तक कि वह अनुच्छेद समाप्त नहीं हो जाता। उसके बाद हर एक जन अपने आप उस अनुच्छेद को शान्ति के साथ पढ़ता है।

प्रश्न। तीन या चार प्रमुख प्रश्न हैं, हम लोग पहले दो लोगों के समूह में उन प्रश्नों पर सामुहिक चर्चा करेगें।

चर्चा। उसके बाद हम अपनी खोज पर चर्चा करेगें और अपने समूह के भीतर ही प्रश्न का स्पष्ट करने का प्रयास करेंगें।

सरांश। अन्त में उस चर्चा को सार बताया जाएगा।

4. बाइबल पढ़ना।

बाइबल का अनुवाद। हर एक जन को एक ही प्रकार की बाइबल का इस्तेमाल करना चाहिए। आप चाहें तो उसी बाइबल के अनुच्छेद की फोटोकॉपी भी करा सकते हैं। बाइबल वितरित करें ताकि मसीही व गैर मसीहियों से बने प्रत्येक छोटे समूह में सभी लोगों के पास बाइबल हो।

साथ मिलकर पढ़ें। सभी लोगों को बाइबल का अध्याय या अनुच्छेद मिल जाने के बाद, लोगों के घेरे का प्रत्येक जन अनुच्छेद खत्म हो जाने तक एक एक वचन को ज़ोर से पढ़े।

अकेले पढ़े। उसके बाद, हर एक जन से इसी अध्याय या अनुच्छेद को एक बार फिर से अपने आप पढ़ने के लिए कहें।

5. खोजबीन करने वाले समूह में इस्तेमाल किये जाने वाले प्रश्नों के उदाहरण।

अगुवे को ऐसे प्रश्नों को इस्तेमाल करना चाहिए जिससे लोगों को उस बाइबल खण्ड में पाये जाने वाले सत्य को खोजने में सहायता मिल सके। नीचे दिये गये प्रश्न केवल उदाहरण है हर एक अनुच्छेद या अध्याय के लिए अलग तरीके से प्रश्न पूछे जाने चाहिए। समूह का अगुवा प्रत्येक अध्याय के लिए तीन या चार प्रमुख प्रश्नों को तैयार करे, नीचे दिये गये तीन समूहों के प्रश्नों में से कम से कम एक को जरूर लिया जाए:

समूह 1." यीशु मसीह क्या करते?" जैसे प्रश्न। उदाहरण के लिए:

- यीशु ने लोगों और व्यक्ति विशेष में किस प्रकार की रूची दिखाई?
- यीशु ने लोगों की जरूरतों को समझने के लिए अपनी समय का परिचय कैसे दिया?
- यीशु का स्वभाव उसके समय के अन्य लोगों की तुलना में किस प्रकार से भिन्न था?
- यीशु ने जीवन की विशेष समस्या का समाधान किस प्रकार से किया? समस्याएं जैसे, अज्ञानता,बीमारी, पक्षपात, आलोचना, हठीलापन, स्वार्थीपन,विरोध,मृत्यु इत्यादि।
- यीशु ने लोगों की सहायता करने की अपनी योग्यता को किस प्रकार प्रगट किया?

- यीशु ने जीवन की विशेष परिस्थितियों पर अपने अधिकार को किस प्रकार प्रगट किया?
- यीशु द्वारा किये जाने कार्यों का यहां पर क्या अभिप्राय है?
- इस स्थान पर यीशु द्वारा कही गयी बातों को क्या अर्थ है? या उसने ऐसा क्यों कहा?
- उसने इस विशेष काम को यहां पर क्यों किया? उदाहरण के लिए, यीशु मसीह इस दुनिया में क्यों आए?
- यीशु मसीह की बातों व कार्यों के द्वारा हम मानवीय स्वभाव व जीवन के बारे में क्या सीखते हैं?

समूह 2. "यीशु मसीह कौन है?" किस्म के लोग। उदाहरण के लिए:

- यह अनुच्छेद उसके व्यक्तित्व की कौन सी अनोखी विशेषता को प्रगट करता है?
- यीशु मसीह अपने विषय में क्या दावा करते हैं?
- जब यीशु मसीह ने कहा कि वह (उदाहरण के लिए)"जगत की ज्योति है" या "जीवन की रोटी है", तो उसका क्या अभिप्राय था?
- लोग यीशु मसीह के बारे में क्या सोचते हैं?
- किसी पुराने नियम के विशेष भविष्यद्वक्ता ने यीशु के बारे में सैंकडों वर्ष पूर्व क्या कहा था?
-

समूह 3. "लोग यीशु मसीह के साथ किस प्रकार व्यक्तिगत सम्बन्ध बना सकते हैं?" किस्म के प्रश्न। उदाहरण के लिए:

- यीशु मसीह हम से किस प्रकार का रिश्ता बनाना चाहते हैं? अलग अलग लोगों ने किस प्रकार यीशु मसीह की शिक्षाओं और उसके कार्यों का प्रतिउत्तर दिया? यीशु मसीह के कथन के अनुसार किसी व्यक्ति को उसके साथ सम्बन्ध बनाने के लिए क्या करना चाहिए? यीशु मसीह हम से क्या चाहते हैं? विश्वास करने वाले व्यक्ति के जीवन में किस प्रकार का परिवर्तन हुआ?
- एक विश्वासी यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध बनाने के बाद किस पकार के अनुभव की अपेक्षा कर सकता है?
- यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध बनाने के क्या परिणाम होते हैं?
- यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध बनाने से इनकार करने के क्या परिणाम होगें?
- यीशु मसीह पर विश्वास न करने के लिए लोग किस तरह के तर्क पेश करते हैं?
- "विश्वास करने" या "यीशु मसीह को अपने हृदय और जीवन में बुलाने" का क्या अर्थ है?
- व्यवहारिक तौर पर (उदाहरण के लिए) कोई व्यक्ति कैसे "यीशु को अपने हृदय व जीवन में स्वीकार करता है"?

6. खोज व चर्चा

आपसी बातचीत। प्रेरितों के काम 17 के अनुसार एक खोजबीन करने वाले समूह की विशेषताएं पढ़ना, चर्चा करना, व्याख्या करना तथा साबित करना होती हैं। लोगों को निर्णय लेने में सहायता करने के लिए कभी प्रचार,शिक्षा या चुनौतियों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। खोजबीन करने वाले समूह की विशेषता होती है कि उसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से गुणवत्तापूर्ण वार्ता करता है, यह कोई भाषण नहीं है जिसमें वक्ता बोले और सारे श्रोतागण बैठकर उनकी सुनें।

अपने आप खोजने दें। खोजबीन करने वाला समूह लोगों की बाइबल के सत्यों को अपने आप खोजने में सहायता करता है। इस कारण छोटे समूह (मसीही जन व उसके गैर मसीही मित्र वाले समूह में) में खोज व चर्चा के दौरान, मसीही जन ने अपने मित्र से स्वयं मूल्यांकन करने के बाद निर्णय लेने के लिए कहना चाहिए। मसीही जन चाहे तो उससे इस परिस्थिति में कुछ निम्न पकार के प्रश्न कर सकता है:

"यहां पर हम प्रश्न से जुड़े हुए किन तथ्यों को पाते हैं?"

"आपके विचार से इसका क्या मतलब है"?

"इन तथ्यों को हम अपने जीवन से किस प्रकार जोड़ सकते हैं"?

अगुवे का काम चर्चा को संचालित करना है। समूह के अगुवे की भूमिका बाइबल शिक्षक की बजाय एक अध्यक्ष या इस चर्चा के संचालक के रूप में है।

परिचय देने व बाइबल पढ़ने के बाद, वह पहले प्रमुख को पूछता है।
मसीही जन व गैर मसीहियों वाला यह छोटा समूह,पाँच मिनट के भीतर तथ्यों को खोजने व प्रश्न पर चर्चा करने की कोशिश करते हैं।
उसके बाद समूह का अगुवा उस निष्कर्ष को सारे समूह में आकर बताता है। वह लोगों को अपनी प्रारम्भिक खोज व अपने दृष्टिकोणों को समूह के सामने रखने के लिए उत्साहित करने के द्वारा,तथा उनसे पूछने के द्वारा कि क्या उनके पास कोई और प्रश्न है या वे किसी विषय पर अधिक चर्चा करना चाहते हैं ,पूरे समूह की अगुवाई करता है। वह सारे समूह का ध्यान खोजी गयी सच्चाई की ओर आकर्षित करना चाहता है। वह लोगों के सभी प्रश्नों को गम्भीरता से लेता है, लेकिन कभी अपने मुख्य विषय से नहीं भटकता। जब सहायक लगे, तो वह कठिन परिस्थितियों के लिए अपने जवाब दे सकता है या सभा के बाइ में उन सवालों के जवाब दे सकता है।
लगभग 10 मिनट तक चर्चा करने के बाद, समूह का अगुवा उपस्थित लोगों के दृष्टिकोणों की सहायता से इस प्रश्न के उत्तर का निचोड़ बताता है। तत्पश्चात वह दूसरा प्रमुख प्रश्न पूछता है।
इस प्रक्रिया को करीब तोन या चार बार दोहराने के बाद,खोजबीन की सामुहिक सभा के अन्त में, समूह का अगुवा सारी खोजों के सार को सबके सामने रखता है, हो सकता है वह इस काम के लिए श्वेत पट पर कुछ चित्रों को भी इस्तेमाल करे। लेकिन उस चित्र या दृष्टान्त द्वारा उस सत्य का उल्लेख होना चाहिए जिसे समूह ने उस विशेष अध्याय या अनुच्छेद में ढूंढ़ा था।

7. खोजबीन करने वाली सभा के बाद का समय।

आमन्त्रण। समूह का अगुवा कहता है,"यह खोजबीन करने वाली सामुहिक सभा का अन्तिम सप्ताह है। कृपया अगले सप्ताह ज़रूर से आइये। हमारा खोजबीन का समूह फलां फलां समय पर फलां फला स्थान में जमा होता है। यदि आपने किसी के साथ जाने या किसी काम को करने का वायदा कर दिया है, तो आप जाने के लिए स्वतन्त्र हैं। लेकिन अगर आप बैठकर बात करना चाहते हैं तो चाय ज़रूर से पियें।"

सम्पर्क बनाएं रखें। वे मसीही जन, जो अपने साथ गैर मसीही मित्रों को खोजबीन की सामूहिक सभा में लाए थे, उनसे दूसरे उपलक्ष्यों या परिस्थितियों में भी मिलने का समय निकालें। हो सकता है कि उन्हें इन उपलक्ष्यों में बाइबल की सच्चाई पर चर्चा करने का अवसर मिल जाए।
सुसमाचार के प्रति उसकी समझ पर ध्यान दें। जैसे ही आपको लगे कि आपका गैर मसीही मित्र यीशु मसीह को अपने जीवन का प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार करने के लिए तैयार है तो आप उसके मसीही मित्र को इस बात को लेकर सुनिश्चित हो जाना चाहिए कि उसके गैर मसीही मित्र को सुसमाचार समझ में आ गया हो। लोगों के योशु को अपने जीवन में स्वीकार करने के तरीके अलग हो सकते हैं। कई बार यीशु मसीह को स्वीकार करने में सहायता करने के लिए उसके साथ प्रार्थना करना सहायक प्रतीत होता है। लेकिन कई बार केवल सुसमाचार के बारे में उसकी समझ को लेकर प्रश्न पूछना ही काफी ठहरता है।
ससमाचार पर ही ध्यान केन्द्रित करें। खोजबीन करने वाला समूह सुसमाचारकीय बाइबल अध्ययन व प्रत्येक सभा अपने आप में एक सम्पूर्ण कार्यक्रम है। कुछ गैर मसीही मित्र केवल एक ही बार आएंगे, लेकिन कुछ लोग कभी आएंगे लेकिन कुछ मित्र हर बार आपको सभा में मौजूद मिलेगें। इसी लिए हर चर्चा करने वाली सभा का मुख्य उद्देश्य प्रश्नों व चर्चा के द्वारा बेहतर से बेहतर ढंग से सुसमाचार के सत्य को प्रगट करना है।

निरिक्षण करना (फौलो अप)। जब तक समूह के लोग अपने जीवन में यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं कर लेते तब लक खोजबीन करने वालो सामुहिक सभा को लगातार चलाते रहें। तत्पश्चात इन नये मसीहियों को शिष्यता के समूह(नई घरेलू संगती) में तबदील कर दें। यदि आपके पास पूर्ण समय की सेवा करने वाले मसीही कार्यकर्ता हैं तो आप इस सभा को लगातार एक वर्ष तक चला सकते हैं। कुछ कार्यकर्ता खोजबीन करने वाले समूह का संचालन करने में कार्यरत होगें तो दूसरे शिष्यता समूह में। नये मसीही जन कुछ समय के लिए खोजबीन करने वाले समूह में नियमित तौर से भाग लेकर काफी फायदा पहुंचा सकते हैं। कई परिस्थियों में शिष्यता समूह भी ठीक उसी समय और उसी स्थान पर अलग कमरे में मिल सकते हैं जहां खोजबीन करने वाला समूह मिलता है, और बाद में वे चाय पानी के लिए एक साथ संगति कर सकते हैं।

ग.खोजबीन करने वाले समूह के लिए कछ सुझावित बाइबल के अनुच्छेद

आप मत्ती,मरकुस,लूका व यूहन्ना रचित सुसमाचार के अलावा रोमियों अध्याय 3 व इफिसियों 2 जैसे अध्यायों का इस्तेमाल अपने खोजबीन करने वाले समूह के लिए कर सकते हैं। निम्नलिखित बाइबल खण्ड सामुहिक खोज के दौरा काफी लाभदायक साबित हुए हैं।

1. मत्ती 1:18 – 2:23	मसीही का जन्म
2. मत्ती 4:1-25	परिक्षाएं,शिक्षा,प्रचार, चंगा करना
3. मत्ती 5:1-48	आशीषें,नमक और ज्योति, व्यवस्था
4. मत्ती 6:1-	देना,प्रार्थना, उपवास,धन, चिन्ता
5. मत्ती 7:1-29	न्याय करना, प्रार्थना, द्वार,पेड़,मिस्त्री
6. मत्ती 8:1-34	चंगाई, अनुसरण करने की कीमत
7. मत्ती 9:1-38	चंगाई, बुलाहट,उपवास,प्रार्थना
8. मत्ती 11:1-30	चमत्कार, राज्य, थके मांदों के लिए विश्राम
9. मत्ती 12:1-50	सबत, दास, राज्य,परिवार
10. मत्ती 13:24-51	दृष्टान्त
11. मत्ती 15:1-20	शुद्ध व अशुद्ध
12. मत्ती 18:1-35	दृष्टान्त
13. मत्ती 19:1-30	विवाह,बच्चे,धनी लोग
14. मत्ती 20:1-28	दृष्टान्त,मृत्यु,अगुवाई
15. मत्ती 21:28-46	दृष्टान्त
16. मत्ती 22:1-40	दृष्टान्त,सरकार, विवाह, प्रेम
17. मत्ती 23:1-39	कपटी
18. मत्ती 24:1-51	दूसरा आगमन
19. मत्ती 25:1-46	दूसरा आगमन, अन्तिम न्याय
20. मत्ती 26:31-75	संघर्ष, गिरफ्तारी, आरोप
21. मत्ती 27:1-66	आरोप,क्रूसीकरण, दफन
22. मत्ती 28:1-20	पुनरूत्थान, महान आज्ञा ।

1. मरकुस 1:1-45	शक्तिशाली+आत्मिक,परमेश्वर+परखा गया, निर्भर+तरस खाने वाला
2. मरकुस 2:1-27	अधिकार, बीमार+ स्वस्थ, पुराना +नया।
3. मरकुस 3:1-35	धार्मिक व्यवस्थाएं+मानवीय ज़रूरतें,बुरी आत्माएं+पवित्र आत्मा, जमीनी परिवार+ परमेश्वर का परिवार।
4. मरकुस 4:35 - 5:43	प्रकृति पर, दुष्टात्माओं पर,असाध्य रोग व मृत्यु।
5. मरकुस 10:1-52	तलाक,बच्चे, धनी,अगुवे व उसका क्रूसीकरण।
6. मरकुस 15:1-47	आरोप, अस्वीकार करना, क्रूसीकरण, दफनाया जाना ।

1. यूहन्ना 1:1-51	यीशु मसीह का पूर्व-अस्तित्व,चेलों का बुलाया जाना
2. यूहन्ना 2:1-23	विवाह,मन्दिर
3. यूहन्ना 3:1-21	नया जन्म,उद्धार, दण्ड
4. यूहन्ना 4:1-42	पवित्र आत्मा + आत्मिक आराधना
5. यूहन्ना 5:1-47	परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्धों को दावा+यीशु मसीह के बारे में गवाहियां।
6. यूहन्ना 6:1-15,25-72	खराब होने वाली रोटी+ अनन्तकाल तक बनी रहने वाली रोटी।
7. यूहन्ना 8:1-59	यीशु मसीह के दावे
8. यूहन्ना 9:1-41	शारीरिक व आत्मिक अंधापन
9. यूहन्ना 10:1-39	चरवाहा व भेड़ें
10. यूहन्ना 11:1-57	चमत्कार +सताव

11. यूहन्ना 12:1-50 मृत्यु का अनुमान+ यहूदियों को अविश्वास
12. यूहन्ना 13:1-38 विश्वासघात व इनकार के बारे में पहले बताना
13. यूहन्ना 14:1-27 यीशु मसीह की घोषणा+ पवित्र आत्मा
14. यूहन्ना 15:1-27 दाख व उसकी शाखाएं, दुनिया की नफरत।
15. यूहन्ना 17:1-26 यीशु की प्रार्थना
16. यूहन्ना 18:1-40 गिरफ्तारी व आरोप
17. यूहन्ना 19:1-42 सज़ा, क्रूसीकरण व दफनाया जाना
18. यूहन्ना 20:1-31 पुनरूत्थान, लोगों पर प्रगट करना ।

1. यशायाह 52:13 - 53:12 यीशु मसीह की निन्दा,कष्टों + विजय के बारे में भाविष्यद्वाणी।
2. रोमियों 3:9-31 धार्मिकता की जरूरत +विश्वास के द्वारा धार्मिकता।
3. इफिसियों 2:1-10 पाप में मृतक+मसीह में होकर जीवित
4. प्रेरितों 1:1-11, 1 थिस्लुनिकियों 4:13 - 5:11 स्वर्गारोहण + दूसरा आगमन
5. कुलुस्सियों 1:15-23, 2:9-15 यीशु मसीह की श्रेष्ठता
6. प्रकाशितवाक्य 20:11 - 21:8, 21:22 - 22: 6 अन्तिम न्याय+नई धरती व नया स्वर्ग।

घ. खोजबीन करने वाले समूह के कार्यक्रम का उदाहरण

नीचे एक खोजबीन करने वाले समूह के कार्यक्रम का उदाहरण दिया गया है।

1.परिचय।

हर एक मसीही अपने गैर मसीही दोस्त के साथ ही बैठे। *बताएं कि खोजबीन करने वाले समूह का लक्ष्य बाइबल में से परमेश्वर,मनुष्य और जीवन से सम्बन्धित सत्यों की खोज करना है।*

2.पढ़ना

बाइबल में से एक अध्याय या अनुच्छेद को दो बार पढ़ें। एक ही बाइबल अनुवाद का इस्तेमाल करें या फिर उस अनुच्छेद को फोटो कौपी करवा लें। पहले मत्ती 9:1-38 को एक साथ मिलकर पढ़ें, घेरे में बैठा प्रत्येक व्यक्ति बारी बारी करके एक एक पद पढ़े। फिर सारे लोगं चुपचाप अपने मन ही मन में मत्ती 9:1-38 को पढ़े।

3. प्रश्न

समूह का अगुवा चार प्रमुख प्रश्नों को तैयार करे।

- प्रश्न 1. यीशु मसीह किस प्रकार से लोगों में अपनी रूची दिखाता है?
- प्रश्न 2. लकुवा मारे हुए व्यक्ति को चंगा करने में यीशु मसीह के व्यक्तित्व का कौन सा पहलू प्रदर्शित हुआ?
- प्रश्न 3. यीशु मसीह ने जब कहा कि "खेत तो पके हुए हैं परन्तु मज़दूर थोड़े हैं" तो उसका क्या अर्थ था (मत्ती 9:37)?
- प्रश्न 4. भिन्न लोगों के किस प्रकार इस अध्याय में यीशु को प्रतिउत्तर दिया?

प्रत्येक प्रश्न को पूरे समूह में चर्चा करने से पहले अपने मसीही या गैर मसीह मित्र के साथ मिलकर प्रश्न पर पाँच मिनट तक चर्चा करें।

4. चर्चा ।

छोटे समूह में की गयी खोज को सारे लोगों के साथ बांटें व चर्चा करें। प्रश्न का स्पष्टीकरण सम्पूण समूह के सामने करने का प्रयास करें। प्रत्येक प्रश्न व उसकी चर्चा के लिए 10 मिनट का इस्तेमाल किया जा सकता है।

5. साराशं

प्रत्येक प्रमुख प्रश्न व उसकी चर्चा के अन्त में, समूह के सदस्यों के अनेक दृष्टिकोणों की सहायता से एक वाक्य में सार बताएं। खोजबीन की सामुहिक सभा के अन्त में,दृष्टान्त के द्वारा खोजों को वर्णन करें, जो खोज मत्ती 91:38 में पायी जाने वाली सच्चाई को बयान करती है। नीचे मत्ती 9:1-38 में पाये जाने वाले दृष्टान्त का सार दिया गया है।

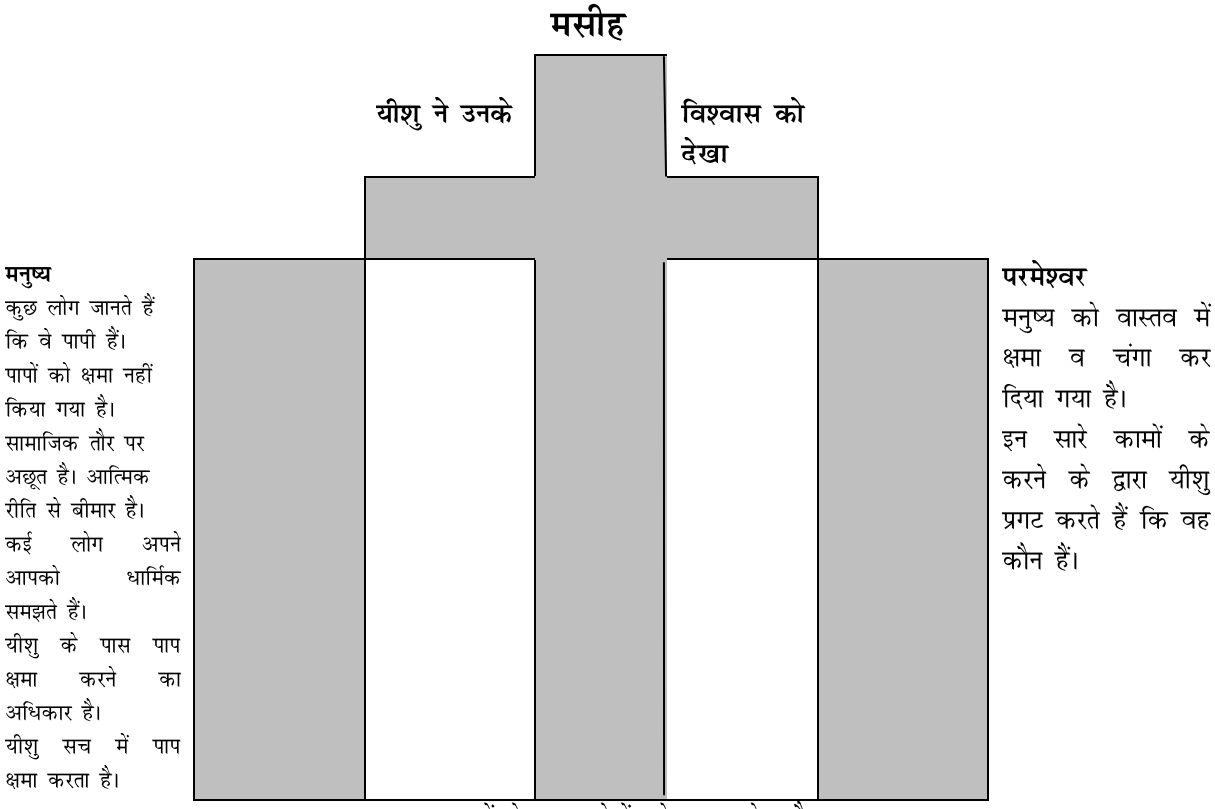

वह वास्तव में बेसहारा लोगों को सहारा देता है।
वह वास्तव में बीमारों को चंगा करता है।
वह वास्तव में मृतकों को जीवित करता है।

परमेश्वर के नये जीवन के लिए नये हृदय की जरूरत होती है।
यीशु ने पूछा"क्या तू विश्वास करता है कि मैं इन कामों को कर सकता हूँ"?

इसके पश्चात सारे लोगों के अगले खोजबीन करने बाले समूह में बुलाएं।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज सीखी गयी सभी बातों के आधार पर परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए समूह में छोटी प्रार्थना करें।
या समूह को दो दो या तीन के समूह में बांट लें और फिर सीखी गयी बातों के आधार पर प्रतिउत्तर देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ मिलकर " खोजबीन करने वाले समूह" की शिक्षाओं के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें। प्रार्थना करके निर्णय ले कि क्या आपकों वास्तव में कुछ गैर मसीहियों के साथ मिलकर समूह को आरम्भ करना चाहिए।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: उत्पत्ति यहोशू 5:13- 8:35 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन। घर में ही अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। 1 तीमुथीयुस 6:3-19। शीर्षक: संसार में धन। बाइबल अध्ययन में दिये गये पाँच कदमों को इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 38

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **यहोशू 5:13-8:35**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पाढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (यहोशू 5:13-8:35)से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[सुसमाचार]* **प्रभुता : रोमियों 12:1-2**

याद करने वाले वचन की चौथी श्रंखला "शिष्यता" के बारे में है। पाँच याद करने वाले पदों का शीर्षय है: प्रभुता,इनकार,सेवा,देना और शिष्य बनाना।

क-ध्यान करना

रोमियों 12:1-2; 6:13,19 **पढ़ें।** "इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ की अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। इस संसार के सदृश न बनों; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चालचलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली,भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो..और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार हाने के लिए परमेश्वर को सौंपो...जैसे तुम ने अपने अंगों को कुकर्म के लिए अशुद्धता और कुकर्म के दास करके सौंपा था,वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिए धर्म के दास करके सौंप दो।"

निम्नलिखित याद करने वाले पद को वचन को श्वेत/श्याम पट लिखें।

प्रभुता रोमियों 12:1-2
इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ की अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। इस संसार के सदृश न बनों; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चालचलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली,भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो । रोमियों 12:1-2

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पर लिखें:

1. बलिदान चढ़ाने का आधार

यह अनुच्छेद," इसलिए.. मैं परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर से शुरू होता है"। यह वाक्य उन सारी बातों को आपस में जोड़ देता है जो अध्याय 1 से 11 में लिखी गयी हैं। मसीही लोग अपने शरीरों को परमेश्वर के लिए एक जीवित बलिदान के रूप में चढ़ा सकते हैं,क्योंकि पहले परमेश्वर ने मसीहियों के लाभ के लिए अपने इकलौते बेटे को बलिदान के रूप में चढ़ा

दिया! परमेश्वर कभी भी मसीहियों से किसी ऐसी बात करने के लिए नहीं कहते जिसको करने की क्षमता पहले परमेश्वर ने उन्हें न दी हो! परमेश्वर ने पहले हमारे लाभ के लिए मसीह को एक बलिदान के रूप में चढ़ाया है इसलिए अब वह हमें अपने जीवनों को जीवित बलिदान के रूप में चढ़ाने के लिए कह रहा है।

2. हमारे शरीरों का समर्पण।

शरीर। यहां पर "शरीर" का मतलब केवल हमारी देह से नहीं है। परन्तु इसका अर्थ हमारी आत्मा, हमारे पूरे अस्तित्व व व्यक्तित्व से है, क्योंकि हमारी देह और उसके सारे अंग मिलकर हमारी आत्मा, हमारे व्यक्तित्व व हमारे अस्तित्व को प्रगट करते हैं। हमारी देह के अंग केवल वे माध्यम हैं जिनके द्वारा हम परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करते हं। इस जीवन में हमारी देह व हमारा प्राण मिलकर एक ईकाई को बनाने हैं जिन्हें अलग नहीं किया जा सकता। हमारा प्राण जीवन की श्वांस या हमें सजीव रखने वाली शक्ति है। यह मानवता का अभौतिक व अदृश्य तत्व है, खास तौर पर जब हम इस धरती पर बसने वाले जीवन व हमारी देह के बारे में बात करते हैं। यह हमारी आत्मा के समान ही होता है,जो मानवता का अदृश्य व अभौतिक तत्व है, लेकिन अभी विशेष तौर पर परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में।

जीवित बलिदान। पुराने नियम में,सारे बलिदान पशु बलि द्वारा ही दिये जाते थे,लेकिन नये नियम में ये बलिदान मनुष्यों के रूप मं चढ़ाये जाते हैं न कि पशुबलि के रूप में। पुराने नियम में, सारे पशुबलि को मार दिया जाता था, लेकिन नये नियम में इन बलियों को मारने की बजाय जीवित रखा जाता है। पुराने नियम में विशेष उपलक्ष्यों पर बलिदान चढ़ाया जाता था,लेकिन नये नियम में मानवीय बलिदान किसी उपलक्ष्य पर नहीं वरन नियमित तौर पर चढ़ाया जाता है। परमेश्वर को जरूरत नहीं है कि मनुष्य परमेश्वर के लिए अपना वध करे, वरन वह चाहता है कि मनुष्य उसके लिए जिये।

लेकिन, परमेश्वर के लिए जीवता बलिदान चढ़ाना तभी सम्भव हो सकता है जब हम ने मसीह में नया जीवन प्राप्त किया हो। हमारा पुराना स्वभाव कभी नहीं मरना चाहता। वह तो पाप का मज़ा लेना और स्वार्थी अभिलाषाओं से सन्तुष्ट होना चाहता है। वह तो "बस खाना,पीना, और आनन्दित होना चाहता है"(1 कुरिन्थियों 15:32) और हर प्रकार की खुशी बाहर निकाल देना चाहता है। हमारा पुराना मनुष्यत्व केवल अपने लिए ही जीवन व्यतीत करना चाहता है! या फिर हमारा पुराना स्वभाव, बुरी आदतों,पागलपन या आतंकवाद में लापरवाही के से जीवन व्यतीत करके खुद को मारता है।
जब यीशु मसीह हमारे हृदय और जीवन में वास करने के लिए आते हैं,हमारा पुराना स्वभाव क्रूस पर कीलों से ठांक दिया जाता है और उसके वहां ही रहना चाहिए। यीशु मसीह का आत्मा हम में आकर बसता है और हमारे भीतर एक नया स्वभाव उत्पन्न करता है, जिसे हम "नये जन्म" के रूप में अनुभव करते हैं। हमारे नये स्वभाव में यीशु मसीह का व्यवहार व यीशु मसीह व दूसरों की सेवा करते हुए नि:स्वार्थ भावना के साथ जीवन व्यतीत करने की इच्छा प्रवेश कर जाती है।

पवित्र बलिदान। *पवित्र* शब्द का अर्थ बुराई से दूर व परमेश्वर के लिए समर्पित होता है। पवित्र आत्मा का काम हमारे भीतर सब प्रकार के पापों के प्रति घृणा उत्पन्न करता तथा हमें परमेश्वर की निगाहों में निष्कलंक जीवन व्यतीत करने के लिए समर्पित बनाता है। परमेश्वर के सभी गुणों में पवित्रता पायी जाती है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर का प्रेम पवित्र है। वह पूरी तरह से किसी भी तरह के पाप से अछूता होता है। वह स्वार्थी नहीं है,वह किसी का पक्षपात नहीं करता, और वह किसी भी प्रकार से यौन सम्बन्धी अनैतिकता से जुड़ा हुआ नहीं हो सकता। इसी तरह,परमेश्वर की धार्मिकता पवित्र है। वह किसी भी प्रकार के अन्याय से रहित है। वह स्पष्ट तौर पर प्रगट किये गये मूल्यों व व्यवस्थाओं पर आधारित है; यह पूरी तरह से साफ व निष्पक्ष है। इस तरह, परमेश्वर का सत्य, उसकी दया, उसकी विश्वासयोग्यता व परमेश्वर के दूसरे चरित्र पूरी तरह से पवित्र हैं। अब, परमेश्वर चाहते हैं कि हम मसीही लोग भी अपने अपने जीवनों में उसी के समान पवित्रता को प्रगट करें। पवित्र आत्मा की सहायता से वह हमें पवित्र जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाता है।

परमेश्वर को भावता बलिदान। *भावता* शब्द का अर्थ परमेश्वर द्वारा ग्रहण किया जाने वाला व परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला। हम मसीही लोग जहां कहीं भी जाएं, हमें अपने आप से यह प्रश्न करना चाहिए,"क्या यह स्थान या ये लोग जिनके साथ मैं संगति करता हूँ, परमेश्वर को भाते हैं"? "यीशु मसीह ने इस परिस्थिति में क्या किया होता?" हम इस प्रश्न का जवाब केवल अधिक से अधिक बाइबल पढ़कर या उसका अध्ययन करने के द्वारा दे सकते हैं। परमेश्वर ज्यादातर अपने वचनों व अपनी आत्मा के द्वारा परमेश्वर को भावता हुआ जीवन जीने में मसीहियों की सहायता करते हैं।

आत्मिक आराधना या आत्मिक सेवा। आत्मिक शब्द का सबसे उत्तम अनुवाद *सही या उपयुक्त* हो सकता है। अत: जब हम मसीही लोग अपने आप को परमेश्वर के लिए जीवित, पवित्र व परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाते हैं,तो हम वही काम करते हैं जो परमेश्वर की दृष्टि में सही व उपयुक्त होत हैं। यही वास्तव में एक मसीही आत्मिक जीवन है। एक मसीही तब आत्मिक नहीं है जब वह अपने आप को बहुत गम्भीर या भावुक अवस्था में प्रगट करता है, लेकिन जब वह अपने सम्पूर्ण जीवन को एक जीवित बलिदान के रूप में चढ़ाता या देता है तब वह आत्मिक है। वह केवल मसीही सभाओं में ही आत्मिक नहीं होता, वरन वह अपने सप्ताह के हर दिन में आत्मिक जीवन व्यतीत करने वाला जन होता है।

3. हमारे प्राण का समर्पण।

संसार के सदृश बातों को "ना" बोलें। हम अपने आपको इस बुरे व दुष्ट युग के अनुसार नहीं ढालते। हम अनुमति नहीं देते कि यह बुरा संसार हमें अपने सांचे में ढालने का प्रयास करे। सच्चे मसीही किसी भी प्रकार से संसार की सदृश्यता के प्रभाव से बचने का प्रयास करते हैं: जैसे नास्तिकता की विचारधारा,झूठे धर्म, यौन अनैतिकता, बुरी संगति, चुगलखोरी, अश्लील पत्रिकाओं को पढ़ना,आपत्तिजनक गतिविधियां, उकसाने वाले वस्त्र,रूढ़ीवादी राजनीति,नशीले पदार्थो के साथ प्रयोग करना,जान लेवा खेल इत्यादि। सच्चे मसीही हर एक बुरे प्रभाव का विरोध करते हैं। दूसरों के बाहरी जीवन व उनके व्यवहार का आकर्षण एक शक्ति का काम कर सकती है जो हमें परमेश्वर से दूर करके ऐसे आचरण व जीवन शैली को व्यतीत करने पर मज़बूर कर दे जिसे परमेश्वर पसन्द नहीं करते। हम किसी भी प्रकार से बुरे संसार के आकर्षण या गलत चीजों की ताका झांकी को हमें आकार देने की अनुमति प्रदान नहीं करते हैं। हम भद्दी व ठोकर पहुंचाने वाली भाषा का इस्तेमाल नहीं करते। हम गन्दे, अश्लील संगीत को नहीं सुनते। हम बेकार व अश्लील पत्रिकाओं को नहीं पढ़ते। हम भड़कीले वस्त्र नहीं पहनते। हम आपत्तिजनक परिस्थितियों या गतिविधियों का भाग नहीं बनते। हम सासांरिक लोगों के साथ अति घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं बनाते।

परमेश्वर की इच्छाओं से जुड़ी आन्तरिक रूपान्तरण को "हाँ" बोलें। हम लगातार अपने मन को नया हो जाने की प्रक्रिया के लिए समर्पित करते हैं। जिस प्रकार सदृश्यता लोगों के बाहरी तौर तरीकों को अनुपालन करने से होती है, उसी प्रकार रूपान्तरण आन्तरिक परिवर्तन या विचारों,विश्वास,सोच,उद्देश्यों व परमेश्वर के वचन के अनुसार स्वभाव के बदलने से प्रारम्भ होता है। यह तब सम्भव होता है जब हम अपने आपको परमेश्वर के वचनों व उसकी आत्मा के साथ चलाने के लिए समर्पित करते हैं। आन्तरिक रूपान्तरण असल में बाहरी परिवर्तन द्वारा प्रगट होता है और बाहरी व्यवहार परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन को व्यतीत करने का सबसे उत्तम तरीका है।

4. बलिदान चढ़ाने के बदले में परमेश्वर की प्रतिज्ञा।

पांच प्रमुख आवश्यकताएं हैं जिनके लिए हमें परमेश्वर की इच्छा को समझने व उसके ग्रहणयोग्य ठहरने की जरूरत है।

- यूहन्ना 15:5. परमेश्वर के साथ घनिष्ट व व्यक्तिगत रिश्ते में बने रहने का प्रयास करना।
- लूका 6:46-49 बाइबल में प्रगट परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ इच्छा का पालन करने के लिए।
- रोमियों 8:28. परमेश्वर की उस अप्रगट इच्छा के प्रति समर्पित होना जिसे परमेश्वर ने परिस्थितियों के माध्यम से प्रगट किया हो।
- रोमियों 12:2 मन के नये या रूपान्तरित हो जाने के लिए।

इसी कारण हम कुछ चीज़ों से परहेज़ करते, बुरी बातों को बन्द करते तथा भले कार्यों को करना आरम्भ कर देते हैं।

- रोमियों 12:1. त्यागपूर्ण निर्णय लेने के लिए। अपने हक की बात या मांग करने की बजाय, हम दूसरों की भलाई ही चाहते हैं। हमारे परिवार की कुर्बानी चढ़ाकर अपनी जीविका सुनिश्चित करने की बजाय हम अपने परिवार की ज़िम्मेदारियों को उठाने का समर्पण करते हैं। हम धार्मिक,शक्तिशाली और प्रतिष्ठित लोगों के उपकारों को ही उतारने की बजाय हम गरीबों, विकलांगों और बोझ से दबे हुए लोगों को अपने जीवन में आमन्त्रित करते हैं(लूका 14:12-14)।

ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***

2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** प्रभुता: रोमियों 12:1-2.
3) ***पुन: अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) ***[संसार में जीवन बिताना]*** **संसार में धन : 1 तीमुथीयुस 6:3-19**

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए 1 तीमुथीयुस 6:3-19 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये हम मिलकर 1 तीमुथीयुस 6:3-19 को एक साथ पढ़ें।
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें **निरीक्षण**

***ध्यान दें।* इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**
या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?
लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हों। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस मं बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।
(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँट गयें विचार एक ही समान हों।

6:6

खोज 1. संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है।

पहले मैं ऐसा सोचा करता था कि ज्यादा पैसे कमाना बड़ी कमाई है। लेकिन अब मैं देखता हूँ कि भक्ति और संतोष, धन या सम्पत्ति की तुलना बहुत बड़ी कमाई है। मैं खोजना चाहता हूँ कि किस प्रकार से कोई व्यक्ति संतोष मय व भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकता है।

6:18-19
खोज 2. परमेश्वर के राज्य में निवेश करें।
चाहे मैं अमीर हूँ या गरीब, लेकिन मेरे लिए आने वाले समय अर्थात स्वर्ग के लिए पैसों को निवेश करना ज़रूरी है। मैं परमेश्वर के राज्य में सबसे बेहतर निवेश करने का तरीका सीखना चाहता हूँ, ताकि मैं सच में स्वर्ग में अपना धन संचय कर सकूँ जहाँ पर न तो कीड़ा लगा है और न ही को धन को चुरा सकता है।

कदम 3 प्रश्न **व्याख्या**

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?
आईये हम 1 तीमुथीयुस 6:3-19 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं और फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछें।
लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बाँटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को

अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये हैं)

6:5

प्रश्न 1. झूठे शिक्षक किस प्रकार से भक्ति को कमाई का जरिया समझते हैं?

ध्यान दें। प्रथम शताब्दी के दौरान,बहुत से ऐसे झठे शिक्षक थे जो अनजान शिक्षाओं व अपनी ही काल्पनिक कथाओं को बाइबल के सत्य के साथ मिलाकर देने में मग्न थे। उनके बाल की खाल निकालने वाले वाद विवाद यहूदियों की व्यवस्था व उनकी वंशावली से जुड़ी कहानियों से जुड़े हुए थे। वे उत्पत्ति की पुस्तक या इतिहास में दी गयी वंशावली में से किसी का भी नाम लेकर उस पर एक बढ़िया मनगड़न्त कहानी बना दिया करते थे। यह यहूदी आराधनालय में होने वाली नियमित आराधना का भाग था, जिसे बाद में हगादाह व तालमुद नामक यहूदी शास्त्रों में लिखा गया। उन्होंने अपने झूठे कहानी किस्सों की बदौलत काफी धन कमाया। उन्होंने पहले तो उनके धर्म को प्रदर्शित किया ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग उनके बारे में जान जाएं। उसके बाद उन्होंने धार्मिक पाठयक्रम का आयोजन किया जिसके लिए वे काफी ज्यादा फीस रखा करते थे। इस तरह से उन्होंने नाम मात्र की भक्ति का इस्तेमाल धनी बनने के लिए किया। इन झूठे धार्मिक समूहों ने अपने धर्म को लोगों में बेच दिया। हमारे दिनों में भी इस प्रकार के झूठे भविष्यद्वक्ता बहुतायत से सक्रिय हैं। वे आज भी अपने धर्म को लोगों में बेच रहे हैं। हर जगह पर वे अपने धार्मिक पाठयक्रम को रखते हैं और लोगों से काफी अधिक शुल्क वसूल करते हैं। दूसरे प्रकार के झूठे धार्मिक समूह धन के द्वारा लोगों की निष्ठा खरीद लेते हैं या मंहगे तोहफों के द्वारा लोगों को प्रलोभन देते हैं। उदाहरण के लिए वे लोगों से कहते हैं कि,"यदि आप हमारे डोटा मैनुएल 4-अध्याय 38 पेज़ संख्या 3 के धर्म को अपनाते हैं, तो हम आपको उपहार के रूप में टेलीविजन या एक नौकरी देंगे"। इस प्रकार के सभी झूठे धार्मिक समूहों से सावधान रहें!प्रकाशितवाक्य 21:8 में लिखा है कि "*सारे झूठों* का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती रहतो है।"

6:10

प्रश्न 3. धन के प्रेम को सब बुराईयों की जड़ क्यों कहा गया है?

ध्यान दें। धन अपने आप में बुराई की जड़ नहीं है, लेकिन धन के प्रति लोगों का प्रेम सारी बुराईयों की जड़ है। पैसों का प्रेम ही सारी बुराईयों के जड़ नहीं है,क्योंकि कड़वाहट के कारण भी बहुत सी बुराईयां उत्पन्न हो सकती हैं(इब्रानियों 12:15)।

बाइबल में हम पढते हैं कि किस प्रकार धन ने बहुत सी बुराईयों का उत्पन्न किया। मरकुस 10:21-22 में एक धनी व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह का अनुसरण करते करते अचानक वापस मुड़कर चला गया, क्योंकि उसे अपना धन यीशु मसीह से अधिक प्यारा था। लूका 16:19-31 में, एक धनी व्यक्ति ने लाज़र नामक गरोब जन पर किसी प्रकार की भलाई प्रगट नहीं की। वह मर कर अपने स्वार्थी जीवन के कारण नरक में गया। लूका 22:1-6, यहूदा पैसों के कारण यीशु मसीह को पकड़वाने के लिए तैयार हो गया। उसने बाद में आत्महत्या कर ली। प्रेरितों 5:1-11 में हनन्याह और सफीरा ने पैसों को लेकर झूठ बोला और वे तुरन्त उनका प्राण छूट गया। याकूब 5:1-6 में कुछ धनी लोगों ने धन बटोर कर रख लिया, उन्होंने भोग विलास में जीवन व्यतीत किया, लेकिन उन्होंने अपने वहां मज़दूरी करने वाले लोगों को उनकी मज़दूरी नहीं दी। उन्होंने धनी होने की चाह में मासूम लोगों को कत्ल तक कर डाला। यीशु ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा कि वे अपने जीवन के अन्त में, नरक में इसी प्रकार से घात किये जाएंगे।

धन से प्रेम के चलते बहुत लोग धन प्राप्त करने या दहेज मांगने की इच्छा से विवाह कर रहे हैं,जिसकी वजह से बहुत सी वैवाहिक परेशानियां खड़ी हो रही हैं। धन से प्रेम के कारण व्यापार जगत में धोखेबाज़ी,घूसखोरी हो रही है तथा भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। धन के प्रेम के कारण ही राजनेता झूठ बोलते, पैसों के घोटाले करते तथा धनी होने के लिए अपने ही देश को बर्बाद कर देते हैं। धन के पम के कारण ही लोग लौटरी व जुआ खेलते तथा पैसा कमाने की योजनाओं में धन लगाने के परिणाम स्वरूप अत्यधिक कर्ज में दब जाते हैं। धन के लालच में लोग पैसे देने वाले धर्मों को स्वीकार कर लेते हैं। धन के प्रेम के कारण ही लोग चोरी करते,लूटते और हत्या करते हं।निश्चय ही पैसों का प्रेम सारी बुराईयों की जड़ है!

6:10

आपके जीवन में धन का कैसा प्रभाव पड़ सकता है?

ध्यान दें।

पैसा कभी भी आपको सन्तुष्ट नहीं कर सकता। सभोपदेशक 5:10-17 में हम पढ़ते हैं,"जो कोई धन को प्रेम करता है उसके पास कभी पर्याप्त धन नहीं होता, जो सम्पत्ति से प्रेम करता है वह कभी अपनी आमदनी से सन्तुष्ट नहीं होता...उसके खाने वाले भी बढ़ते हैं.. धनी का धन बढ़ने के कारण उसको नींद नहीं आती।" धन न तो कभी आपको सन्तुष्ट कर सकता और न ही आपके जीवन में शान्ति प्रदान कर सकता है।

धन परमेश्वर के वचन को आपके जीवन से दूर रख सकता है। मरकुस 4:18-19 में हम एक बीज बोने वाले किसान के बारे में पढ़ते हैं,जो अपने कुछ बीजों को कटीली झाड़ियों के बीच में बोता है। यह उन लोगों को दर्शाता है जो लोग परमेश्वर के वचन को सुनते तो हैं, लेकिन जीवन की चिन्ताएं, सम्पत्ति का छल और अन्य चीज़ों की अभिलाषाएं परमेश्वर के वचन को दबा देती, तथा उसे फलहीन बना देती हैं। धन और सम्पत्ति आपके जीवन से परमेश्वर के वचन को दूर कर सकते हैं,जिससे परमेश्वर के वचन का आपके जीवन पर कोई प्रभाव न पड़े।

धन आपको आपके जीवन की प्राथमिकताओं से वंचित करवा सकता है। लूका 12:13-21 में हम एक धनी व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं जिसने बहुत अच्छी खेती करके अच्छी उपज पायी। उसने निर्णय लिया कि अब वह बड़ो बखारियां बनायेगा और उसमें अनाज रख कर चैन करेगा। उसने अपने आप से कहा "तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत सम्पत्ति रखी है;चैन कर,खा,पी, सुख से रह।" लेकिन परमेश्वर ने कहा," हे मूर्ख! आज की राज तुझ से तेरा प्राण ले लिया जाएगा। तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है वह किस का होगा?" ऐसा ही प्रत्येक उस व्यक्ति के साथ होगा जो इस संसार में तो धन संचय करता है परन्तु परमेश्वर के लेखे में धनी नहीं है। धन और सम्पत्ति आपको कई बार आपकी प्राथमिकताओं से गुमराह कर सकती है जो प्राथमिकताएं परमेश्वर को प्रेम करना तथा परमेश्वर की सेवा करना है ।

धन आपको मूर्तिपूजक बना सकता है। मत्ती 6:24 में हम पढ़ते हैं कि,"कोई भी मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से प्रेम और दूसरे से बैर रखेगा,या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर व धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते हो।" धन व सम्पत्ति(भौतिकवाद) आपको मूर्तिपूजक बनाकर भगवान धन की पूजा करवा सकता है। संक्षेप में, धन व सम्पत्ति का मसीहियों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ सकता है। बाद में हम पढ़ेगें कि मसीही लोग अच्छा प्रभाव डालने के लिए धन का इस्तेमाल किस प्रकार कर सकते हैं।

6:10

प्रश्न 4. भ्रष्टाचार क्या है?

ध्यान दें।

भ्रष्टाचार के अनेकों प्रकार। भ्रष्टाचार का अर्थ अनुचित तरीके से धर्म व सम्पत्ति अर्जित करना और गलत तरीके से उनका इस्तेमाल करना है। उदाहरण के लिए, जब आप चुराते या डाका डालते हैं तो आप भ्रष्ट हैं(लैव्य. 19:11-13)। जब आप किसी से पैसे मांग कर उसे वापस नहीं करते तो आप भ्रष्ट हैं(भजन 37:21)। जब आप अपने कर्मचारियों को पैसा नहीं देते हैं तो आप भ्रष्ट हैं (याकूब 5:4)। जब आप बेईमानी करते व धोखा देते हैं तो आप भ्रष्ट हैं। जब आप अन्याय करके धन या किसी और चीज़ को हासिल करते हैं तो आप भ्रष्ट हैं(नीतिवचन 11:2;16:8)।लौटरी बेचकर धन कमाना या जुआ खेलना गलत ढंग से पैसा कमाने के कुछ उदाहरण हैं। अधर्म से इकट्ठा किये गये धन से कोई लाभ नहीं(नीतिवचन 10:2) और उनका प्राण लालच के कारण नष्ट भी हो जाता है(नीतिवचन 1:19)। जब आप घूस देते या लेते हैं तो आप भ्रष्ट हैं(नीतिवचन 17:8,23) मसीहियों को जानना जरूरी है कि किसी भी प्रकार की घूस भ्रष्टता है! आप यदि किसी चीज़ का सौदा करने के दौरान कोई उपहार देते हैं तो आप भ्रष्ट हैं! जब आप न्यायालय में न्यायधीश को पैसे देते हैं या न्यायपालिका के किसी सदस्य को अपने पक्ष में न्याय करवाने के लिए पैसे देते हैं या किसी अनचाहे विरोधी को हटाना चाहते हैं, तो आप भ्रष्ट हैं। जब आप लोगों को अपने धर्म में शामिल करने के लिए धन देते हैं तो आप भ्रष्ट हैं। जब आप पैसों पर बहुतायत से ब्याज़ लेते हैं तो आप भ्रष्ट हैं(नीतिवचन 28:8)। जब आप लोगों को पैसे देने क लिए परेशान करते हैं तो आप भ्रष्ट हैं। जब आप भोजनालय, दुकानों और व्यापारियों से हफ्ता लेते हैं तो आप भ्रष्ट है! जब आप गैर कानूनी तरीके से सिगरेट व मादक पदार्थों को बेचते हैं तो आप भ्रष्ट हैं। जब आप खरीदे गये सामान के लिए झूठे बिल बनाते और झूठे प्रमाणपत्र प्रदान करते हैं तो

आप भ्रष्ट हैं। जब आप नकली नोट छापते या नकली क्रेडिट कार्ड बनाते हैं तो आप भ्रष्ट हैं। यदि आप कपड़े धोते समय पैसे रख लेते हैं, तो आप भ्रष्ट हैं। जब आप कर चुकता करने में टालमटोली करते हैं तो आप भ्रष्ट हैं।

भ्रष्टाचार का दण्ड । परमेश्वर भ्रष्टाचार से घृणा करता है। परमेश्वर निश्चय ही भ्रष्टाचार व बेईमानी को दण्ड देगा। उन लोगों का क्या होगा जो लोग घूस लेते और देते है और भ्रष्ट हैं? बाइबल हर एक भ्रष्ट व्यक्ति को चेतावनी देती है कि वह एक बढ खतरे में है! जब वह जन घूस देता या लेता है तो वह नैतिक तौर पर भ्रष्ट हो जाता है और परमेश्वर की निगाहों में अधर्मी ठहरता है। अपराधियों की मदद करने तथा निर्दोष के दु:ख में बढ़ौतरी करने वाला जन अपने परिवार के लिए परेशानियों को कमाता है। उसके कारण उसकी कलीसिया,उसका नगर व उसका देश उजाड़ हो जाएगा। सबसे बुरा दण्ड यह है कि परमेश्वर खुद उसे शापित करता है(व्यवस्थाविवरण 27:25),परमेश्वर उसके परिवार व उसकी सम्पत्ति को नाश करेगा(अय्यूब 15:34)और अन्त में परमेश्वर उसे नरक के कुण्ड में फेंक देगा,क्योंकि उसके कारण दूसरों ने भी पाप किया(मत्ती 18:7-9)!

6:6-12

प्रश्न 5. एक आम मसीही की जीवन शैली किस प्रकार की होनी चाहिए?

ध्यान दें।

मसीहियों को सभी परिस्थितियों में सन्तुष्ट रहना चाहिए। धनी होने की चाह हमें भक्ति से दूर रखती है वरन वंचित कर देती है। परन्तु अगर आप जो कुछ आपके पास है उसमें सन्तुष्ट हैं तो आप भक्ति में बढ़ते हैं। मसीहियों को यह पहिचानना चाहिए कि जब वे इस संसार में पैदा हुए थे तो वे अपने साथ कुछ लेकर नहीं आये थे। और न ही वे अपनी मृत्यु के समय अपने साथ कुछ ले जा सकते हैं। धन एक अस्थायी सम्पत्ति है। भक्ति का समर्थन करने के लिए मसीहियों को यह सोचना चाहिए कि वे अपने जीवन के अल्प काल में धन का इस्तेमाल किस प्रकार से करें। मसीहियों को कभी भी अत्यधिक धन कमाने से प्रेम नहों करना चाहिए,वरन जो कुछ उन्हें परमेश्वर की ओर से मिला है उसके द्वारा परमेश्वर के राज्य की उन्नति के बारे में सोचना चाहिए(1तीमुथीयुस 6:17-19)। यदि मसीहियों के पास खाने के लिए भोजन, पहनने के लिए वस्त्र और रहने के लिए घर हो तो इसी में सन्तुष्ट रहना चाहिए।

मसीहियों को धन के प्रेम से दूर रहना चाहिए। मसीही लोग 'धन के भूखे लोग' नहीं वरन 'परमेश्वर के लोग' हैं। वे धन की मांग को पूरा न करके परमेश्वर की आज्ञाओं का अनुपालन करने वाले लोग हैं। मसीहियों को झूठी शिक्षाओं, बुराई करने, डाह, क्लेश, चिकनी चुपड़ी बातों, शक करने,भ्रष्टाचार,दुष्टता,असंतोष और अधिक धन कमाने की चाह से परे रहना चाहिए। मसीहियों को भक्ति प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। मसीहियों का धार्मिकता, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज, कृपा जैसी बातों का पीछा करना व उन्हें हासिल करने का प्रयास करना चाहिए(मत्ती 6:33)। धीरज, आशा का फल है(1 थिस्लुनिकियों 1:3)। विश्वास का अर्थ परमेश्वर व उसकी प्रतिज्ञाओं पर निर्भर होना है(इब्रानियों 11)। विश्वास, प्रेम और आशा मसीही जीवन के प्रमुख तत्व हैं(रोमियों 5:2-5; 1 कुरिन्थियों 13:13; गलातियों 5:5-6; इफिसियों 4:2-5; कुलुस्सियों 1:4-5; 1 थिस्लुनिकियों 1:3; 5:8; इब्रानियों 6:10-12)।

मसीहियों ने विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़नी चाहिए। यह वचन हमें हर प्रकार की प्रतिस्पद्धा (1 कुरिन्थियों 9:25; इब्रानियों 12:1) या आत्मिक संघर्ष (फिलिप्पियों 1:30; 1 थिस्लुनिकियों 2:2) के बारे में बोलता है। विश्वास का अर्थ एक बार फिर परमेश्वर व उसके वचनों पर पूरी रीति से निर्भर होना है। मसीहियों को हमेशा के लिए अनन्त जीवन पर पकड़ बना लेनी चाहिए। मसीह को अपने जीवन में ग्रहण करते ही वे अनन्त जीवन के अधिकारी हो गये थे। उन्हें किसी भो कीमत पर इसे अपने हाथों से जाने नहीं देना चाहिए।

मसीहियों को उस लक्ष्य को पूरा करने के में तत्पर रहना चाहिए जो उन्हें मिला है। इस पत्र में तीमुथीयुस को मण्डली के लिए मसीह में जीवन व्यतीत करने का आदर्श बनने तथा मण्डली की अगुवाई करने की जिम्मेदारी को आगे सौंपने का काम दिया गया था। मसीहियों को परमेश्वर द्वारा दिये गये लक्ष्य को इस तरीके से पूरा करना चाहिए कि कोई उन पर नज़रअन्दाज़ करने का आरोप न लगा सके।

6:17-19

प्रश्न 6. धनी मसीहियों की जीवन शैली किस प्रकार की होनी चाहिए?

ध्यान दें। मसीहियों के लिए धनी होना कोई पाप या गलत बात नहीं है, लेकिन किसी भी मसीही के लिए धन की अभिलाषा रखना गलत है। मसीही जन के लिए पैसों के पीछे भागना गलत है। मसीही जन के लिए किसी भ्रष्ट तरीके का इस्तेमाल करके धनी बनना गलत है।

यदि परमेश्वर ने किसी मसीही जन के हाथों में बहुत सी आशीषों व जिम्मेदारियों को सौंपा हो तौभी वह जन धन की लालसा करे तो यह गलत है। मसीही जन को यह समझना चाहिए कि परमेश्वर ने यह सारी धन धान्यता को उसके हाथों में इसलिए सौंपा है, क्योंकि वह चाहता कि वह चाहता है कि आप उसके द्वारा दिये गये धन से कुछ करें। परमेश्वर ने धनी मसीहियों के लिए उसके राज्य में करने हेतू एक विशेष मकसद रखा है।

धनी मसीही क्या नही कर सकते। मसीही जन अपने धन पर घमण्ड व उसके कारण आत्म-सन्तुष्ट नहीं हो सकते। वे अपने धनी होने पर अभिमानी या अक्खड़ नहीं हो सकते। वे परमेश्वर पर निर्भर होने की बजाय अपनी सम्पत्ति पर निर्भर नहीं हो सकते।

धनी मसीही क्या कर सकते हैं। मसीही लोग उन सारी आशीषों व धन सम्पत्ति का आनन्द उठा सकते हैं जो परमेश्वर ने उन्हें दिया है।

धनी मसीहियों को क्या करना आवश्यक है। धनी मसीहियों को भलाई करने में आगे रहना चाहिए। उन्हें अपनी आशीषों को दूसरों के साथ बांटने में उदार और इच्छुक होना चाहिए। धनी मसीहियों को आने वाली पीढ़ी के लिए विरासत छोड़नी चाहिए। इसका अर्थ है कि उनकी भलाई या दान केवल सासांरिक वस्तुओं को ही प्राप्त करने के लिए नहीं वरन परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने के लिए होनी चाहिए।

इस कारण धनी मसीहियों को एक विशेष लक्ष्य दिया गया है। उन्हें अपने धन को बुद्धिमानी के साथ परमेश्वर के राज्य में निवेश करना चाहिए। उदाहरण के लिए, वे अपनी सम्पत्ति को जरूरत मन्द मसीही मण्डली के साथ साझा कर सकते हैं। अकाल के वक्त, ग्रीस व मकिदूनिया की मण्डलियों ने फिलिस्तीन की मण्डली की सहायता की। धनी मसीही मिश्नरियों, मिश्नरी कार्यो व मिश्नरी योजनाओं की सहायता कर सकते हैं। ऐसा वर्तमान में बहुत सी जगहों पर हो रहा है।

प्रश्न 7. उच्च पदों पर आसीन मसीहियों की जीवन शैली किस प्रकार की होनी चाहिए?

ध्यान दें।

दानिय्येल 6:3-4 में हम पढ़ते हैं "जब यह देखा गया कि दानिय्येल में उत्तम आत्मा रहती है, तब उसको उन अध्यक्षों और अधिपतियों से अधिक प्रतिष्ठा मिली; वरन राजा यह भी सोचता था कि उसको सारे राज्य के ऊपर ठहराए। यह अध्यक्ष और अधिपति राजकार्य के विषय में दानिय्येल के विरूद्ध दोष ढूँढ़ने लगे; परन्तु वह विश्वासयोग्य था,और उसके काम में कोई भूल या दोष न निकला,और वे ऐसा कोई अपराध या दोष न पा सके।"

आज की तारीख में व्यापार जगत में, सरकार के शासकों में और धर्म में बहुतायत से भ्रष्टाचार पाया जाता है। इस भ्रष्टाचार की वजह से लोगों के जीवन में अत्यधिक दु:खों का पहाड़ टूट पड़ता है जबकि भ्रष्ट लोग धनी व शक्तिशाली बन जाते हैं। जबकि बहुत से लोग पकड़े गये हैं और उन्हें अपमानित हाना पड़ा है।

दानिय्येल इसी प्रकार की परिस्थितियों में रहा लेकिन वह फिर भी इन सब बातों से अलग था। दानिय्येल को एक ऐसे अधिकारी के रूप में जाना जाता था जो सरकारी मुलाजिम तो था लेकिन भ्रष्ट नहीं था। जिसके कारण उसे व्यक्तिगत तौर पर व अपनी नौकरी तथा अपने पद को लेकर काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ां। उसके साथ काम करने वाले उसे नीचा दिखाने या फंसाने के लिए षणयन्त्र रचने लगे। वे परमेश्वर पर उसके विश्वास को लिए उसके खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल करने लगे। और जिसके परिणामस्वरूप उसे अन्त में सिहों की माँद में डाल दिया गया। लेकिन, चाहे दानिय्येल को कितनी भी तकलीफों को सामना करना पड़ा अन्त में, परमेश्वर ने उसका आदर किया। इस कारण बाइबल मसीहियों को दानिय्येल के समान बनने क लिए कहती है। अपने आप को इस संसार में एक मसीही व्यापारी, मसीही सरकारी अधिकारी या एक मसीही साबित करना एक लक्ष्य है। अपने आप को ईमानदार, भरोसेमन्द और अपने लक्ष्य के प्रति कभी भी लावपरवाह नहीं साबित करने का प्रयास करें। इस संसार के भ्रष्टाचारियों से अलग दिखने का प्रयास करें।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम 1 तीमुथीयुस 6:3-19 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे।

(याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा,और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1.तीमुथीयुस 6:3-19 से इस्तेमाल की जाने वाली सम्भव बातों के उदाहरण।

6:3 झूठी शिक्षा देने वाले लोगों से बचें। उन्हें अपने घर में भी न आने दें(2 यूहन्ना 10-11)

6:4 उन लोगों से भी दूर रहने का प्रयास करें जिन्हें विवाद और शब्दों पर तर्क करने,झगड़ा करने व दूसरे मसीहियों पर तर्क करने का रोग हो गया है।

6:5 उन लोगों से दूर रहने का प्रयास करें जो भक्ति के द्वारा धन कमाने की कोशिश करते हैं(उदाहरण के लिए, ऐसी भक्ति जो केवल समृद्धि के सुसमाचार को सुनाती व परिवर्तित होने के लिए लोगों को लालच देती है)।

6:6-8 अगर आपके पास खाने के लिए भोजन व पहनने के लिए वस्त्र हो तो उसी में सन्तुष्ट रहें।

6:6-8 पैसे से कभी प्रेम न करें। कभी धनी होने का प्रयास न करें। इस प्रकार की लालसाओं से भागें।

6:9-11 धार्मिकता,भक्ति,विश्वास,प्रेम,धीरज और नम्रता का पीछा कर।

6:12 परमेश्वर के वचनों और उसके वायदों पर भरोसा रखते हुए एक पहलवान के समान अच्छी कुश्ती लड़।

6:14. उस आदेश का पालन कर जिसे परमेश्वर ने तुझे दिया है।

6:17 मसीही अगुवों को धनी लोगों को सिखाना चाहिए कि वे धनी व शक्तिशाली होने के कारण घमण्ड न करें।

6:18 मसीही अगुवों को धनी लोगों को सिखाना चाहिए कि भलाई करने मे आगे रहें और अपनी आशीषों को सदैव जरूरतमन्द लोगों के बीच में बांटा करें।

6:19 मसोही अगुवे धनी मसीहियों को आज्ञा दें कि वे परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने के लिए अपनी धन सम्पत्ति का इस्तेमाल करें और इस तरह से स्वर्ग के खजाने में निवेश करें।

2.तीमुथीयुस 6:3-19 से व्यक्तिगत तौर पर इस्तेमाल की जाने वाली व्यवहारिक बातों का उदाहरण।

मैं उस सम्पत्ति का भला भण्डारी होना चाहता हूँ जिसे परमेश्वर ने मेरी देख रेख में रखा है। मैं अपने भोजन, कपड़े और घर को लेकर सन्तुष्ट होना चाहता हूँ। और मैं अपने अतिरिक्त धन को परमेश्वर के राज्य में खर्च करना चाहता हूँ। मैं अपने पड़ोस में रहने वाले गरीब मसीही परिवारों की और उन लोगों की सहायता करना चाहता हूँ, जो मसीही मण्डलियों को बढ़ाने के लिए सुसमाचार प्रचार करने का कार्य करते हैं।

मैं एक मसीही के रूप में अपनी छाप छोड़ना चाहता हूँ। मैं आर्थिक क्षेत्र में ईमानदार होना चाहता हूँ और अपने कर्तव्यों को पूरा करने में कभी लापरवाही नहीं करना चाहता। मैं किसी भी परिस्थिति में घूस देने या लेने से इनकार करूँगा। मैं केवल ईमानदारी के साथ ही पैसे कमाऊँगा। मैं भले कामों को करने के लिए तत्पर व ज़रूरतमन्द लोगों के साथ अपनी आशीषों को बाँटना चाहता हूँ। मैं इस संसार के लोगों से अलग होना चाहता और अपने जीवन व्यतीत करने के तरीके से परमेश्वर की महिमा करना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें 1 तीमुथीयुस 6:3-19 में सिखाई हैं।

(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूह में होकर **प्रार्थना करते रहें।** एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ 1 तीमुथीयुस 6:3-19 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: रूत 1-4 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। प्रभुता: रोमियां 12:1-2। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 39

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**आराधना** (20मिनट) *[परमेश्वर की व्यक्त मनोवृति]* **परमेश्वर की सुनना।**

इस अध्याय में हम परमेश्वर की वाणी को सुनने के द्वारा अपनी आराधना को प्रगट करना सीखेगें।

1. परमेश्वर की वाणी को सुनने का प्रयास करें।

आराधना को अर्थ सिर्फ गीत गाना या प्रार्थना करना ही नहीं,वरन परमेश्वर की आवाज को सुनना भी है।

आराधना का मतलब योजनाबद्ध तरीके से इसलिए शान्त हो जाना है कि आप ध्यान से परमेश्वर की आवाज को सुन सकें।

-जब आप कुछ पढ़ते या उसकी आवाज़ को सुनते हैं तो अपना पूरा ध्यान उसकी बातों पर लगाएं।

-आपके विवेक,अन्त:करण, मन और हृदय में बोली जाने वाली पवित्र आत्मा पर ध्यान दें।

-अपने जीवन में परमेश्वर द्वारा किये जाने वाले कार्यों पर ध्यान दें।

अत: आराधना का अर्थ ध्यान देना और समझना है कि परमेश्वर आपसे क्या कहना चाहता है।

2. सच्चाई को खोजने का प्रयास करें।

सुनने का एक प्रमुख पहलू सत्य और झूठ के बीच में फरक को परखना है। बुरी आत्मा और बुरा व्यक्ति जलते हुए तीरों के समान आपके मन और आपकी आत्मा पर झूठ के द्वारा आक्रमण कर सकता है(इफिसियों 6:16),लेकिन परमेश्वर का आत्मा केवल आपके प्रति सच्चाई की उदघोषणा करता है और वह कभी ऐसी बात नहीं बोलता जो बाइबल के विरूद्ध हो(यूहन्ना 16:13)। इसलिए आपके लिए यह बहुत ज़रूरी है कि आप आत्मा में सुनी आवाज़(आत्मगत वाणी) को परमेश्वर के वचन (कर्मवाची वाणी)अर्थात बाइबल से मिला कर ज़रूर देख लें। केवल वे ही बातें जो बाइबल से मेल खाती हैं वे परमेश्वर के वचन हैं(1यूहन्ना 4:1-6)।

आराधना। आइये हम परमेश्वर का वचन पढ़ते हुए चुपचात परमेश्वर की आवाज़ सुनते हुए उसकी आराधना करें। उन बातों को सुनने की कोशिश करें जिन्हें परमेश्वर आपसे कहना चाहता है। (अगुवों गद्य खण्डों के बीच में विराम लेते हुए लूका 6:20-45 पढ़ें)।

3	**बाँटें** (20 मिनट) [शान्त समय] रूत 1:4

आपने जो कुछ दिये गये बाइबल अनुच्छेद (उत्पत्ति 12:1–15:21) से अपने शान्त समय में सीखा है उसे संक्षेप में **बाँटें या (अपनी कॉपी में से पढ़ें)।**

बताने वाले व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुने, उसे गम्भीरता से लें और स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70 मिनट) [मसीही चरित्र] क्षमा करने वाली आत्मा

यह मसीही चरित्र के बारे में एक अध्ययन है। आप कड़वाहट से किस प्रकार निपटते है?

इसके साथ साथ मैनुएल 4 के परिशिष्ट 17 को भी देखें। आप क्रोध से किस प्रकार निपटते हैं?

क. कड़वाहट और उसके कारण

1. कड़वाहट क्या है?

सिखाएं। कड़वाहट एक अक्षमा की आत्मा है। कड़वाहट उन चोटिल भावनाओं का नतीज़ा है जो ठीक नहीं हुई हैं। यह उस अन्याय व गलतफहमी के प्रति क्रोध का भाव है। कड़वाहट के कारण हमारा मन प्रभावित होता है और जिसके कारण चीज़ों के लिए हम सही परख नहीं कर पाते।

2. लोगों में कड़वाहट क्यों जन्म लेती है।

चर्चा। कौन से कारण हैं जिसके कारण आपका मन कड़वा हो जाता है?
ध्यान दें।

- **अन्याय.** हो सकता है कि आपके साथ सही व्यवहार न किया गया हो। हो सकता है कि किसी सरकारी अधिकारी ने सही कदम उठाने से इनकार कर दिया हो। किसी न्यायी ने गलत निर्णय सुना दिया हो। किसी डाक्टर न गलत दवाई लिख दी हो। आपके मालिक कभी आपकी पदोन्नति नहीं कर रहे हों। आपके अध्यापक आपके कार्यों के लिए आपको श्रेय नहीं दे रहे हों। आपका जीवन साथी आपको प्रेम नहीं कर रहा हो। आपका बच्चा आपको अस्वीकार कर रहा है।
- **फायदा उठाया जाना।** शायद किसी ने आपके अधिकारों की सीमा को लांघा हो। उसने आपकी भलाई का नाजायज़ फायदा उठाया हो। वह आपकी सेवा को हल्के में लेते हैं। या दूसरे लोग आपकी देह या चीज़ों का दुउपयोग करते हैं।
- **भरोसे का टूटना।** आप भरोसा करके किसी घनिष्ठ मित्र को अपने मन के दु:खों व समस्याओं को बता देते हैं,और वह व्यक्ति किसी दूसरे के साथ वे बातें साझा करके आपके विश्वास को तोड़ देता है।
- **गलत अनुमान लगाना।** हो सकता है कि आपने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की हो लेकिन फिर भी आप दूसरों की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाए। आपको गलत समझा गया, आपकी बातों को गलत मलतब निकाला गया,मनोबल तोड़ा गया और आपको अस्वीकार कर दिया गया।
- **निराशा।** हो सकता है कि कोई व्यक्ति आपकी अपेक्षाओं पर खरा न उतरा हो। उसने अपना वायदा तोड़ दिया हो या उतना अच्छा काम नहीं कर पाया हो जिसकी आपने अपेक्षा की हो। आप अपने भीरत छला सा महसूस करते हैं।
- **विद्रोह।** कई बार परमेश्वर आपका चरित्र र्निमाण करने व उसके राज्य को आगे बढ़ाने के लिए आपके जीवन में कठिन परेशानियों को आने देते हैं। हो सकता है आपको परमेश्वर के इस व्यवहार से बुरा लगे और आपसे चरित्र व उसकी योजनाओं पर प्रश्न करने लगें।

ख.कड़वाहट की प्रतिक्रियाएं व उसके परिणाम

1.गलत व्यवहार के प्रति मानवीय प्रतिक्रियाओं के उदाहरण।

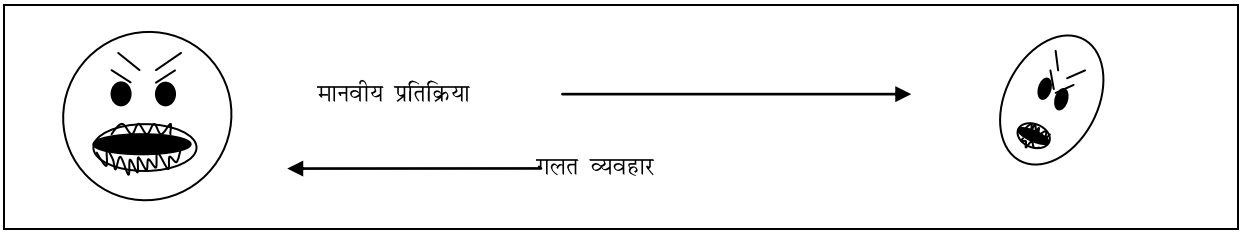

जब आप के साथ गलत व्यवहार किया जाता है तो आप उसे स्वाभाविक व मानवीय दृष्टिकोण से देखने लगत हैं। आपको केवल वह ठोकर खिलाने वाला ही व्यक्ति सामने नज़र आता है जिसने आपके साथ अन्याय किया हो। आपकी भावनाओं को ठेस पहुँची है;आपको गुस्सा आता है; आप उसके प्रति अपने मन में कड़वाहट महसूस करने लगते हैं। परिणाम स्वरूप आप इस ठाकर खिलाने वाले के प्रति प्रतिक्रिया जाहिर करने लगते हैं। आप उसकी बेइज्जती कर देते या उसे चोट पहुँचाते हैं। आप कैसे भी उससे बदला लेना चाहते हैं, आप उसके गलत काम करने के लिए उसे सबक सिखाना चाहते हैं। यह तरीका गलत व्यवहार को सबसे अहम मुद्दा मानता है और परमश्वर को इस सम्पूर्ण घटना से परमेश्वर को दूर रखा जाता है।

2. गलत व्यवहार के विरूद्ध कड़वाहट के परिणाम।

मत्ती 6:15; इब्रानियों 12:5-6, 10-11,14-16।

खोजें व चर्चा करें। परमेश्वर के साथ सम्बन्धों में, दूसरों के साथ सम्बन्धों में, और अपने आपको लेकर कड़वाहट के क्या परिणाम हैं?

ध्यान दें।

(1) कड़वाहट परमेश्वर के साथ आपके सम्बन्ध को प्रभावित करती है। परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते में दूरियां बढ़ती चली जाएंगी। जब आप परमेश्वर के अनुग्रह को क्षमा और प्रेम करने का अवसर प्रदान नहीं करते तो, आप पवित्रता और फलदायी होने के अवसर से वंचित हो जाते हैं।

(2) कड़वाहट दूसरों के साथ आपके रिश्तों को प्रभावित करती है। या तो लोगों से दूर रहकर दोस्ती खो देते हैं या फिर अपना रिश्ता ही खत्म कर देते हैं। आपकी कड़वाहट की वजह से "काफी दिक्कतें होगीं व बहुत से लोग नाश हो जाएंगे"। आप एक परेशानी खड़ी करने वाले व्यक्ति बन जाएंगे। आप चोट पहुंचाने वाले व्यक्ति पर आरोप लगाते व उसे बदनाम करते हैं और चाहते हैं कि दूसरे भी आपके पक्ष में हां में हां भरें। जो लोग केवल आपकी बात व आपके ही पहलू को सुनते हैं वे आपकी तरफ लेकर दूसरे व्यक्ति के प्रति कड़वाहट व हर जगह झगड़ा उत्पन्न करेगा। कड़वाहट बहुत से टूटे रिश्तों व मण्डलियों की जड़ में छुपी है।

(3)कड़वाहट आपके अपने साथ ही रिश्ते को प्रभावित कर देती है। यह आपकी आत्मा,प्राण व देह के लिए एक जहर के समान है। वह आपके पूरे वजूद को दूषित कर देती है, आपकी परख की नज़र को व अनुमान को खराब कर देती है, आपका मिज़ाज बिगाड़ देती है, आपकी भावनाओं की धज्जियां उड़ा देती तथा आपके हृदय को कठोर बना देती है। आपका व्यवहार निष्ठुर, आलोचनात्मक, बैरी,आकर्षक हीन और निराशजनक हो जाता है। इसके कारण आपके सारे रिश्ते टूट जाते हैं और आप एक अकेले व्यक्ति रह जाते हैं।

ग. गलत व्यवहार से उत्पन्न कड़वाहट का उपचार।

1. गलत व्यवहार के प्रति ईश्वरीय प्रतिक्रिया का उदाहरण।

जब आपके साथ कोई गलत व्यवहार होता है तो आप उस परिस्थिति को एक मसीही जन के आलौकिक व स्वर्गीय दृष्टिकोण

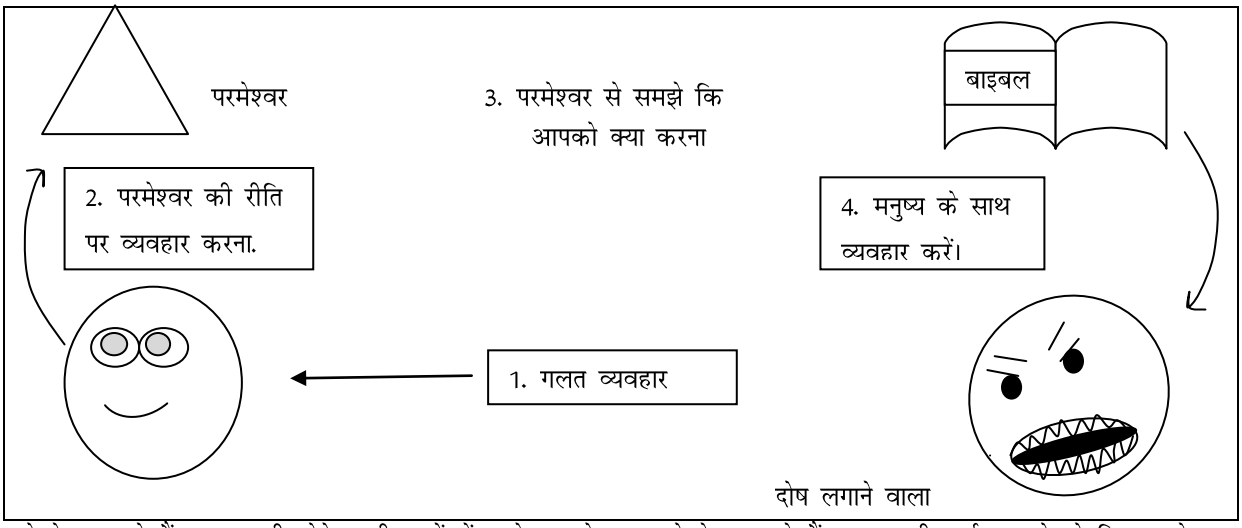

से देख सकते हैं। आप सारी होने वाली बातों में परमेश्वर के हाथ को देख सकते हैं। आप सही बर्ताव करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह को मांगते है।

आप अपने दु:खदायी अनुभव से कुछ शिक्षा हासिल करना चाहते हैं। इसका परिणाम परमेश्वर से प्रार्थना करना, सही प्रतिक्रिया देने के लिए परमेश्वर के वचन का अध्ययन व चोट पहुंचाने वाले के साथ मेल मिलाप होता है।

2.यूसुफ के जीवन का उदाहरण

(1) यूसुफ के साथ गलत व्यवहार

खोजें व चर्चा करें। दूसरों ने यूसुफ के साथ कैसा व्यवहार किया?

ध्यान दें।

उसके अपने परिवार के लोगों ने यूसुफ के साथ बुरा व्यवहार किया(उत्पत्ति 37:1-36)। उसके भाई उससे जलते थे, उन्होंने उसके साथ बुरा व्यवहार किया और अन्त में उसे एक दास के रूप में बेच डाला। उन्होंने अपने पिता से झूठ बोला कि एक जंगली जानवर ने यूसुफ को खा लिया। यूसुफ ने ऐसा कोई काम नहीं किया था कि उसके साथ ऐसा बुरा बर्ताव किया जाए। वह अपने परिवार के अन्याय का निर्दोष शिकार बना।

उसके अधिकारियों ने यूसुफ के साथ बुरा बर्ताव किया (उत्पत्ति 39:1-20)। उसके मालिक की पत्नी ने उसे अनेकों बार भ्रष्ट करने का प्रयास किया। परन्तु उसने हमेशा इनकार किया और जिसके कारण उसकी मालकिन ने उस पर झूठा इल्ज़ाम लगाया व फलस्वरूप वह बिना किसी आरोप-प्रत्यारोप के जेल में डाल दिया गया। यूसुफ पूरी तरह से धार्मिक था। फिर भी वह अपने मालिक के अन्याय का शिकार बना।

यूसुफ के मित्रों ने उसके साथ बुरा व्यवहार किया(उत्पत्ति 40:1-23)। जब वे यूसुफ के साथ जेल में थे तब यूसुफ ने उनकी मदद की थी लेकिन वे पूरी तरह उसके बारे में भूल गये। वह काफी वर्षों तक जेल मं भूला-बिसरा अकेला रहा।

(2) यूसुफ का कष्ट।

उत्पत्ति 37:2 व 41:46।

खोजें व चर्चा करें। यूसुफ ने दूसरों के अत्याचारों को कितने वर्षों तक सहा?

ध्यान दें।

यूसुफ ने बहुत लम्बे समय तक कष्ट सहा। जब उसे गुलाम के रूप में बेचा गया तक उसकी उम्र महज 17 वर्ष की थी और जब वह वहां से आज़ाद हुआ तो उसकी आयु 30 वर्ष की थी। बड़ी रोचक घटनाओं से होते हुए, जब यूसुफ आज़ाद हुआ तो वह मिस्र का प्रधानमंत्री था। लेकिन उससे पूर्व उसने परदेश में 13 वर्ष एक गुलाम के समान व कैद में काटे, और यह सब लोगों द्वारा उसके साथ किये गये बुरे व्यवहार का नतीज़ा था।

(3) बुरे व्यवहार के प्रति यूसुफ की प्रतिक्रिया

उत्पत्ति 45:1-11पढ़ें।

खोजें व चर्चा करें। यूसुफ ने अपने साथ हुए गलत व्यवहार के प्रति कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उसने इन घटनाओं को किस नज़रिये से देखा।

ध्यान दें।

यूसुफ ने बुरे व्यवहार के प्रति आलौकिक प्रतिक्रिया दी। महाअकाल के दौरान,उसने मिस्र में बहुत से अनाज इकट्ठा कर रखा था(उत्पत्ति 41:47-49)। जबकि उसका स्वयं का परिवार कनान में भूखमरी का सामना कर रहा था। अत: उसके पिता ने उसके भाईयों को अनाज खरीदने के लिए मिस्र देश में भेजा। और अनजाने में उसके भाई भोजन की मांग करते हुए अपने भाई यूसुफ के सामने आ खड़े हुए। यूसुफ ने उन्हें पहिचान लिया लेकिन वे उन्हें नहीं पहिचान पाए(उत्पत्ति 42:1-8)। अन्त में यूसुफ ने अपने आप को अपने भाईयों पर प्रगट कर दिया और बिना किसी भय के उसके नज़दीक आने के लिए कहा।

उसने अपने साथ बुरा करने वालों के साथ मानवीय तरीके से गुस्से या धमकाके व्यवहार नहीं किया, लेकिन उसने ईश्वरीय स्वभाव के साथ व्यवहार किया। चार बार उसने अपने भाईयों से यह कहा कि वे डरें नहीं, क्योंकि परमेश्वर ने ही उन्हें बचाने के लिए उसे उनके आगे आगे यहां भेज दिया था। यूसुफ उसके साथ हुए बुरे व्यवहार के बीच में भी परमेश्वर की योजना को देश पा रहा था। इन कठिन व संघर्षपूर्ण वर्षों में भी यूसुफ की दृष्टि परमेश्वर पर लगी थी, अन्याय या कठिन परिस्थितियों

पर नहीं। परमेश्वर से उसने बिना गलती के शिकार होने वाली चोटिल भावनाओं में फँसे रहने की बजाय बुरे व्यवहार पर विजय प्राप्त करना सीख लिया था । उसकी तकलीफें परमेश्वर की सम्भावनाएं बन गयी थीं।

(4) दोषियों के प्रति यूसुफ की प्रतिक्रिया।

उत्पत्ति 45:13-15,21-24; उत्पत्ति 50:15-21 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। यूसुफ ने अपने उन भाईयों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया, जिन्होंने उसके साथ बुरा किया था?

ध्यान दें। यूसुफ ने अन्त में सही मानवीय प्रतिक्रिया की। उसन अपने भाईयों को क्षमा कर दिया। उसके भाईयों के साथ में उसका पुन: मिलन बड़ा हृदय विदारक दृश्य रहा होगा: वह उन्हें चिपटा, उन्हें चूमा, रोया और उनसे बातें की। सम्भवत: उनके आंसू पश्चाताप और आनन्द के आंसू थे। उसने अपने भाइयों की पुरानी गलतियों को अपने मन में नहीं रखा। उसने उनकी किसी गलती को नहीं दोहराया। जबकि उसके भाइयों की अनुपस्थिति में भी उसके लिए अपने भाइयों से मेल मिलाप करना मुश्किल था, उसने अपने भाईयों को क्षमा किया और परमेश्वर को अपने हृदय से कड़वाहट को दूरे करने के लिए अधिकार दिया। उनके पिता की मृत्यु के बाद उसके भाई फिर अपने लिए चिन्तित होने लगे। लेकिन,यूसुफ ने उन्हें स्वीकार किया और स्वीकार करने का एहसास भी दिलाया। यूसुफ ने बदला लेने की बजाय, उनकी भलाई और सहायता ही की। उसकी चोटिल भावनाएं बहुत वर्षों पहले ही चंगी हो चुकीं थीं।

(3) बुरे व्यवहार के सन्दर्भ में बाइबल की खिक्षाएं

(1) परीक्षाओं को किस प्रकार देखें।

रोमियों 8:28; फिलिप्पियों 1:12-24 **पढ़ें।**

खोजें और चर्चा करें। आप अपने प्रति हुए बुरे व्यवहार को किस प्रकार से देख सकते हैं।

ध्यान दें।

आप मान सकते हैं इस बुरे व्यवहार के द्वारा हम पर या दूसरों पर अपनी भलाई को प्रगट करना चाहता है।

(2) परीक्षा या कष्ट के समय में क्या करें।

लूका 17:3-4; 1पतरस 2:21-23;रोमियों 12:18

खोजें और चर्चा करें। बुरे व्यवहार के प्रति आपने कैसा व्यवहार करना चाहिए?

ध्यान दें। आपको कभी झुंझलाना या बदला नहीं लेना चाहिए, वरन अपने आपको पूरी तरह से परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर धर्म के साथ न्याय करता है। बुरा करने वाले व्यक्ति के बातों पर गौर न करके पहले परमेश्वर के सामने इस मसले को रखें। परमेश्वर से सकारात्मक तौर पर विचार करने व महसूस करने का अनुग्रह दे, परमेश्वर से इस कष्टकर घड़ी को सहने और अपने अपराधियों को क्षमा करने के लिए प्रेम की मांगे करें। परमेश्वर से मार्गदर्शन प्राप्त करने के बाद ही आप अपने अपराधी के साथ बर्ताव करें। परन्तु यदि अपराधी क्षमा करना या समझौता नहीं चाहता है तो उसके साथ शान्ति से रहने का प्रयास करें।

(3) चोटिल भावनाओं के साथ क्या करें।

भजन संहिता 38:1-22; भजन 62:8 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। हमारी भीतर बसी हुई चोटिल भावनाओं के साथ कैसे बर्ताव करें?

ध्यान दें।

अपनो भावनाओं और विचारों के प्रति परमेश्वर के सामने पूरी तरह ईमानदार रहें। खुले तौर पर अपने क्रोध, कड़वाहट, दर्द चोटिल भावनाओं को परमेश्वर के सामने व्यक्त करें। कई बार परमेश्वर आपके धावों को तुरन्त ठीक कर देंगे। लेकिन कई बार धावों को भरने में समय लगता है और आपको लगातार प्रार्थना करना और क्षमा करना पड़ता है। जब आपको क्षमा करना असम्भव लगे या आपके मन से चोटिल भावनाएं जाने का नाम ही न लें, तो अपने दो या तीन घनिष्ठ मित्रों से इस विषय पर तब तक प्रार्थना करने के लिए कहें जब तक कि वे भड़कीली भावनाएं आप में से दूर न हो जाएं(याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 5:16)।

(4) कष्टों के परिणामों को किस नज़रिये से देखें।

रोमियों 5:2-5;इब्रानियों 12:10-11; याकूब 1:2-4 **पढ़ें।**

खोजें और चर्चा करें। आपको कष्टों से क्या फायदा हो सकता है।

ध्यान दें।

कष्टों व परीक्षाओं से धीरज, चरित्र और पवित्रता का निर्माण होता है और जिससे आपका जीवन प्रभावशाली और फलदायी बनता है। परमेश्वर आपको परिवर्तित करने के लिए परिक्षाओं,कठिनाईयों और यहां तक कि सताव का इस्तेमाल करता है और फिर वह आपको दूसरों को परिवर्तित करनेवाला अर्थात शिष्य निर्माण करने वाला व्यक्ति बना देता है।

(5) व्यवहारिक अभ्यास

बीते समय में किसी प्रकार के हुए बुरे व्यवहार के बारे में विचार करें। यदि अभी भी जरूरी लगता है, तो मेल मिलाप करने की पहल करें। परमेश्वर को आज़ादी दें कि वह आपकी भावनात्मक चोटों और यादों को चंगा कर दे। अगली बार कभी कोई आपके साथ बुरा व्यवहार करे तो उस परिस्थिति में परमेश्वर को आपके चरित्र निर्माण करने का अवसर प्रदान करें।

(6) कड़वाहट रखने वाले दूसरे लोगों की किस प्रकार सहायता करें।

नीतिवचन 18:13 और 17 **पढ़ें।**

खोजे व चर्चा करें। किसी को सलाह देने से पहले आपको क्या करना चाहिए?

ध्यान दें।

सबसे पहले कड़वाहट से भरे व्यक्ति की बात ढंग से सुनने का प्रयास करें और उस पर हुए अन्याय व उसके पक्ष को समझने की कोशिश करें। फिर उस व्यक्ति की बात सुने जिसने उसे चोट पहुचाई है अर्थात विपरीत पक्ष की बात सुनें। इस परिस्थिति में उनकी सहायता करने के सबसे अच्छे मार्ग की तलाश करें। दोनों को एक साथ बुलाएं और दोनों पक्षों को एक दूसरे का पक्ष सुनने का मौका दें। अन्त में उन्हें एक दूसरे को क्षमा करने तथा एक दूसरे से मेल मिलाप करने का मौका प्रदान करें।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]***
		परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना

आज सीखी गयी शिक्षाओं की प्रतिक्रिया के रूप में अपने समूह में परमेश्वर से ***संक्षिप्त*** प्रार्थना करें।
या समूह को दो दो या तीन तीन में बाँट कर सीखी गयी बातों पर प्रतिक्रिया देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट)	**[निर्धारित कार्य]**
		अगले अध्याय के लिए

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ "क्षमा करने वाली आत्मा" की शिक्षा के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: 1शमूएल 9,10,12,14 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन । घर पर ही अगल बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। मत्ती4:1-11। विषय: संसार में परीक्षाएं। बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों वाले तरीके का इस्तेमाल करें। लेखा रखें ।

4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5- चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 40

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* 1 शमूएल 9,19,12,14

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (1 शमूएल 9,19,12,14)से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[शिष्यता]* दानिय्येल : लूका 9:23

क-ध्यान करना

लूका 9:22-27 **पढ़ें।**

निम्नलिखित याद करने वाले पद को वचन को श्वेत/श्याम पट लिखें।

दानिय्येल लूका 9:23
यदि कोई मेरे पोछे आना चाहे, तो अपने आपे से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले। लूका 9:23

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पर लिखें:

1. शिष्यों के प्रभु ने स्वयं कष्टों को सहना, मरना और फिर मुर्दों में से जी उठना था।

यह पहली बार था जब प्रभु यीशु मसीह ने पहली बार अपने कष्टों, मृत्यु व फिर से जी उठने के बारे में भविष्यवाणी की। यीशु के समय में बहुत से यहूदी इस बात की अपेक्षा कर रहे थे कि उनका मसीह आकर उनके शत्रुओं को जीत लेगा और वह सदा काल के लिए जीवित रहेगा। इस कारण वे लोग इस खबर को सुनकर हैरान रह गये।

लेकिन उसकी मृत्यु के बारे में तो भविष्यद्वक्ताओं द्वारा पहले ही बता दिया गया था, वह तो पुराने नियम में चढ़ाई जाने वाली कुर्बानी का प्रतीक था जिसके लिए स्वयं यीशु तैयार थे। यूहन्ना 10:11 में उसने कहा,"अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान को देता है।" यीशु को वह करना जरूरी था जो वह करने के उद्देश्य से आया था। उसकी मृत्यु आवश्यक थी(लूका 14:44; प्रेरितों 4:12)। यही एक मात्र रास्ता था जिसके द्वारा पाप के द्वारा उत्पन्न परमेश्वर पिता के धर्मी क्रोध को शान्त कराया व हमारे पापों के जुर्माना चुकाया जा सकता था।

ध्यान दें कि जिन लोगों ने असल में इस्राएल की धार्मिक धरोहर की सुरक्षा करनी थी उन्होंने ही अपने उद्धारकर्ता को क्रूस पर चढ़ा दिया। इस्राएल के पुरनिए सिन्हेद्रिन के मुख्य सदस्य थे और यरूशलेम के कुलीन परिवारों से आये हुए लोग थे। महायाजक, महायाजकों के परिवार से थे, जिसमें उस समय का महायाजक भी शामिल था। व्यवस्था के शिक्षक पुराने नियम की शिक्षा व दीक्षा प्राप्त किये हुए लोग थे। उनका काम व्यवस्था का अध्ययन करना,अनुवाद करना, व्यवस्था की शिक्षा देना व नकल करना व व्यवस्था को बताता था।

2. एक चेले को अपने आप का इनकार करना है (लूका 9:23)।

यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए। "पीछ हो लेना" शब्द का अर्थ किसी व्यक्ति द्वारा अपने आप को यीशु मसीह का शिष्य होने के लिए दे देना है। सैंकड़ों लोग हैं जो यीशु के पीछे हो लिए,जहां कहीं वह गया वह उसके पीछे चल दिये, उसकी बातें सुनी और उसके चमत्कारों को देखा। लेकिन यहां पर यीशु उसका सच्चा चेला होने की विशेषताओं के बारे में बता रहे हैं।

अपने आप का इनकार करना। एक सच्चे चेले ने सबसे पहले अपने आप का इनकार करना चाहिए। जब पतरस ने यीशु का इनकार किया, उसने कहा,"मैं तो इस व्यक्ति को जानता तक नहीं"। इनकार करने का मतलब था, कि वह उसको न पहिचानने का निर्णय ले रहा है, निर्णय ले रहा है कि अब वह उसके साथ सम्बन्ध नहीं रखेगा। इसी प्रकार यहां पर इनकार करने का अर्थ है कि व्यक्ति सदा काल के लिए अपने पुराने स्वभाव को न कह रहा है, वह "स्वयं" जो परमेश्वर के अनुग्रह से दूर था, वह स्वयं "जिसने अभी तक नया जन्म नहीं पाया है", वह स्वयं जो "आत्म केन्द्रित" है। जब आप अपने आपे अर्थात स्वयं का इनकार करते हैं, तो आप उन सारी बातों का इनकार करते हैं जिन पर आप स्वाभाविक तौर पर निर्भर थे। आप अपनी बुद्धि, अपनी शक्ति,योग्यता,सम्पत्ति और अपने पद पर भरोसा करने से इनकार करते हैं। बल्कि,आप अपने आपे से इनकार करके अपने जीवन व अपने उद्धार के लिए केवल परमेश्वर पर भरोसा करते हो। अत: इनकार करने का अर्थ उन सभी बातों से निर्भरता या भरोसा हटाना है जिन पर आप अपने उद्धार व जीवन के लिए पूरी तरह से निर्भर, आधारित, टिके,जुड़े हुए हैं। इनकार का अर्थ हर एक पापमय वस्तु, तथा परमेश्वर का विरोध करने वाली या परमेश्वर के हटकर स्वावलम्बो दिखाने की कोशिश करती है। इनकार करने के उदाहरणों को हम 2 कुरिन्थियों 8'9, मत्ती 4:19-22, मत्ती 9:9 और फिलिप्पियों 3:7-8 में देखते हैं।

3. एक चेले को अपनी क्रूस उठानी चाहिए(लूका 9:23)।

एक क्रूस उठाने हुए व्यक्ति की तस्वीर आम तौर पर एक दोषी व्यक्ति को दर्शाती है जिससे जबरजस्ती उसकी क्रूस को नियम स्थान तक उठाने के लिए कहा जाता जहां पर बाद में उसे मृत्यु दण्ड दे दिया जाता है। फिर भी यहां पर थोड़ा फरक है। जिस काम को एक अपराधी से जबरजस्ती करने के लिए कहा जाता है उसी काम को एक चेला स्वेच्छा से करता है। वह स्वेच्छा से सताव,कष्ट, तिरस्कार और लज्जा को मसीह के प्रति वफादार होने तथा मसीह के कारण सहता है। हर एक चेले के पास उठाने के लिए भिन्न क्रूस है।

क्रूस उठाने के विभिन्न उदाहरण निम्नलिखित हैं:

- प्रेरितों के काम 5 में, प्रेरितां को लोगों में सुसमाचार प्रचार करने के कारण गिरफ्तार करके, जेल में डाल दिया गया और कोड़े लगाये गये। उनका क्रूस अत्याचार व कैद में जाना थी।
- प्रेरितों 7 में, स्तिफनुस को पत्थरवाह करके मार दिया गया, क्योंकि उसने अपने लोगों को जिद्दी और कठोर हृदय क लाग कहा, जिन्होंने कभी पवित्र आत्मा की बात नहीं मानी और जिन्होंने स्वयं अपने मसीह की हत्या कर दी(प्रेरितों 7:51-52)। उसके लिए शहीद होना उसकी क्रूस थी।
- 2 कुरिन्थियों 11:23-28 में, प्रेरित पौलुस अपनी क्रूस का संक्षेप में वर्णन करता है।"मैं बार बार कैद में गया, मैं कोड़े खाने में ;बार बार मृत्यु के जोखिम में। पाँच बार मैं ने यहूदियों के हाथ से उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खाए। तीन बार मैंने बेतें खाई, एक बार मुझ पर पत्थराव किया गया, एक राज दिन मैं ने समुद्र में काटा। मैं बार बार यात्राओं में,नदियों के जोखिमों में, नगरों में अन्यजातयों से जोखिमों में, डाकुओं के जोखिमों में, अपने जातिवालों के जोखिमों में नगरों के जोखिमों में, जंगल के जोखिमों में,समुद्र के जोखिमों में और झूठे भाईयों के बीच जोखिमों में रहा। परिश्रम और कष्ट में; बार बार उपवास करने में, जाड़े में,उघाड़े रहने में; और अन्य बातों को छोड़कर जिनका वर्णन मैं नहीं करता, सब कलीसियाओं की चिन्ता मुझे प्रतिदिन दबाती है। उसकी क्रूस कठिन परिश्रम व बहुत से जोखिमों से होकर गुजरना थी।
- प्रकाशितवाक्य 1:9 में हम पढ़ते हैं कि प्रेरित यूहन्ना को, उसके वचन प्रचार करने व शिक्षाओं के कारण तथा यीशु मसीह की गवाही के कारण, पतमुस नामक टापू पर निर्वासित करन दिया गया था। उसका क्रूस निर्वासन था।

4. चेले को यीशु मसीह का अनुसरण करना चाहिए (9:23)।

चेला यीशु के पद चिन्हों पर चलना शुरू करता है और उसका अनुसरण करता ही चला जाता है। "अनुसरण" करने का अर्थ निम्नलिखित है:

- बाइबल में अनुसरण करने का अर्थ यीशु मसीह पर विश्वास करना है। यूहन्ना 6:66-69 में हम पढ़ते हैं, कि चेलों ने विश्वास किया कि यीशु परमेश्वर का पवित्र व अभिषिक्त जन है इस कारण उन्होंने यीशु का अनुसरण करना नहीं छोड़ा और न ही अपने विश्वास से पीछे हटे, जैसा की बहुत से दूसरे लोगों ने किया था।
- अनुसरण करने का अर्थ यीशु मसीह के पदचिन्हों पर चलना है। 1 पतरस 2:21 में हम पढ़ते हैं,"और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दु:ख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद चिन्हों पर चलो।

- अनुसरण करने का अर्थ यीशु की आज्ञा मानना है।
- अनुसरण करने का अर्थ यीशु की सेवा करना है। यूहन्ना 12:26 में हम पढ़ते हैं,"जो कोई मेरी सेवा करना चाहता है वह मेरे पीछे हो ले, और जहाँ मैं रहूँगा वहा मेरा दास भी रहेगा।"
- इन वचनों के अनुसार, यीशु मसीह चाहते हैं कि उसके चेले प्रतिदिन उसका अनुसरण करें। अपने आपे का इनकार करना, क्रूस को उठाकर यीशु का अनुसरण करना सच्चे मन परिवर्तन और पवित्रिकरण को प्रगट करने का एक और तरीका है। ये परमेश्वर के वरदान होने के साथ साथ मनुष्य की ज़िम्मेदारी हैं।

5. एक चेले को यीशु मसीह के खातिर अपने प्राण देना चाहिए (लूका 9:24-25)।

लूका 9:24-25 में लिखा है "क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा,परन्तु जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण खो दे या उसकी हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा?

यहाँ पर 'प्राण' शब्द का अर्थ "उसके जीवन खाने से है"। पद 24 के पहले आधे भाग में 'प्राण' का अर्थ अभौतिक या व्यक्ति के जीवन का वह अदृश्य भाग है जो परमेश्वर के अनुग्रह से दूर, बिना नया जन्म पाया हुआ जीवन है। यदि कोई व्यक्ति अपने प्राण अर्थात अपने जीवन, वजूद या जीवन, अर्थात यदि वह अपने पापमय जीवन,अपनो प्रतिष्ठा, सम्मत्ति,पद, प्रसिद्धि, अपने लिए जीवन जीने की इच्छा को नहीं छोड़ना चाहता है तो, वह अपने प्राण या जीवन को खो देगा। परमेश्वर ने जो कुछ योजना उसके जीवन में बनायी होगी वह कम होती चली जाएगी और उसका अन्त नरक में विनाश हो जाएगा। उदाहरण के लिए लूका 12:16-12 में देखें, वह धनी अपने आप से कहने लगा,"तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत सम्पत्ति है,चैन से खा पी और सुख से रह। परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, हे मूर्ख! इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा; तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है वह किसका होगा? ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिए धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं"।

यहाँ पर 'प्राण' शब्द का अर्थ "उसके जीवन बचाने से है"। 24 पद के दूसरे आधे भाग में, 'प्राण' का अर्थ अभौतिक या व्यक्ति के जीवन का वह अदृश्य भाग है जो परमेश्वर के अनुग्रह से प्रभावित हुआ व नया जन्म पाया हुआ जीवन है। जब कोई व्यक्ति मसीह व मसीह की सेवा के लिए अपना प्राण, वजूद या जीवन खोता है जिसका अर्थ अपने जीवन को पूरी तरह से मसीह के लिए समर्पित करना व इस संसार में मसीह की सेवा करना है, वह अपने जीवन व प्राण को बचाता है। उसका अन्त:करण व बाहरी जीवन अधिकाई से शान्ति, निश्चय, आनन्द और खास तौर पर रिश्तों में प्रेम व जीवन में उद्देश्य को अनुभव करेगा। यीशु अपने अनुयायियों से अनुरोध करता है कि वे भीतर स बदलकर स्वार्थी जीवन न व्यतीत करें, परन्तु बाहरी तौर से बदलकर उसके लिए व उसके राज्य के लिए जीवन व्यतीत करें। उदाहरण के लिए:

मत्ती 10:37-39 में यीशु ने " अपने माता पिता को या अपने बेटे या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है" के सन्दर्भ में कहते हुए कहा कि वह "अपने प्राण को खोता है"।

मत्ती 16:21-25 में यीशु ने "मसीह के साथ जुड़े होने तथा मसीह की शिक्षाओं को बताने के सन्दर्भ में" "अपने प्राण को खोता है" शब्दों को इस्तेमाल किया।

यूहन्ना 12:24-26 में यीशु ने 'मसीह में नि:स्वार्थ सेवा के सन्दर्भ में' "अपने प्राण को खोता है" शब्दों का इस्तेमाल किया।

लूका 17:30-33 में यीशु ने 'यीशु मसीह के साथ उसके दूसरे आगमन के समय जाने के सन्दर्भ में' "अपने प्राण को खोता है" शब्दों का इस्तेमाल किया।

यीशु मसीह हमारी सम्पूर्ण भक्ति, उसके साथ हमारे रिश्ते, मसीह को सेवा करते हुए हमारे जीवन की सारी परिस्थितियों पर और हमारे भविष्य कालीन जीवन पर पूरा अधिकार करना चाहता। यदि कोई व्यक्ति संसार की सारी भौतिक धन दौलत, आराम, प्रतिष्ठा, को प्राप्त कर ले और इस प्रक्रिया को पूरा करने में यदि वह उस जीवन से वंचित रह जाए जो परमेश्वर उन्हें प्रदान करना चाहता था, तो उसे कुछ भी प्राप्त नहीं वरन वह सब कुछ खो चुका है।

6.एक चेले को हिम्मत के साथ यीशु मसीह के साथ अपने सम्बन्ध को स्वीकार कर लेना चाहिए (लूका 9:26)।

लूका 9:26 में लिखा है,"जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी, जब अपनी और अपने पिता की और पवित्र स्वर्गदूतों की महिमा सहित आएगा,तो उससे लजाएगा। मसीह व उसके वचनों से लज्जाने का मतलब, इतना भयभीत या घमण्डी होना है, कि आप उससे या उसके कामों से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहते। जो लोग केवल अपने लिए जीते या फिर मसीह को नज़रअन्दाज़ या उसका विरोध करते हैं उनका कभी उद्धार नहीं हो सकता। लूका 13:24-25 में यीशु ने कहा, "सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो,क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से प्रवेश करना चाहेगें और न कर सकेंगे। जब

घर का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर चुका हो,और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो,"हे प्रभु, हमारे लिए खोल दे" और वह उत्तर दे,'मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम कहाँ के हो?

7. परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य के साथ आते हुए देखना (लूका 9:27)।

लूका 9:27 में लिखा है,'मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो यहाँ खड़े है। उनमें से कुछ ऐसे है। कि जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।" यह कैसे सम्भव है कि यीशु मसीह के कुछ चेले परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य के साथ आते हुए देखेगें(मरकुस 9:1)? लूका 9:26-27 एक साथ जुड़े हैं। वे धरती पर उसके कामों की शुरूआत व अन्त को प्रगट करते हें। पद 26 में, यीशु मसीह उसके दूसरे आगमन के बारे में बोलते हैं, अर्थात वह कब हज़ारों स्वर्गदूतों के साथ बादलों पर प्रगट होगें। उस समय पर वह इस जगत में जीवन व्यतीत कर चुके प्रत्येक व्यक्ति का न्याय करेगा। उसने न्याय करने का आधार यह होगा कि उस व्यक्ति ने धरती पर उसे स्वीकार किया था कि नहीं और उन्होंने उसका अनुसरण किया कि नहीं।

पद 27 में, यीशु मसीह धरती पर उसके राज्य की शुरूआत के बारे में बोलते हैं, अर्थात उसके पुनरूत्थान,उठाये जाने और स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान होने, पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने और प्रथम शताब्दी में तेज़ी के साथ बहुत से राष्ट्रों में प्रभु के सुसमाचार के सुनाये जाने के बारे में बोलते हैं। परमेश्वर की सामर्थ्य से मृतकों में से जी उठाने के बाद यीशु, वह जगत की सारी शक्ति से परे,परमेश्वर के दाहिने हाथ पर जा बैठा। उसने अपने चेलों पर अपना पवित्र आत्मा उण्डेला और उन्हें उनके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थ्य प्रदान की(इफिसियों 1:19-21; प्रेरितों 1:8)। उसके सैंकड़ों अनुयायियों ने अपने जीवन काल में इस बात की गवाही दी(1कुरिन्थियों 15:6)।

ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** दानिय्येल : लूका 9:23
3) ***पुनः अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) *[संसार में जीवन बिताना]* **संसार में परीक्षाएं: मत्ती 4:1-11**

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए मत्ती 4:1-11 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये हम मिलकर मत्ती 4:1-11 को एक साथ पढ़ें।
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें **निरीक्षण**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?
लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हों। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।
(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँटे गयें विचार एक ही समान हों।

4:4
खोज 1. भाव : लिखा है।

यीशु ने बाइबल के हवालों का इस्तेमाल करते समय इस भाव का इस्तेमाल किया। मत्ती के पुस्तक में यीशु मसीह ने पुराने नियम के व्यवस्थाविवरण 6 और 8 से तीन बार वचनों का हवाला दिया। यीशु बाइबल को अत्यधिक महत्व दिया करते थे। यीशु ने बाइबल को हमेशा जीवन के सत्य को मुख्य पहिचान तथा सिद्धान्त और किसी भी मुद्दे पर अन्तिम निर्णय के तौर पर देखा। उसने लोगों को शिक्षा देने व उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए बाइबल का इस्तेमाल किया। उसने प्रचार तथा लोगों को चेतावनी देने के लिए बाइबल का इस्तेमाल किया। उसने लोगों के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए बाइबल का इस्तेमाल किया। उसने शैतान के प्रलोभनों के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए बाइबल का इस्तेमाल किया।

4:11

खोज 2. शैतान यीशु को छोड़कर चला गया।

बहुत से समयों पर शैतान मसीहियों को प्रलोभन देता है। जैसा कि यहां पर है,वह मसीहियों को लेकर गिराने के लिए, उन्हें असफल करने व पराजित करने के लिए, एक के बाद एक प्रलोभनों की झड़ी लगा सकता है। लेकिन यीशु मसीह ने साबित किया कि हम शैतान के सारे प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा परमेश्वर शैतान को हमें हमेशा परीक्षा में डालने की अनुमति भी प्रदान नहीं करते। प्रलोभनों व परीक्षाओं के साथ लड़ाई के बाद शैतान अपने आप चला जाएगा। लेकिन हम मसीहियों को हमेशा सर्तक रहना चाहिए, क्योंकि वह पुन: गिराने का प्रयास ज़रूर करेगा।

कदम 3 प्रश्न व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?

आईये हम मत्ती 4:1-11 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं और फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछें।

लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाँटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने क द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये हैं)

4:1

प्रश्न 1. शैतान कौन है?

ध्यान दें। शैतान एक गिराया गया स्वर्गदूत है। उसने परमेश्वर व परमेश्वर के उद्वार की योजना का विरोध किया था। दुष्टात्माओं को एक सेना और उसके प्रभाव में आये अविश्वासियों की सहायता से वह, सुसमाचार प्रचार में बाधा डालने का प्रयास करता है, वह लोगों को ऐसे पापों को करने के लिए उसकाता है जिससे परमेश्वर को दु:ख हो तथा वह अविश्वासियों के मनों पर अपनी इच्छाओं को पूरा करवाने के लिए कब्ज़ा कर लेता है(2तीमुथियुस 2:26)। वह विश्वासियों को विकट प्रतिद्वन्दी है और हम उसका सामना केवल परमेश्वर की सामर्थ से ही कर सकते हैं। वह अपनी योजना के तहत पहले तो लोगों को पाप करने के लिए प्रलोभन देता है। और जब वे पाप में पड़ जाते है। तो वह बाद में परमेश्वर के सामने आकर उन पर दोष लगाता है(प्रकाशितवाक्य 12:10)। इसके अलावा शैतान झूठा वरन झूठ का पिता है(यूहन्ना 8:44)।

प्रश्न 2, परीक्षाएं या प्रलोभन क्या है और उन्हें इन परीक्षाओं के लिए उकसा सकता है?

ध्यान दें। परीक्षा कोई भी ऐसा कार्य है जो हम से पाप करवाना चाहता है। एक 'पाप' का अर्थ परमेश्वर द्वारा दिये गये लक्ष्य है बहक जाना है। एक परीक्षा हमें हमेशा हमारे जीवन में पराजित करना चाहती ह। हम निम्नलिखित क्षेत्रों में परीक्षा का सामना करते हैं:

हमारा अपना पापमय स्वभाव भी हमें परीक्षा में खींच सकता है। याकूब 1:13-15 में हमे पढ़ते हैं कि 'जब किसी की परीक्षा हो तो कोई यह न कहे कि, " मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है" क्योंकि न तों बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।"

बुरा संसार हमें प्रलोभन या पाप की ओर खींच सकता है। बुरे संसार में बहुत तरह के प्रलोभन हैं। 1 यूहन्ना 2:15-17 में प्रेरित यूहन्ना कहता है कि इन प्रलोभनों का सन्दर्भ उन बातों से हैं जिन्हें हम देखते हैं, अपने मन में उनकी अभिलाषा करते हैं और फिर उस काम को करते हैं। लोगों की आंखें उन पापमय अभिलाषाओं से भरी हुई है जिनके लिए मना किया गया है।

उनके मन बुरे काम करने का लालायित रहते हैं। और अन्त में उनका शरीर वही काम करता है जो गलत हैं। बुरे व अनर्थ काम करने के बाद वे उन बुरे कामों के कारण घमण्ड भी करते हैं। उन्हें अपने गलत कामों पर बढ़ा गर्व भी होता है। उन्हें अनैतिक यौन सम्बन्ध बनाने में बढ़ा गर्व महसूस करते हैं। उन्हें लोगों को मारकर बढ़ा सुकून मिलता है। उन्हें अपने अधिकारियों का सामना करके बहुत अच्छा महसूस होता है। प्रेरित यूहन्ना कहता है कि इस प्रकार का संसार व उसमें बुरे काम करने वाले लोग निश्चय की मिटते चले जाते हैं।

शैतान हमें परीक्षाओं में डाल सकता है। शैतान एक दहाड़ने वाले सिंह के समान है जो हमेशा हमारी ताक में लगा रहता है(1 पतरस 4:8; इफिसियों)। उसकी कोशिश रहती है कि वह लोगों को पाप करने के लिए अर्थात परमेश्वर की योजना के खिलाफ काम करने के लिए उकसाए।

4:2

प्रश्न 3.यीशु ने चालीस दिन व रात का उपवास किया। क्या मसीहियों को आज भी उपवास करना चाहिए?

ध्यान दें।

मत्ती 6:5-18 में उपवास और प्रार्थना। पुराने नियम में बतायी गयी विधियों में से उपवास भी एक भाग था। यीशु मसीह के प्रथम आगमन के समय उपवास को रद्द कर दिया गया था(मरकुस 2:18-22; इफिसियों 2:14-15)। लेकिन प्रथम शताब्दी के अन्तिम भाग में अर्थात ई.प. में फिर से उपसाव को धार्मिक परिपेक्ष में तपस्या तरीके के रूप में देखा जाने लगा। लेकिन मत्ती 17:21 व मत्ती 6:13 का पिछला भाग मत्ती के लेख का मूल भाग नहीं था।यीशु मसीह ने मसीहियों को प्रार्थना करना सिखाया। उन्होंने न तो उन पर उपवार करने के लिए ज़ोर दिया और न ही उन्होंने ऐसा करने से मना किया। यदि मसीही जन उपवास करना चाहते हैं तो उन्हें बहुतायत से बिना कपट क ऐसा करना चाहिए(मत्ती 6:16-18)।

मत्ती 9:14-15 में उपवास। यीशु की अनुपस्थिति में उपवास होगा। मत्ती 9:15 में यीशु ने उन कहा "क्या बाराती, जब तक दूल्हा उनके साथ है,शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएँगे जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे।" यीशु दूल्हा है और सारे मसीही मिलकर दुल्हन हैं। यूहन्ना 16:16-22 में मसीह ने सिखाया कि मसीही लोग विलाप व उपवास करेगें जब दुल्हा उनसे दूर कर दिया जाएगा "कुछ समय के बाद"। वह "थोड़ी देर के बाद" सर्वप्रथम तो वे तीन दिन थे जिसमें वह कब्र में रहा और फिर वे उसके स्वर्ग में उठा लिये जाने व पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बीच के दस दिन थे। पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद उनका आनन्द उनके पास वापस आ गया और अब वह आनन्द उनसे कोई वापस नहीं ले सकता। पवित्र आत्मा में और उसके द्वारा यीशु मसीह जगत के अन्त तक हमारे साथ है(मत्ती 28:20; यूहन्ना 14:16-17)।

मत्ती 9:16-17 में उपवास। इसके बाद मसीह लोगों को आगे शिक्षा देते हुए बताने लगा कि लोग नया दाखरस पुरानी मश्कों में नहीं डालते। यदि वे ऐसा करते हैं ता मश्कें फट जाएंगी, और दाखरस बह जाती है तथा मश्कें नाश हो जाती हैं। वे नई दाखरस को नई मश्कों में डालते हैं जिससे दोनों ही सुरक्षित बनी रहती हैं।

पुराने नियम में लोगों को उनके पश्चाताप के लिए केवल वर्ष में एक ही बार अपने आप को इनकार करने की जरूरत थी और वह दिन प्रायश्चित का दिन था(लैव्यव्वस्था 16:26-32)(1407 ई.पू)। यशायाह भविष्यद्वक्ता(740-680 ई.पू) में बहुत ही स्पष्टता से सिखाता है कि 'अपने आपके का इनकार करना' खाने पीने से दूर रहने से भिन्न है! जिस प्रकार के उपवास के बारे में (अपने आपे का इनकार करने) परमेश्वर ने हमें शिक्षा दी वह अन्याय की जंजीरों को तोड़ना या किसी के जीवन के जुए को तोड़ना है,बन्धुए को आज़ाद करना और किसी बन्धन में जकड़े हुए को स्वतन्त्र करना है। उस उपवास का अर्थ अपना भोजन किसी भूखे के साथ साझा करना, किसी बेघर को छत पाने में मदद करना,नंगे को कपड़े दिलवाना और अपने जरूरत मन्द परिवार जनों से नजर न चुराना है (1 तीमुथीयुस 5:4,8)। इसका मतलब दूसरों पर दोष लगाने या बुराई से बचना, भूखों के लिए खड़े होना और कुचले हुओं की जरूरतों को पूरा करना है(यशायाह 58:6-12)!

लेकिन, निर्वासन के बाद(538 ई.पू) यहूदियों ने 'अपने आपे का इनकार करने को" "उपवास" का नाम दे दिया और उसे व्यवस्था अर्थात धार्मिक रीति रिवाजों में एक बना दिया। निर्वासन के पश्चात उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षाओं को नजरअन्दाज़ करते हुए जो वास्तव में 'अपने आप का इनकार करने' पर आधारित शिक्षाएं थी, लगातार चौथे, पांचवे, सातवें, और दसवें महीने में उपवास किये(जर्कयाह 7:5-10; 8:19)। यीशु के समय में फरीसी लोग सप्ताह में दो बार उपवास किया करते थे(लूका 18:12)।

'पुरानी दाखरस' विलाप का प्रतीक है, जो निर्वासन के बाद यहूदियों की एक महत्वपूर्ण विशेषता बन गयी है और 'पुरानी मश्क' यहूदियों के पुराने समय के उपवास व उसकी विधियों को दर्शाती है। 'नई दाखरस' उद्धार व आशीष को प्रगट करती है, जो मसीह हमें प्रदान करता है और नयी 'मश्कें' मसीहीयों द्वारा आनन्दमयी नयी आराधना को दर्शाता है(यूहन्ना 4:23-24;इफिसियों 5:18-20)। उद्धार का आनन्द, उपवास के विलाप के साथ मिलकर नहीं चलता है। उद्धार का आनन्द नये तरीके से परमेश्वर के साथ सम्बन्ध बनाने व उसकी सेवा करने में प्राप्त होता है। उपवास के पुराने तरीके में आनन्द का कोई स्थान नहीं था। यीशु मसीह की मृत्यु व उसके पुनरूत्थान ने व्यवस्था की सारी मांगों को पूरा (मत्ती 5:17)व उसकी विधियों को रद्द (कुलुस्सियों 2:14) कर दिया है। उपवास अब धार्मिकता के लिए कोई जरूरी मांग नहीं है और न हीं उस पुन: जरूरी मांग बनने देना है! मसीही लोग अगर चाहें तो उपवास कर सकते हैं, मगर उनके लिए उपवास करना कोई मज़बूरी नहीं है।

4:2-4

प्रश्न 4. शैतान के द्वारा की गयी यीशु मसीह की प्रथम परीक्षा क्या थी?

ध्यान दें। चालीस दिनों के उपवास के पश्चात यीशु मसीह को भूख लगी।शैतान ने यीशु मसीह के सामने यह चुनौति रखी कि वह मरूस्थलों को रोटी में बदल दे। अगर वह पत्थरों को रोटी में बदल सकता है तो वह अपनी भूख मिटा सकता है। पहली परीक्षा के दौरान, शैतान ने *परमेश्वर पर यीशु के भरोसे को तोड़ने का प्रयास किया*। उनसे यीशु मसीह के भरोसे को नाश करने की कोशिश की कि परमेश्वर उसकी शारीरिक व भौतिक जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता है। उसने यीशु को उकसाने की कोशिश की कि वह मामले को अपने हाथों में ले ले और स्वावलम्बी बनकर कार्य करें। लेकिन यीशु ने परमेश्वर के वचनों पर भरोसा करके परीक्षा पर विजय पायी। यदि परमेश्वर अपने शब्दों से आकाश के तारों को और सम्पूर्ण धरती को बना सकता है इसलिए यीशु ने यह विश्वास किया कि वही परमेश्वर अपने वचनों के द्वारा निश्चय ही उसकी दैनिक जरूरतों को भी पूरा कर सकता है।

4:4

प्रश्न 5. "परमेश्वर के मुख से निकले प्रत्येक वचन से" का क्या मतलब है?

ध्यान दें।

'परमेश्वर के मुख से निकला हुआ प्रत्येक वचन" परमेश्वर का बोला हुआ शक्तिशाली वचन है, जिसके द्वारा उसने सारे जगत की रचना की(इब्रानियों 11:3)और उसी वचन के द्वारा वह उसे आज तक सम्भाले हुए है(इब्रानियों 1:2-3)। उसके मुख के बोले गये वचनों के द्वारा ही परमेश्वर ने मरूस्थल में इस्राएलियों के लिए भोजन की व्यवस्था व उनकी देखभाल की। उसी के बोले गये वचनों द्वारा परमेश्वर भौतिक परिस्थितियों व वातावरण के द्वारा चालीस दिन तक उपवास में रहे यीशु की भी ज़रूरतों की पूर्ति करेगा। जबकि शैतान का मानना था कि मनुष्य को जीवित रहने के लिए साधारण रोटी अति आवश्यक है, यीशु ने दावा किया कि रोटी नहीं, परन्तु मनुष्य की जीवन व उसकी खुशहाली के लिए परमेश्वर का बोला गया शक्तिशाली वचना ज़रूरी है।

4:5-7

प्रश्न 6. शैतान ने किस तरह यीशु की दूसरी बार परीक्षा की?

शैतान यीशु को मन्दिर के कंगूरे पर ले गया और उससे अपने आप को वहां से नीचे गिरा कर यह देखने के लिए कहा कि क्या यह सच नहीं कि परमेश्वर ने कहा है कि उसके स्वर्गदूत उसे हाथों हाथ उठा लेगें। दूसरी परीक्षा में शैतान ने यीशु को परमेश्वर पर झूठा भरोसा करने के लिए उकसाया। यह परीक्षा उसके आध्यात्मिक क्षेत्र में थी और वह यीशु से कुछ सनसनीखेज काम करवाना चाहता था। शैतान, यीशु से एक मूर्खतापूर्ण कार्य को करवाने के द्वारा एक अच्छी बात को साबित करवाना चाहता था। वह चाहता था कि यीशु अपने को उस इमारत से नीचे गिराकर साबित करें कि उसका परमश्वर उसे बचा लेगा। वह यीशु को परमेश्वर पर गलत बातों के लिए काम करने हेतू बहकाना चाहता था। वह यीशु को उन बातों के लिए परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए उकसाना चाहता था जिसके लिए परमेश्वर ने उससे कभी कोई वायदा नहीं किया था। वह अपनी कल्पनाओं को विश्वास का और बेशर्मी के घमण्ड को परमेश्वर की अधीनता के विकल्प के रूप में रखने के लिए यीशु की परीक्षा कर रहा था। वह यीशु के द्वारा परमेश्वर को लेकर एक प्रयोग या परीक्षण करना चाहता था कि क्या वास्ताव में परमेश्वर, परमेश्वर है। उसने यीशु को यह समझाने की कोशिश की कि इस इमारत से कूद कर वह सच में साबित कर सकता है कि परमेश्वर सच्चा है, और वह बाइबल में कही हर बात को पूरा करने वाला है। लेकिन, परमेश्वर ने उस पर भरोसा करने वाले लोगों की सुरक्षा करने की प्रतिज्ञा की है। परमेश्वर ने मूर्खता पूर्ण कार्यों द्वारा परमेश्वर की परीक्षा करने वाले

लोगों की सुरक्षा करने की कोई प्रतिज्ञा नहीं की है। शैतान ने अपने द्वारा ठहराये क्षेत्र में परमेश्वर को परखने के लिए उकसाने के द्वारा यीशु की परीक्षा की। यीशु ने बाइबल में लिखे परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल करते हुए इस परीक्षा पर भी विजय प्राप्त की, जहां पर लिखा है कि,'तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर'।

परमेश्वर पर झूठा भरोसा करने के लिए उदाहरण निम्नलिखित हैं। यदि मैं परमेश्वर से मेरी बिमारी को चंगा करने के लिए प्रार्थना करता हूँ, लेकिन उसी के साथ साथ अपने जीवन में बुरी आदतों को भी बनाये रखता हूँ, तो मैं परमेश्वर पर झूठा विश्वास करता हूँ। यदि मेरे पास कोई अश्लील या उपद्रवों से भरी वीडियो है, और मैं प्रार्थना करता हूँ कि 'हे प्रभु मेरी दृष्टि को तू इन बुरी बातों से दूर रख'(भजन 19:37) तो मैं परमेश्वर पर झूठा भरोसा रख रहा हूँ। यीशु मसीह कहते हैं कि अपने जीवन की उन परिस्थियों में परमेश्वर की सहायता मांग कर जिसमें हम उस पर झूठा विश्वास करते हैं, उसकी परीक्षा नहीं करें।

4:6

प्रश्न 7. क्या यीशु मसीह को शैतान द्वारा इस्तेमाल किये गये बाइबल के वचनों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए था?

ध्यान दें। शैतान ने यीशु मसीह को भजन 91:11-12 से हवाला दिया। जिसमें भजनकार परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर के स्वर्गदूतों के कामों के फायदे के बारे में बताता है (इब्रानियों 1:14; उदा. उत्पत्ति 28:12)। उदाहरण के लिए, एक स्वर्गदूत विश्वासियों की अगुवाई करता है(उत्पत्ति 24:7) स्वर्गदूत विश्वासियों की सुरक्षा करते हैं(2 राजा 6:16-17;भजन 34:7)।लेकिन शैतान ने यीशु को बहकाने के लिए बाइबल का गलत इस्तेमाल किया। उसने यीशु की परीक्षा करने के लिए भजन संहिता 91:11-12 को तोड़ मरोड़कर एक पेश किया कि, यीशु परखकर देखे ता सही कि वह उसे बचाएगा भी कि नहीं। यूहन्ना 8:44 में, यीशु ने कहा, यीशु झूठा वरन झूठ का पिता है। शैतान कभी सत्य नहीं बोलता! जबकि बाइबल के वचन सत्य हैं, लेकिन परमेश्वर का शत्रु उसकी बातों को लेकर घुमा सकता है।

परमेश्वर के वचन को उसकी मूल मनसा या अर्थ मं होकर समझा जाना बहुत जरूरी है। इसलिए यह जरूरी है कि बाइबल के अनुच्छेदों को ऐतिहासिक सन्दर्भो, ग्रीक व इब्रानी भाषा के शब्दों के मूल अर्थ के आधार पर समझा जाए। जब इन नियमों को नज़रअन्दाज या अस्वीकार किया जाता है तो उसका परिणाम बाइबल का गलत अर्थ निकलना होता है। और शैतान वास्तव में यही चाहता है। और संसार में बहुत से झूठे शिक्षकों का मकसद भी यही है। वे बाइबल पर विश्वास करने का दावा करते हैं,लेकिन लोगों को गुमराह करने के लिए वे अपने ही विचारों को लोगों पर थोप देते हैं।

यीशु शैतान की मनसा को जानते थे। वह जानते थे कि शैतान बाइबल के वचन का गलत मतलब निकाल रहा है। यीशु ने बाइबल के एक वचन का सही मायना बताते हुए शैतान का सामना किया। यीशु ने कहां कि किसी को परमेश्वर की परीक्षा नहीं करनी चाहिए।

4:8-9

प्रश्न. क्या यह सत्य है कि सारा संसार शैतान के कब्ज़े में है?

ध्यान दें।

शैतान के झूठे दावे। शैतान इस बात पर गर्व करता है कि धरती का सारा अधिकार उसके हाथ में है, क्योंकि वह लोगों को बताता है कि धरती का सारा राज्य उसके हाथों में दिया गया है(लूका 4:5-7)। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि शैतान एक झूठा और दिखावा करने वाला है(यूहन्ना 8:44; 2 कुरिन्थियों 11:14)! वह लोगों को यह विश्वास दिलाना पसन्द करता है कि संसार उसके कब्ज़े में है। फिर,भी उसका गर्व करना और दावा करना दोनों झूठे हैं।

शब्द 'संसार'(यूनानी: कोसमोस) का इस्तेमाल बाइबल में अलग अलग मतलब से किया गया है। शब्द का सही मतलब उसके सन्दर्भ से पता चलता है।

- एक संगठित सृष्टि के रूप में(यूहन्ना 1:10; 17:5,24), धरती (यूहन्ना 21:25)
- मानव इतिहास की एक रंगशाला के रूप में संसार, धरती के लोग, मानवजाति(यूहन्ना 1:9; 3:19; 9:39; 11:27;12:46; 14:31; 16:21,28; 17:18; 18:36-37; 1 यूहन्ना 4:1,3;4:9)
- सामान्य लोगों के रूप में संसार(यूहन्ना 7:4; 14:22)
- पतित मानवजाति का संसार: परमेश्वर से पृथक, पाप से दबा हुआ, परमेश्वर धर्मी न्याय के अधीन व उद्धार का जरूरतमन्द।(यूहन्ना 3:19)

- बिना किसी पृष्ठभूमि का संसार। यूहन्ना 3:19 के अनुसार पतित मानवजाति वाला लेकिन अतिरिक्त विचारों वाला संसार:ऐसे लोग जिनकी कोई जाति,राष्ट्रीयता या भाषा नहीं ह (यूहन्ना 1:29; 3:16.3:17; 6:33,51; 8:12; 9:5;11:52; 12:32; 1 यूहन्ना 2:2; 4:14-15)(तुलनात्मक 4:42)। यह संसार को दुष्ट का अधिकार क्षेत्र, पूरी तरह से ईश्वर,मसीह या मसीही विरोधी नहीं दर्शाता(यूहन्ना 15:18; 1 यूहन्ना 5:19)। परमेश्वर बुराई को पसन्द नहीं करता हैं, इसलिए उसे वे लोग भी पसन्द नहीं है जो लगातार बुराई करते व परमेश्वर से लगातार बैर रखते ह(रोमियों 1:18;भजन 5:4-6; भजन 11:5;याकूब 4:4)। न हीं यह जगत में पैदा हुए सारे लोगों के बारे में बोलता है।
- बुरा संसार। यूहन्ना 3:19 के अनुसार पतित मानवजाति वाला लेकिन अतिरिक्त विचारों वाला संसार: बुराई करने वाले लोग जो पूरी तरह से परमेश्वर, मसीह और मसीहीयों के विरूद्ध है(यूहन्ना 7:7, 8:23;12:31;14:17,30,31;115:18;17:9, 14-16,25; 1 यूहन्ना 2:15-17; 3:1,13; 4:4-5; 5:4,5,19)। केवल यह संसार ही शैतान के अधिकार में है(1 यूहन्ना 5:19)। लेकिन शैतान सच्चे मसीहियों को नुकसान नहीं पहुँचा सकता (1यूहन्ना 5:18)।
  चुने हुए लोगों का संसार। संसार भर से परमेश्वर के सभी चुने हुए लोग। यीशु मसीह केवल उनका उद्धारकर्ता है(यूहन्ना 4: 42; 1 यूहन्ना 4:14)। यीशु मसीह केवल उनके ही पापों के लिए प्रायश्चित करता है(1 यूहन्ना 2:2)।

  केवल बुराई का संसार ही शैतान के नियन्त्रण में है। जब प्रेरित यूहन्ना कहता है कि सारा संसार उस दुष्ट के नियन्त्रण में है(1 यूहन्ना 5:19),तो उसका मतलब यह नहीं है कि सारे राष्ट्र व उनके सभी लोग शैतान के नियन्त्रण में हैं। 1 यूहन्ना 5:19 में संसार का अर्थ सारी पृथ्वी या उसमें रहने वाले सारे मसीही लोग हैं, वरन केवल पापमय संसार, अविश्वासियों का संसार,ऐसा संसार जिसमें लोग पाप के गुलाम बने रहते हैं, ऐसी सरकार से बना हुआ संसार जो यीशु मसीह के विरूद्ध है, जो बुरे लोगों और शैतान की दुष्टात्माओं की सेना से भरा है। शैतान नया जन्म पाए विश्वासियों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता (1 यूहन्ना 5:18)। अत: शैतान संसार के केवल बुरे लोगों पर नियन्त्रण रखता है, परन्तु वह केवल इसलिए ऐसा करता है क्योंकि परमेश्वर ने उसे ऐसा करने की अनुमति दी है(अय्यूब 1:12; 1 कुरिन्थियों 5:5)। शैतान मसीहियों पर अग्निमय तीरों (परीक्षाओं) को छोड़ सकता है (इफिसियों 6:16),लेकिन वह कभी मसीही जन पर कब्ज़ा नहीं कर सकता (1 यूहन्ना 4:4) और उसका मसीहीयों पर घटित होने वाली किसी भी घटना पर कोई नियन्त्रण नहीं है (रोमियों 8:28)।

सम्पूर्ण संसार यीशु मसीह के हाथों में है।

- पुराने नियम के समय में। पुराने नियम में भी संसार पर अधिकार करने वाले सर्वश्रेष्ठ नियम परमेश्वर के हाथों में थे न की शैतान के (भजन 2; भजन 9:7; 29:10; 93:1-2; 145:13; 146:10; यिर्मयाह 32:17,27)। उदाहरण के लिए, एक ही रात में परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने दुष्ट शत्रु की सेना को खत्म कर दिया (यशायाह 37:36-37)।
- धरती पर यीशु मसीह के जीवन काल में। यीशु मसीह जब इस संसार में जीवन व्यतीत कर रहे थे तो वह पहले ही जानते थे कि परमेश्वर ने सभी चीज़ों उसके हाथ में कर रखा था(यूहन्ना 13:3)। यीशु मसीह ने कभी किसी पवित्र युद्ध में हिस्सा नहीं लिया और वह हर एक पवित्र युद्ध के विरूद्ध बोलते हुए कहता है कि जितने लोग तलवार उठाते हैं वे तलवार के द्वारा ही मारे जाएंगे(मत्ती 26:52)। यीशु मसीह को अपने पिता परमेश्वर को बुलाने का अधिकार था और वह उसके लिए स्वर्गदूतों की बारह टुकड़ियां तक भेज सकता था। लेकिन यीशु ने बुरे लोगों को नाश करने के लिए उसकी शक्ति का इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया: क्योंकि उसे उस से भी बढ़कर काम करना था: अर्थात उसे व्यवस्था व धर्मशास्त्र में लिखी भविष्यद्वक्ताओं की वाणी को पूरा करना था(मत्ती 26:53-54; व 5:17)। इसके अलावा, कोई भी बुरा व्यक्ति मसीह व मसीहियों पर किसी भी प्रकार अधिकार तब तक नहीं चला सकता जब तक कि उसकी स्वर्ग के परमेश्वर की ओर से अनुमति न दी जाए(यूहन्ना 19:11)।
- यीशु मसीह की मृत्यु। जब यीशु मसीह मरे, तो शैतान को स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया जहां पर अब वह क्रोधित होकर विश्वासियों पर दोष लगाता है(अय्यूब 1:6; प्रकाशितवाक्य 12:7-12)और उससे धरती पर से भी अधिकार छीनकर निकाल दिया गया जहां पर वह संसार के सारे राज्यों व राष्ट्रों से परमेश्वर के संदेश को अलग रखने की कोशिश करता था (दानिय्येल 10:13-14; मत्ती 12:28-30;24:14;यूहन्ना 3:8; प्रकाशितवाक्य 20:1-3)।
- यीशु मसीह का पुनरूत्थान। यीशु मसीह के पुनरूत्थान होने के बाद से, पृथ्वी और स्वर्ग का सारा अधिकार यीशु मसीह का है(मत्ती 28:18)। यीशु के पुनरूत्थान हो जाने के बाद,शैतान, उसकी सारी बुरी शक्तियां और धरती पर उसकी सत्ता तथा सारे अच्छे स्वर्गदूत भी उसकी अधीनता में हैं(इफिसियों 1:20-22; 1 पतरस 3:22; प्रकाशितवाक्य 5:8-14)। पुनरूत्थान होने के बाद यीशु ने सारे संसार के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया(यूहन्ना 12:32), उसने उन्हें शैतान

के शिकजें से छड़ाकर अपने राज्य में प्रवेश करवाया(कुलुस्सियों 1:13)। यीशु मसीह ने संसार की सारी बुराईयों पर जय पायी है और सारा संसार हमेशा तक यीशु मसीह की आधीनता में ही बना रहता है (सुनिश्चित काल)(यूहन्ना 16:33)। यीशु मसीह अब राजाओं को राजा और प्रभुओं का पभु है (प्रकाशितवाक्य 1:5,8;3:26-27; 5:8-14; 6:2; 12:10-12; 17:14; 19:16; 22:13)। यीशु मसीह के साथ में हर देश से मसीही लोग मसीह के पास एकत्र हो रहे हैं(मत्ती 12:30; तीमुथीयुस 2:25-26)।

4:8-10

प्रश्न 9. शैतान के द्वारा यीशु की तीसरी परीक्षा क्या थी?

ध्यान दें। शैतान ने यीशु का उकसाया कि वह परमेश्वर को नज़रअन्दाज़ करके शैतान का चुनाव कर ले। उसने यीशु की इस संसार के वैभव के क्षेत्र में परीक्षा की। हो सकता है कि दर्शन के द्वारा शैतान ने यीशु को संसार के राज्य का वैभव दिखाया। उसके बाद उनसे यीशु मसीह स यह वायदा किया कि अगर वह झुककर उसे दण्डवत करे तो वह उसे संसार के राज्य का सारा वैभव दे देगा।

तीसरी परीक्षा में, शैतान ने यीशु को उकसाया कि वह परमेश्वर पर भरोसा न करके शैतान पर भरोसा करे। शैतान चाहता था कि यीशु मसीह बिना क्रूस का दु:ख उठाये छोटा रास्ता लेकर सारे जगत का मुकुट प्राप्त कर ले(भजन 2:6-8; इब्रानियों 1:1-5; 5:5)। लेकिन शैतान तो झूठा है(यूहन्ना 8:44)लेकिन वह मुखौटा लगाकर लोगों के सामने यह प्रगट करना चाहता है कि वह ज्योति का दूत है (2 कुरिन्थियों 11:14)। शैतान के पास निश्चय ही जगत के राज्य पर कोई अधिकार नहीं है(भजन 145:13; 146:10)! अत: वह किसी को वह चीज़ नहीं दे सकता जो चीज़ उसके पास है ही नहीं! एक बार फिर से यीशु ने वचन का हवाला देकर शैतान पर विजय प्राप्त की, जो वचन यह कहता है कि केवल परमेश्वर की हमारी आराधना और सेवा के योग्य परमेश्वर है।

आज भी हम लोगो को मन्दिर में जाते और मूर्तियों के साथ मोल-भाव करते हुए देखते हैं: उदाहरण के लिए, यदि भगवान मेरी इस मनोकामना को पूरा कर दे तो मैं भगवान के लिए यह करूँगा। और हम देखते हैं के 'गुरू महाराज' लोग लोगों के साथ झूठे वायदे करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि वह व्यक्ति एक आतंकवादी बन कर अपने शत्रुओं को उड़ा दे तो, उसे सीधा जन्नत नसीब होगी। केवल झूठे नबी या भविष्यद्वक्ता ही इस प्रकार का वायदा कर सकते हैं। हम ऐसे बहुत से लोगों को देखते हैं जो समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में लिखे विज्ञापनों पर विश्वास करते हैं। शैतान चाहता है लोग उस परमेश्वर को छोड़कर जिसने अपने आप को बाइबल में जाहिर किया है बाकि सारी बातों पर विश्वास कर लें। असल में शैतान की अभिलाषा यह है कि लोग परमेश्वर की बजाय उसकी आराधना करें। यीशु कहते हैं कि लोगों को केवल उस परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए जिसने अपने आप को बाइबल में प्रगट किया है।

प्रश्न 10. क्या मसीही लोग परीक्षाओं पर विजय पा सकते हैं?

ध्यान दें। 1 कुरिन्थियों 10:13 में हम पढ़ते हैं, "तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।"

परमेश्वर मसीहियों के सहने की शक्ति से बढ़कर परीक्षाओं को न भेजकर मसीहियों के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता को प्रदर्शित करता है। इसके अलावा परमेश्वर हर एक मसीही के लिए परीक्षाओं में से निकास का रास्ता भी खोलता है! इसलिए अगर मसीही चाहें तो उन्हें परीक्षाओं पर विजय मिल सकती है!

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दें: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम मत्ती 4:1-11 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे।

(याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा,और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से

इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. मत्ती 4:1-11 में से सम्भावित इस्तेमाल की जाने वाली व्यवहारिक बातों के उदाहरण ।

4:1 याद रखें कि परमेश्वर कभी कभी मसीहियों को ऐसी परिस्थितियों में ले जाता है जहां वह पाप करने की जिज्ञासा को महसूस करने लगते हैं। परमेश्वर उसकी बुराई करने में परीक्षा करता है(याकूब 1:13)वरन यह नहीं चाहता कि वह पाप में गिर पड़े। परन्तु परमेश्वर उसको परखना चाहता (याकूब 1:12) और उसे परमेश्वर पर भरोसा करना तथा परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर भरोसा करना सिखाना चाहता है कि वह परमेश्वर उसके लिए निकास का रास्ता निकालेगा (1 कुरिन्थियों 10:13)। परीक्षाओं में विजय प्राप्त करने से चरित्र (धीरज व सहनशक्ति)(याकूब 1:2-4)का निर्माण होता है और जिसके द्वारा परीक्षा करने वाले अर्थात शैतान के सामने भी परमेश्वर को महिमा मिलती है (अय्यूब 1:21-22);मत्ती 4:10)।

4:2 याद रखें कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है हम नहीं। यद्यति यीशु ने मरूस्थल में 40 दिनों को उपवास रखा, बाइबल में कहीं पर भी इस बात पर ज़ोर नहीं दिया गया कि मसीहियों का उपवास करना चाहिए। यदि आप किसी समय अन्तराल के लिए उपवास करना चाहते हैं, तो आप गुप्त में उपवास करें।

4:3 यह कभी न भूलें कि शैतान खास तौर पर मसीहियों की परीक्षा करता है, क्योंकि वे लोग अब उसके नियन्त्रण में नहीं हैं(कलुस्सियों 1:13; याकूब 4:7; 1 पतरस 5:8-9)

4:4 रोटी खाकर, लेकिन परमेश्वर के मुख से निकले हर एक वचन को भी खाकर भी जीवित रहें। एक चीनी मसीही ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया,"बाइबल नहीं, तो सुबह का नाश्ता नहीं"। सुबह वह भोजन करने से पहले बाइबल पढ़ा करता था।

4:5 शैतान आपके अपनी मण्डली के साथ भी पाप करने के लिए उकसाएगा। उसे बिल्कुल अवसर प्रदान न करें।

4:6 याद रखें कि शैतान आपसे अपनी इच्छा को पूरा कराने के लिए बाइबल का शोषण करेगा या उसके वचनों को तोड़ मरोड़कर सामने रखने का प्रयास करेगा। प्रतिदिन बाइबल का अध्ययन करें तथा बाइबल के उस अर्थ को समझना सीखें जिस अर्थ के साथ उसे लिखा गया था! तब आप शैतान के झूठों को आसानी से पहिचान पाएंगे।

4:7 जब शैतान आपकी परीक्षा करता है तो उससे कहें "यीशु मसीह के नाम से मेरे सामने से दूर हो जा!" या उसके लि बाइबल में लिखित वचनों में से उपयुक्त वचन लेकर उसका सामना करें। उदाहरण के तौर पर आप कहें, लिखा है कि,"अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर"।

4:8 याद रखें कि शैतान आपको परखने के लिए किसी स्थान में ले जाना चाहता है! परीक्षाओं या पाप के उन स्थानों से बचें।

4:9-10 याद रखें कि शैतान की सारी परीक्षाओं को केवल एक ही मकसद है: कि आप जीवते परमेश्वर की आराधना छोड़कर शैतान की उपासना करने लगें। उसके बुरे मकसद को पहिचाने और इस अवसर को परमेश्वर के लिए साक्षी देने के अवसर में बदल दें और कहें कि आप केवल जीवते परमेश्वर की सेवा व आराधना करते हैं।

4:11 याद रखें कि आपकी नियमित तौर पर परीक्षा नहीं होगी। लेकिन याद रखें कि शैतान आप पर आक्रमण करने लिए बार बार घात जरूर लगाएगा(लूका 4:13)।

2. मत्ती 4:1-11 में इस्तेमाल की जानी वाली व्यवहारिक बातें।

जब कभी मेरे सामने कोई परीक्षा आती है मैं बाइबल पढ़ना शुरू कर देता हूँ। मैं शैतान की परीक्षाओं व प्रलोभनों का परमेश्वर के वचन से जवाब देना सीखना चाहता हूँ। इसलिए, मैं प्रतिदिन बाइबल को पढ़ूंगा, ताकि मैं बाइबल को बेहतर ढंग से जान जाऊँ, ताकि जब भी कभी मेरे सामने कोई परीक्षा लाए तो मैं उसको जवाब दे सकूं।

अब मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ कि जब शैतान मुझे गलत कामों को करने के लिए उकसाना चाहता है तो, उसका असली मकसद परमेश्वर और मेरे बीच के सम्बन्ध को नाश करना होता है। उसकी परीक्षाओं के पीछे मकसद यह है कि मैं परमेश्वर पर विश्वास करना छोड़ दूँ, या मैं परमेश्वर पर झूठा विश्वास करूँ या परमेश्वर पर विश्वास करने की बजाय मैं शैतान पर विश्वास करने लगूँ। इसलिए मुझे प्रयत्नशील बनकर उसका सामना करना है, वह केवल मेरा ही शत्रु नहीं वरन परमेश्वर का भी शत्रु है।

कदम 5. प्रार्थना	**प्रतिउत्तर**

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें मत्ती 4:1-11 में सिखाई हैं।
(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूह में होकर **प्रार्थना करते रहें।** एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ मत्ती 4:1-11 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: 2 शमूएम 15,17,18 व 22 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। दानिय्येल: लूका 9:23 प्रभुता: रोमियों 12:1-2। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें आर देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 41

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ परमेश्वर के लिए शिष्य निर्माण करने के इस पाठयक्रम व समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंपे।

2	**आराधना** (20 मिनट)	*[स्वभाव का प्रगटीकरण]*
		परमेश्वर की प्रसंशा करना।

इस अध्याय में हम परमेश्वर की प्रसंशा करने के द्वारा उसकी आराधना करना सीखेंगे।

प्रकाशितवाक्य 4:1-11 पढ़ें।

एक दर्शन में यूहन्ना स्वर्ग में एक सिंहासन को देखता है। वह दृश्य इतना सुन्दर और महान था कि यूहन्ना उसकी वर्णन करने हेतू कोई शब्द भी नहीं ढूँढ़ पा रहा था।

1. सिंहासन।

यूहन्ना स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन को देखता है(4:2)। धरती या सूर्य या आकाश में तारामण्डल प्रत्येक विद्यमान वस्तु के केन्द्र को निर्धारित नहीं करता परन्तु सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर करता है। जगत में या धरती पर जो भी कुछ होता है या इतिहास में जो भी कुछ हुआ वह किसी शासक या हाकिम के, या किसी धनी व्यक्ति या किसी चतुर या किसी मास मीडिया या फिर इस दुनिया का बहकाने वाले के हाथ में नहीं है। सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर ही सब बातों का संचालन व नियंत्रण करता है। परमेश्वर ने हर एक वस्तु को अपनी मर्जी के हिसाब से रचा है (प्रकाशितवाक्य4:11) उने आपकों इसलिए बनाया क्योंकि वह आपको चाहता था(यशायाह 43:7;कुलुस्सियों 1:16)। कोई भी चीज़ परमेश्वर के श्रेष्ठ नियमों से बच नहीं सकती है (यशायाह 14:24-27)।

2.चमक।

यूहन्ना ने यीशु के स्वरूप को प्रकट नहीं किया, वरन उसकी चमक को प्रकट किया (4:3)। वह कहता है कि जो सिंहासन पर बैठा है वह यशब और माणिक्य सा दिखाई पड़ता है, और उस सिंहासन के चारो ओर मरकत-सा एक मेघधनुष दिखाई देता है।

तीन रंग। यशब 'बिल्लौर के समान पारदर्शी' होता है (प्रकाशितवाक्य 21:11)। यह एक पारदर्शी हीरे के समान होता है, जो परमेश्वर की महिमा व पवित्रता की चमक को प्रदर्शित करती है।

माणिक्य लाल होता है, जो 'जीवन'(लहू)या परमेश्वर के चरित्र की चमक को दर्शाता है, जिसके द्वारा वह अपने न्याय को प्रगट करता है।

मेघधनुष के सब रंग मिलकर मरकत-सा या हल्का हरा रंग सा दिखाई देता है, जो परमेश्वर की अटल विश्वासयोग्यता(उत्पत्ति 9:12-17; यहेजकेल 1:28) और उसके उद्धार को प्रगट करता है।

तीन रंगों का संदेश। प्रकाशितवाक्य का संदेश नये नियम के काल में परमेश्वर के लोगों के लिए है। परमेश्वर के महिमित व पवित्र चरित्र में(स्पष्ट, व पारदर्शी रंग में) सारी बुराईयों के विपरीत (लाल रंग) परमेश्वर का पवित्र क्रोध व उस पर भरोसा करने वाले लोगों के प्रति उसकी प्रेम पूर्ण विश्वासयोग्यता (हरे रंग में) को कभी अलग नहीं किया जा सकता। परमेश्वर के लोगों के लिए, अर्थात यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोगों के लिए न्याय को तूफान समाप्त हो चुका है। जो मसीह में हैं उन पर कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है(रोमियो 8:1)। यीशु मसीह द्वारा पूरे किये गये उद्धार के कार्यों में होकर, विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाने की विश्वासयोग्यता का मेघधनुष हमेशा चमकता रहता है(रोमियों 5:1)। परमेश्वर के चरित्र के ये तीन पहलू उसके सिंहासन से चमकते हैं। परमेश्वर अपने सिंहासन से महिमामय पवित्रता, धर्मी न्याय व विश्वासयोग्य उद्धार के साथ शासन करता है।

बिजली चमकना व गर्जन। उस सिंहासन में से बिजलियां और गर्जन निकलते है(4:5)। इस प्रकार का प्राकृतिक दृश्य लोगों के मन में डर और भय का भाव उत्पन्न करता है। जब भी कभी परमेश्वर अपनी इच्छा को व्यक्त करते हैं तो इस प्रकार का वातावरण परमेश्वर की महानता और ऐश्वर्य को प्रगट करता है। ऐसा ही दृश्य था जब परमेश्वर ने दस आज्ञाओं को प्रगट किया था(निर्गमन 19:16; 20:18), जब उसने अपने अनुग्रह को अय्यूब पर प्रगट किया (अय्यूब 37:2-7,13ख), जब उसने अपने श्रेष्ठ नियमों को यूहन्ना पर प्रगट किया (प्रकाशितवाक्य 4:5) और जब उसने अपने धर्मी न्याय को प्रगट किया (अय्यूब 37:8-13क; प्रकाशितवाक्य 8:5;11:19;16:18)।

3. त्रिएकता।

यूहन्ना पवित्र आत्मा की परिपूर्णता को देखता है, जो उस पर सात जलते हुए दीपक के रूप में प्रगट हुए जो सिंहासन के सामने जल रहे हैं(प्रकाशितवाक्य 4:5)। और फिर वह यीशु मसीह को देखता है, जो मानों एक वध किये हुए मेमने के समान खड़ा हुआ दिखाई देता है(प्रकाशितवाक्य 5:6)। वह परमेश्वर जो अपने आप को तीन अलग अलग रूपों में प्रगट करता है स्वर्ग के सिंहासन पर बैठा है। वह अपने आपको परमेश्वर पिता के रूप में प्रगट करता है, जो आदेश देता है। वह अपने आपको परमेश्वर पुत्र के रूप में प्रगट करता है, जो परमेश्वर तो है परन्तु मानवीय इतिहास में परमेश्वर पिता के आदेश को पूरा करने के लिए मनुष्य का रूप धारण करता है। और वह अपने आपको परमेश्वर आत्मा के रूप में प्रगट करता है, जो परमेश्वर के लोगों के बीच में वास करता है और उनके जीवन में परमेश्वर के आदेशों को लागू करने में सहायता करता है। प्रकाशितवाक्य 1:4-5 से तुलना करें।

4. 4 प्राणी।

यूहन्ना ने परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर चार प्राणियों को खड़े देखा(प्रकाशितवाक्य 4:6-9)। वे सभी स्वर्गीय जीव हैं, जो सृष्टि और उसमें पाये जाने वाले प्राणियों को दर्शाते हैं। जगत परमेश्वर के उद्धार के इतिहास का एक रंगमच है। इन चार प्राणियों का उद्देश्य सम्पूर्ण इतिहास के कालों में परमेश्वर के शासन के दौरान परमेश्वर की महिमा का समर्थन व प्रशंसा करना है(प्रकाशितवाक्य 4:8)।

5. 24 पुरनिए।

यूहन्ना ने 24 पुरनियों को परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर लगे हुए 24 सिंहासनों पर बैठे हुए देखा(प्रकाशितवाक्य 4:4; व 21:12-14)। वह स्वर्ग में स्वर्गदूतों को सबसे उच्च क्रम है, जो पुराने नियम के दौर में परमेश्वर के लोगों (12 गोत्रों) और नये नियम में परमेश्वर के लोगों (12 प्रेरितों)को प्रदर्शित करते हैं। उद्धार इसी सृष्टि के अर्न्तगत होता है। 24 पुरनियों का काम केवल सृष्टि में परमेश्वर की महिमा करना है(प्रकाशितवाक्य 4:11)।

6.कांच का समुद्र।

पीतल का सा समुद्र। पुरान नियम में पीतल का समुद्र पानी के उस हौज़ को दर्शाता है जो धूप वेदी और मन्दिर के बीच में रखी जाती थी। पुराने नियम में याजक वेदी पर सेवा निभाने या मन्दिर में जाने से पहले इस हौज़ में अपने हाथ व पैरों को धोया करते थे (निर्गमन 30:18-21; 1राजा 7:23-26)।

नये नियम में (प्रकाशितवाक्य 4:6)बिल्लौर के जैसा स्वच्छ समुद्र यीशु मसीह के लहू को दर्शाता है जिसमें मसीही लोग विश्वास के साथ अपने वस्त्रों को धोकर श्वेत बना लेते हैं(7:4)। जो यीशु मसीह की मृत्यु व उसके पुनरूत्थान द्वारा उद्धार व धर्मी ठहराये जाने को दर्शाता है, जिसमें होकर लोग उसके पास व उसके नये नियम के समाज (मन्दिर) में प्रवेश कर सकते हैं। अत: प्रकाशितवाक्य 4:6 में बिल्लौर के समान साफ कांच का सा समुद्र परमेश्वर के उद्धार को प्रगट करता है। परमेश्वर का शासन सारे राष्ट्रों के मसीहियों को उद्धार प्रदान करता है, ताकि वे परमेश्वर के साथ सिद्ध शान्ति व सोहार्द में जीवन व्यतीत कर सकें (रोमियों 5:1)।

लाल समुद्र। पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा फिरौन व उसकी सेना को नाश किये जाने के बाद मूसा और समस्त इस्राएली लाल समुद्र के तट पर खड़े हुए(निर्गमन 13:21-22; 14:19,24)। उसने कूशी सेना के बीच में गड़बड़ी पैदा करके उन्हें समुद्र में ही खत्म कर दिया। समुद्र का जल सुनामी के जैसे उन पर चढ़ गया और इन शत्रुओं को पूरी तरह से ढांप दिया। उनमें से एक भी न बचा।

नये नियम में (प्रकाशितवाक्य 15:2-4)यूहन्ना ने एक पारदर्शी कांच का सा समुद्र देखा जिसमें आग मिली हुई थी और वह परमेश्वर के सिंहासन के सामने फैला हुआ था। यह उस स्थान को दर्शाता है जहां पर परमेश्वर उस पशु का अनुसरण करने वालों का न्याय करेगा जिन्होंने नये नियम में परमेश्वर के लोगों को सताया था। परमेश्वर रहित व दुष्ट लोग हमेशा के लिए

उस आग की झील में नाश होंगे। अत: प्रकाशितवाक्य 15:2-4 में कांच का समुद्र जिसमें आग मिली है, परमेश्वर के न्याय को दर्शाता है।

'आग' परमेश्वर के पवित्र क्रोध को दर्शाती है जिसके द्वारा वह अन्तिम न्याय करेगा। 'कांच' दर्शाता है कि उसका पवित्र व धर्मी क्रोध पारदर्शिता व स्पष्टता के साथ न्याय करता है। संसार के दुष्टों व ईश्वररहित लोगों को न्याय करने के बाद, न्याय करने में उसकी पवित्रता और धार्मिकता बेदाग रहती है और हमेशा तक सबके लिए प्रगट होती रहती है। कुछ भी छुपा या सन्देह पूर्ण अवस्था म नहीं रहेगा। "क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रगट हो गये हैं"(15:4) और सबसे द्वारा देखे गये व सबके द्वारा स्वीकार किये जाने चाहिए। बुराई व अशुद्धता परमेश्वर के सामने टिक नहीं पाएंगी(21:8,27)। परमेश्वर की आंखों के सामने सब चीज़ें खुली व प्रगट हैं।

7. सार्वभौमिक आराधना।

यूहन्ना देखता है कि किस प्रकार से चारों प्राणी लगातार परमेश्वर की पवित्रता की प्रशंसा और स्तुति करते हैं (प्रकाशित वाक्य 4:8)और कैसे वे 24 पुरनियें परमेश्वर की आराधना,स्तुति व प्रसंशा करने के समय पूरी तरह लेटकर उसे दण्डवत करते हैं (प्रकाशितवाक्य 4:10-11;5:11-14)। इन सारे दृष्टिकोणों के द्वारा परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि आत्मिक क्षेत्रों व इस संसार में पाये जाने वाले सभी लोग परमेश्वर की आराधना करें।

आराधना। परमेश्वर के सिंहासन के चारों तरफ खड़ें लोगों में से एक होने नाते, आईये हम परमेश्वर के श्रेष्ठ नियमें व उसके राज्य करने के तरीकों की प्रसंशा के द्वारा हम परमेश्वर की आराधना करें।

3.	**बाँटना** (20 मिनट)	***[एकान्त समय]*** **2 शमूएल 15,17,18,22**

- ***आगे बढ़कर*** (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (यहोशू 1-4)से क्या सीखा।
- अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70मिनट)	***[सम्बन्ध]*** **माता पिता व बच्चों के बीच सम्बन्ध**

यह अध्ययन इस बात को ध्यान में रखकर किया जा रहा है कि हम वैसे माता पिता या बच्चे बने जैसा परमेश्वर ने चाहता है। व्यवहारिक अभ्यास केवल सुझाव हैं आप अपनी संस्कृति व समाजिक परिस्थितियों के हिसाब से इनका इस्तेमाल कर सकते हैं।

क.माता पिता की उनके बच्चों के प्रति जिम्मेदारियां।

1.विवाह के समय माता पिता की जिम्मेदारी।

इफिसियों 5:22-33(कुलुस्सियों 3:18-19; यूहन्ना 13:34-35)पढ़ें।

खोजें व चर्चा करें। परमेश्वर ने पतियों और पत्नियों को क्या जिम्मेदारियां दी हैं?

ध्यान दें। पति और पत्नि जिस तरह से एक दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं वह अपने आप में एक आदर्श होना चाहिए। एक दूसरे के बीच उनके रिश्ते से बच्चों को पति के अधिकार के बारे में पता चलना चाहिए जो अपनी पत्नी से ठीक उसी तरह प्रेम करता है जैसे मसीह अपनी कलीसिया को प्रेम करता व उसे सुन्दर रूप में प्रगट करता है ठीक उसी प्रकार से वे पत्नि के आदर्श को भी देख सकें जो अपने पति की सहायता करती है जैसे कलीसिया मसीह के लिए। निश्चय ही उन्हें आपस में एक दूसरे के प्रति व बच्चों के साथ व्यवहार करने में एक आदर्श बनना चाहिए।

2. पालन पोषण करने में माता पिता की जिम्मेदारियां।

इफिसियों 6:4;(कुलुस्सियों 3:21; 1 तीमुथियुस 3:4-5 व तीतुस 1:6; तीतुस 2:4-5)।

खोजें व चर्चा करें। परमेश्वर ने माता पिता को क्या विशेष जिम्मेदारियां दी हैं?

ध्यान दें।

पिता। अपने बच्चों को न चिढ़ायें और रिस न दिलाए। उन्हें परमेश्वर के भय में बढ़ाए। अपने परिवार का भले प्रकार से प्रबन्ध करें। अपने बच्चों को आपका और आपकी पत्नी का आदर करते हुए आज्ञा पालन करना सिखाएं।

माताएं। अपने बच्चों को प्रेम करें। घर के कामों में व्यस्त रहें। आपके व्यवहार की वजह कोई जन परमेश्व के वचन को बुरा न कहे।

ख. पिता, अपने बच्चों को रिस न दिलायें।

सिखाए। परमेश्वर पिता से घर के मुखिया के रूप में बात करता है।

इसलिए माता को इस लक्ष्य को पूरा करने में पिता की सहायता करनी चाहिए(उत्पत्ति 2:18)।

रिस दिलाना। रिस दिलाने का अर्थ है निरूत्साहित करना। अपने बच्चों का आपके प्रति बर्ताव देखकर ही आप बता सकते हैं कि आपने अपने बच्चे को रिस दिलाई या निराश किया है। उदाहरण के लिए, जब बच्चें चिढ़चिढ़ाये हुए, क्रोधित और निराश होते हैं या जब वे अपने माता पिता को छोड़ देते या उनसे दूर हो जाते हैं, तो हो सकता है कि उनका मनोबल टूट गया है। उनका बर्ताव आपके लिए एक संकेत है कि आपको उनके प्रति अपने व्यवहार को जल्द ही बदल देना चाहिए।

आदर। आप अपने बच्चों में आदर किस प्रकार संचारित कर सकते हैं? अपने बच्चों को:

वह समय देकर, जो उन्हें बढ़ने, विकसित होने और गलतिया करने के लिए चाहिए।

जिम्मेदारियां व उत्तरदायित्व सौंप कर।

अपने निर्णय लेने की आज़ादी देकर।

सिद्ध रिश्तों को विकसित करने को आज़ादी देकर।

1. होने दें कि आपके बच्चें जिम्मेदारियों व उत्तरदायित्वों में बढ़ें।

अभिभावकों के लक्ष्य। अभिभावक होने के नाते हमारा कर्तव्य मात्र अपने बच्चों को प्रसन्न करना ही नहीं, परन्तु उन्हें एक जिम्मेदार व्यक्ति बनाना है।

चर्चा करें। यदि आपके जीवन का लक्ष्य केवल अपने बच्चों को प्रसन्न करने का ही होगा, तो आपके बच्चे कैसे बनेंगे?

ध्यान दें। वे बिगड़ जाएंगे, वे स्वार्थी और खुदगर्ज बनेगें।

जिम्मेदारियों को विकसित करना।

चर्चा करें। आप अपने बच्चों को जिम्मेदार नागरिक बनने में किस प्रकार से सहायता कर सकते हैं?

ध्यान दें। जिम्मेदार व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की जिम्मेदारी लेना सीखते है। जिम्मेदारियां सिखाने के महत्वपूर्ण क्षेत्र निम्न हैं: उनका स्वभाव, उनकी बातें व उनका व्यवहार, उनकी शिक्षा व नौकरियां, परिवार में उनका कामकाज में योगदान, पैसों का रख रखाव करना, अकेले यात्रा करना,मित्र बनाना,तनाव का सामना करना या दूसरों के विचारों के साथ सहयोग देना और परमेश्वर के साथ उनका सम्बन्ध।

जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व को विकसित करने के स्तर।

सिखाएं। बचपन से लेकर प्रौढ व्यक्ति बनने तक आपकी शिक्षा के पांच स्तर हो सकते हैं।

- **जब वे शिशु हैं, तो उनके लिए सारे काम करें।** अपने बच्चों के ओर से सारे निर्णय लें और उन निर्णयों के अनुसार कार्य भी करें। माता पिता होने के नाते आप100 प्रतिशत जिम्मेदार व उत्तरदायी हैं कि आप अपने बच्चे के लिए और उसके साथ क्या करते हैं।
- **जब वे छोटे बच्चे हैं तो आप उनके साथ मिलकर काम करें।** बच्चों को आपके साथ मिलकर कार्य करने का अवसर प्रदान करें। निर्णय व योजनाए एक साथ मिलकर तय करें और एक साथ मिलकर उन कामों को अन्ज़ाम दें। जितना सम्भव हा सके, बच्चों सत्य वचन, नैतिक शिक्षाएं अच्छी आदतों के बारे में शिक्षा दें। काम करने के मामले में अपने बच्चों के लिए एक अच्छा आदर्श बनें, उनके सामने गुणवत्ता व समर्पण को लेकर एक स्तर निर्धारित करें, नैतिक व आत्मिक मूल्यों को कायम रखें, जिनका बच्चा अनुसरण कर सकता है। अपने बच्चे पर जाहिर करें कि आपने अपने जीवन को परमेश्वर व परमेश्वर के वचनों में समर्पित किया है और आप परमेश्वर के प्रति जिम्मेदार व उत्तरदायी हैं।
- **जब वे युवा हो जाते हैं। होने दें कि वे ज्यादा से ज्यादा काम अपने आप करें लेकिन आपके निरीक्षण** में। युवाओं के साथ मिलकर काम करना जारी रखें, लेकिन जिन क्षेत्रों में जवान जिम्मेदारी उठाने या उत्तरदायी होने के लिए तैयार है,

उन क्षेत्रों में आप उन्हें जिम्मेदारी सौंप सकते हैं। युवाओं का ज्यादा आज़ादी देने का अर्थ है कि युवाओं को ज्यादा जिम्मेदारी दी जा रही है,इसलिए वे अधिक उत्तरदायी हैं। आज़ादी का अर्थ यह नहीं है कि युवा जो जी में आए करें या वे किसी के प्रति उत्तरदायी हुए ही सारे कामों को कर सकते हैं(व्यवस्था विवरण 12:8; न्यायियों 21:25)। युवाओं को अपने निरीक्षण में निर्णय लेने व योजनाएं बनाने के लिए, काम करने तथा अपनी बातें रखने का ज्यादा से ज्यादा अवसर प्रदान करें। माता पिता होने के नाते, आपको अन्तिम निर्णय लेने का अधिकार और जिम्मेदारी व उत्तरदायित्व भी है।

- **जब वे व्यस्क हो जाते हैं। उन्हें सारे काम अपने आप करने दें।** उन व्यस्कों को पूर्ण जिम्मेदारी व उत्तरदायित्व सौंप दें। सुनिश्चित करें कि वह व्यस्क अपनी जिम्मेदारी को समझता है और अब वह जो कुछ करता या बोलता है उसके लिए 100 प्रतिशत उत्तरदायी है, सर्वप्रथम वह माता पिता होने के नाते आपके प्रति उत्तरदायी है और सबसे बढकर वह परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी है।
- **जब वे प्रौढ़ हो जाएं। उन्हें पूरी तरह से निर्णय लेने की आज़ादी सौंपें।** बच्चें प्रौढ़ होने पर बचपना छोड़ दें, या उन्हें पढ़ने या प्रशिक्षण या कार्य करने के लिए भेज दिया जाए, या उनका विवाह कर दिया जाए। उसके पश्चात परमेश्वर बच्चों को आज्ञा देते हैं कि वे अपने माता पिता के घर को छोड़कर अलग रहें। और माता पिता को अपने बच्चों को पूरी तरह से स्वतन्त्र छोड़ देना चाहिए(मत्ती 19:5)। अपने वे प्रौढ़ परमेश्वर के प्रति 100% जिम्मेदार व 100% उत्तरदायी हैं। माता पिता की अब भी अपने बढ़ हो चुके बच्चों के प्रति जिम्मेदारियां है लेकिन उनका उन पर कोई अधिकार नहीं है। माता पिता की नियमित जिम्मेदारी यह है कि वे अपने बच्चों की इस अवस्था में सहायता व उन्हें प्रेम करें, उनके लिए प्रार्थना करें, जब वे किसी काम के लिए सलाह मांगें तो केवल मांगने पर हो सलाह दें और यदि कोई खतरा नज़र आये तो उन्हें सतर्क कर दें।

2. होने दें कि आपके बेटे बेटियां अपनी विचार धाराओं को विकसित करें।

माता पिता का लक्ष्य। माता पिता होने के नाते आपका लक्ष्य अपने बच्चों को आपके विचारों या निर्णयों पर आधारित होने से रोकना, और उन्हें अपने मूल्यों,प्राथमिकताओं, विश्वास, विचारधाराओं को विकसित करना सिखाना है।

विचार धारा को विकसित करना।

चर्चा करें। आप किस प्रकार अपने बच्चों को अपना निर्णय लेना सिखा सकते हैं?

ध्यान दें। जब माता पिता अपने बच्चों से अपने विचारों, मत,मूल्यों,प्राथमिकताओं,कामों को करने के तरीकों के लिए अचूक आज्ञापालन चाहते हैं तो वे अपने बच्चों को एक ऐसा जिम्मेदार व्यस्क बनने में बाधा डालते हैं जो अपने विचार, मतों,प्राथमिकताओं के आधार पर निर्णय ले सके।

निरूत्तरता को विकसित करने के चरण।

सिखाएं। आप उन्हें तीन कदमों के द्वारा निरूत्तरता सिखा सकते हैं।

- **उनके साथ मिलकर बाइबल के सत्यों की खोज करें।** बाइबल के सिद्धान्त विश्वासियों द्वारा किये जाने वाले किसी भी निर्णय की सीमा को निर्धारित कर सकते हैं।
- **उन्हें किसी उपयुक्त तरीके का चुनाव करने दीजिए।** हालांकि बाइबल का तरीका कभी नहीं बदलता, लेकिन एक सत्य को इस्तेमाल करने के बहुत से तरीके हो सकते हैं।
- **उनके निणय के परिणाम पर उनके साथ चर्चा करें।** उदाहरण के लिए, बाइबल युवाओं के वस्त्रों को लेकर दो सिद्धान्त सिखाती है: हमारे कपड़े हमेशा नैतिक तौर पर ग्रहण योग्य(इफिसियों 5:5) और सामाजिक तौर पर हर उपलक्ष्य पर उपयुक्त होने चाहिए(1 कुरिन्थियों 10:31-33)। इन नैतिक व सामाजिक सीमाओं के दायरे में, युवाओं को पूरी आजादी है। वे अपने चुनाव करते व अपने निर्णय लेते हैं। उनके अभिभावक उनके चुनाव के परिणाम पर चर्चा करते हैं और विचार करते हैं कि उनके इस चुनाव का दूसरों व स्वयं उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

3. होने दे कि आपके बेटे व बेटियां परिपक्व मनोभावों और रिश्तों का निर्माण करें।

अभिभावकों का लक्ष्य। हमारा लक्ष्य अपने बच्चों के साथ सहज रिश्ता कायम करना नहीं वरन एक परिपक्त रिश्ता कायम करना है। माता पिता होने के नाते हमारा लक्ष्य अपने बच्चों को स्वावलम्बी बनाना नहीं, वरन स्वस्थ पारस्परिक निर्भरता र्निमाण करना है। पाश्चात्य संस्कृति स्वावलम्बीता का समर्थन करती है परन्तु बाइबल पारस्परिक प्रेम का समर्थन करती है।

एक परिपक्व रिश्ते की विशेषता यह होती है कि उसमें शामिल हर व्यक्ति अपनी बातों व अपने कामों की ज़िम्मेदारी लेता है, हर व्यक्ति अपना व्यक्तिगत विचार रखता व उनके हिसाब से जीवन व्यतीत करता है, हर एक व्यक्ति अपने मनोभावों को पूर्ण

ईमानदारी से व्यक्त करता है, तथा रिश्ते के तहत दोनो पक्ष पूर्ण भरोसे के साथ एक दूसरे पर निर्भर होते हैं(यही है: एक दूसरे को प्रेम करना)।

परिपक्व भावों को विकसित करना।

चर्चा। किस प्रकार से आप युवाओं की अपने भावों को ईमानदारी व परिपक्व तरीके से पेश करने में सहायता कर सकते हैं?

ध्यान दें। युवाओं में बढ़ी मजबूत मनोभाव होते हैं और वे उसे दूसरों के सामने प्रगट भी करते हैं। माता पिता कठोर या कड़े मनोभावों को देखना पसन्द नहीं करते जैसे,क्रोध चिड़चिड़ाहट, चिल्लाना, लड़ना, रोना इत्यादि। वे उन्हें उनके बच्चों में ही कुचल देते या सीमित कर देते हैं। युवा लोग कहने की कोशिश कर रहे होते हैं कि,"मैं ऐसा हूँ!", "मैं सच में ऐसा महसूस करता हूँ!","मैं जैसा हूँ उसी रूप में मुझे स्वीकार कीजिए!" जवानों को अधिकतर ईमानदार या सच्चे सम्बन्ध चाहिए होते हैं, जबकि अभिभावक हमेशा सहज सम्बन्ध चाहते हैं।

यदि युवाओं की भावनाओं को कुचला जाता रहा तो, वे अपने मनोभावों को हर प्रकार के असामाजिक व अनुचित कार्यों या व्यवहारों जैसे झूठ बोलना, अपराध करना, नशीले पदार्थो का सेवान करना, यौन सम्बन्ध बनाना या झगड़े करना या सब प्रकार की भावनात्मक समस्याओं में जैसे, उदासी, सबसे अलग रहना, छिपा हुआ गुस्सा, कड़वाहट या बुरे व्यवहार में प्रगट करेंगे। इसलिए अपने बच्चों को अपने मनोभावों को प्रगट करने की आज़ादी दे, लेकिन उन्हें अपने मनोभावों को संयम, प्रेम और ईमानदारी के साथ बताने में उनकी सहायता करें।

परिपक्व सम्बन्धों को विकसित करना।

चर्चा। आप युवाओं की एक दूसरे पर आधारित सम्बन्धों को विकसित करने में किस प्रकार सहायता करेंगे?

ध्यान दें। बाइबल हर एक विश्वासी को किसी खास परिवार, किसी खास मण्डली या किसी खास समाज में वर्गीकृत करती है। बाइबल के परिदृश्य से वह किसी व्यक्ति को एक अलग ईकाई के रूप में नहीं देखती, जो स्वयं अपनी मर्जी से जीवन व्यतीत कर रहा हो, वरन लोगों को परिवार के एक सदस्य, मण्डली के एक सदस्य या फिर समाज में एक नागरिक के रूप में देखती है। बाइबल के दृष्टिकोण से हम सभी को एक दूसरे की जरूरत होती है, और हम सभी के पास एक दूसरे का जीवन सवारने के लिए एक अनोखी भूमिका दी गयी है।

उदाहरण के लिए: माता पिता व बच्चों को एक साथ मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, एक दूसरे के प्रति खुला होना चाहिए, और एक दूसरे से सीखना और एक दूसरे की सेवा करनी चाहिए।

अस्वस्थ सम्बन्धों के उदाहरण।

- कई माताएं बच्चों को हमेशा अपने ऊपर निर्भर बनाकर रखती हैं।
- कई व्यस्क बच्चे अपने आपको अपने माता पिता के नियन्त्रण व प्रभुता से आजाद कराने में असमर्थ होते हैं।
- कई पुरूष अपनी मंगेतर में अपनी मां को देखना चाहते हैं।
- कई स्त्रियां अपने दुर्बल पति या मंगेतर पर एक नर्स के समान तरस खाना चाहती है।
- बाइबल समलैंगिक विवाह का समर्थन नहीं करती और न हीं वह स्त्रियों या पुरूषों में समलैंगिकता को बढ़ावा देती है।

ग. पिता, अपने बच्चों का पालन पोषण परमेश्वर के वचनों व निर्देशों के आधार पर करो

सिखाएं। बच्चे की मां को प्रेम करना और बच्चों की परवरिश करना दोनों एक पिता की जिम्मेदारियां हैं!

- 'उन्हें परमेश्वर के वचनों की शिक्षा देने', का अर्थ है उन्हें बाइबल की सच्चाई के बारे में बताना।
- परमेश्वर के वचनों के आधार पर प्रशिक्षित करने' का अर्थ है, अपने बच्चों को बाइबल की सच्चाईयों का अभ्यास करना सिखाना।
- इस काम को पूरा करने के लिए माता ने भी पिता की सहायता करनी चाहिए (उत्पत्ति 2:18)।

अपने बच्चों को इस संसार में एक अच्छा नागरिक बनने की शिक्षा दें।

नीतिवचन 22:6; नीतिवचन 13:24; नीतिवचन 17:21 व 23:24; लूका 2:52; 1 कुरिन्थियों 13:4-8 तक पढ़ें।

खोजें व चर्चा करें। वे कौन से प्रमुख क्षेत्र हैं जिनमें अभिभावकों को अपने बच्चों को प्रशिक्षित करना चाहिए?

ध्यान दें। उनको उन मार्गों की शिक्षा दें जिसमें परमेश्वर उन्हें चलाना चाहता है। स्वस्थ परिवार ही एक स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

प्रशिक्षण देने का अर्थ। प्रशिक्षण का अर्थ है:

- सत्य का अपने व्यवहारिक जीवन में अभ्यास करना।
- सत्य का व्यवहारिक जीवन में इस्तेमाल करते हुए अभ्यास करना।
- उन कार्यों को बार बार करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- उन्हें अनुशासित करना व जरूरी हो तो उन्हें ताड़ना देना।

प्रशिक्षण के क्षेत्र। उन्हें खास तौप प्रशिक्षित करें:

- बुद्धिजीवी,शारीरिक,आत्मिक व सामाजिक परिपक्वता में।
- बुद्धिमान बनाने कि लिए
- प्रेम करने के लिए। 'प्रेम' का अर्थ धीरज, कृपा, शालीनता, नम्रता, उच्च आचरण,निस्वार्थ सेवा, संयम व क्षमा।

2. अपने बच्चों को परमेश्वर के राज्य के अच्छे नागरिक होने की शिक्षा प्रदान करें।

नीतिवचन 14:26 व 20:7; व्यवस्थाविवरण 6:4-9 **पढें।**

खोजें व चर्चा करें। माता पिता द्वारा निर्धारित किये गये उदाहरण का क्या महत्व होता है? बाइबल में प्रशिक्षण का क्या महत्व है?

ग.माता पिता के प्रति बच्चों की जिम्मेदारियां।

माता पिता के प्रति बच्चों की क्या जिम्मेदारियां हैं? बच्चों को यह जानना बहुत जरूरी है कि उनके माता पिता चाहे सिद्ध न हों परन्तु बहुमूल्य हैं। माता पिता अपने बच्चों को प्रेम करते हैं इसलिए उन्हें अच्छे अभिभावक बनने के लिए अपने बच्चों के सहयोग की आवश्यकता होती है।

इफिसियों 6:1-3;(कुलुस्सियों 3:20; नीतिवचन 23:22-25)।

खोजे व चर्चा करें। परमेश्वर अपने बच्चों को कौन सी खास जिम्मेदारियां प्रदान करते हैं?

ध्यान दें। ये दो जिम्मेदारियां दो उत्तम उपहारों के समान हैं जो आप अपने माता पिता को दे सकते हैं:

- अपनी जवानी के समय में आज्ञा पालन करना।
- और जब आप व्यस्क हो जाएं तो उनका आदर करना।

ड बच्चों परमेश्वर में अपने माता पिता की आज्ञा मानना

माता पिता की आज्ञा मानने के सन्दर्भ में तीन सच्चाईयां सिखाएं:

1.अपने माता पिता की उन आज्ञाओं का पालन करें जो बाइबल के विरूद्ध नहीं हैं।

मत्ती 10:37;(मरकुस 7:1-13; प्रेरितों 4:19-20; 5:29; 1 कुरिन्थियों 9:19-23)**पढें।**

चर्चा करें। किन परिस्थियों में आपको अपने माता पिता की बातों से बढ़कर यीशु की बातों को मानना चाहिए?

तथा किन परिस्थितियों में आप अपने अभिभावकों को प्रसन्न कर सकते हो?

ध्यान दें। अगर आपके माता पिता आपसे कुछ ऐसा काम करने के लिए कहते हैं जो परमेश्वर की दृष्टि में गलत है,या आपका परिवार यीशु मसीह पर विश्वास करने के लिए आपका सताता है और आपसे यीशु का इनकार करने के लिए कहता है, या वे आपसे किसी गैर मसीही व्यक्ति से विवाह करने के लिए जोर डालते हैं, तब *आप बढ़ी नम्रता के साथ* अपने माता पिता की बात मानने से इनकार कर सकते हैं। यदि आपका परिवार आपसे उन रीति रिवाजों को मानने के लिए कहते हैं जो बाइबल के विरूद्ध हैं तो आप उनसे विनम्रता के साथ मना कर सकते हैं। फिर भी, कुछ परम्पराएं, रीतियां व पारिवारिक नियम, जिन्हें आपका परिवार मानता है, बाइबल के खिलाफ नहीं हैं। उन बातों का पालन करने से आपके माता पिता को आदर मिलेगा।

2. जब तक आप छोटे बच्चे हैं निश्चय ही हर बात में अपने माता पिता की आज्ञा का पालन करें।

लूका 2:51 व मरकुस 3:20-21, 31-35 **पढ़ें।**

ध्यान दें। बाइबल हमें यह नहीं सिखाती कि आप जीवन भर अपने माता पिता की बात मानते रहें, लेकिन जब आप छोटे बच्चे होते हैं अर्थात जब तक आप व्यस्क नहीं हो जाते तब तक उनकी बात जरूर मानें! व्यस्क जीवन तब प्रारम्भ हो जाता है जब आप अपने माता पिता का घर छोड़ते हैं, या आप आगे को अपने माता पिता पर आश्रित नहीं रहते, या जब आपका विवाह हो जाता है। अत: अपने माता पिता की आज्ञा मानने का एक सीमित समय है, अर्थात आपके व्यस्क हो जाने तक। लेकिन अपने माता पिता का आदर करने की कोई समय सीमा नहीं है।

3. मसीही होने के कारण अपने माता पिता की आज्ञाओं को मानें।

'प्रभु में अपने माता पिता की आज्ञा मानें' का अर्थ यह नहीं है कि आप अपने माता पिता के मसीही होने पर ही आज्ञा मानें,लेकिन आपको उनकी आज्ञा इसलिए माननी है क्योंकि आप मसीही हैं।

च. बच्चें अपने माता व पिता का आदर करें।

सिखाएं। आदर करने का अर्थ: उच्च कोटि का सम्मान दें, उनकी बातों पर ध्यान दें, और बिना अरूचि,स्वार्थ या भय के उन्हें प्रेम करें। निम्नलिखित उदाहरण सभी लोगों के लिए उनके माता पिता, सास-ससुर व परमेश्वर पिता के साथ सम्बन्ध बनान को ध्यान में रखकर दिये गये हैं। पांच ऐसे तरीके हैं जिससे आप अपने माता-पिता, सास-ससुर व सबसे बढ़कर अपने परमेश्वर पिता का आदर या अनादर कर सकते हैं।

चर्चा करें। अपने माता पिता, सास ससुर व सर्वोच्च भाव में अपने पिता परमेश्वर का आदर करने के पांच तरीकों पर चर्चा करें।

1. अपने माता पिता से बहस न करके उनका आदर करें।

जब आप अपने माता पिता से किसी ऐसी बात पर बहस करते हैं जिसका कोई आत्मिक मतलब नहीं होता तो आप उनका अनादर करते हैं। उदाहरण के लिए, उनसे इस बात पर बहस न करें कि कौन से कपड़े पहनने के लिए उपयुक्त हैं, या कौन सा टेलिवीजन का कार्यक्रम देखना चाहिए या किसे घर के कुछ विशेष काम करने चाहिए। बहस करने से यह संदेश जाता है कि उनके विचार बेकार हैं।

आप किस तरह से सकारात्मक तौर पर अपने माता पिता का आदर कर सकते हैं? अपनी बात को विनम्रता के साथ सबके सामन रखकर परमेश्वर को अवसर दें कि वह अपने पसन्दीदा तरीके से काम करे। इस तरह आप यह दर्शाते हैं कि विश्वास करते हैं कि परमेश्वर हर एक परिस्थिति पर नियन्त्रण रखता है और परमेश्वर आपके हित के लिए सर्वोत्तम काम कर सकता है।

2. अपने माता पिता से सुझाव मांगकर व उसकी सलाह को गम्भीरता से लेकर उनका आदर करें।

आप जब अपने माता पिता के सुझावों को अस्विकार करते व उनकी सलाह पर ध्यान नहीं देते तो आप उनका अनादर करते हो। जब आप अपने रूतबे को सुरक्षित रखते हुए उन्हें यह दर्शाने की कोशिश करते हैं कि उनके विचार या सलाह तो सुनने के काबिल भी नहीं हैं, तो आप उनका अनादर करते हैं।

आप सकारात्मक तौर पर अपने माता पिता का आदर किस प्रकार से कर सकते हैं? जब कभी आपके माता पिता आपको सुझाव या कोई सलाह दें,उनसे जरूर सीखें। जब भी कभी आपको मौका मिले तो आप उनके पास बैठकर उनके वर्षों के अनुभव से सीखकर बुद्धिमान बनें। खास तौर पर उन क्षेत्रों से सीखें जिनमें वे माहिर थे, उनकी योग्यताओं,उनके कौशल, उनके ज्ञान से सीखने का प्रयास करें। कई माता पिता को योजना बनाने व प्रबन्ध करने,व्यापार करने व धन की बचत करने,खाना बनाने व किसानी करने में महारथ हासिल है। दूसरों को अगुवाई करने, शिक्षा देने, सलाह देने और सेवा करने में महारथ हासिल है। आप अपने माता पिता से सलाह मांगकर और उने सीखकर उनका आदर करते हैं।

3. अपने व्यवहारिक जीवन में अपने माता पिता को शामिल करने के द्वारा उनका आदर करें।

जब आप अपने माता पिता को अपने विचारों, भावनाओं और अपने कामों से दूर रखते हैं तो आप उनका अनादर करते हैं। आप तब भी अपने अपने अभिभावकों को अनादर करते हैं जब आप अपने अभिभावकों को अपनी योजना के बारे में नहीं बताते या आप उनका अपनी योजना के प्रति कोई विचार प्रगट करने का कोई अवसर प्रदान नहीं करते। जब आप अपने माता पिता को अपने आनन्द व अपने दु:खों, अपनी खुशी व अपने गमों में शामिल नहीं करते हैं तो आप उनका अनादर करते हैं। अपने जीवन व अपनी योजनाओं से अपने माता पिता का दूर रखना उन्हें यह जताता है कि वे इन सब बातों में शामिल किये जाने के योग्य नहीं हैं।

आप सकारात्मक तौर पर अपने माता पिता का आदर किस प्रकार से कर सकते हैं? अपने माता पिता को अपनी योजनाओं के बारे में बताएं। यह करना काफी कठिन काम है,लेकिन अपने अभिभावकों का आदर करने का यह सबसे बेहतर तरीका है। उन से बात करने की पहल करें। उन से अपनी गतिविधियों के बारे में बातें करें: अर्थात आपने आज स्कूल या कार्य करते समय क्या किया, आप अपने मित्रों व मण्डली के साथ क्या करते हैं। उनसे अपने मत के विषय में बातचीत करें: अर्थात परमेश्वर,लोगों और संसार के बारे में बात करें। अपने मसीही विश्वास के बारे में उनसे बातचीत करें। उन्हें बताएं कि आप क्या सोचते हैं, कैसा महसूस करते हैं और क्या करना चाहते हैं। अपने माता पिता को अपनी योजनाओं में शामिल करके आपको उनका आदर करना चाहिए। अपने अभिभावकों के अनुभवों व उनकी बुद्धिमानी का आदर करें व उनसे सलाह मांगें। चाहे आपका अन्तिम निर्णय उनकी सलाह के अनुसार न हो तब भी उन्हें यह महसूस हो कि आपने उनकी बातों को सुना था और उनके विचारों को गम्भीरता से लिया है। अपने प्रारम्भिक काल में, आप प्रति सप्ताह की खबर दे सकते हैं कि किस तरह से आप प्रगति कर रहे हैं। तदपश्चात यदि जरूरी हुआ तो, वे आपके आर्थिक निर्णयों के साथ समायोजन कर सकते हैं और यह खबर उनके लिए यह खबर हैरान करने वाली नहीं होगी।

4. अपने माता पिता व दूसरों की सेवा करने के द्वारा अपने अभिभावकों का आदर करो।

आप अगर बेमन या उनके कहने पर ही अपने माता पिता की सेवा करते हैं तो आप उनका अनादर करते हैं। आप चाहते हैं कि वे पहल करें। अगर वे आपसे कुछ न कहें तों आप वास्तव में उनके लिए कुछ नहीं करते। आप कभी भी स्वच्छा से उनके लिए कोई काम नहीं करते हैं। आप अपनी जवानी की ताकत का इस्तेमाल अपने माता पिता के बोझ को उठाने के लिए इस्तेमाल नहीं करना चाहते। आप किस तरह से सकारात्मक रूप में अपने अभिभावकों का आदर कर सकते हैं? अपने भीतर यह आदत बनाये कि अपने आप सेवा करन के मौके को ढूढ़ें, देखें कि क्या किसी को सहायता की जरूरत है और यदि आप कुछ ऐसा काम कर सकते हैं जो कोई और नहीं करना चाहता या कर नहीं सकता तो उसे करें। सेवा व सहायता करने के लिए पहल करें अपने माता पिता के आदेश का इन्तज़ार न करें।

अपने व्यवहार में एक आदर्श बनें। घर में अपने भाई बहनों के साथ अच्छा रिश्ता बनाकर रखें। बिना किसी के कहे घर के कामों में अपनी जिम्मेदारी को पूरा करें। अपने घर के बाहर,सजग व जिम्मेदार रहें। अपनी पढ़ाई व नौकरी में मेहनत करें। मेहनत करें। किस प्रकार के लोगों से आपको दोस्ती है, किस तरह की जगहों पर आप जाते हैं, आप कैसे काम करते हैं या नहीं करते हैं, इन सारी बातों का आप आपके माता पिता के एहसास पर काफी बड़ा प्रभाव पड़ता है।

5. प्रेम करने के द्वारा अपने माता पिता का आदर करें।

यदि आप अपने माता पिता को सांस्कृति तौर तरीकों को पूरा करने के लिए प्रेम करते हैं, जैसे कभी कभी उनसे मिलने जाना,उन्हें कुछ उपहार देना या उनकी इच्छाओं को पूरा करना आदि, तो आप उनका अनादर करते हैं। आप तब भी अपने माता पिता का अनादर करते हैं जब आप इन औपचारिक कामों को पुत्र के कर्तव्य मानकर बुरे स्वभाव या उदासीनता के साथ करते हैं। यदि आप किसी अनोखें ढंग से उनसे यह कहना बन्द कर देते हैं कि "मैं आपकी सराहना करता हूँ" आप उनका अनादर करते हैं। यदि आप उनसे कभी नहीं कहते की आप उनकी प्रसंशा करते हैं या उनका सम्मान करते हैं या आपके उनके तहे दिल से उन सारे कामों के लिए आभारी हैं जो उन्होने बीते दिनों में आपके लिए किये हैं, तो आप उनका आदर करते हैं। अगर आप उनकी गलतियों को लेकर असहनशील होते हैं और उनकी गलतियों पर उन्हें बदतमीजी से डांट देते हैं तो आप उनका आदर करते हैं। यदि आप उनकी गलतियों के लिए उन्हें कभी माफ नहीं करते, बल्कि लगातार उनसे गुस्सा रहते हैं वरन उन्हें बदले में चोट पहुंचाना चाहते हैं तो आप उनका अनादर करते हैं। ये सारी बातें आपके माता पिता को दर्शाती हैं कि आप उन्हें प्रेम नहीं करते।

अभिभावकों का अनादर उन्हें गहरी चोट पहुँचाता है। अभिभावकों का अनादर करने के सभी तरीके आपके अभिभावकों को यह बताते हैं कि आप उन्हें आदर का पात्र नहीं मानते हैं। जब आपके माता पिता गैर-मसीही हों तब ये तरीके अति कारगर साबित होते हैं, इस प्रकार का आचरण कहता है कि,"आप मसीह में नहीं हो,इसलिए आपके विचार हम मसीहियों के लिए कोई मायने नहीं रखते।" या "क्योंकि आप मसीह में नहीं हो,मैं आपको प्रेम नहीं कर सकता।" जब कोई पुत्र या पुत्री मसीह को अपना लेता है, तो बहुत से गैर विश्वासी अभिभावक डरने या सन्देह करने लगते हैं कि अब उनका सम्बन्ध उनके बेटे या बेटी से टूट जाएगा। इसलिए बेटे या बेटी के द्वारा गुस्से में किया गया काम उनकी हारने या अस्विकार किये जाने के मनोभाव की पुष्टि कर देता है। उनका व्यवहार बेमतलब तो जरूर होगा, मगर वह उनकी मनोदशा को पगट कर देता है।

आप अपने अभिभावकों का सकारात्मक रूप में किस प्रकार आदर कर सकते हैं? सच्चा मसीही प्रेम सामाजिक कर्त्तव्यों से भी परे काम करता है। सच्चा मसीही प्रेम गलतियों को सह लेता है और आपके प्रति की गयी बुराईयों को क्षमा कर देता है।

अपने माता पिता को समझने की कोशिश करें। उन तौर तरीकों को समझने का प्रयास करें जिनमें उनके माता पिता ने उनकी परवरिश की थी, उनके अभिभावक व परिवार के दूसरे सदस्यों के साथ उनके जीवन व रिश्तों में उन्होंने कितने कष्टों का अनुभव किया है। उनके मूल्यों को समझने का प्रयत्न करें, खास तौर पर धन व जीवन शैली, शिक्षा व प्रतिष्ठा, सच बोलने व ईमानदारी आदि के क्षेत्र में। समझने का प्रयास करें कि किस प्रकार के नियमों, संस्कृति,धार्मिक धारणों में उन्होंने अपना जीवन व्यतीत किया और इससे उनके विचारों, भावनाओं और व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ा। समझें कि वे विभिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार की प्रतिक्रिया करते हैं, जैसे वैवाहिक झगड़ों में, बच्चों के अनुशासन को लेकर,काम का दबाव पड़ने पर, यदि किसी चीज़ का नुकसान हो जाए या कोई गुज़र जाए तो या फिर जब किसी के द्वारा अन्याय किया जाए। और वे इस तरह की प्रतिक्रिया क्यों देते हैं। खास तौर पर उनकी गलतफहमियों व भय को समझने का प्रयास करें, खास तौर पर आप को लेकर, जब से आप मसीही बने हैं।

जब आप मसीही बनते है, तो आम तौर पर अभिभावकों को डर रहता है कि यीशु मसीह के प्रति आपका समर्पण और नकारात्मक रूप में प्रभावित करेगा। वे डरते हैं कि अब आप अपनी पढ़ाई अच्छे ढंग से नहीं करेंगे, अब आपको कोई अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी, आप जीवन में सफल नहीं हो पाओगे और अब आप कम पैसे कमाओगे और आप अपने आर्थिक तौर पर अपने माता पिता को सहारा नहीं दे पाओगे। उन्हें डर रहता है कि आप अपनी संस्कृति को खो देगे जिससे उनके धर्म की बदनामी होगी। तरीके के साथ उन्हें अपने मसीही विश्वास के बारे में बताएं और उन्हें साबित करके दिखाएं कि अब आप पहले से ज्यादा जिम्मेदार है और आपके जीवन में यीशु मसोह के काम करने के कारण आप और भी अधिक प्रेम करने वाले व्यक्ति बन गये हैं।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज सीखी गयी सभी बातों के आधार पर परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए समूह में छोटी प्रार्थना करें।
या समूह को दो दो या तीन के समूह में बांट लें और फिर सीखी गयी बातों के आधार पर प्रतिउत्तर देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ मिलकर "माता पिता व बच्चों के बीच सम्बन्ध" की शिक्षाओं के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: नहेमायाह 4,8,9,व 10 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन। घर में ही अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। इफिसियों 6:10-20। शीर्षक: संसार में आत्मिक युद्ध। बाइबल अध्ययन में दिये गये पाँच कदमों को इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय42

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **नहेम्याह 4,8,9,10**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पाढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (नहेम्याह 4,8,9,10)से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[शिष्यता]* **सेवा: मरकुस10:45**

क-ध्यान करना

मरकुस 10:42-45 **पढ़ें।** "तो यीशु ने उनको पास बुलाकर उनसे कहा," तुम जानते हो कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनमें जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं। पर तुम में ऐसा नहीं है,वरन जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने; और जो कोई तुम में प्रधान होना होना चाहे,वह सब का दास बने। क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौतो के लिए अपना प्राण दे"

निम्नलिखित याद करने वाले पद को वचन को श्वेत/श्याम पट लिखें।

सेवा मरकुस 10: 45
क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे । मरकुस 10:45

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पर लिखें:

1.अन्यजातियों के हाकिम लोगों पर प्रभुता करते हैं।

संसार से बहुत से अगुवे आज किस प्रकार से शासन करते हैं? यीशु ने कहा कि संसार में बहुत से अगुवे अगुवा होने का दावा करते हैं लोग भी उन्हें अगुवा मानते हैं परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वे अगवे नहीं हैं। उन्हें अगुवा होना चाहिए था परन्तु वे सच्चे अगुवे बनने में असफल हो जाते हैं। यीशु मसीह इस बात को थोड़ा व्यगांत्मक ढंग से कहते हैं। यदि ये अगुवे वास्तव में अगुवे होते तो उनकी जीवन शैली बिल्कुल भिन्न होती।

संसार के अगुवे अपनी सारी ताकत ऊँचाई तक पहुंचने में लगा देते हैं, और जब वे उस ऊंचाई तक पहुँच जाते हैं, तो वे चाहते हैं कि सभी लोग उनके उस रुतबे का सम्मान करें। वे केवल अपने बारे में ही सोचते हैं, लेकिन जिन लोगों की वे अगुवाई करते हैं उनके बारे में नहीं सोचते। वे अपने अधिकार के नीचे आने वाले लोगों पर कठिन नियमों को लागू करते हैं। वे अपने अनुयायियों या विश्वासियों के जीवन के हर क्षेत्र पर अपना अधिकार समझते हैं। वे लोगों स जबजस्ती उन बातों पर विचार करना,विश्वास करना और बुलवाना चाहते हैं जो वह जो उन्हें अच्छे लगते हैं। वे अधिकतर ऐसा व्यवहार करते हैं मानों वे खुद परमेश्वर हैं और उनसे बड़ा अधिकारी कोई और है ही नहीं। या वे इस प्रकार का दावा करते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें यह अधिकार दिया है इसलिए यदि लोग उनकी आज्ञा का पालन नहीं करते तो वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं करते। इस प्रकार की अगुवाई को यीशु मसीह प्रभुता करना कहते हैं।

2. यीशु के चेलों को लोगों का सेवक होना चाहिए।

मसीही अगुवों को किस प्रकार से अगुवाई करनी चाहिए? यीशु मसीह ने स्पष्ट कहा है कि मसीही अगुवों को सांसारिक अगुवों के समान अगुवाई नहीं करनी चाहिए! उन्हें कहा 'तुम्हारे बीच में ऐसा नहीं होना चाहिए'। यीशु ने शिक्षा दी कि जो कोई तुम में से महान होना चाहता ह वह सबका दास बने और जो कोई तुममे से पहला होना चाहता है वह सबका सेवक बने। यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर के राज्य में सेवा के द्वारा ही महानता प्राप्त होती है। महानता प्राप्त करने का यह सूत्र संसार में चालित सूत्र का बिल्कुल विपरीत है। यीशु ने सिखाया कि नि:स्वार्थ भावना के साथ देने के द्वारा कोई व्यक्ति महान बनता है। महानता दूसरों के लिए अपने जीवन को उण्डेल देने में है,न कि दूसरों को अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए इस्तेमाल करने में।

गुलाम शब्द का अर्थ बहुत नकारात्मक है। एक गुलाम के पास कोई आज़ादी नहीं होती,उसे कई बार नापसन्द आने वाले काम भी करने पड़ते हैं, उसके साथ बड़ी क्रूरता के साथ बर्ताव किया जाता है,इत्यादि। इस अनुच्छेद में, गुलाम का अर्थ नौकर के सामान्तर है इसलिए इस नाम को धारण करने वाला व्यक्ति नम्र होना चाहिए। इसका अर्थ है कि मसीही अगुवा आज़ादी व स्वेच्छा से सेवा करता है। यीशु मसीह का अर्थ यह नहीं था कि मसीही अगुवों के साथ क्रूरता व अनादर के साथ व्यवहार करना चाहिए। जबकि किसी पिरामिड के शिखर पर खड़ा एक व्यक्ति इस संसार की अगवाई का प्रतीक है, वहीं पिरामिड की सतह या जड़ पर खड़ा व्यक्ति मसीही अगुवाई को प्रदर्शित करता है। मसीही अगुवे पिरामिड के तल पर खड़े होकर लोगों की सेवा करते हैं। इसलिए मसीहियत में सबसे महान बात प्रेम के साथ लोगों के सेवा करना है।

3. यीशु मसीह का सच्चा उदारहण।

यीशु ने सेवा करने के द्वारा अगुवाई की । यीशु मसीह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है(प्रकाशितवाक्य 19:16) और फिर भी उसके प्रथम आगमन के वक्त, वह लोगों से अपनी सेवा टहल करवाने के लिए नहीं, वरन उनकी सेवा करने क लिए आया! यीशु ने लोगों की सेवा करके अगुवाई की। उसने अपने जीवन को लोगों के बदल फिरौति के दाम के रूप में दे दिया।

फिरौति की रकम।

- फिरौति की रकत क्या है? फिरौति वह रकम है जो गुलामों को आज़ाद करवाने के लिए अदा की जाती थी। यीशु ने फिरौति की रकम के रूप में जा दाम चुकाया था वह खुद उसका प्राण था। यह हमारे बदले में किया गया प्रायश्चित था। केवल वह ही बलिदान था जिस परमेश्वर ने स्वीकार किया।
- यीशु ने किस यह फिरौति की रकम दी? उसने यह रकम शैतान को नहीं दी, भले ही लोग शैतान के बन्धन में थे। उसने यह फिरौति परमेश्वर को दी, ताकि बहुत से लोगों के पापों के कारण उत्पन्न हुए परमेश्वर के क्रोध से उनको बचाया जा सके। दूसरों शब्दों में कहा जाए तो: एकमात्र परमेश्वर, जिसने मनुष्य का रूप धारण किया, जिसने इस जगत और यीशु मसीह के इतिहास में प्रवेश किया, और हमारे पापों के लिए निर्धारित दण्ड को अपने ऊपर ले लिया।
- इस छुड़ौति से संसार में किसको लाभ हुआ? हालांकि उसकी फिरौति संसार के सारे लोगों के लिए काफी थी, लेकिन संसार के सारे लोगों को उसकी फिरौति से लाभ नहीं पहुंचता। उसकी फिरौति संसार के सभी लोगों के लिए फायदेमन्द नहीं है। उसने जगत के सारे लोगों के लिए नहीं वरन बहुत से लोगों के लिए प्राणों को दिया। वे बहुत से लोग कौन हैं? यशायाह 53:8 में लिखा है, " *बहुत से लोगों के अपराधों के कारण* उस पर मार पड़ी"। मत्ती 1:21 में लिखा है " तुम उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके *पापों से उद्धार करेगा।*" यूहन्ना 6:39 में यीशु ने कहा, " मैं उन में से मैं कुछ भी न खोऊँ, *जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया है* "। प्रेरितों के काम में लिखा है, " यीशु ने *कलीसिया को अपने लहू से मोल लिया है।*" रोमियों 8:32-33 में लिखा है, "उसने यीशु का हम सब के लिए दे दिया" अर्थात उनके लिए "उनके लिए जिन्हें परमेश्वर ने धर्मी ठहराया है।" यद्यपि यीशु ने अपना हर एक जन के लिए नहीं दिया, लेकिन यह भी सत्य है कि उसने ऐसा कुछ ही लोगों के लिए नहीं वरन बहुत से लोगों के लिए किया है। प्रकाशितवाक्य 7:9 में हम पढ़ते हैं कि यूहन्ना एक *बड़ी भीड़ को देखता है जिसे कोई गिन नहीं सकता, जिसमें हर जाति, हर भाषा और हर देश के लोग* यीशु व परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े हुए थे।

4. बाइबल से सेवा।

मैनुएल 12 के 14 परिशिष्ट में मसीही सेवा के सन्दर्भ में पाये जाने वाले विश्वासयोग्य व अविश्वासयोग्य दासों के दृष्टान्त के अध्ययन को देखें।

ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***

2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** सेवा: मरकुस 10:45

3) ***पुन: अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बंटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) *[संसार में जीवन बिताना]* **संसार में आत्मिक युद्ध : इफिसियों 6:10-20**

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए इफिसियों 6:10-20 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर इफिसियों 6:10-20 को एक साथ पढ़ें।
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढं।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

***ध्यान दें।* इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**
या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?

लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हों। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।

(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँटे गयें विचार एक ही समान हों।

6:12

खोज 1. शतान व उसकी दुष्टात्माओं की सेना वास्तविक शत्रु है।

वह मुझे गिराने और हराने की हर सम्भव योजना बनाते हैं। कुछ ऐसे विशेष दिन हैं जिन में ये बुराईयों की शक्तियां मुझ पर आक्रमण करती है। इसलिए मैं बाइबल में से इन शैतानी शक्यिों की युक्तियों के बारे में सीखता हूँ। परमेश्वर के लोगों के हृदय और जीवन से परमेश्वर के वचन को दूर रखना उसकी एक चाल होती है(लूकार 8:12)। वह हमेशा लोगों से झूठ बोलता है(यूहन्ना 8:44)। वे लोगों के मनों को अंधा कर देता है जिससे वे सुसमाचार को समझ नहीं पाते(2 कुरिन्थियों 4:3-4)। वह लोगों को यह विश्वास दिलाने की कोशिश करता है कि बुरे काम करने के बाद भी भले चीज़ों को प्राप्त किया जा सकता है(लूका 4:6-7)। वह बाइबल को गलत तरीके से इस्तेमाल करता है(लूका 4:6)। वह झूठे व दुष्ट लोगों को चर्च में रख देता है (मत्ती 13:37-41)। वह लोग को यौन सम्बन्धी पाप करने के लिए उत्साहित करता है,खास तौर से जब वे संयम खो बैठते हैं(1कुरिन्थियों 7:5)। वह झूठे शिक्षकों के द्वारा सब लोगों के बीच में झूठी शिक्षाओं को फैलाता है। (1तीमुथियुस 4:1-3)।

6:11

खोज 2. सर्वश्रेष्ठ अनुग्रह और मानवीय जिम्मेदारियों के बीच में सम्बन्ध।

एक तरफ तो, सारे आत्मिक हथियार, जिसमें परमेश्वर के सारे हथियार शामिल हैं, परमेश्वर की ओर से मिलते हैं। परमेश्वर ने इन हथियारों को तैयार करके अपने योद्धाओं को दे दिया है। दूसरी ओर, मसीही लोगों ने इन हथियारों को धारण करके इन हथियारों का आक्रामक व रक्षात्मक दोनों तरीकों से इस्तेमाल करना चाहिए। अत: आत्मिक युद्ध में मैं एक तरफ तो पूरी रीति

से परमेश्वर व परमेश्वर के हथियारों पर निर्भर होना, वहीं दूसरी ओर युद्ध करने के लिए पूरी तरह से समर्पित होना चाहता हूँ। मैं अपनी ताकत में नहीं परन्तु परमेश्वर की शक्ति में बलवन्त होना चाहता हूँ। मैं बुराई की शक्तियों के विरूद्ध मज़बूती से खड़ा होना चाहता हूँ।

कदम 3 प्रश्न	व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?
आईये हम इफिसियों 6:10-20 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं और फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछें।
लेखा लेः सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बाँटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)
चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये हैं)

6:12

प्रश्न1. आत्मिक युद्ध क्या है(हमारा संघर्ष)?

ध्यान दें। बाइबल कहती है कि हमारी लड़ाई लोगों से नहीं, परन्तु बुरी आत्मिक शक्तियों से है। हाकिम, अधिकारी और शक्तियां अलग अलग प्रकार बुरी शक्तियां हैं जो शैतान के चगुंल में हैं और जो इस धरती पर बुरे लोगों के द्वारा कार्य करती है। बुरी शक्तियों का आवास स्वर्गीय स्थानों में है, जो जगत के ऊपर पाया जाने वाला इलाका है, लेकिन यह क्षेत्र स्वर्ग के उस क्षेत्र से नीचे है जहां पर छुड़ाये हुए लोग वास करते हैं। ये बुरी आत्माएं असल में गिराये गये स्वर्गदूत हैं। इसी कारण वर्तमान में वे जीवते परमेश्वर और उसके द्वारा लोगों में किये गये कामों का विरोध करते हैं।

आत्मिक युद्ध को शारीरिक युद्व नहीं है; इस मतलब सेनाओं, या हथियारों या लोगों को घात करने के लिए आतंक से नहीं है। आत्मिक युद्ध का पवित्र लड़ाई या जिहाद से भी नहीं है। आत्मिक युद्ध को संसारिक तरीकों से अर्थात शारीरिक हथियारों या मानवीय युक्तियों के द्वारा नहीं लड़ा ला सकता है। आत्मिक युद्ध को आत्मिक हथियारों के साथ, परमेश्वर की आत्मिक शक्ति की सहायता से ही लड़ा जा सकता है। आत्मिक युद्ध का अर्थ है कि आपको दुष्ट आत्माओं की गतिविधियों व उसकी युक्तियों से सक्रिय रूप में लड़ना है जो बुरे लोगों व बुरी प्रणाली के द्वारा इस संसार में कार्य करती है। आत्मिक युद्ध का उद्देश्य एक ओर तो शैतान के आक्रमण के बावजूद भी मज़बूती से खड़े रहना तथा दूसरी ओर उसके नियन्त्रण से भूमि और लोगों को स्वतन्त्र करवाना।

6:14

प्रश्न 2.सत्य का पटुका क्या है जिसे हमें अपनी कमर के चारों ओर बांधना है?

ध्यान दें।

शारीरिक युद्ध में, बैल्ट या कमरबन्द को रोमी सैनिकों की छोटी पतलून को मजबूती से कसने के लिए बांधा जाता था। जिसके कारण योद्ध के हाथ व पांव लड़ने के लिए स्वतन्त्र हो जाते थे। जब कभी वह युद्ध में सक्रिय नहीं होता था तो वह योद्धा अपने कवच और अपनी तलवार को अपनी कमरबन्द के साथ जोड़ देता था।

आत्मिक युद्ध में, कमरबन्द सत्य, ईमानदारी, इच्छा को दर्शाता है। मसीही योद्धा के लिए मुख्य प्रश्न यह है कि, " क्या वह वास्तव में आत्मिक युद्ध में लड़ाई लड़ना चाहता है? क्या मैं आत्मिक युद्ध को लड़ने के लिए इच्छुक हूँ?" सत्य का पटुका मसीही योद्धाओं के लड़ने की प्रेरणा व इच्छा है। सच्चाई एक सामर्थी हथियार है। सच्चाई से प्रेरित व्यक्ति किसी कपटी से ज्यादा लोगों को प्रभावित करता है। न्यायियों 7:3 में हम पढ़ते हं कि लगभग दो तिहाई सेना घर वापस लौट गयी, क्योंकि वे सच में युद्ध पर जाने के लिए तैयार नहीं थे। लेकिन गिदोन और सच में प्रेरणा पाये हुए तीन सौ लोगों ने एक बड़ी सेना को हरा दिया।

6:14

प्रश्न 3. धार्मिकता की झिलम क्या है जिसे हमें पहिनना चाहिए?

ध्यान दें।

शारीरिक लड़ाई में, झिलम या कवच एक ऐसा हथियार था जो रोमन सिपाही के गले से लेकर जांघों तक के भाग को पूरे तरह से ढांप लेता था। इसके दो भाग हुआ करते थे एक अगले हिस्से को ढांपता था और दूसरा पिछले हिस्से को(1 शमूएल 17:5,38 हथियार रूपी कवच)। जिसकी वजह से सिपाही के मुख्य अंग जैसे हृदय, फेफड़े आदि सुरक्षित रहते थे।

आत्मिक युद्ध में, झिलम का अर्थ धार्मिकता से है। यह वह धार्मिक पद नहीं है जो परमेश्वर विश्वासियों को प्रदान करता है,लेकिन यह वे धार्मिक कार्य हैं जो परमेश्वर हमें एक पवित्र व नैतिक जीवन जीने के लिए प्रदान करता है। मसीही सिपाही के लिए प्रमुख प्रश्न यह है,"क्या मैं इस प्रकार का नैतिक व धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहा हूँ जिसके बल पर मैं किसी आत्मिक युद्ध का हिस्सा हो सकूँ? धार्मिकता की झिलम मसीही सिपाही के लड़ने की नैतिक व आत्मिक योग्यता है। नैतिक व धार्मिक जीवन व्यतीत किये बिना एक मसीह अपने उद्धार को लेकर कभी सुनिश्चित नहीं हो सकता,उसके पास शैतान के आरोपों से बचने के लिए कोई सुरक्षा नहीं होती, और उसे शक्ति व प्रार्थना के प्रभाव में अभाव महसूस होता है(याकूब 5:16)। नैतिक व धार्मिक जीवन के बिना वह आत्मिक युद्ध में अप्रभावशाली होगा। लेकिन धार्मिक आचरण आक्रमण व बचाव करने के लिए एक सामर्थी हथियार होता है। उदाहरण के लिए, 2 कुरिन्थियों 6:6-7 में हम पढ़ते हैं कि धार्मिकता के हथियार हमें दायें व बायें से होने वाले शैतान के आक्रमण का सामना करने के लिए हमें योग्य बनाते हैं। यह लड़ाई शुद्धता,धीरज,भलाई,सच्चे प्रेम व सत्य वचन के क्षेत्र में हैं। सही तरीके का जीवन सिपाही का युद्ध में मज़बूती प्रदान करता है।

6:15

प्रश्न 4. तैयारी के जूते क्या हैं जिन्हें हमारे लिए पहिनना जरूरी है?

ध्यान दें।

शारीरिक लड़ाई में,रोमी सिपाहियों को ऐसे जूते पहिनने की आदत थी जिसका तले में मोटी कीलें लगी हुई थी जिससे सिपाहियों को कठोर रोमी सड़क पर चलने में सहायता मिलती थी। जिससे सिपाही लम्बी दूरी तय करने के लिए पूरी तरह से तैयार होता था। जिसके कारण वह तेजी से और युद्ध के समय में बहुत दूर तक चल सकता था। इतिहास में हमें पता चलता है कि जूलियस सीज़र की सेना छोटे समयान्तराल में ही लम्बी दूरी तय कर लेते थे जिससे दुश्मन की सेना को बार बार सुरक्षा करने तक का समय नहीं देते थे।

आत्मिक क्षेत्र में, जूते पूरी तरह से तैयार होने को दर्शाते हैं। यह तैयारी शान्ति के सुसमाचार के द्वारा होती है। सुसमाचार परमेश्वर और मनुष्य के बीच तथा दूसरे साथी सिपाही के साथ अच्छे सम्बन्ध को स्थापित करने में सहायता करता है। यह उसे परमेश्वर के साथ शान्ति, अपने पड़ोसी के साथ शान्ति और उसके जीवन के टूटे रिश्ते में पूरी तरह से बहाली का प्रदान करता है। इस दशा में मसीही सिपाही के लिए सबसे प्रमुख प्रश्न यह होता है," क्या मैं इस आत्मिक लड़ाई में कूदने के लिए पूरी तरह से तैयार हूँ?" तैयारी के जूते मसीही सिपाही की तुरन्त काम करने की पूर्ण तैयारी को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, वह धनी जिसने केवल अपनी धन सम्पत्ति को ही बढ़ाने की चिन्ता की लेकिन वह किसी दृष्टिकोण से मरने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं था(लूका 12:13-21)। वह प्रबन्धक जिसे स्वामी ने अपनी समपत्ति पर अधिकारी ठहराया था,वह अपना समय व्यर्थ गवांते हुए खाने पीने में लग गया, और पूरी तरह से अपने स्वामी के आगमन के लिए तैयार नहीं था(मत्ती 24:45-51)।

6:16

प्रश्न 5. विश्वास की ढाल और शैतान के जलते हुए तीर क्या हैं?

ध्यान दें।

शारीरिक युद्ध में, रोमी ढाल आकार में आयताकार थी, जिस पर चमड़ा चढा हुआ करता था और जिसका आकार 120/75 का हुआ करता था। उसे शत्रुओं के तीरों से हृदय, फेफड़ों आदि शरीर के प्रमुख भागों की सुरक्षा करने के लिए तैयार किया गया था, जिन्हें छोड़े जाने से पहले डामर में डुबोकर उसमें आग लगा दी जाती थी। जब वे तीर आकर ढाल से टकराते थे तो उनकी धार खुटटल हो और आग बुझ जाती थी।

आत्मिक लड़ाई में, जलते हुए तीर शैतान व उसके बुरे लोगों द्वारा किये जाने वाले आक्रमण को दर्शाते हैं। उनके तरकश पूरी तरह से अग्निमय तीरों से अर्थात सताव व मुश्किलों से भरे होते हैं। कई तीर तो लोगों के मनों में शक,संन्देह,भय,वेदना,लालच,व्यर्थता,डाह,या अभिलाषा आदि पैदा करने के लिए होते हैं। कई बार वे अच्छे पौधों के बीच में जंगली पौधों के समान, कलीसिया में परमेश्वर के लोगों के बीच में बुरे लोगों को परेशानियां खड़ीं करने के लिए भेज देता है(मत्ती 13:25,38)। कई बार उनकी बातें विनाशक तीर के समान होती हैं जो सत्य, आत्मविश्वास और अच्छे नाम को चुगली व बदनामी के द्वारा नाश कर देते ह(यिर्मयाह 9:8)।

आत्मिक युद्ध में, ढाल विश्वास को प्रगट करती है। यह विश्वास केवल मसीही विश्वास(विषयपरक)होने की बजाय सक्रिय रूप में मसीही विश्वास होता है(व्यक्तिपरक विश्वास)। यह विश्वास भरोसा करता है कि परमेश्वर का वचन और उसके वायदे सच्चे हैं और वे कभी टलते नहीं हैं। विश्वास हमेशा आक्रामक व रक्षात्मक दोनों ही होता है। मसीही सिपाहियों के लिए प्रमुख प्रश्न यह है कि,"क्या मैं शैतान व उसके बुरे लोगों के आक्रमणों से बचाव करने के लिए व और संसार में विजय प्राप्त करने के लिए अपने विश्वास का सक्रिय रूप में इस्तेमाल कर रहा हूँ?" विश्वास की ढाल मसीही सिपाही की खुद की सुरक्षा करन की योग्यता है। उदाहरण के लिए, जब याईर की बेटी मर गयी थी,यीशु ने उसे भयभीत न होने के लिए, वरन यह विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया कि उसकी बेटी पुन: जी उठेगी(लूका 8:49-50)। इसके अलावा मसीही सिपाही के लिए विश्वास की ढाल का अर्थ शैतान के इलाके में आक्रमण करके उस क्षेत्र पर विजय प्राप्त करने की योग्यता है। 1 यूहन्ना 5:4 में विश्वास वह विजय है जिसके द्वारा विश्वासियों को संसार पर जय प्राप्त होती है। कर्म के साथ विश्वास करने से, मसीही लोग अपने जीवन में पाप पर व पापमय संसार में पाप पर व शैतान पर विजय प्राप्त करते हैं।

6:17

प्रश्न 6. उद्धार का टोप क्या ह?

ध्यान दें। शारीरिक लड़ाई में, टोप लोहे, पीतल और चमड़े का बना होता था जिसका कार्य मुख्य रूप से सिर की सुरक्षा करना था।

आत्मिक युद्ध में टोप उद्धार को प्रगट करता है। 1 थिस्लुनिकियों 5:8 में यह ' उद्धार की आशा को ' भी प्रगट करता है। कठिनाईयों व सताव में, मसीही सिपाहियों को वर्तमान व भविष्यकाल दोनों के लिए उद्धार के निश्चय की आवश्यकता है। बिना इसके वह जल्द ही युद्ध में हार मान सकता है। इस बाता का ज्ञान रखना कि परमेश्वर स्वयं हमारे लिए लड़ रहा है(निर्गमन 14:14), जब हम आग से होकर गुजरेंगे तो परमेश्वर हमारे साथ होगा(यशायाह 43:2) और परमेश्वर उसे सताव और क्लेशों से बचाएगा(2 तीमुथीयुस 3:11), मसीही सिपाही को मज़बूत बनाता और लगातार लड़ने में सहायता करता है। इस बात का निश्चय कि परमेश्वर ने जो काम हम में शुरू किया है वह उसे लगातार चलायेगा और समाप्त भी करेगा, मसीही को मजबूत बनाता और लड़ाई में डटे रहने में सहायता करता है।

उद्धार एक आक्रामक हथियार भी बन सकता है। भजन 40:1-3 में हम पढ़ते हैं कि दाऊद, परमेश्वर द्वारा उसे मुश्किलों के दलदल से बचाए जाने पर एक "उद्धार का गीत" गाता है। वह गाता है कि "परमेश्वर ने मुझे एक नया गीत सिखाया है... बहुतेरे यह देखकर डरेंगे और यहोवा पर भरोसा रखेंगे। इसके अलावा दूसरों को " उद्धार के सुसमाचार" का प्रचार किया जाना और लोगों द्वारा यह देखना कि परमेश्वर का वचन कभी खाली हाथ वापस नहीं आता, वरन वह जो वह चाहे वह पूरा करता है(यशायाह 55:11),यह सबसे बेहतर आक्रामक हथियार है। मसीही सिपाही के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि," क्या मैं अपने मन व दिमाग को शैताने के आक्रमणों से बचा रहा हूँ, जिससे मुझमें लगातार यह निश्चय बना रहे कि मैं बचा हुआ हूँ, कि परमेश्वर मुझे बार बार शत्रु के आक्रमण से बचाता है और परमेश्वर दूसरों का उद्धार करने के लिए मेरा इस्तेमाल करता है?" *उद्धार का कर्ण मसीही सिपाही की अपने विचारों और भावनाओं को शत्रुओं के आक्रमण से बचाने और उद्धार के निश्चय को बनाये रखने की योग्यता ह।*

6:17

प्रश्न 7. आत्मा की तलवार क्या है?

ध्यान दें।

शारीरिक युद्ध में, भारीभरकम हथियारों से लैस सैनिक के द्वारा धारित की जाती थी। यह आक्रमण व बचाव दोनों कामों के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जिसके द्वारा रोम की बहुत सी लड़ाईयों को जीता गया है।

आत्मिक युद्ध में,तलवार परमेश्वर के वचन को दर्शाती है। इसका अभिप्राय सम्पूर्ण बाइबल से नहीं वरन उस विशेष वचन से है जो आप विशेष परिस्थिति में बोलते हैं। जब परमेश्वर के वचन की घोषणा बाइबल में परमेश्वर के विशेष प्रकाशन से मेल खाता है, तो वह आत्मा की तलवार ठहरता है। आत्मा बाइबल के वचनों को लेकर लोगों के पापों का खुलासा करता है, उन्हें उनके दोषों के प्रति निरूत्तर करता है,सच्चाई के विरूद्ध उनके तर्को का खण्डन करता, उन पर परमेश्वर के वचनों सच्चाई को व्यक्त करता, उनके सन्देहों को दूर करता, उनके डर को भगा देता, शैतान को खदेड़ देता और लोगों को वह मार्ग दिखाता है जिस पर उन्हें चलना चाहिए। मसीही सैनिक के लिए मुख्य प्रश्न यह है कि, "आत्मिक युद्ध में मैं अपने शब्दों का इस्तेमाल कर रहा हूँ या परमेश्वर के वचनों का?" आत्मा की तलवार मसीही सैनिक की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह झूठ पर आक्रमण करके विजय को प्राप्त करता है, और परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के सत्य के प्रति निरूत्तर करता है। उदाहरण के लिए: जब यीशु की शैतान के द्वारा परीक्षा हुई, तो उसने बाइबल से परमेश्वर के वचनों को तीन तार बोला। उसने शैतान की चाल व प्रलोभन पर विजय पाने के लिए आत्मा की तलवार का इस्तेमाल किया। यीशु ने लोगों के प्रश्नों का जवाब देते समय और उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में बताते समय लगातार परमेश्वर के वचनों का इस्तेमाल किया।

6:18-20

प्रश्न 8. क्या प्रार्थना आत्मिक युद्ध का भाग है?

ध्यान दें। इफिसियों 6 व उसका 17 व 18 पद आपस में जुड़े हैं। मसीही सैनिकों को हर परिस्थिति में आत्मा की तलवार का इस्तेमाल करना व आत्मा में प्रार्थना करना चाहिए। "आत्मा में प्रार्थना" करने का अर्थ है आत्मिक क्षेत्र में प्रार्थना करना, अर्थात, जैसा कि बाइबल में प्रगट है उसकी आत्मा के साथ समन्वय बनाते और उसकी सहायता पर निर्भर होकर प्रार्थना करना। मसीही योद्धा को सब प्रकार की प्रार्थना करनी चाहिए, जैसे सहायता के लिए पुकारना, बुद्धि की मांग करना, ज़रूरतमन्द लोगों के लिए मध्यस्थता करना और प्रार्थना के उत्तर मिलने पर धन्यवाद देना। उसे हमेशा सारे विश्वासियों(सन्तों) के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, इसका अर्थ यह प्रार्थना करना है कि परमेश्वर के श्रेष्ठ नियम,उसकी इच्छा ओर उसकी महिमा उनके जीवन अधिकाई से प्रगट हो। मसीही सैनिकों के लिए प्रश्न यह है कि " क्या मैं आत्मिक युद्ध के दौरान दृढ़ता से प्रार्थना में बना हुआ हूँ?" प्रार्थना मसीही सैनिक की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह परमेश्वर के साथ सीधा रिश्ता बना सकता है। प्रार्थना के द्वारा, परमेश्वर मसीही की परशानियों को अवसर में बदल सकता है।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दें: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम इफिसियों 6:10-20 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे।

(याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा,और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. इफिसियों 6:10-20 से सम्भावित इस्तेमाल की जाने वाली बातों के उदाहरण।

6:10 अपनी मानवीय शक्ति व मानवीय योजनाओं में मजबूत बनने का प्रयास न करें। वरन हमेशा बहुतायत से परमेश्वर की शक्ति व उसकी योजनाओं पर भरोसा करें

6:11 कभी भी एक या दो आत्मिक हथियारों को पहिन आत्मिक युद्ध में न कूद जाएं। वरन परमेश्वर के द्वारा मुहैय्या करवाए गये सारे हथियारों को धारित कर लें।

6:11 मसीही के रूप में बैठें,चलें और खड़े होएं। परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध के सन्दर्भ में बैठें, अर्थात, अपनी धार्मिकता के पद में भरोसे के साथ विश्राम करें, जो आपकों मसीह के साथ स्वर्ग में दिया गया है(इफिसियों 2:6)। इस संसार के लोगों के साथ सम्बन्ध के सन्दर्भ में चले, अर्थात चुने हुए मसीहीयों के समान चाल चलें(इफिसियों 2:210; 4:1.17; 5:2,8,15)। और शैतान और उसकी बुरी शक्तियों के साथ अपने सम्बन्ध के सन्दर्भ में खड़े हो जाएं, अर्थात, उसका सामना करें, उसकी युक्तियों और चालों का खण्डन करें व उसके आक्रमणों का प्रतिरोध करें।

6:12 इस बात को हमशा ध्यान में रखें कि जिस युद्ध में मसीही लोग बुलाए गये हैं वह युद्ध लोगों (मांस और लहू)या सैन्य हथियारों के खिलाफ है । यह लड़ाई हमेशा बुरी आत्माओं, बुरी युक्तियों, दुष्ट प्रभावों और दुष्टात्माओं के आक्रमण व आत्मिक हथियारों से है।

6:13 याद रखें कि बुरे दिन में जब सारी दुष्ट शक्तियां आप पर आक्रमण करेगी,उनके सामने खड़े रहने के लिए आपको परमेश्वर के सम्पूर्ण हथियारों की आवश्यकता पड़ेगी।

6:14 निर्णय लें कि आप इस आत्मिक संघर्ष से भागेंगे नहीं वरन, गम्भीरता व सच्चाई के साथ इस लड़ाई का लड़ेंगे।

6:14 संकल्प करें कि आप अपने आप को शैतानी शक्तियों के सामने बिना सुरक्षा कवच के नहीं जाएंगे,वरन हमेशा एक नैतिक व धार्मिक जीवन व्यतीत करेगें जिससे की आप शैतान के खिलाफ युद्ध में खड़े हो सकें।

6:15 संकल्प करें कि बुरी शक्तियां आपको कभी भी सुरक्षा कवच के बिना नहीं पाएंगी, परन्तु आप सुसमाचार की सहायता से बने एक पूर्ण व्यक्ति के समान जीवन व्यतीत करें ताकि आप पूरी तरह से आत्मिक लड़ाई लड़ने के लिए तैयार हों।

6:16 संकल्प करें कि आप दुष्ट की शक्तियों के आक्रमण के विरूद्ध उदासीन नहीं बने रहेंगे, बल्कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करेंगे और उसी के अनुसार काम करेंगे, ताकि आप अपने आप की सुरक्षा कर सकें, जय पा सकें और आत्मिक लड़ाई में विजय प्राप्त कर सकें।

6:17 संकल्प करें कि बुरी शक्तियां आपके विचारों और आपकी भावनाओं को बिना सुरक्षा के न पाएं, वरन अपने विचारों और भावनाओं सत्य से भर दें ताकि परमेश्वर आपको जीवन की बहुत सी कठिनाईयों व सताव से बचा सकें और अन्त में हमेशा के लिए अपनी उपस्थिति से सुरक्षित रखे।

6:17 संकल्प करें कि आप बुरी शक्तियों के आक्रमण के विरूद्ध उदासीन नहीं बने रहेंगे, बल्कि बुरे विचारों और बुरे कामों पर आक्रमण करने के लिए बाइबल के वचनों का इस्तेमाल करेंगे ताकि आप आत्मिक लड़ाई के मैदान में शैतान की चाल व युक्तियों पर विजय प्राप्त कर सकें।

6:16-18 सकल्प करें कि आप बुरी शक्तियों के आक्रमण से नहीं डरना चाहते, वरन आप बाइबल में आत्मा द्वारा प्रगट किये गये प्रकाशन के आधार पर प्रार्थना करना चाहते हैं ताकि आत्मिक लड़ाई के दौरान आपका सीधा समबन्ध परमेश्वर से बना रहे। परमेश्वर आपकी आत्मिक लड़ाई को आत्मिक अवसर में बदल सकता है।

2. इफिसियों 6:10-20 से आत्मिक व्यवहारों के उदाहरण।

मैं सत्य का पटुका बांधना चाहता हूँ। मैं कठिन परिस्थितियों से भागना बन्द करना चाहता और सच्चाई से आत्मिक लड़ाई में शामिल होना चाहता हूँ। इस समर्पण के साथ, मैं ज्यादातर प्रार्थना करूंगा कि परमेश्वर मेरे भय को दूर करेगा और मुझे गिदोन के समान साहसी और निडर बनाएगा।

जब कभी बुरी शक्तियां मेरे विचारों व भावनाओं पर आक्रमण करती है मैं विश्वास की ढाल का इस्तेमाल करना चाहता हूँ। जब शक,सन्देह,डर, वेदना, लालच, व्यर्थता, डाह या अभिलाषा आदि के अग्निमय तीर मुझ पर फेकें जाते हैं,तो मैं इन विचारों और भावनाओं के खिलाफ विश्वास से काम करना चाहता हूँ। सक्रिय विश्वास के द्वारा मैं शैतान और उसकी चालों को सामना करना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें इफिसियों 6:10-20 में सिखाई हैं।

(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूह में होकर **प्रार्थना करते रहें।** एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ इफिसियों 6:10-20 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: एस्तेर 2,3,4 व 5 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। सेवा: मरकुस 10:45। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 43

1.	प्रार्थना

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	आराधना (20मिनट) *[परमेश्वर की विशेषताएं]* परमेश्वर रक्षक है।

इस अध्याय में हम परमेश्वर को धन्यवाद देने के द्वारा अपनी आराधना को ज़ाहिर करना सीखते हैं।
भजन 107:1-9, 10-16,17-22 को **पढ़ें।**
परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को जवाब देता, चमत्कार करता, हमें भली बातें सिखाता और बहुत से सबक सिखाता है।
परमेश्वर के द्वारा उत्तर दी गयी किसी प्रार्थना पर; आपके जीवन में परमेश्वर द्वारा किये गये चमत्कार पर ;या उस सबक पर **ध्यान दें** जिसे परमेश्वर ने आपको सिखाया हो।
आराधना। ऊपर दी गयी बातों में से किसी बात के लिए समय निकालकर एक या दो पक्तियों में परमेश्वर का धन्यवाद दें। (उदाहरण के लिए: क. उसने आपको जीवन साथी दिया.ख. उसने आपके जीवन को बचाया ग. उसने आपको आत्म सम्मान प्रदान किया (यशायाह 43:4) घ. उसने आपको अपने शत्रुओं को क्षमा करने के योग्य बनाया।)

3	बाँटें (20 मिनट) [शान्त समय] एस्तेर 2,3,4,5

आपने जो कुछ दिये गये बाइबल अनुच्छेद (उत्पत्ति 12:1–15:21) से अपने शान्त समय में सीखा है उसे संक्षेप में **बाँटें या (अपनी कॉपी में से पढ़ें)।**
बताने वाले व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुने, उसे गम्भीरता से लें और स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	शिक्षा (70 मिनट) [प्रभुता] परमेश्वर की इच्छा को खोजना

" आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजनाओं को किस तरह अनुभव कर सकते हैं"
"आपके जीवन के लिए परमेश्वर की योजनाओं के तहत उसका चरित्र किस प्रकार से जुड़ा हुआ है"।
"परमेश्वर की इच्छा को जानने के प्रमुख सिद्धान्त क्या है,जिसके आधार पर आप अपने जीवन में निर्णय ले सके या चुनाव कर सकें?"
"क्या परमेश्वर आपको चुनाव करने की स्वतन्त्रता देते हैं या नहीं?"

क. परमेश्वर की योजनाए या उसकी इच्छा उसके चरित्र से जुड़ी होती हैं।

1. परमेश्वर की योजना या उसकी इच्छा।

इफिसियों 1:11 में लिखा है "उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है,पहले से ठहराए जाकर मीरास बने।" परमेश्वर की योजनाओं में क्या क्या शामिल होता है? सम्पूर्ण सृष्टि और सम्पूर्ण इतिहास के लिए परमेश्वर की योजना में प्रत्येक व्यक्ति के प्रति उसकी योजना शामिल है।
-परमेश्वर की योजना सिद्ध रूप में आपके अनोखे व्यक्तिक्त का निर्माण व उसके अलंकृत करती है।
-परमेश्वर द्वारा निर्धारित उसकी योजनाएं आपके जीवन में सही समय पर निश्चित रूप में पूरी होती हैं।
-परमेश्वर की योजना में आपके जीवन में उसके द्वारा अनुमति प्राप्त परिस्थितियां तथा साथ ही साथ आपके लिए प्रगट किया जाने वाला मार्गदर्शन शामिल है।

परमेश्वर की योजना सब लोगों के लिए उपयुक्त व सिद्ध है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति और उसके लिए परमेश्वर की योजना का बीज एक साथ परमेश्वर के मन मं धारित हुआ था। (यशायाह 43:7)

2. परमेश्वर का चरित्र।

आपके जीवन में उसकी योजना को पूर्ण करने के लिए परमेश्वर के चरित्र को जानना कितना जरूरी है?

परमेश्वर अनुग्रहकारी, तरस खाने वाला, विलम्ब से क्रोध करने वाला,प्रेम का धनी व अपनी सारी सृष्टि के लिए भला है।

अत: जितना ज्यादा आप परमेश्वर को जानते हैं, उतना ही आप उस पर, आपके जीवन के लिए उसकी योजनाओं तथा उसकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा कर सकते हैं (भजन संहिता 145:8-9; 23:1-6)।

परमेश्वर सच्चा है और जो कहता है वह करता है।

इस लिए, जितना ज्यादा आप परमेश्वर की सच्चाई को जानते हैं(परमेश्वर क्या कहते हैं), उतना ही अच्छी तरह से आप उसकी इच्छा या उसकी योजना को जान पाएंगे। परमेश्वर सर्वप्रथम अपनी सच्चाई को सबसे पहले लिखित बाइबल में फिर उसकी पवित्र आत्मा द्वारा प्रगट करते हैं, जो बाइबल की सच्चाई को आपके मन,हृदय और जीवन में लागू करता है (गिनती 23:19; यूहन्ना 14:16-17, 26; 16:8,13-14;17:17)

3. परमेश्वर का प्रकाशन ।

परमेश्वर अपनी सृष्टि और हर जीवन से अति विशाल है। परमेश्वर ने अपनी सम्पूर्ण इच्छा या योजनाओं को लोगों पर प्रगट नहीं किया है। परमेश्वर ने जो मनुष्यों पर प्रगट किया है, वह परमेश्वर के मार्गदर्शन में प्रगट किये जाने वाले उसके विशेष व सामान्य निर्देश हैं।

परमेश्वर की प्रगट इच्छा का उद्देश्य ।

भजन 32:8 **पढ़ें।** परमेश्वर ने आपका मार्गदर्शन करने की प्रतिज्ञा की है।

यूहन्ना 14:21,23 में **पढ़ें।** परमेश्वर ने इस मकसद से अपनी इच्छा को जाहिर किया है कि आप उसकी आज्ञा माने और मसीह के साथ एक धनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करें। इसलिए आपकों सदैव परमेश्वर की प्रगट इच्छा को जानने हेतू प्रयत्न करते रहना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 29:29; यशायाह 55:8-11 **पढ़ें।** लेकिन आपको परमेश्वर की गुप्त (छुपी हुई)इच्छा से या उन परिस्थितियों से डरने की आवश्यकता नही है जिसके द्वारा परमेश्वर आपका मार्गदर्शन करता है। परमेश्वर के चरित्र को याद रखें।

रोमियों 8:28 **पढ़ें।** परमेश्वर की गुप्त इच्छा (तथा अवर्णित परिस्थितियों)का उद्देश्य भी आपकी भलाई ही है। स्मरण रखें कि परमेश्वर अपने ज्ञान,शक्ति और प्रेम में सर्वश्रेष्ठ है।

परमेश्वर के विशेष निर्देशों के उदाहरण।

परमेश्वर द्वारा बाइबल में विशेष आज्ञाओं, निषेध बातों और शिक्षाओं के प्रति की जानी मांगें।

उदाहरण के लिए:

- निर्गमन 20:12 पढ़ें। परमेश्वर लोगों को अपने माता पिता का आदर करने की आज्ञा देते हैं।
- निर्गमन 20:14 पढ़ें। परमेश्वर ने यौन सम्बन्धी अनैतिकता को निषेधित किया है।
- मत्ती 6:14-15 पढ़ें। परमेश्वर लोगों को एक दूसरे को क्षमा करने की शिक्षा देते हैं।

परमेश्वर क सामान्य निर्देशों के उदाहरण

बाइबल में सामान्य निर्देश व सिद्धान्त उन बातों से सम्बन्ध रखते हैं जिन क्षेत्रों के बारे में आपको पहले सोच विचार करना चाहिए और बाद में उन्हीं विचारों के आधार पर निर्णय करना चाहिए।

उदाहरण के लिए:

- इफिसियों 5:10, 15-16 **पढ़ें।** आपको विचार करना चाहिए कि कौन सी बातें परमेश्वर को पसन्द आती हैं और कौन सी बातें नहीं।
- रोमियो 14:19 **पढ़ें।** आपको विचार करना चाहिए कि एक बुद्धिमान व्यक्ति के समान किस प्रकार जीवन व्यतीत किया जाता है।

- 1 कुरिन्थियों 10:23 **पढ़ें।** या आपको विचार करना होगा कि कौन से व्यवहार वास्तव में लाभदायक और निर्माणकारी हैं।

ख. अपनी इच्छा के सम्बन्ध में परमेश्वर के विशेष निर्देश

परमेश्वर ने अपनी इच्छा के प्रकाशन के रूप में तथा एक मागदर्शक या मानचित्र के रूप में बाइबल को प्रदान किया है ताकि आपको चलने का मार्ग दिखाया जा सके। परमेश्वर के प्रकाशन का एक भाग विशेष आज्ञाओं, निषेधाज्ञाओं और शिक्षाओं से भरा हुआ है। किसी भी क्षेत्र में परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए, पहले आपको उन विशेष आज्ञाओं, निषेधाज्ञाओं और किसी विषय पर पूछी गयी शिक्षाओं पर विचार करना चाहिए।

1. जिस विषय पर आपकों चिन्ता है उस विषय पर परमेश्वर बाइबल विशेष तौर क्या कहते हैं?(2तीमुथियुस 3:16-17)

बाइबल की कौन सी आज्ञा, निषेधाज्ञा, या बाइबल की शिक्षा आपके ध्यान आकर्षित करने वाले क्षेत्र में लागू होती है? इस विषय पर जितना सम्भव हो सकें जानकारियां हासिल करने की प्रयास करें। बाइबल का अर्थ सही तरीके से निकाले(2 तीमुथीयुस 2:15)।

2. कौन सा अनुच्छेद या बाइबल की प्रतिज्ञा मुझे बाद में प्रेरित करती है?(भजन 119:130)

अपने शान्त समय या बाइबल अध्ययन के समय में अपेक्षा करें कि परमेश्वर आपसे बातचीत करे। सुनिश्चित करें कि आपके काम पूरी तरह से निम्न बातों से मेल खाते हों:

- उन बातों से जो बाइबल के अनुच्छेद में परमेश्वर कहना चाहते हैं
- उस अनुच्छेद में ज़ोर दी जाने वाली बातों से
- तथा बाकि बाइबल में पायी जाने वाली शिक्षाओं से।

3. किस हद तक मैं अपने जीवन में परमेश्वर की प्रगट इच्छा का पालन कर रहा हूँ?(नीतिवचन 1:22-33)

यदि आप पहले से ही ज्ञात परमेश्वर की इच्छा को अस्वीकार कर रहे हैं, तो आप परमेश्वर से उन बातों को प्रगट करने की आशा नहीं कर सकते जिन्हें आप अभी तक नहीं जानते हैं?

4. क्या मैं परमेश्वर किसी भी इच्छा को पूरा करने के लिए इच्छुक हूँ? (लूका 6:46-49)

परमेश्वर न केवल आपसे यह चाहते हैं कि आप उसके वचनों को सुने, वरन उन वचनों के अनुसार अपने जीवन को व्यतीत करें। आप अपने जीवन के लिए परमेश्व की योजना को लेकर उससे मोल भाव नहीं कर सकते हैं।

ग. परमेश्वर की इच्छा के सन्दर्भ में उसके सामान्य निर्देश।

बाइबल का पाये जाने वाले परमेश्वर के प्रकाशन के दूसरे भाग में सामान्य निर्देश या मार्गदर्शन करने वाले सिद्धान्त पाये जाते हैं। जब आप किसी विशेष क्षेत्र या विषय पर परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहते हैं और उस विषय पर कोई आज्ञा या निषेधाज्ञा या बाइबल में कोई शिक्षा नहीं दी गयी हो, तो आपको परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए सात निदेर्शों या मार्गदर्शन करने वाले सिद्धान्तों पर आधारित होकर एक बुद्धिमानी भरा निर्णय लेना चाहिए।

1. एक बुद्धिपूर्ण निर्णय लें या चुनाव करें।

परमेश्वर ने मसीहियों को अपनी इच्छा के अनुसार काम करने की पर्याप्त स्वतन्त्रता प्रदान की है। लेकिन जीवन को सम्पूर्ण बनाने के लिए कुछ आज्ञाएं, निषेधाज्ञाएं व शिक्षाएं दी गयी हैं। मसीहियों को निर्णय लेने या चुनाव करने की पर्याप्त स्वतन्त्रता प्रदान की गयी है।

(1) जिस विषय क बारे में मैं चिन्तन कर रहा हूँ, उस विषय पर क्या मुझे निर्णय लेने या चुनाव करने की मुझे आज़ादी है?या इस विषय से सम्बन्धित क्या कोई आज्ञा, निषेधाज्ञा, या शिक्षा प्रदान की गयी है।

ध्यान दें। यदि उस विशेष विषय से सम्बन्धित कोई आज्ञा, निषेधाज्ञा या शिक्षा प्रदान की गयी है, तो सबसे पहले आपको उस पर ध्यान देना चाहिए। लेकिन यदि कोई आज्ञा, निषेधाज्ञा या शिक्षा प्रदान नहीं की गयी है, तो आपको एक बुद्धिमानी का निर्णय लेने या चुनाव करने का पूरा अधिकार है।

बाइबल के निम्नलिखित उदाहरण हमें बताते हैं कि बहुत से चुनाव समान तौर पर परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं, जिसमें से मसीह लोग किसी का भी चुनाव कर सकते हैं: मसीही जन निम्नलिखित चुनाव करने के लिए स्वतन्त्र है:

- वे केवल सब्जियां खाने या सब प्रकार का भोजन खाने के लिए स्वतन्त्र हैं(रोमियों 14:1-4)।

- वे अगर चाहें तो किसी एक दिन को दूसरे से अधिक पवित्र मान सकते हैं या फिर सभी दिनों को एक सा सम्मान दे सकते हैं(रोमियो 14:5-6)
- वे विवाह करने या अविवाहित रहने के लिए स्वतन्त्र हैं(1 कुरिन्थियों 7:8-9,39)
- वे यह निर्णय लेने के लिए स्वतन्त्र है कितना और किसे वे अपना उपहार प्रदान करें(2 कुरिन्थियों 9:6-7)
- निश्चय ही, मसीहियों की स्वतन्त्रता का पैमाना बाइबल की शिक्षाएं हैं।

(2) बुद्धि के कौन कौन से स्रोत हैं?

ध्यान दें। परमेश्वर बुद्धि के द्वारा ही मसीहियों का मार्गदर्शन करते हैं। बुद्धि के स्रोत परमेश्वर के वचन हैं(भजन 119:97-100),परमेश्वर का आत्मा (यशायाह11:2), प्राथना(याकूब 1:5),सलाहकार (नीतिवचन11:14)और अनुसंधान (नहेमायाह 2)। बुद्धि से पूर्ण निर्णय लेने के लिए,मसीहियों को निम्नलिखित प्रश्न पूछने चाहिए।

(3) मैं जिस विषय पर चिन्तन कर रहा हूँ,उसके लिए क्या अच्छा और क्या बेहतर है?

1 कुरिन्थियों 7:1,9 **पढ**।

ध्यान दें। यद्यपि कुछ अच्छा हो, मगर यह जरूरी नहीं है कि वह ही आपके या किसी और के लिए सर्वोत्तम है?

(4) जिस बात के बारे में मैं चिन्तन कर रहा हूँ उसमें क्या बातें परेशानी उत्पन्न करती हैं और किन बातों से आनन्द या शान्ति मिलती है?

1 कुरिन्थियों 7:28,40; रोमियों 14:19 **पढ**।

ध्यान दें। हो सकता है कि कुछ बातों को करने की अनुमति प्रदान की गयी है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि वह कभी दिक्कत या परेशानी नहीं देगी। कई बार उस मार्ग को चुनना बुद्धिमानी ठहरता है जिससे शान्ति मिलती है लेकिन कई बार बुद्धिमानी से पूर्ण निर्णय लेने पर दिक्कतें व परेशानियां सामने आती ह।

(5) जिस बात के बारे में मैं चिन्तन कर रहा हूँ उसके सन्दर्भ में कौन सी बात अनुमति प्राप्त है और कौन सी बात फायदेमन्द या निर्माणकारी है?

1 कुरिन्थियों 10:23 **पढ़ें।**

ध्यान दें। यद्यपि कुछ बातों को अनुमति प्राप्त हो लेकिन ऐसा जरूरी नहीं है वह आपके या दूसरों के लिए फायदेमन्द या निर्माणकारी हो।

(6) जिस बात के बारे में मैं चिन्तन कर रहा हूँ उसके सन्दर्भ में क्या उचित है और क्या ज़रूरी है?

1 कुरिन्थियों 16:4; 2 कुरिन्थियों 9:5।

ध्यान दें। यद्यपि कुछ बातों को अनुमति प्राप्त हो लेकिन ऐसा ज़रूरी नहीं है कि वह उचित या जरूरी भी हो!

ईश्वरीय बुद्धि ज़्यादातर सारे विकल्पों को खत्म करके केवल एक ही मार्ग छोड़ती है। जब वह काम करती है, तो परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला एक ही चुनाव रह जाता है। जब एक से ज़्यादा चुनाव बुद्धि पूर्ण होते हैं(समान रूप से फायदेमन्द व निर्माणकार, अच्छे व ज़रूरी) तब सभी चुनाव समान रूप से परमेश्वर के सामने ग्रहणयोग्य होते हैं। उसकी श्रेष्ठता आपकी ऊँचाई की ओर अगुवाई करेगी(नीतिवचन 16:33, रूत 2)

2. बुद्धिमान लोगों व माता पिता से सलाह लें।

परमेश्वर ने समाज में आपको सलाह देने व आपकी परवाह करने के लिए भाई बहन और कुछ बुद्धिमान लोगों को रखा है। परमेश्वर उन लोगों को सावधान करता है जो आत्मनिर्भर व दूसरों से अलग रहते हैं(यशायाह 30:1-2)।

(1) ईश्वरीय या परिपक्व मसीहियों की सलाह और अन्य बुद्धिमान लोगों की सलाह क्या होती है? (नीतिवचन 15:22)

ध्यान दें। जितने ज़्यादा सलाहकार आपके पास होगें उतने ही ज़्यादा पहलुओं पर आप गौर कर पाएंगे। आपका सलाहकार जितना ज्यादा आपको व आपकी परिस्थितियों को जानता होगा उतना ही ज़्यादा सिद्ध उनकी सलाह भी होगी(नीतिवचन 27:23)।

आत्मिक व नैतिक मामलों में सलाह देने के लिए आपके मसीही होने चाहिए, क्योंकि अविश्वासियों में मसीह का मन नहीं होता(1 कुरिन्थियों 2:12-16)। उन्हें समझदार होना बहुत जरूरी है, क्योंकि नासमझ लोगों को शैतानी व ईश्वरीय कामों में से भले की पहिचान नहीं होती(इब्रा 5:14), क्योंकि परमेश्वर बुराई करने वालों की प्रार्थनाओं को नहीं सुनता(1 पतरस 3:12)। दूसरे मामलों में भी आपके सलाहकार बुद्धिमान व जानकार मसीही होने चाहिए(नीतिवचन 14:7)।

(2) अगर मैं अभी युवक ही हूँ तो मेरे माता पिता की मेरे प्रति क्या सलाह होगी?(नीतिवचन 1:8-9)

ध्यान दें। जब तक आप उम्र में छोटे होते हैं तब तक परमेश्वर आपको व्यस्क जीवन हेतू तैयार करने के लिए आपके माता पिता का इस्तेमाल करता है। लेकिन अगर आपके माता पिता की सलाह परमेश्वर की आज्ञाओं या शिक्षाओं के विरूद्ध हो तो आप उन शिक्षाओं को प्रेम से अस्वीकृत कर सकते हैं। (मत्ती 10:37; प्रेरितों 5:29)।

(3) क्या मैं उन सलाहों को नज़रअन्दाज़ कर रहा हूँ जिन पर मुझे ध्यान देन चाहिए? (नीतिवचन 19:20-21)

3. अपनी योग्यताओं व अपनी मंजिल पर ध्यान दें।

परमेश्वर ने आपको किसी विशेष उददेश्य के लिए एक विशेष व्यक्तित्व के साथ बनाया है।

(1) कौन सी प्राकृतिक योग्यता और आत्मिक वरदान परमेश्वर ने मुझे दिया है,वह किस तरह से मेरे जीवन हेतू बनायो गयी उसकी योजना के लिए इनका इस्तेमाल करना चाहता ह?(1 कुरिन्थियों 12:4-6)

ध्यान दें। परमेश्वर आपका रचयिता और पुन: रचना करने वाला है और उसी ने आपको प्राकृतिक योग्यताएं और आत्मिक वरदान प्रदान किये हैं ताकि आप उसकी योजना के अनुसार जीवन व्यतीत कर सकें। आपकी योग्यताएं व सीमाएं एक संकेतक के समान हैं जो बताती हैं कि परमेश्वर आपसे किस प्रकार का जीवन व्यतीत करवाना चाहता है।

(2) जिस बात के बारे में मैं चिन्तन कर रहा हूँ उसके सन्दर्भ में कौन सी बात मेरे व्यक्तित्व के विकास में और मेरे काम को पूरा करने में सहायता करती है या उसमें बाधा डालती हैं।

ध्यान दें। आपके व्यक्तित्व में आपका विश्वास, प्राथमिकताएं, आपकी भावनाएं और व्यवहार शामिल है (2 कुरिन्थियों 13:10)। आपके लक्ष्यों को अर्थ है आपके रोजमर्रा के काम, आपके जीवन के अल्पकालीन या दीर्घकालीन कार्य,परमेश्वर की ओर से बुलाहट या परमेश्वर की आर से दिये गये काम(प्रेरितों 20:24)।कई निर्णय या चुनाव जिन्हें आप अपने जीवन में लेते हैं आपके चरित्र को बिगाड़ देते हैं, आपके व्यक्तित्व को नुकसान पहुँचा सकते वरन आपके लक्ष्य को भी प्रभावित कर सकते हैं। केवल उन्हीं निर्णयों और चयनों पर ही ध्यान दें जो आपके चरित्र का निर्माण करें,आपके व्यक्तित्व को विकसित करें और आपके लक्ष्य को पूरा करें।

जिन रिश्तों या गतिविधियों का आपकी जिन्दगी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है उन्हें आपने तुरन्त अपने जीवन से दूर कर देना चाहिए(भजन 1:1; नीतिवचन 1:10,15; 2 कुरिन्थियों 6:14-7:1)। अत: आपको उन रिश्तों और गतिविधियों की खोज करनी चाहिए जो आपको प्रेम व भले काम करने की प्रेरणा देते हैं(इब्रानियों 10:24-25)।

(3) परमेश्वर मुझे पहले किन कामों को करने का अनुरोध करता है? (मत्ती 6:33)

ध्यान दें। किस काम के लिए परमेश्वर आपके मन में आपातकालीन परिस्थिति जैसा बोध उत्पन्न कर रहा है? जीवन में सभी बातें समान रूप में महत्वपूर्ण नहीं होतीं। ऐसी बातों में अपना 90% समय व्यर्थ न करें जिससे केवल आपको 10% फल ही प्राप्त होगा। बल्कि ऐसे कामों को करने में अपने समय और प्रयासों को खर्च करें जो हमेशा अटल बने रहेंगे। सामान्यत: सबसे जरूरी काम को सबसे पहले करें, लेकिन उसके साथ साथ कम जरूरी कामों के लिए समय निकालें।

4. तथ्यों व परिस्थितियों पर ध्यान दें।

परमेश्वर आपके जीवन हर परिस्थिति और स्थानों पर प्रधान है(प्रेरितों 17:24)।

(1) क्या मैंन पर्याप्त मात्रा में उस विषय पर खोज कर ली या मुद्दे से जुड़े मूल तथ्यों को इकट्ठा कर लिया है जिसके विषय में मैं चिन्तन कर रहा हूँ? (नीतिवचन 25:2; नहेमायाह अध्याय2)।

ध्यान दें। मसीहियों को दूसरों से तथ्यों की तलाश और अच्छी बातों को सीखते रहना चाहिए, जिनमें गैर मसीही लोग भी शामिल हैं। उदाहरण के लिए, जब आप किसी नौकरी को ढूंढ़ते हैं, अलग अलग कम्पनियों को पत्र लिखें व और निम्नलिखित जानकारियां प्राप्त करने करें।

- आपका काम क्या होगा, नौकरी की अवधि, कार्य समय, कार्य स्थल और काम करने की शर्तें।
- नौकरी से रिश्ता,अधिकारियों की संरचना,किसके द्वारा निरीक्षण होगा, किसका निरीक्षण करने की जिम्मेदारी मिल रही है।
- वेतन कितना होगा, फायदे क्या हैं, पदोन्नति की क्या सम्भावनाएं हैं।
- मुझे किस तरह से आदर व सराहना मिलेगी।
- दूसरे लाग इस नौकरी या काम को किस नज़रिये से देखते हैं?

(2) परमेश्वर ने किस हद तक भविष्य की बातों को देखते हुए परिस्थितियों व घटनाओं को स्पष्ट तौर पर एक ही दिशा में नियोजित किया है।

ध्यान दें। क्या परिस्थितियां भी आपको भी उसी दिशा में अगुवाई करती हैं जैसे इस अध्ययन के दूसरे सिद्धान्त अगुवाई करते हैं?

(3) क्या मेरा विवेक इस बात के प्रति साफ है कि मैंने अपने लिए माहौल तैयार करने का प्रयास नहीं किया है? (प्रेरितों 24:16)

(4) अगर मैं अपने जीवन में बाधाओं का सामना करता हूँ, तो क्या वे परमेश्वर की ओर से मुझे रोकने के लिए आती है (प्रेरितों 16:6-10), या वे शैतान की ओर से आती है जिस पर मुझे विश्वास के द्वारा जय प्राप्त करनी है?(थिस्लुनिकियों 2:18)।

ध्यान दें। इस शिक्षा के सारे सिद्धान्तों पर ध्यान देने के बाद ही परमेश्वर के सारे लक्ष्य स्पष्ट हो पाते हैं। लेकिन शैतान की सम्भव युक्तियों व उसके उद्देश्यों को अपने ध्यान में रखिये। विशेष तौर पर प्रार्थना कीजिए, क्योंकि बाधा का प्रश्न विकासशील चरित्र का प्रश्न हो सकता है या फिर आत्मिक युद्ध का प्रश्न हो सकता है।

(5) विचारों और भावनाओं पर ध्यान दें।

परमेश्वर ने आपको अपने सम्पूर्ण मन से और अपने पूर्ण हृदय से प्रेम करने की आज्ञा दी है(मरकुस 12:30, 1 कुरिन्थियों 2:16; फिलिप्पियों 2:5)।

(1) मेरे व्यक्तिगत उद्देश्य, इच्छाएं व भावनाएं क्या हैं?
और मेरी सामान्य चेतना मुझसे क्या कहती है? (1 इतिहास 28:9; भजन 37:4-6)।

उदाहरण के लिए कुछ ऐसी बातों पर ध्यान करो: स्वार्थी आकाक्षां का पीछा करना, लोगों से सराहना पाने का प्रयास करना, धन की चाह करना,शक्ति व प्रसिद्धि या किसी के द्वारा किये गये अन्याय के प्रति कड़वाहट महसूस करना। तथा इन बातों पर ध्यान देना: विश्वास में बढ़ने के लिए दूसरों की मदद करना और फलदायक मेहनत करना। इनमें से कौन सी इच्छाएं व भावनाएं परमेश्वर की ओर से आने वाली प्रतीत होती हैं? और कौन सी बात गलत निर्णय लेने में उकसाने वाला प्रलोभन या कम बेहतर चुनाव प्रतीत होता है? इनके लिए प्रार्थना करें।

(2)मेरे निर्णय के कारण जो लोग प्रभावित होंगे उनके लक्ष्य, इच्छाएं और भावनाएं क्या होंगी?(फिलिप्पियों 2:3-4)।

ध्यान दें। आप जिस मुद्दे पर चिन्तन कर रहें हैं वह आपके बच्चों व जीवन साथी पर किस प्रकार प्रभाव डालेगा? परमेश्वर की निगाहां में, आपका पत्नि और आपके बच्चे आपके सभी निर्णयों में बहुत महत्वपूर्ण हैं(व्यवस्थाविवरण 24:5; मत्ती 19:5-6; 1 कुरिन्थियों 9:5; 1 तीमुथीयुस 3:2,4-5)

(3) इस शिक्षा के सभी सिद्धान्तों पर मनन करने के बाद,क्या मैं अपने भीतर शान्ति को और इस बोध को महसूस कर रहा हूँ कि परमेश्वर मेरी अगुवाई कर रहे हैं? या मुझे असहजता, बेचैनी, आन्तरिक अशान्ति या अव्यवस्था का आभास हो रहा है?(यशायाह 32:17)

ध्यान दें। गौर करें कि यह शान्ति:

- क्या यह केवल आपके कामों को सही साबित करने वाला भाव ही तो नहीं है जिससे कारण आपको निर्णय लेने के बाद आपको भय से, आशंका से और संघर्ष से मुक्ति का एहसास हो रहा हो।
- या इस शान्ति के भीतर कहीं परमेश्वर पर व उसके वचनों द्वारा अगुवाई का शान्त आत्मविश्वास छुपा महसूस होता है, चाहें कोई सम्भव अनिश्चितता या बदलाव ही क्यों न सामने प्रगट हो जाए।

6. समय और विश्वास का ध्यान रखें।

परमेश्वर ने आपको अपने हर एक जरूरी काम को करने के लिए पर्याप्त समय दिया है। सभोपदेशक 8:5-6 में हम देखते हैं,"बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है, क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है।"

(1) क्या मेरी अभिलाषाएं व भावनाएं मुझे जल्दी आगे बढ़ने के लिए धकेल रही हैं? (नीतिवचन 19:2)।

ध्यान दें। स्वार्थी महत्वाकाक्षाएं, अपवित्र लालसा, संयम का अभाव, अति आत्मविश्वास,घमण्ड,क्रोध, बदला और धैर्यहीनता जैसी बहुत सी बातें आप से बहुत सी गलतियां करा सकती हैं। अत: जल्दबाजी में कोई कदम न उठाए और न ही कोई निर्णय लें।

(2) क्या मेरी अभिलाषाओं और भावनाओं के कारण मैं काम करने में बहुत देरी करता हूँ?(इफिसियों 5:15-16)।

पक्के सबूत, अपना फायदा, अपनी सुरक्षा का इन्तज़ार करना तथा विश्वास का अभाव व भय आपको सुन्दर अवसरों से वंचित कर सकता है। इसलिए किसी काम को टालें नहीं।

(3) क्या मैं मुख्य मुद्दों को पहिचानने के लिए आत्मिक रूप से परिपक्व हूँ? या फिर मुझे बढ़ने के लिए और अधिक समय देना चाहिए, ताकि मैं इस तरह मुख्य निर्णय लेने के काबिल बन जाऊँ?(इब्रानियों 5:14)

ध्यान दें। हो सकता है कि किसी व्यक्ति के किसी निर्णय या चयन को मान्यता दे दी गयी हो, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि वह व्यक्ति सदैव निर्णय लेने के लिए पर्याप्त मात्रा में परिपक्व है।

(4) क्या परमेश्वर मुझसे चाहता है कि मैं विश्वास के अनुसार ही चलूं या वह फिर वह विश्वास के द्वारा काम करने से रोकता भी है?(इब्रानियों 11:6)

ध्यान दें। आप अभी तक पूरी तरह शुद्ध नहीं हुए हैं और अभी तक आपकी समझ सीमित है। गलतियां करना तो मानवीय स्वभाव है और उन गलतियों को मान लेना विनम्रता है। यदि आप किसी बात को पूरी तरह परमेश्वर की इच्छा मान लेते हैं,तो आपको विश्वास के साथ उस काम को करना चाहिए। लेकिन कई बार वह निर्णय गलत साबित होता है, तब आपको परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए के वह परिस्थिति नियन्त्रण ले और उस निर्णय के कारण आप पर व दूसरों पर होने वाले प्रभाव को संभाले। परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ है। हर समय और हर बात में परमेश्वर को प्रेम करने वाले लोगों के लिए सब बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती हैं (रोमियों 8:28)।

7. प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा की प्रेरणा के प्रति संवेदन शील रहें।

परमेश्वर ने प्रार्थना के द्वारा उस तक पहुचने का सीधा मार्ग दिया है (इफिसियों 3:12; इब्रानियों 4:16)

(1) क्या मैंने इस अध्याय से सारे सिद्धान्तों से प्राप्त जानकारी को लेकर पर्याप्त मात्रा में प्रार्थना की है?(फिलिप्पियों 4:6)

ध्यान दें। अपने सारे निवेदनों को परमेश्वर के सामने ला कर रख दें। अपना हृदय खोलकर अपने सारे लक्ष्यों, इच्छाओं और भावनाओं को परमेश्वर के सामने रख दें। तब तक प्रार्थना में लगें रहें जब तक कि आपको पता न चल जाए कि आपको क्या करना है। जब आप किसी खास बात के लिए प्रार्थना करते हैं तो क्या आपको लगातार प्रार्थना करने की आज़ादी महसूस होती है?

परमेश्वर की आप तक सीधी पहुंच है और उसने आपको पवित्र आत्मा एक प्रतिनिधित्व व सलाहकार के रूप में दिया है जो आपकी सब प्रकार के सत्य में,पापों के प्रति निरूत्तर करने में, आपको सारी बाते सिखाने तथा आपको परमेश्वर का वचन याद दिलाने में मदद करता है(यूहन्ना 14:26; 16:8,13-14)।

(2)क्या पवित्र आत्मा आपको किसी काम को करने के लिए प्रेरित करता है(प्रेरितों 11:12) या किसी काम को करने से आपको दूर रखता है?(प्रेरितों 16:7)?

ध्यान दें। पवित्र आत्मा जो भी कुछ आपकी मन या हृदय में बोलता है वह बात कभी भी बाइबल में लिखित बात को विरोध नहीं करेगी(इफिसियों 6:17)! आपको दुष्टात्मा और मसीह की आवाज़ में फर्क करना आना चाहिए(यशायाह 8:19-20, रोमियों 10:17; 1 यूहन्ना 4:1)।

घ. परमेश्वर की इच्छा को खोजने में आपकी ज़िम्मेदारी

परमेश्वर निश्चय ही मसीहियों का मार्गदर्शन करना चाहता है। वह प्रतिज्ञा करता है,"जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उस में तेरी अगुवाई करूँगा; मैं तुझ पर कृपा दृष्टि रखूँगा और सम्मति दिया करूँगा"(भजन 32:8)। लेकिन मसीही लोग निश्चित तौर पर यह खोजने के लिए ज़िम्मेदार हैं कि परमेश्वर को क्या भाता है(इफिसियों 5:10)और परमेश्वर की क्या इच्छा है(इफिसियों 5:17)।

1. मसीह क समानता में और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली बातों का चुनाव करें।

रोमियों 12:1 व फिलिप्पियों 2:3-7; लूका 2:46-52; लूका 14:10-14 **पढ़ें**।

खोजें व चर्चा करें। किस प्रकार के त्याग से भरे हुए निर्णय मसीह के समान व परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले हैं?

ध्यान दें।

- अपना फायदा देखने की बजाय आपको दूसरों को फायदा देखना चाहिए(फिलिप्पियों 2:3-4)
- अपने परिवार की कुर्बानी चढ़ाकर अपनी जिन्दगी बनाने के बजाय, अपने आप को पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए सौंपें। (1 तीमुथीयुस 3:4-5)।
- धर्मी,शक्तिशाली व प्रतिष्ठित लोगों के उपकार चुकाने की बजाय गरीब, विकलांग और जीवन से परेशान लोगों को अपने पास बुलाएं(लूका 14:12-14)।

2. परमेश्वर के सामान्य व विशेष वचनों के आधार पर बुद्धि से पूर्ण निर्णयों को लें।

मसीहियों को उन मुद्दों पर सबसे पहले परमेश्वर की विशेष आज्ञा, निषेधाज्ञा और शिक्षाओं पर ध्यान देना चाहिए जिस पर वे मनन कर रहे हैं। अगर उन्हें कोई विशेष आज्ञा, निषेधाज्ञा और शिक्षाएं नहीं मिलती हैं तो मसीहियों परमेश्वर के मार्गदर्शन के अनुसार सात सामान्य निर्देशों का पालन करना चाहिए।

(1) जानकारियां इकट्ठा करें। बाइबल से प्राप्त विशेष या सामान्य जानकारियां को जो आपको मिली हैं, उन्हें लिख लें। बाइबल से किसी खास मार्गदर्शन के तलाश करते समय जो विचार परमेश्वर आपके मन में डालता है या परमेश्वर के वचन से

आपको कोई सामान्य निर्देश प्राप्त होता है तो आप उन्हें लिख लें। अपने विचारों को निम्नलिखित तीन कॉलम में व्यवस्थित कर लें।

सकारात्मक तथ्य और फायदे	नकारात्मक तथ्य व उनके नुकसान	अन्य विकल्प
.	.	.
.	.	.
.	.	.
.	.	.
.	.	.
.	.	.

(2) प्रतीक्षा करें । यदि प्रमाण अभी भी अनिर्णायक हैं, तो आपको प्रतीक्षा करने, अधिक जानकारी इकट्ठा करने व प्रार्थना करने की जरूरत है।

(3) बुद्धिमान बनें। यदि मुद्दा भावनात्मक है, जैसे कि किसी पुरूष का किसी स्त्री से मिलना, विवाह,बिमारी से चंगाई, किसी धार्मिक सभा में भाग लेना इत्यादि, तो आप विषयपरक सिद्धान्तों अर्थात विशेष आज्ञाओं, निषेधाज्ञाओं और परमेश्वर के वचन की शिक्षाओं और समझदार मसीहियों की सलाहों को ज्यादा महत्व दें।

(4) सही अर्थ समझें। केवल बाइबल के उन्हीं वचनों पर निर्भर न रहें जो आपको अच्छे लगते हैं परन्तु बाइबल के वचनों को सही सही इस्तेमाल करें(2 तीमुथीयुस 2:15)।

(5) निर्णय लें और काम करें। यदि सारे प्रमाण एक ही ओर ईशारा कर रहे हों, तब एक जिम्मेदार निर्णय लें और विश्वास के अनुसार काम करना शुरू कर दें।

(6) भरोसा करें। अगर बाद में आगे बढ़ना काफी कठिन जान पड़े तब," अन्धकार में परमेश्वर की उन बातों पर शंका न करें जो परमेश्वर ने आपसे उजियाले में कहीं थीं"।

(3) परमेश्वर की इच्छा पर चलने की शर्त को पूरा करें।

खोजें व चर्चा करें। परमेश्वर की इच्छा को मालूम करने व उस पर चलने की क्या शर्त है?

(1) परमेश्वर के साथ मे व्यक्तिगत व घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने का प्रयास करें(यूहन्ना 15:5)

(2) बाइबल में पायी जानी वाली परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए तत्पर रहें। (लूका 6:46-49; फिलिप्पियों 4:9)

(3) परमेश्वर की गुप्त व श्रेष्ठ इच्छा के प्रति समर्पित रहें जिसे परमेश्वर ने आपकी परिस्थिति में प्रगट किया है(रोमियों 8:28)

(4) अपने मन के बदल जाने से लगातार तुम्हारा मन भी बदलता चला जाए। (रोमियों 12:2; फिलिप्पियों 4:8)

एक तरफ आपको, इस संसार की चमक दमक को या जीवन के गलत दबाब को आपके जीवन को आकार देने की अनुमति प्रदान नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, ध्यान रखें कि आपके मुंह से कोई गलत या अभद्र भाषा न निकले। अश्लील गाने गाने या ठोकर खिलाने वाले संगीत सुनने से बचें। अश्लील पुस्तकें या पत्रिकाएं न पढ़ें। ध्यान दें कि आपके वस्त्र भड़काऊ तो नहीं हैं। आपत्तिजन गतिविधियों में शामिल होने से बचें। सासांरिक लोगों के साथ धनिष्ठ सम्बन्ध बनाने से बचें।

दूसरी ओर, आपको बाइबल पढ़ने, परमेश्वर के आत्मा की बातों को मानने, मसीहियों के साथ संगति करने के द्वारा अपने मन को नया करना और अपने आचरण को बदलते रहना चाहिए।

ड़. परमेश्वर की इच्छा का संक्षिप्त वर्णन

सिखाएं। परमेश्वर की अगुवाई और निर्णय लेने के सिद्धान्तों को सार:

1. बाइबल में जहां पर भी आपको विशेष आज्ञा, निषेधाज्ञा और विशेष शिक्षा मिले, आप उनका पालन करें।

2.जब बाइबल से कोई आज्ञा, निषेधाज्ञा व शिक्षा न मिले, तो उस समय पर आपको बाइबल के सामान्य निर्देशों के आधार पर एक उत्तम व बुद्धिमानी से भरा हुआ निर्णय लेना चाहिए। या आप बाइबल में किसी अच्छे उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं।

3.आपको अपना सब कुछ परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ हाथों में सौंप देना चाहिए, इसका अर्थ है कि आप उसकी सिद्ध व गुप्त इच्छाओं के प्रति समर्पण कर रहें हैं।

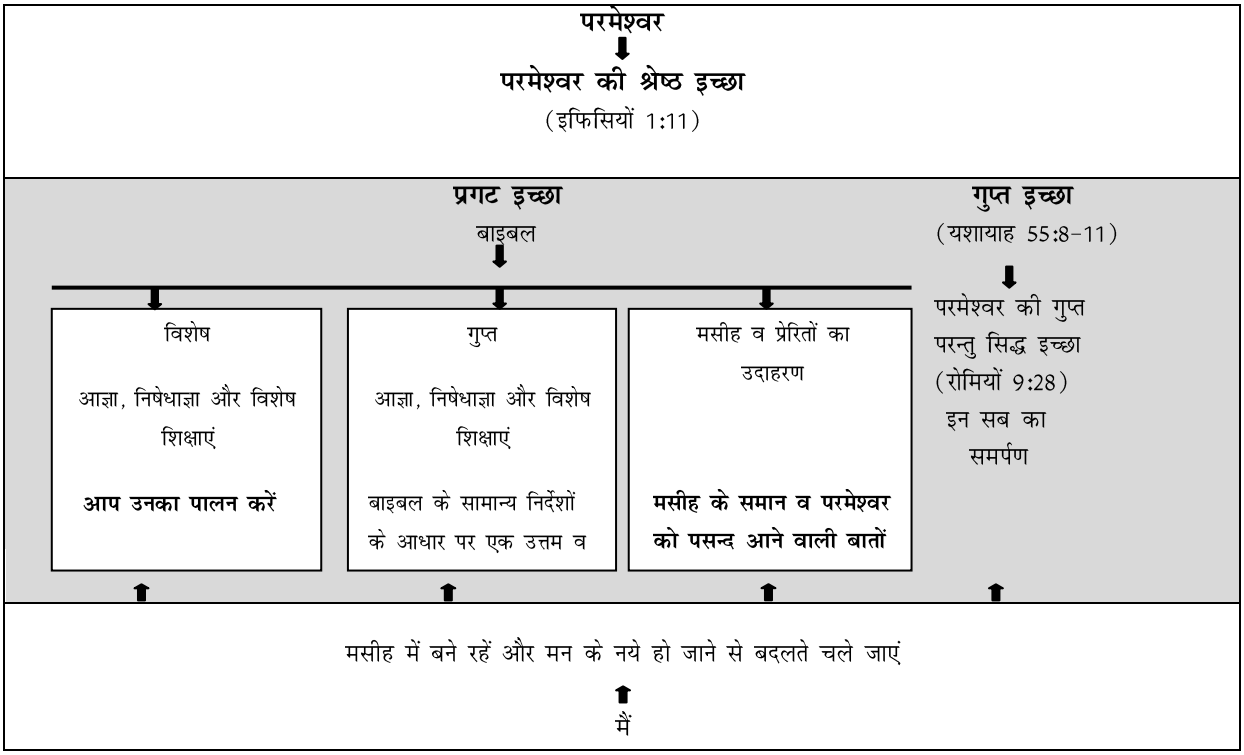

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज सीखी गयी शिक्षाओं की प्रतिक्रिया के रूप में अपने समूह में परमेश्वर से ***संक्षिप्त*** प्रार्थना करें।
या समूह को दो दो या तीन तीन में बाँट कर सीखी गयी बातों पर प्रतिक्रिया देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ "परमेश्वर की इच्छा को खोजना" की शिक्षा के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें। परमेश्वर की इच्छा से सम्बन्धित 7 कदमों को याद करें। अपने जीवन की परिस्थिति में दिये गये सिद्धान्तों के अर्न्तगत दिये गये प्रश्नों का इस्तेमाल करते हुए निर्णय लें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: निर्गमन 6,7,8, व 9 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन । घर पर ही अगल बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। 1 परतरस 2:11-25 । विषय: संसार में कष्ट। बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों वाले तरीके का इस्तेमाल करें। लेखा रखें ।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 44

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **ऐस्तर 6,7,8,9,**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (ऐस्तर 6,7,8,9)से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[शिष्यता]* **देना: मरकुस10:45**

क-ध्यान करना

2 कुरिन्थियों 9:6-15 **पढ़।**

निम्नलिखित याद करने वाले पद को वचन को श्वेत/श्याम पट लिखें।

देना 2 कुरिन्थियों 9:6-7
परन्तु बात यह है: जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा। हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करें ; न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है। 2 कुरिन्थियों 9:6-7

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पर लिखें:

1. देने के सन्दर्भ में नये नियम के सिद्धान्त ।

नये नियम में देने से सम्बन्धित सिद्धान्त 2 कुरिन्थियों 9:6-7 व 1 कुरिन्थियों 16:2 में दिये गये हैं। आइये मिलकर हम खोजें की उनमें क्या पाया जाता है।

(1) प्रथम सिद्धान्त: मसीही देना वह देना है जो आपने प्राप्त किया है।

2 कुरिन्थियों 9:10 में लिखा है,"अत: जो बोने वाले को बीज और भोजन के लिए रोटी देता है, वह तुम्हे बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा, और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा।" मसीही जन केवल उसी में से दे सकता है जो उसने परमेश्वर से प्राप्त किया है। जो बीज मसीही जन बोता है उसे देने वाला परमेश्वर ही है। जो कुछ मसीही जन बोाता है उसे वह परमेश्वर से ही प्राप्त करता है। 2 कुरिन्थियों 5:18 में लिखा है,"सब कुछ परमेश्वर की ओर से ही है।" और 1 कुरिन्थियों 4:7 में लिखा है कि तेरे पास क्या है जो तूने(दूसरे से)नहीं पाया है?" इसलिए मसीहीयों दान या भेंट दिया जाना परमेश्वर का अनुग्रह है, किसी मसीही की भलाई नहीं। परमेश्वर का अनुग्रह केवल मसीहियों को बोने के लिए बीज ही नहीं देता है,लेकिन उसमें मसीहियों के बीज के भण्डारों को बढ़ाने और उसकी धार्मिकता की फसल को बढ़ाने की भी योग्यता पायी जाती है।

(2) दूसरा सिद्धान्तः मसीही देना नियमित तौर पर बीज बोना (छितराना) है।

2 कुरिन्थियों 9:6 में लिखा गया है, "परन्तु बात यह है: जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।" मसीहियों को द्वारा दिया जाना फेंकना नहीं है। जो कोई मसीही जन देता है वह कोई नुकसान नहीं है, वरन वह गुणन होता जाता है। मसीहियों का देना बीज बोने के समान है। बाहर से देखने पर बीज बहुत छोटा और महत्वहीन दिखाई पड़ता है परन्तु भीतर से उस बीज में बहुत सी क्षमता होती है। उसके रूप के विपरीत, उस बीज के भीतर बढ़ने और जीवन के सारे गुण पाये जाते हैं। एक बीज को बढ़ाने के लिए और फल लाने के लिए, किसान को उस बीज को भूमि पर छितराने की आवश्यकता होती है। फसल को बढ़ते देखने से पहले उसके लिए बीज को छितराना बहुत ज़रूरी है। जिस प्रकार से पेड़ पर लगने वाले फल के साथ बीज बढ़ता है उसी प्रकार से मसीहियों द्वारा दिया गया दान भी गुणन के साथ बढ़ जाता है।

(3) तीसरा सिद्धान्तः मसीही द्वारा दिये जाने में, मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटता है।

गलातियों 6:7 में लिखा है कि "मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटता है। मसीही जन जिस प्रकार से बोयेगा उसी के अनुसार काटेगा। यह नियम कृषि क्षेत्र में लागू होता है, और यही नियम आत्मिक जगत का भी नियम है। जो छोड़ा बोता है वह थोड़ा ही काटेगा और जो ज्यादा बोता है वह ज्यादा काटेगा।

हम पुराने नियम में पहले ही इस नियम का पालन होते हुए देखते हैं। नीतिवचन 11:24-25 में लिखा है"ऐसे हैं जो छितरा देते हैं,तौभी उनकी बढ़ती ही होती है; और ऐसे भी हैं जो यथार्थ से कम देते हैं, और इस उनकी घटती ही होती है। उदार प्राणी हष्ट पुष्ट हो जाता है, और जो दूसरों की खेती सींचता है उसकी भी सीचीं जाएगी"। नीतिवचन 19:17 में लिखा है 'जो कंगाल पर अनुग्रह करता है वह यहोवा का उधार देता है, और वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा"। इसके अलावा यीशु ने देने को सेवा से जोड़ते हुए कहा कि यदि 'काई जन किसी को एक ग्लास ठण्डा पानी पिलाता है" तो वह अपने प्रतिफल से कभी भी वंचित न रहेगा(मत्ती 10:42)। उसने यह भी कहा कि यदि कोई भूखे को भोजन, और प्यासे को जल पिलाता है, किसी परदेशी को सिर छुपाने की जगह देता है, वह किसी नंगें को वस्त्र देता है, बिमारों और कैदियों की सुधि लेता है, तो वह यह सारे कार्य स्वयं यीशु मसीह के लिए करता है(मत्तो25:35-40)। इसलिए उदारता के साथ बोयें और आप उदारता के साथ फसल काटने पाएंगे।

(4) चौथा सिद्धान्त : मसीही लोगों द्वारा दिये जाने में मात्रा मायने नहीं रखती वरन जिस भावना के साथ दिया जाता है वह मनोवृत्ति मायने रखती है।

2 कुरिन्थियों 9:7 में लिखा है, "हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वालों से प्रेम रखता है।

पुराने नियम में दान देना मन चाहा नहीं हुआ करता था, वरन व्यवस्था कि द्वारा निर्धारित था(अर्थात इस्राएल की व्यवस्था के द्वारा निर्धारित था, मलाकी 3:6-12)(शिष्यता मैनुएल, परिशिष्ट 1 में पुराने नियम में दशमांस को देखें)। सर्वप्रथम, दसमांश देने की मांग या आज्ञा पुराने नियम में दी गयी और मत्ती 5:17,कुलुस्सियों 2:14, और इफिसियों 2:15, इस व्यवस्था को पूरा किया गया ,रद्द किया गया और बाद में इसे समाप्त कर दिया गया। दूसरा, दसमांश की मांग के चलते मसीही लोगों पर दसमांश देने का दबाव था जिसके कारण लोग मन से नहीं परन्तु कुढ़कुढ़ाकरा अपना दसमांश दिया करते थे। बाइबल हमें सिखाती है कि हर एक मसीही विश्वासी को अपने हृदय में ठान लेना चाहिए कि वह कितना दसमांश देना चाहता है और जितना वह निर्धारित करे,उतना वह हर्ष व मन से दे। यह भेंट दसवांश से भी ज्यादा हो सकता है(लूका 21:1-4)।

इसके विपरीत, मसीहियों को कितना भी देने की आज़ादी है। हर एक मसीही को अपने हृदय में यह ठान लेना चाहिए कि वह कितना देने जा रहा है। उस पर किसी नियम रकम या प्रतिशत मात्रा में दान देने का कोई दबाव नहीं है। अरूचि के साथ देना, अर्थात दान देने के बाद नुकसान होने या पैसे चले गये कह कर मन में दु:खी होते रहना, देना नहीं परन्तु कुढ़कुढ़ाना है। किसी अधिकारी के दबाव में आकर देना या इस वजह से देना कि लोग क्या सोचेंगे मसीही दान देने का सही तरीका नहीं है। इसलिए अगुवे या कलीसिया के विश्वासियों के लिए यह जरूरी नहीं है कि वे मण्डली में केवल दसमांश ही दें।

(5) पांचवां सिद्धान्तः मसीहियों को क्रमानुसार व नियमित तौर पर देना चाहिए।

1 कुरिन्थियों 16:2 में लिखा है सप्ताह के पहले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे कि मेरे आने पर चन्दा करना न पड़े। कुरिन्थियों की कलीसिया को सप्ताह के पहले दिन में एक नियम रकम को

अलग संचय करने व उसे बाद में इकट्ठा करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। यहां यह वचन किसी सभा के दौरान भेंट इकट्ठा करने की बात नहीं कर रहा है, परन्तु यह काम हर एक की एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। पौलुस ने मसीहियों पर भरोसा किया और उनके साथ कलीसिया के ज़िम्मेदार सदस्यों के रूप में व्यवहार किया। इसलिए हर एक मसीही जन निर्णय लेना चाहिए कि वह अपनी आमदनी में से कितना परमेश्वर के लिए अलग निकालना चाहता है और फिर इसकी खोज करना कि कब और किसे इस धन की आवश्यकता है उसकी जिम्मेदारी है।

2. देने से क्या आशीषें प्राप्त होती हैं?

(1) मसीही लोगों द्वारा दान दिय जाने से उनकी अपनी जरूरते पूरी करने के लिए पर्याप्त मात्रा में धन बचता है।

2 कुरिन्थियों 9:8 "परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है....जिस से जो तुम्हें आवश्यक हो तुम्हारे पास रहे। परमेश्वर के कामों के लिए दान देना सांसारिक लोगों की दृष्टि में एक मुर्खतापूर्ण निवेश साबित हो सकता है। लेकिन इस संसार के लोग यह नहीं जानते हैं कि परमेश्वर के पास मसीहियों की छोटी सी चीज़ों को गुणात्मक ढंग से बढ़ाने की योग्यता है। चाहें मसीही लोग कितना भी दान में दे दें,परमेश्वर के अनुग्रह से उनकी बढ़ती ही होती है नुकसान नहीं। भेंट देने के बाद मसीही जन को पता चलता है कि उसके पास उसकी अपनी जरूरतों के लिए अब भी पर्याप्त मात्रा में है।

(2) मसीहियों को देने से हर भले काम में भरपूरी प्राप्त होती है।

2 कुरिन्थियों 9:8 में लिखा है कि,"परमेश्वर तुम्हें सब प्रकार अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है, जिससे हर बात और हर समय....हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ हो। दान देने वाला मसीही जन पाता है कि परमेश्वर उसे सभी कामों में धनी बना देता है। 2 कुरिन्थियों 9:9 में लिखा है कि,"उसने बिखेरा, उसने कंगालों को दान दिया, उसका धर्म सदा बना रहेगा।" बाइबल हमें बताती है कि कोई व्यक्ति गरीबों को उपहार देने से धर्मी नहीं ठहर सकता। केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने से ही मनुष्य उद्धार प्राप्त कर सकता है। लेकिन जब कोई मसीही जन देना प्रारम्भ करता है, तब परमेश्वर उसके धार्मिकता में धनी बनाता है जिसका अर्थ उसके भले कामों में धनी होना है।

(3) मसीही दान देना आपकों उदारता में धनी बनाता है।

2 कुरिन्थियों 9:11 में लिखा है,"तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिए जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है,धनवान किये जाओ।" कई लोगों ने इस वचन का अर्थ सासांरिक धन से निकाल लिया है, लेकिन यह वचन आत्मिक व आन्तिरक धन की बात करता है। भेंटें देने वाला मसीही, भौतिक तौर पर धनी हो जाएगा यह जरूरी नहीं है, लेकिन उसके पास अपनी व्यक्तिगत जरूरतों के लिए पर्याप्त मात्रा में संसाधन उपलब्ध होगें, जैसा कि हमें वचन 8 बताता है। दान देने वाला मसीही अपने आप से अधिक देना सीखता है,वह अपना अधिक समय, अपनी ताकत, अपने गुणों और अपनी भौतिक वस्तुओं को भी देना सीखता है।वह यह सब परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव करने के कारण करता है।

(4) मसीहोयों के दान के कारण लोग प्रार्थना करते हैं।

2 कुरिन्थियों 9:11-14 में लिखा है कि दाने लेने वाला परमेश्वर का धन्यवाद करेगा, परमेश्वर की स्तुति करेगा और देने वालों के लिए प्रार्थना भी करेगा। 1कुरिन्थियों 12:24-26 में लिखा है, "परमेश्वर देह में अंगों को इस प्रकार से रखा है कि...देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें। इसलिए यदि एक अंग दु:ख पाता है, तो सब अंग उस के साथ दु:ख पाते हैं।" शरीर के एक अंग को चोट लगने से पूरी देह प्रभावित होती है। केवल आपकी मण्डली या कलीसिया के सदस्य मिलकर ही मसीह की देह का निर्माण नहीं करते। परन्तु संसार भर में पायी जाने वाली सारी कलीसियाओं के सभी सदस्य मिलकर मसीह की देह हैं। इसी कारण अगर संसार के एक हिस्से में किसी मसीही को कोई दु:ख या तकलीफ होती है तो दूसरे मसीह को उसका ख्याल करना चाहिए।

(5) मसीहियों की भेंट परमेश्वर के अद्भुत वरदान की सराहना करती है।

2 कुरिन्थियों 9:15 में लिखा है," परमेश्वर के वर्णन से बाहर वरदानों के लिए उसका धन्यवाद"। परमेश्वर ने हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए, अपने इकलौते पुत्र यीशु को बलिदान दिया है। और मसोह के साथ उसने अपना सब कुछ दे दिया। परमेश्वर का दान मसीहियों के किसी भी दान से श्रेष्ठ है। उसने मसीह में होकर अपने आप को कुर्बान कर दिया और मसीह के द्वारा सब प्रकार की स्वर्गीय आशीषों से आशीषित किया है। परमेश्वर के वरदान के द्वारा ही सभी मसीहियों को उद्धार की आशीष मिली है। इसी कारण परमेश्वर को वरदान वर्णन से बाहर है। मानवीय शब्दों में उसको बयान नहीं किया जा सकता।

लेकिन मनुष्य का हृदय इसे महिमित व परिवर्तन करने वाली हकीकत के रूप में अनुभव करता है। इसलिए मसीही भेंट कोई कर्तव्य समझकर नहीं किया जाता, यह परमेश्वर के द्वारा अवर्णित वरदानों के धन्यवाद के रूप में दिया जाने वाली भेंट है। परमेश्वर का वरदान सारे मसीहियों को दान या भेंट देने के लिए प्रेरित करता है।

3.मसीहियों ने किसको भेंट देनी चाहिए?

(1) आपको खिलाने वाले मसीहियों को।

1 कुरिन्थियों 9:7-14 व गलातियों 6:6 में लिखा है कि, मसीहियों को उनकी सहायता करनी चाहिए जो सुसमाचार प्रचार करते व बाइबल की सेवा निभाते हैं, चाहें वे उनकी मण्डली के हो या न हों।

(2)आपकी अगुवाई करने वाले मसीहियों को।

1 तीमुथीयुस 5517-18 के अनुसार, मसीहियों को अपनी मण्डनी के पुरनियों की सहायता करनी चाहिए जो अपने कामों को अच्छी तरह से करते हैं। पुरनिये(अर्थात पासबान या संरक्षक) किसी भी प्रकार के अनुदान सा सपोर्ट की मांग न करें और सदस्य उनकी सहायता करने को नज़रअन्दाज न करें। लेकिन वे परमेश्वर पर भरोसा करें व उसको आज्ञा को मानें।

(3) परमेश्वर का काम करने वाले मसीहियों को।

फिलिप्पियों 4:14-18 व 3यूहन्ना 5-8, मसीहियों को मिश्नरियों व भ्रमण या सुसमाचार का दौरा करने वाले इवैन्जलिस्ट की सहायता करनी चाहिए, चाहें वे उनकी कलीसिया के सदस्य न भी हों।

(4) जरूरत मन्द मसोहियों को।

याकूब 2:15-17,1यूहन्ना 3:17-18 और 2 कुरिन्थियों 8:7-15, मसीहियों को अपनी मण्डली के जरूरत मन्द मसीहियों या विश्वासियों क सहायता करनी चाहिए, जैसे कि विधवाओं, अनाथों, विकलांगों, कंगालों और दुखित लोगों की। वे संसार की कलीसिया के किसी भी जरूरत मन्द विश्वासी की सहायता कर सकते हैं

(5) आम जरूरत मन्द लोगों को।

नीतिवचन 19:17; 21:13 व मत्ती 6:1-4, मसीहियों को संसार के जरूरत मन्द गैर मसीहियों की भी सहायता करनी चाहिए।

4. मसीहियों को कितना दान देना चाहिए?

(1) अपनी आमदनी के अनुपात में देना चाहिए।

2 कुरिन्थियों 8:12 में हम पढ़ते हैं कि,"क्योंकि यदि मन की तैयारी हो तो दान उसके अनुसार ग्रहण भी होता है जा उसके पास है, न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं है।" और 1 कुरिन्थियों 16:2 में हम पढ़ते हैं कि हमें अपनी आमदनी या अपनी सम्पत्ति के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ना चाहिए। मसीहियों को अपनी सम्पत्ति व आमदनी के हिसाब से देना चाहिए। उदाहरण के लिए, धनी व्यक्ति अपने दसमाशं से भी अधिक दे सकता है और कोई गरीब व्यक्ति दसमांश देने के लिए मजबूर नहीं। (मैनुएल 4,परिशिष्ट1. पुराने नियम में दसमाशं)

(2)अपने निर्णय के अनुसार उदारता के साथ दो।

2 कुरिन्थियों 9:6-7 में हम पढ़ते हैं कि मसीहियों को स्वंय इस बात का निर्णय लेना चाहिए कि उन्हें कितना देना है। भेंट या दसमाशं में दी जाने वाली रकम मसीही विश्वासी और परमेश्वर के बोच का व्यक्तिगत मसला है इसमें किसी को ज़ोर जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए। लेकिन मसीहियों को उदारता के साथ देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***

2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** देना: 2 कुरिन्थियों 9:6-7

3) ***पुनः अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बंटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) ***[संसार में जीवन बिताना]*** **संसार के कष्ट. 1 पतरस 2:11-25**

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तमाल करते हुए 1 पतरस 2:11-25 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर 1 पतरस 2:11-25 को एक साथ पढ़ें।

आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

***ध्यान दें।* इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**

या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?

लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हों। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।

(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँट गयें विचार एक ही समान हों।

2:23

खोज 1. संकट के समय में मसीह ने प्रतिकार नहीं किया और न ही वह डरा।

मैं ऐसा संयम व आन्तरिक शक्ति पाने की चाह करता हूँ, कि मैं अपने शत्रुओं के साथ वैसा व्यवहार न करूं जैसा कि उन्होंने मेरे साथ किया था।

2:21

खोज 2. परमेश्वर मसीहियों को कष्ट उठाने के लिए बुलाता है।

परमेश्वर मसीहियों को मसीही के पदचिन्हों पर चलने और कष्टों के प्रति ठीक वैसी ही प्रतिक्रिया प्रगट करने के लिए बुलाता है जैसी मसीह ने प्रगट की थी। जो भी मसीही, मसीह में भक्ति का जीवन व्यतीत करना चाहता है वह सताया जाएगा(2 तीमुथीयुस 3:12)। उनके साथ अन्याय व उनका तिरस्कार होगा। मसीहियों का कष्ट उठाना जरूरी है, लेकिन जो लोग मसीह का अनुसरण करते हैं उन्हें लाभ होता है।

कदम 3 प्रश्न व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?

आईये हम 1 पतरस 2:11-25 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं और फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछें।

लेखा लें: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाँटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करन के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये हैं)

2:18

प्रश्न 1. मसीहियों को अपने वेतन का किस प्रकार सम्मान करना चाहिए?

ध्यान दें। इस सम्बन्ध में देखें तो, पुराने ज़माने में मसीहियों को अपने कठोर स्वामियों की अधीनता में काफी कष्ट उठाना पड़ा है। पद 18 में लिखा है कि, " हे सेवको, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो"। यहा पर शब्द 'सेवक' का अर्थ घरेलू दास से है, जो बाहर काम करने वाले गुलाम की तुलना में अपने स्वामी के अधिक नज़दीक होता है(निर्गमन 5:6)। परमेश्वर चाहते हैं कि वे अपने स्वामियों के अधीन रहें जिसका मतलब है कि उन्हें अपने स्वामियों के अधीन होता और उनकी आज्ञाओं को मानना हैं। वे अपने स्वामियों के अधीन यह सोचकर डर के मारे न रहे, कि अगर वे उनका कहना नहीं मानेगें को उन्हें सताया जाएगा,वरन मन की गहराई और आदर के साथ उनके अधीन रहें, यह जानते हुए कि परमेश्वर ऐसा चाहते हैं। वे केवल भले और दयालु स्वामियों के ही अधीन न रहें, वरन कठोर स्वामियों के भी अधीन रहं। कठोर शब्द का अर्थ है, चिड़चिता, गन्दे दिमाग वाला, बेतुका, मनमौजी, सोच से परे, अधर्मी। प्रेरित पौलुस घरेलू दासों से उनके मालिकों द्वारा कठोर और बेतुका व्यवहार करने पर भी समर्पित व अधीन रहने के लिए कहता है।

स्वामी-दास के रिश्ते को आधुनिक काल में हम मालिक-कर्मचारी के रिश्ते के तौर पर देख सकते हैं। बाइबल मांग करती है कि मसीही कर्मचारियों को बढ़े आदर के साथ अपने मालिकों के अधीन रहना चाहिए। मालिक जब भी कभी बेतुकी मांग या अपने कर्मचारियों के साथ अन्याय करते हैं तब कर्मचारियों को कष्ट होता है। कई मालिक बिना कोई अतिरिक्त मज़दूरी दिये हुए अतिरिक्त काम करवाना चाहते हैं। कुछ मालिक अपने कर्मचारियों से खतरनाक परिस्थितियों में काम करवाते हैं। कई मालिक जरूरत मन्द लोगों को काम पर रखकर उनसे कठिन सेवा लेते हैं,या उन्हें उपयुक्त मेहनताना नहीं देते या उनसे बिना मज़दूरी दिये हुए काम करवाते हैं। कई देशो में मालिक लोग बिना शिक्षा या मजदूरी दिये बच्चों से काम करवाते हैं। इस प्रकार की बहुत सी परिस्थितियों के कारण मसीहियों को काफी कष्ट होता है। मसीहियों को बस ऐसे ही अधर्मी या कठोर मालिक के अधीन नहीं होना चाहिए, लेकिन उन्हे धार्मिकता के लिए भूखा और प्यासा ज़रूर होना चाहिए(मत्ती 5:6), जिसका अर्थ हुआ, परिस्थितियों को सहज करने के लिए आदर के साथ काम करना। मसीहियों को लगातार भले काम करना, कठिन परिश्रम करना, विश्वास योग्य और ईमानदार होना चाहिए। मसीहियां को अपने मालिको से अपनी शर्तों के बारे में बात करनी चाहिए और दूसरों के सामने अपने मालिक के लिए आदर के साथ बात करनी चाहिए।

लेकिन यदि स्वामी कर्मचारियों से ऐसे कामों को करने के लिए कहते हैं जो बाइबल में मना किये गये हैं,तब कर्मचारी मालिक से प्रेम के साथ उस काम को करने के लिए मना कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, चाहे कुछ भी हो मसीही कर्मचारी न घूस ले या दे सकता, व्यापार में धोखा और झूठ नहीं बोल सकता,चोरी या किसी भी प्रकार की बुराई नहीं कर सकता। जब भी कभी उनके मालिक उनको धमकाये या डराये, ता वे कह सकते हैं कि वे इस दुनिया में किसी भी व्यक्ति की बात मानने से बेहतर परमेश्वर की बात मानना पसन्द करेंगे(प्रेरितों 4:19-20; 5:29)। जब कभी भी उनके मालिक उन्हे दण्ड दे या उन्हें नौकरी से निकाल दें, तो उन्हें इसे आदर के साथ सह लेना चाहिए। मसीही जन भले कामों के लिए कष्ट सह सकता है, परन्तु उसे बुराई करने के लिए तकलीफ नहीं उठाना चाहिए।

2:19

प्रश्न 2. परमेश्वर की दृष्टि में सही कामों के लिए दु:ख उठाने के क्या लाभ हैं?

ध्यान दें। मसीहियों को गलत कामों के लिए दण्ड पाने और भले कामों को करने के लिए दु:ख उठाने के बीच में भेद को समझना चाहिए। मसीही जन बुरे कामों के लिए कष्ट उठाने के लिए नहीं लेकिन भले कामों के लिए दु:ख सहने के लिए बुलाए गये हैं। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने अधिकतर भले व ठीक काम करने के लिए दु:ख उठाया। यीशु ने भी सही कामों को करने के कारण अत्याचार सहा। मसीही लोग भले कामों को करने के लिए दु:ख सहने हेतू बुलाये गये हैं।

लेकिन मसीहियों को यीशु मसीह के समान कष्टों और तकलीफों के प्रति प्रतिक्रिया करने के लिए बुलाया गया है। उन्हें इनकार या डरना नहीं चाहिए, वरन अपने जीवन व उस परिस्थिति को परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए, जो अपने समय में सब बातों का न्याय करेगा। इसके अलावा उन बातों के लिए दु:ख उठाने से मसीहियों को बहुत फायदा होगा जो परेमश्वर की दृष्टि में ठीक हैं:

मत्ती 5:11-12 धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारो निन्दा करे, और सताए, और झूठ बोल बोल कर तुम्हारे विरूद्ध में सब प्रकार की बुरी बाते कहे। तब आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बढ़ा फल है। इसलिए कि उन्होने उन भविष्यद्वक्ताओं (युसुफ, मूसा, एलिय्याह, यिर्मयाह, दानिय्येल)को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से समाया था।

इब्रानियों 12:10-11 में लिखा है," वह तो हमारे लाभ के लिए हमारी ताड़ना करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाए। वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं पर शोक की ही बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते सहते पक्के हो गये हैं बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।

याकूब 1:2-4 में लिखा है, "हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परिक्षाओं में पड़ो तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे।" अत: भले कामों के लिए दु:ख उठाने के बहुत से फायदे हैं।

2:20

प्रश्न 3. संसार के अन्दर इतना कष्ट और मृत्यु क्यों है?

ध्यान दें। ज्यादातर लोग परमेश्वर की दृष्टि में सही काम करने की वजह से दु:ख नहीं उठाते, वरन परमेश्वर की दृष्टि में गलत कार्यों को करने के कारण कष्ट उठाते हैं। पांच मुख्य कारण, क्यों लोग गलत कामों के कारण दु:ख उठाते हैं:

(1) लोग भक्तिहीन होने के कारण कष्ट उठाते हैं।

परमेश्वर लोगों की अभक्ति को लेकर क्रोधित हैं(रोमियों 1:18-23)। अभक्ति का अर्थ बाइबल के परमेश्वर के साथ गलत सम्बन्ध रखना है। अभक्ति विश्वास नहीं करती कि परमेश्वर का अस्तित्व है इस कारण वह व्यक्ति नास्तिक जीवन व्यतीत करता है और वह खुद ही अपना ईश्वर होता है और जो उसे अच्छा लगता है वही काम करता है। भक्तिहीन बाइबल के परमेश्वर पर भी विश्वास नहीं करता, वह मनुष्य के द्वारा बनाये गयी किसी मूर्ति या किसी धार्मिक नेता को गुरू मानकर विश्वास करता है। दूसरे शब्दों में भक्तिहीन बिना उस सच्चे परमेश्वर के जीवन व्यतीत करता है जिसने अपने आप को बाइबल में प्रगट किया है। भक्तिहीनता उस परमेश्वर के साथ गलत सम्बन्ध है जिसने अपने आप को बाइबल में प्रगट किया है।

भक्तिहीनता के फलस्वरूप लोगों के विचार निरर्थक और उनके हृदय अन्धकारमय हो जाते हैं। लोगों के विचार निरर्थक, बेकार हो जाने की वजह से वे अपना जीवन झूठ और धोखेबाजी में बिताते हैं, जिसकी वजह से लोगों को कष्टों को सामना करना पड़ता है। लोगों को आत्मिक व नैतिक जीवन जीने के लिए मिलने वाले प्रकाश के अभाव के कारण लोग ऐसे संसार में जीवन व्यतीत करते हैं जहां लोगों को भलाई करने की शक्ति नहीं मिलती जिसके कारण लोगों को कष्ट का सामना करना पड़ता है।

(2) लोग दुष्टता के कारण कष्ट सहते हैं।

परमेश्वर लोगों की दुष्टता को देखकर भी दु:खी होते हैं(रोमियों 1:23-32)। दुष्टता का अर्थ दूसरे लोगों के साथ गलत सम्बन्ध रखना है। लोग एक दूसरे के साथ बहुत से गलत काम करते हैं। लोग एक दूसरे को अश्लीलता और चरित्रहीन जीवन शैली में खींच लेते हैं। वे बुराई करने के नये नये तरीके ढूंढ़ते और एक दूसरे के प्रति दुष्टता करते हैं। रोमियों 1 में लिखी हुई बातों पर ध्यान दें, जैसे आत्मिक क्राध और परमेश्वर से नफरत, यौन अनैतिकता व भ्रष्टता, व्यापारिक लालच व धोखा,समाज में एक दूसरे की बुराई,घमण्ड और राजनैतिक असंवेदनशीलता और विश्वासहीनता। लोग बुराई से भरे हैं और बुराई करते हैं; वे बुराई तैयार करते और बुराई को स्वीकार करते हैं। कइ बार लोग अपनी अपवित्र लड़ाईयों और अपवित्र जीवन शैली को धर्म का जामा पहिना देते हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जब लोग एक दूसरे के लिए ऐसे काम करते हैं तो उन्हें कष्ट उठाना पड़ता है।

(3) लोग झूठी शिक्षाओं पर विश्वास करने के कारण दु:ख उठाते हैं।

लोग सत्य को दबाते और उसे बदल देते हैं(रोमियों 1:18,25)। सत्य को दबाना या उसे बदलना अपने आप में ही गलत रिश्ता है। यह किसी के स्वयं अपने विवेक खिलाफ पाप है। परमेश्वर के बारे में सच्चाई, परमेश्वर के कथन और उसके कामों को, मनुष्य की परिस्थिति और संसार के अन्त को लेकर संसार ज्यादातर अनभिज्ञ रहता है, उसे दबाया जाता या उसकी सत्य को बदल दिया जाता है। सरकार अपने आप को स्वयं से ऊंची आत्मिक व नैतिक शक्ति के अधीन नहीं करना चाहती। शक्तिशाली

लोग ज्यादातर सत्य को दबा या बदल देते हैं, क्योंकि यदि वे सत्य को स्वीकार करते हैं तो उन्हें उसके अनुसार बदलना पड़ेगा। जब तक सरकार व सत्ताधारी लोग बदलने से इनकार करते हैं, अधर्मी व स्वार्थी हैं, आत्म-धार्मिक व आत्म केन्द्रित हैं, तो वे अपनी ओर से सदैव सत्य को बदलने का प्रयास करते ही रहेगें।

झूठी शिक्षाओं पर विश्वास करन से लोगों में असुरक्षा व महत्वहीनता का भाव उत्पन्न होता है, जिससे उन्हें कष्ट होता है। वे असुरक्षित महसूस करते हैं का अर्थ है कि वे बिना शर्त के प्रेम किया जाना महसूस नहीं करते। वे महत्वहीन महसूस करते हैं का अर्थ है कि वे महसूस करते हैं कि उनके जीवन का अब कोई मतलब या उद्देश्य नहीं है।

(4) मृत्य के कारण लोगों को कष्ट होता है।

रोमियों 6:23 में लिखा है,"पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है"। और क्योंकि सभी लोगों ने पाप किया है,इसलिए लोग मरेंगे। पाप का परिणाम मृत्यु है। सभी लोगों को मृत्यु से डर लगता है। यह बहुत ही भयानक बात है कि लोग इसके बारे में सोचना या इसके बारे में बात करना नहीं चाहते हैं। बहुत से लोगों के लिए मृत्यु सारे कष्टों को चरमोत्कर्ष बन जाता है । मृत्यु का अर्थ अलगाव होता है। मृत्यु का अर्थ अपनी देह से अलग होना होता है। आपकी देह वापस मिट्टी में मिल जाती है। मृत्यु का अर्थ अपने प्रिय लोगों से अलगाव होता ह। आपको उन्हें इस धरती पर पीछे छोड़ना ही पड़ता है। मृत्यु का अर्थ होता है आपकी सम्पत्ति से अलगाव, आपकी सारी शिक्षा का नुकसान, आपकी नौकरी का नुकसान, अपनी उपाधि व उपलब्धियों का नुकसान उठाना। अपनी मृत्यु के समय आपने जो कुछ इस धरती पर मेहनत करके कमाया होता है उसे अपने साथ नहीं ले जा सकते। मृत्यु उन लोगों के लिए भी दु:ख दायी होती है जो पीछे छूट जाते हैं। लोग अपने प्रियजनों से अलग हो जाते हैं और उनसे वंचित रहते हैं। अत: जितने लोग जीवित हैं, वे मृत्यु से डरते हैं, क्यों वे नहीं जानते कि मृत्यु के बाद क्या अपेक्षा की जा सकती है। मृत्यु के कारण सभी लोगों को कष्ट होता है।

(5) लोगों को न्याय होने के कारण उन्हें कष्ट होता है।

लोगों को कष्ट इसलिए होता है कि वे जो बोते हैं वहीं काटते हैं(गलातियों 6:7-8)। जो लोग परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं परमेश्वर उन्हें दण्ड देता है। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के अन्दर बहुत से नियमों को बनाया है। यदि उन नियमों को उल्लंघन किया जाता है तो परिणाम दण्ड होता है। उदाहरण के लिए, यदि एक व्यक्ति गुरूत्वाकर्षण के नियम को तोड़ता है, तब उसका उस बुरी तरह से गिरना निश्चित है। इसी प्रकार से परमेश्वर ने अपनी सृष्टि और लोगों के लिए आत्मिक व नैतिक नियमों को तैयार किया है। यदि लोग परमेश्वर के आत्मिक या नैतिक नियमों का उल्लंघन करते हैं तो उन्हें दण्ड मिलता है और परिणाम स्वरूप उन्हें कष्ट उठाना पड़ता है। बाइबल कहती है कि, "मनुष्य जो बोता है वही काटता है"(गलातियों 6:7)। जो कोई आलस्य को बोता है वह कंगाल हो जाता है। जो कोई नफरत को बोता है उसके सम्बन्ध टूट जाते हैं। जो तानाशाही को बोता है वह झगड़ों की फसल काटता है। ज़्यादातर अभक्ति और दुष्ट जीवन शैली का फल उसे इसी जीवन काल में मिल जाता है। लोग अपने ही दुष्ट व बुरे कामों को परिणाम भुगतते हैं।

लोग परमेश्वर की चेतावनी की महाविपदा के कारण कष्ट उठाते हैं। हाग्गै 1:6-10 में लिखा है कि परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देता है जो परमेश्वर को नज़रअन्दाज, अस्वीकार करते या उसकी आज्ञा पालन नहीं करते हैं। परमेश्वर सारे जगत को नियन्त्रित करता है, जिसमें इतिहास की हर एक घटना और प्रकृति की सारी शक्तियां शामिल हैं। जब लोग परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते या परमेश्वर और मनुष्य के बीच में सम्बन्ध टूट जाता है, तब परमेश्वर उन पर से अपनी छत्र छाया को हटा देता है, और कई बार तो उन्हें दण्ड भी देता है। और जब परमेश्वर लोगों को न्याय करता है तो उन्हें कष्ट होता है। उदाहरण के लिए, वह पेड़ों से फल गायब कर देता है और लोगों की भोजन वस्तु और कपड़ों जैसी बुनियादी जरूरतें पूरी नहीं हो पातीं। वह लोगों की कमाई को कम कर देता है और जीवन से उनकी ऊँची अपेक्षाएं समाप्त हो जाती हैं। इस तरह से परमेश्वर सब प्रकार की आपदाओं जैसे भूकम्प, बाढ़ और सूखा और अकाल के द्वारा इतिहास में पाप के खिलाफ अपनी अप्रसन्नता को ज़ाहिर करता रहा है ताकि लोगों को मन फिराव व परमेश्वर के पास आने के लिए चिताया जा सके(यहेजकेल 14:21; आमोस 4:6-12)।

जब परमेश्वर अन्तिम न्याय करेगा,तब लोग काफी तकलीफ का सामना करेंगे। इब्रानियों 9:27 में लिखा है कि परमेश्वर का अन्तिम न्याय मुत्योपरान्त होगा। तब परमेश्वर मनुष्य का उसकी सारी भक्ति,दुष्टता और झूठी शिक्षाओं पर विश्वास करने और परमेश्वर को अस्विकार करने के लिए न्याय करेगा। दुष्टों को परमेश्वर से हमेशा के लिए अलगाव का दण्ड मिलेगा, और वे

दिन और यातनाओं और पीढ़ाओं को भोगेंगे(2 थिस्लुनिकियों 1:8-9)। परमेश्वर के अन्तिम न्याय का दण्ड शारीरिक मृत्यु से भी ज्यादा बुरा है। सारे अविश्वासी व दुष्ट लोग भविष्य में कष्ट सहेंगे। यह बहुत ही गम्भीर मामला है। परमेश्वर द्वारा न्याय किये जाने के बाद मिलने वाला दण्ड धरती के वर्तमान कष्टों या तकलीफों से बहुत बुरा होगा!

सभी लोगों को गलत काम करने का दण्ड मिलेगा। तथापि, मसीहियों को गलत काम करने के लिए कष्ट नहीं उठाना चाहिए।

2:21-23

प्रश्न 4. भले काम करने के बावजूद कष्ट मिलने पर भी मसीहियों को किस प्रकार प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

ध्यान दें। संसार में, जब लोगों को कष्ट उठाना पड़ता है वे आक्रोश या उपद्रव के द्वारा अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। वे कार्यकर्ता होने के नाते अपने बनाये गये मानवीय अधिकारों के आधार पर अपनी लड़ाई को लड़ते हैं। जब उनके मालिक लोग उनकी मांगों को पूरा नहीं करते, तो वे हड़ताल कर देते हैं, दूसरे कर्मचारियों को उनके विरोध प्रदर्शन में शामिल होने के लिए कहते हैं, और जो लोग उनका साथ नहीं देते वे उन्हें सताते हैं। जब उनकी मांगों को नहीं माना जाता तो, वे उपद्रव फैलाने लगते, अपने संगी कर्मचारियों को मारने लगते, अपने मालिकों की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाने लगते यहां तक कि वे सार्वजनिक सम्पत्तियों को भी नुकसान पहुचाने लगते हैं। "वे आंख के बदले आंख निकाल लेते तथा दांत के बदले दांत तोड़ देते हैं (मत्ती 5:38)।

मसीही लोगों को भले काम करने पर कष्ट मिलने पर किस प्रकार की प्रतिक्रिया देनी चाहिए। प्रेरित पतरस कहता है कि मसीहियों को अपने स्वामी, यीशु मसीह के पदचिन्हों पर चलना चाहिए। उसने कभी कोई पाप नहीं किया, लेकिन फिर भी लोगों ने उसकी बेईज्जती की, तब उसने विरोध नहीं किया। उसने लोगों की बुराई के बदले उन के साथ बुराई नहीं की। जब लोगों ने उसे थप्पड़ व डण्डों से मारा, तब उसने उन्हें कोई धमकी नहीं दी। वह अगर चाहता तो स्वर्गदूतों की सेना की सहायता से उनसे बदला ले सकता या उन्हें दण्ड दे सकता था, लेकिन उसने अपना मुँह नहीं खोला।

तथापि, भले काम करने पर भी कष्ट या दु:ख उठाते समय यीशू मसीह पूरी तरह से निष्क्रिय नहीं रहा। पद 23 में लिखा है "कि वह अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथों में सौंपता था।" जब कभी लोगों ने यीशु को सताया, यीशु ने प्रार्थना की और अपने मुद्दे को परमेश्वर पिता के हाथों में सौंप दिया। किसी पर दोष लगाने तथा उसे दण्ड देने का अधिकार केवल परमेश्वर के हाथों में है(रोमियो 12:17-21)। उसके मानवीय स्वभाव में रहते हुए, यीशु मसीह ने किसी का न्याय करने,दोष लगाने और दण्ड देने का अधिकार परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया था। परमेश्वर अपने नियुक्त समय में, परमेश्वर पिता दुष्ट लोगों, चाहे वे आपके मालिक हों, आपकी सरकार हो या आपके राष्ट्र का धर्म हो सबका न्याय करेगा। इसलिए यीशु ने उन्हें धमकाने या उनसे विरोध की जरूरत महसूस नहीं की। मसीहियों को भी यीशु मसीह के पदचिन्हों पर चलते हुए विरोध करना या धमकाना नहीं चाहिए।

उसने दु:ख उठाकर भी अपने दुश्मनों के लिए प्रार्थना की(लूका 23:34; 6:27-28)।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दें: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम 1 पतरस 2:11-25 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे।

(याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा,और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1 पतरस 2:11-25 के आधार पर सम्भवत: लागू की जाने वाली बातों के उदाहरण।

2:11 याद रखें कि पापमय इच्छाओं को त्यागना, जो हमारी आत्मा के विरूद्ध लड़ाई लड़ती है,कठिन हो सकता है। इस प्रकार की इच्छाएं, कामुक इच्छाएं, आत्म-केन्द्रित इच्छाएं, स्वार्थीपन, आत्मधार्मिकपन, भौतिक वस्तुओं के लिए लालच, उपाधि(परिवार या समाज में) या प्रसिद्धि हो सकती हैं। अपनी पापमय इच्छाओं के खिलाफ लड़ना बहुत दु:खद प्रक्रिया हो सकती है। लेकिन उसका फल पवित्रता और धार्मिकता होगी।

2:12 याद रखें पागानी और दूसरे धर्मों के लोग आपको मसीही होने के कारण, यीशु मसीही की आराधना करने के लिए और मसीही जीवन शैली अपनाने के लिए सता सकते हैं। लेकिन यदि आप उनके बीच में नियमित तौर पर भले कार्य करते रहें(लूका 6:27-28), तो ये लोग एक न एक दिन बदलकर (नीतिवचन 16:7) परमेश्वर की महिमा करेंगे।

2:13-15 हर एक उस बात में अधीन रहो जो परमेश्वर की दृष्टि में मसीहियों पर अत्याचार करने वाली सरकार को लेकर ठीक हो। परमेश्वर की दृष्टि में भले काम करने के द्वारा, आप उनकी बेकार की बातों को शान्त कर सकते हैं।

2:16 अत्याचार करने वाली व मसीही विरोधी सरकार के अधीन भी स्वतन्त्र लोगों के समान जीवन बिताएं, अर्थात ऐसे लोगों के समान जिन्हें पाप की शक्ति से छुटकारा तथा परमेश्वर की ओर से क्षमा मिली हो। आज़ाद लोगों के समान जीवन व्यतीत करें, अर्थात ऐसे लोगों के समान जो नफरत, विरोध,धमकियों और झूठ और अन्याय से आज़ाद हो।

2:17. तानाशाही और मसीही विरोधी सरकार के अधीन रहते हुए भी एक दूसरे के प्रति आदर को प्रदर्शित करें। हर एक मसीही मण्डली के सदस्य को प्रेम करने के द्वारा आप मसीही भाईचारे व आदर को प्रगट कर सकते हैं, खास तौर पर जब उन पर जुल्म या कष्ट होता है। आप एक मात्र परमेश्वर का भय मानने के द्वारा,जिसने अपने आपको बाइबल में जाहिर किया है परमेश्वर के प्रति उपयुक्त आदर प्रगट करते हैं, खास तौर पर तब जब आपको खुद यीशु मसीह पर विश्वास करने के कारण सताया गया हो। आप अपने देश के नियमों व कानूनों का पालन करने के द्वारा अपने देश की सरकार का आदर करते हैं, केवल उन नियमों को छोड़कर जो बाइबल का सीधे तौर पर विरोध करते हैं।

2:18-20 यदि आप किसी गैर मसीही मालिक के यहां काम करने वाले हैं, तो आप अपने पूरे मने से उन सारी बातों में उन सारी बातों में उसका आदर करें जो बाइबल का विरोध नहीं करती हैं। यदि वह आपके साथ कठोर व्यवहार करता है, तो उन परिस्थितियों में भी अपने परमेश्वर को याद रखने के लिए तथा उस अन्याय के कष्ट को सहने के लिए परमेश्वर आपकी सराहना करेगा।

2:21-23. कभी यह न भूलें कि परमेश्वर ने मसीहियों को दु:ख उठान के लिए बुलाया है। परमेश्वर ने अपनी दृष्टि में उचित काम करने के बदले दु:ख उठाने के लिए आपको बुलाया है। उसने आपको तकलीफों के प्रति ठीक वैसी ही प्रतिक्रिया देने के लिए बुलाया है जसी यीशु ने अपनी तकलीफों के प्रति प्रतिक्रिया दी थी। उसने आपको दूसरों के द्वारा बुराई किये जाने पर भी विरोध न करने के लिए बुलाया है। उसने आपको दूसरों द्वारा दु:ख पाने पर भी उन्हें किसी प्रकार से न धमकाने के लिए बुलाया है। उसने आपको अपनी कठिन परिस्थितियों का या जिन लोगों के द्वारा आपको दु:ख पहुंचा है उनका न्याय करने के लिए नहीं बुलाया है। उसने आपको अपना जीवन व अपनी सारी कठिन परिस्थितियों को परमेश्वर को सौंपने के लिए बुलाया है! परमेश्वर ने मसीहियों को कष्ट उठाने और अपने कष्टों को प्रतिक्रिया देने के लिए बुलाया है।

2. 1 पतरस 2:11-25 में व्यक्तिगत तौर पर इस्तेमाल की जाने वाली बातों का उदाहरण।

दु:खों के बीच में मैं मसीह के उदाहरण का अनुसरण करना चाहता हूँ। हर बार जब लोग मेरी बेईज्जती करते हैं, मैं उनका विरोध करने की बजाय उन्हें आशीष देना और उनके लिए भलाई करना चाहता हूँ। यदि मुझे लोगों के व्यवहार के कारण तकलीफ पहुंचती है, तो मैं उस दर्द से भागने की बजाय उसे सहूंगा।

मैं उस वजह पर ध्यान केन्द्रित नहीं करना चाहता जिसकी वजह से मुझे कष्ट हो रहा है, वरन उन परिणामों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहता हूँ जो परमेश्वर की दृष्टि में भले कामों के कारण दु:ख उठाने के बाद मेरे जीवन में प्रगट होने वाले हैं।

कदम 5. प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें 1 पतरस 2:11-25 में सिखाई हैं।
(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]*
		दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन के समूह में होकर **प्रार्थना करते रहें।** एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]**
		अगले अध्याय के लिए

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ 1 पतरस 2:11-25 20 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: अय्यूब 1.2.12.व 14 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। देना: 2 कुरिन्थियों 9:6-7। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 45

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ परमेश्वर के लिए शिष्य निर्माण करने के इस पाठयक्रम व समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंपे।

2	**आराधना** (20 मिनट) *[स्वभाव का प्रगटीकरण]* **परमेश्वर की महिमा के लिए जीना**

इस अध्याय में हम परमेश्वर की महिमा के लिए जीवन बिताने के द्वारा अपनी आराधना को प्रगट करना सीखेगें।

1. एक मसीही की जीवन शैली।

भजन संहिता 15:1-5 **पढ़ें।**

चर्चा करें। मसीही जीवन शैली की क्या विशेषताएं होती हैं?

ध्यान दें।

उसका व्यवहार। मसीही चलन या व्यवहार निष्कलंक होता है। वह केवल उचित काम ही करता है।

उसकी बातें। वह अपने हृदय की गहराई से सत्य बोलता है। उसकी ईमानदारी को लेकर कोई सन्देह नहीं होता।

उसके पड़ोसी से उसका सम्बन्ध। वह अपने पड़ोसी के साथ कोई बुरा काम नहीं करता। वह अपने पड़ोसी की बुराई या बदनामी नहीं करता।

बुरे लोगों के साथ उसका रिश्ता। वह दुष्ट लोगों को तुच्छ जानता है,अर्थात वह उनके गलत कार्यो को अस्वीकार करता है और उनको नहीं सराहता और न ही उनके गलत कामों के लिए उनका आदर करता है। लेकिन वह उनसे नफरत नहीं करता(लूका 6:27-28)

विश्वासियों के साथ उसका सम्बन्ध। वह परमेश्वर का भय मानने वाले व लगातार दुष्टता न करने वाले जन का आदर करता है।

उसके वायदे। वह जल्दबाजी में किये गये वायदों को छोड़कर, जिसमें वह जल्द ही सुधार कर लेता है, अपने सारे वायदों को पूरा करता है। (नीतिवचन 6:1-5)

जरूरतमन्द लोगों के साथ उसका सम्बन्ध। वह बिना ब्याज़ मांगे लोगों की सहायता करता है।

उसका धर्म। वह घूस देता है, परन्तु लेता नहीं है।

किस प्रकार की जीवन शैली के लिए आप अपना जीवन समर्पित करेगें? आप परमेश्वर की महिमा के लिए वर्तमान में किस प्रकार की जीवन शैली का अभ्यास कर रहे हैं?

2. परमेश्वर की प्रतिज्ञा।

जो मसीही जन, भजन 15 के हिसाब से जीवन व्यतीत करता है वह उसकी उपस्थिति में ठिकाना पाएगा(भजन 15:1)

वे अपने जीवन में किसी भी व्यक्ति या परिस्थिति के कारण न डगमगाएगा(भजन 15:5)

3. एक मसीही अगुवे की जीवन शैली।

1तीमुथीयुस 4:12-16 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। एक मसीही अगुवे ही क्या विशेषताएं होनी चाहिए?

ध्यान दें।

उसकी उम्र उसे अगुवा(एक पुरनिया) होने से अयोग्य नहीं ठहराती।

वह दूसरे मसीहियों के लिए एक आदर्श होता है।(1पतरस 5:2-3)

वह बाइबल का अध्ययन करने व बाइबल की शिक्षा देने के लिए अपने समय,शक्ति व योग्यताओं को समर्पित करता है।

वह परमेश्वर द्वारा दिये गये आत्मिक वरदानों को इस्तेमाल करता है।

वह कभी उन्नति करना बन्द नहीं करता
वह अपने जीवन व अपनी शिक्षाओं को निरन्तर मूल्यांकन करता है।
आराधना। आगे बढ़कर परमेश्वर की उसकी विशेषताओं के आधार पर आराधना करता है जो परमेश्वर को महिमा देने वाली जीवन शैली की मांग करती हैं। एक या दो वाक्यों में परमेश्वर की आराधना करें।

3.	**बाँटना** (20 मिनट) [एकान्त समय] **अय्यूब 1,2,12,14**

- ***आगे बढ़कर*** (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (यहोशू 1-4)से क्या सीखा।
- अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70मिनट) *[पवित्र आत्मा]* **पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाना और परिपूर्ण होना**

मैनुएल 2 अध्याय 21 में हमने पवित्र आत्मा के स्वभाव,लोगों में उसके काम व कलीसिया में उसके कामों के बारे में सिखाया था। मैलुएल 4, अध्याय 45 में हम पवित्र आत्मा के कुछ विशेष कार्यो के बारे में सीखेगें: पवित्र आत्मा के बपतिस्ता, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होन, तथा पवित्र आत्मा के वरदानों के बारे में।
मैनुएल 7, अध्याय 35 में हम पवित्र आत्मा के आत्मिक वरदानों के बारे में पढ़ेगें।

क.पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

1. 'पवित्र आत्मा का बपतिस्मा' की अभिव्यक्ति ।

(1)बाइबल में अभिव्यक्ति

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, यह अभिव्यक्ति नये नियम में केवल सात बार सामने आती है (मत्ती 3:10-12; मरकुस 1:8; लूका 3:16;प्रेरितों के काम 1:5; प्रेरितों 11:14-18 व 1 कुरिन्थियों 12:12-13)। सातों बार इसका परिणाम नया जन्म था, अर्थात किसी के भीतर मसीही जीवन का आरम्भ होना। मत्ती 3:10-12 में पवित्र आत्मा का सम्बन्ध स्पष्ट तौर पर परमेश्वर के राज्य में लोगों को इकट्ठा करने से है, जबकि आग के साथ बपतिस्मा का सम्बन्ध अविश्वासियों के अन्तिम न्याय से है।

(2) भविष्यद्वाणियां और उनका पूरा होना।

पुराने नियम में पहले ही पवित्र आत्मा की भविष्यवाणी कर दी गयी थी(यहेजकेल 36:25-27; योएल 2:28-32)
पवित्र आत्मा की भविष्यवाणी को पूरा होना

- प्रेरितों के काम 2:1-4 में पहली बार यीशु मसीह के चेलों ने पवित्र आत्मा पाया
- प्रेरितों 2:37-41(प्रेरितों 1:8क) पहली बार यहूदी विश्वासियों ने पवित्र आत्मा पाया।
- प्रेरितों 8:12-17(प्रेरितों 1:8ख) में पहली बार किसी सामरी ने पवित्र आत्मा पाया।
- प्रेरितों 10:34-48(प्रेरितों 1:8;11:14; 15-11) में अन्यजातियों में से पहले व्यक्ति ने पवित्र आत्मा पाया।

यहूदियों में कलीसिया की नींव पड़ने के बाद, आधे-यहूदी(सामरी लोग) व गैर यहूदी (अन्यजातियां), और जितनों ने सुसमाचार सुना और यीशु मसीह में विश्वास किया,

- पवित्र आत्मा पाया (प्रेरितों 2:38-39) जिसका अर्थ है
- पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाया(1 कुरिन्थियों 12:12-13) या
- पवित्र आत्मा के द्वारा मुहर लगाया गया(इफिसियों 1:13-14)या
- पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म पाया (तीतुस 3:5-7)

पवित्र आत्मा को प्राप्त करने की ये ही कुछ अभिव्यक्तियां हैं

2. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने का अर्थ।

बाइबल में पवित्र पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने को बहुत सी अभिव्यक्तियों द्वारा प्रगट किया गया है।

- जिन लोगों ने विश्वास किया उन पर पवित्र आत्मा *उण्डेला गया* (प्रेरितों 2:17,33;10:45; तीतुस 3:6)
- जिन लोगों ने विश्वास किया उन पर पवित्र आत्मा *उतर आया* (प्रेरितों 10:44;11:15)
- जिन लोगों ने विश्वास किया उनको पवित्र आत्मा *दिया गया*(प्रेरितों 11:17; 15:8)
- जिन लोगों ने विश्वास किया उन्होंने पवित्र आत्मा *पाया*(प्रेरितों 10:47)
- इसे पवित्र आत्मा का "*बपतिस्मा* "कहा गया(प्रेरितों 11:16)
- इसे पवित्र आत्मा द्वारा "*मुहर लगाना* "भी कहा गया।(इफिसियों 1:13;2 कुरिन्थियों 1:21-22)
- यीशु मसीही ने इसे 'स्वर्ग की ओर से जन्म पाना' या 'पुन: जन्म पाना कहा' (यूहन्ना 3:3-8)

इन सारी अभिव्यक्तियों का अर्थ एक ही है।

(1) पवित्र आत्मा के बपतिस्में का अर्थ पवित्र आत्मा प्राप्त करना हुआ,
जिसके द्वारा कोई व्यक्ति नया जन्म या उद्धार प्राप्त करता है।

जब पहली बार अन्यजाति में स किसी ने सुसमाचार सुनकर यीशु मसीह पर विश्वास किया(ई.प. 40 में), तो पवित्र आत्मा ठीक उसी रीति से उन पर उतरा जिस प्रकार से वह यहूदियों में से प्रथम चेलों पर उतरा था(ई.प. 30 में)। परमेश्वर ने उन्हें पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का वरदान दिया और इस घटना को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कहा गया (प्रेरितों 11:15-17)।

यहूदियों को पिन्तेकूस्त 30 ई.प. हुआ था। प्रथम आधे यहूदियों का (सामरियों) को पिन्तेकूस्त 33/34 में हुआ था। अन्यजातियों के लिए पिन्तेकुस्त का दिन 40 ई.प आया। जिसका परिणाम यह हुआ कि जिन गैर मसीहियों ने यीशु मसीह पर विश्वास किया उन्होने भी ठीक उसी प्रकार से उद्धार पाया जिस प्रकार से यीशु पर विश्वास करने वाले यहूदियों ने बपतिस्मा पाया था(प्रेरितों 2:18,21; 11:14; 15:11; रोमियों 10:12-13; इफिसियों 1:13)। जब उन्होने आत्मा के द्वारा बपतिस्मा प्राप्त किया तब परमेश्वर ने उन्हें मन फिराव की आशीष दी(प्रेरितों 11:18) और परमेश्वर ने उनके हृदय को शुद्ध कर दिया(प्रेरितों 15:9)। ये बाइबल आधारित अभिव्यक्तियां हैं जो नये जन्म या उद्धार को प्रगट करती हैं।

उस समय से काफी पहले यीशु ने उन लोगों को सिखाया था, जिन्होने उस पर विश्वास करके, पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म(यूहन्ना 1:12-13;3:3-8),अनन्त जीवन (यूहन्ना 3:16) पाया और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किया(यूहन्ना 3:3-8)। ठीक इसी प्रकार से उस समय के काफी बाद में पौलुस ने सिखाया कि पवित्र आत्मा उन लोगों को उद्धार देता है जो नये जन्म के स्नान और नये होने के द्वारा परमेश्वर पर विश्वास करते हैं।(तीतुस 3:3-8)।

(2)आत्मा के द्वारा बपतिस्में को अर्थ पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करना है,
जिसके द्वारा कोई व्यक्ति मसीह व उसकी कलीसिया से सम्बन्ध स्थापित करने लगता है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कहा कि यीशु मसीही लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देगा और लोगों को ऐसे इकट्ठा करेगा जैसे कोई गेहूं का खलिहान में इकट्ठा करता है(मत्ति 3:11-12)। पौलुस पिन्तेकुस्त के 26 वर्षों के बाद यहूदियों और अन्यजातियों में से आये कुरिन्थियों के विश्वासियों को लिखता है कि, केवल विशेष समूह के लोगों को ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त नहीं हुआ था, वरन ''हम सभी ने एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा पाया" और वह देह मसीह की देह है। जिसमें सारे प्रेरित व संसार के सारे यहूदी शामिल है, चाहे वे यहूदियों में से हो या अन्यजातियों में से(1 कुरिन्थियों 12:12-13)। अत: जब लोग यीशु मसीह में विश्वास करने लगे, तो एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए उनका बपतिस्मा हो गया(इफिसियों 1:22-23)।वे मसीह की आत्मिक देह का हिस्सा हो गये,अर्थात सार्वभौमिक मसीही कलीसिया का हिस्सा हो गये। उस समय से लेकर विश्वासी जन अकेले नहीं हैं, परन्तु वे एक नये समाज का हिस्सा हैं।

(3)पवित्र आत्मा से बपतिस्मा का अर्थ पवित्र आत्मा को प्राप्त करना है।

जिसके द्वारा पवित्र आत्मा विश्वासी के जीवन में वास करता तथा कार्य करता है।

पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के द्वारा पवित्र आत्मा विश्वासी के जीवन में (यूहन्ना 7:37-39; 1कुरिन्थियों 6:19-20) तथा कलीसिया अर्थात मसीह की देह में वास करने लगता है (यूहन्ना 14:16-17; इफिसियों 2:19-22)। उनमें रहने वाला पवित्र आत्मा वास्तव में स्वयं 'मसीह से कम नहीं है'। जिस किसी ने आत्मा पाया है वह मसीही है। लेकिन जिस में परमेश्वर का आत्मा नहीं वह मसीही नहीं हैं (रोमियों 8:9-10; 1 कुरिन्थियों 12:3)। पवित्र आत्मा मसीह द्वारा किये गये सम्पूर्ण उद्धार कार्य का मसीही विश्वासी के जीवन में भरपूरी से इस्तेमाल करता है। समय बीतने पर यह प्रमाणित हो जाता है कि पवित्र आत्मा मसीहियों को विभिन्न प्रकार के वरदान देता है जिसकी सहायता से उन्हें दूसरे मसीहियों की सेवा करनी चाहिए (1पतरस 4:10-11),कलीसिया या मसीह की देह की स्थापना करनी चाहिए (1कुरिन्थियों 4:12:7; 14:12)सेवा के विभिन्न काम करने के लिए मसीहियों को तैयार करना चाहिए (इफिसियों 4:11-13)तथा परमेश्वर को महिमा देनी चाहिए (1पतरस 4:11)।

साराशं। पवित्र आत्मा को बपतिस्मा तब होता है जब लोग पहली बार यीशु मसीह विश्वास करते हैं, और जिसका परिणाम नया जन्म या उद्धार, मसीह व मसीही कलीसिया का सम्बन्ध, पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर का उनके जीवन में निवास और उनका शुद्धिकरण, और सेवा के लिए आत्मिक वरदानों द्वारा भरा जाना होता है।

3. पवित्र आत्मा से भरे जाने के समय घटनाओं का क्रम।

(1) ऐसा क्यों है कि यीशु मसीह के 120 शिष्यों को विश्वास करने के काफी लम्बे समयान्तराल के बाद आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त हुआ।

प्रेरितों 2:1-4, 33;यूहन्ना 7:37-39;(यूहन्ना 12:23-24;यूहन्ना 16:7; लूका 24:39;परितों 1:5) **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। क्यों यीशु मसीह के 120 शिष्यों को विश्वास करने के काफी लम्बे समयान्तराल के बाद आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त हुआ?

ध्यान दें। प्रेरितों 2:1-4 में एक अनोखी ऐतिहासिक घटना को वर्णन किया गया है लेकिन वहां पर विश्वव्यापी मसीही शिक्षा के बारे में नहीं बताया गया है।

यीशु मसीह के प्रथम 120 चेले (प्रेरितों के काम 1:15) पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने से पहले ही विश्वासी थे। उन्होंने उसी घड़ी पवित्र आत्मा नहीं पाया जब उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास किया क्योंकि उस समय यीशु मसीह उनके साथ इस धरती पर ही था। उन्हें पवित्र आत्मा पाने के लिए उस दिन तक इन्तज़ार करना था जब तक कि यीशु अपनी महिमा में (स्वर्ग)नहीं उठा लिया गया। उन्हें उस दिन तक इन्तजार करना जरूरी था जब यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया गया,वह मुर्दो में से जी उठा, स्वर्ग में उठा लिया गया और स्वर्ग में अपने सिंहासन पर विराजमान हो गया, उसके बाद ही उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलना था जो कि वास्तव में यीशु मसीह का आत्मा था।

यूहन्ना 7:37-39 और 16:7 में यीशु आने वाले पिन्तेकुस्त के दिन के बारे में बताते हैं। पिन्तेकुस्त के पहले दिन में पवित्र आत्मा के उतरने को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कहा जाता है(प्रेरितों 1:5; 11:14-18)! अत: पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना और लोगों द्वारा उसे पाने का काम यीशु मसीह के क्रूस पर मारे जाने, उसके पुनरूत्थान, उसके स्वर्ग पर उठा लिये जाने और उसके सिहांसन पर विराजमान होने के बाद ही हुआ। यह घटना परमेश्वर द्वारा प्रदान किये गये उद्धार की इतिहास का एक भाग है, अत: हमें एक अनोखी घटना कह सकते हैं। प्रेरितों 2:1-4 से हमें इस बात की शिक्षा प्राप्त नहीं होगी कब लोग पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाते हैं।

क्योंकि यीशु मसीह पहले ही अपनी महिमा को प्राप्त कर चुकें हैं, और जितने लोग यीशु मसीह को स्वीकार करते हैं वे तुरन्त ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लेते हैं और उन्हें यीशु के चेलों के समान इन्तज़ार करने की जरूरत नहीं होती। पिन्तेकुस्त के बाद से, विश्वासियों को तुरन्त पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिल जाता है अर्थात वे उसी समय पवित्र आत्मा पा लेते हैं। रोमियों 8:9-10 में स्पष्ट तौर से सिखाया गया है कि जिसके पास पवित्र आत्मा नहीं है(परमेश्वर की आत्मा या मसीह की आत्मा)वे मसीह के नहीं हैं अर्थात वे मसीही नहीं हैं। इसलिए यीशु मसीह पर विश्वास करने या यीशु मसीह को ग्रहण करने को (यूहन्ना 1:12) पवित्र आत्मा को ग्रहण करने से अलग नहीं किया जा सकता(यूहन्ना 1:13; इफिसियों 1513-14)। मसीही लोग एक परमेश्वर, पिता,पुत्र, और पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं। एक परमेश्वर को हम टुकड़ां में प्राप्त नहीं किया जाता।

(2) सामरी विश्वासियों विश्वास करने के कुछ दिनों के पश्चात पवित्र आत्मा का बपतिस्मा क्यों मिला।

प्रेरितों 8:12-17;मत्ती 16:18-19; (मत्ती 18:18; इफिसियों 2:19-20)

खोजें व चर्चा करें। सामरी विश्वासियों विश्वास करने के कुछ दिनों क पश्चात पवित्र आत्मा का बपतिस्मा क्यों मिला?

ध्यान दें। प्रेरितों 8:12-17 में एक अनोखी ऐतिहासिक घटना का वर्णन किया गया है लेकिन कोई विश्वव्यापी मसीही शिक्षा के बारे में नहीं बताया गया है।

सामरिया के लोग न तो शुद्ध यहूदी थे और न ही अन्यजाति। वे एक मिश्रित जाति में से थे जिन्हें यहूदियों का शत्रु माना जाता था। पुराने नियम के समय में वे लोग परमेश्वर के लोगों का हिस्सा नहीं थे। यहूदियों और सामरियों के बीच आपसी परम्परागत लड़ाई को देखते हुए यह कल्पना करना असम्भव लगता है कि सामरिया के लोगों को भी उद्धार की आशीष मिल सकती है और वे भी अन्ततः परमेश्वर के लोग कहला सकते हैं। इसी प्रकार की दुश्मनी यहूदियों और अन्यजातियों में भी थी(प्रेरितों 10 व 11 अध्याय)। सामरियों ने सुसमाचार को सुना और फिलिप्पुस की सेवा द्वारा यीशु मसीह पर विश्वास करने लगे,जो एक प्रचारक तो था परन्तु वह यीशु के प्रेरितों में से एक नहीं था। सामरिया के इन लोगों तब तक पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के लिए इन्तजार करना था जब तक कि यीशु मसीही के शिष्य अर्थात प्रेरित उनके लिए परमेश्वर के राज्य के दरवाजे को नहीं खोलते।

परमेश्वर के राज्य के द्वार को खोलने का अधिकार यीशु मसीह द्वारा अपने चेलों अर्थात 12 प्रेरितों को दिया गया था। यीशु ने अपनी कलीसिया को साधारण विश्वासियों पर नहीं वरन अपने चुने प्रेरितों पर स्थापित किया था (मत्ती 16:18;18:18; इफिसियों 2:20; यूहन्ना 20:21-23;प्रकाशितवाक्य 21:14)।

केवल परमेश्वर ही अपने लोगों को अपने राज्य में खींच कर लाता है (कुलुस्सियों 1:13-14)। और यीशु मसीह के बारह प्रेरित(विशेषकर के प्रेरित पतरस)परमेश्वर के वे माध्यम या औजार बन गये जिनके हाथों में परमेश्वर न केवल यीशु मसीह में यहूदी विश्वासियों को(प्रेरितों 2:37-41),वरन यीशु मसीह में विश्वास करने वाले पहले सामरियों को (सामरी लोग आधे यहूदी थे)(प्रेरितों 8:12-17) और अन्यजातियों में से प्रथम विश्वासियों को (गैर यहूदियों को)(परितों 10:34-48)को परमेश्वर के राज्य में आने के लिए छोड़ सके। यीशु के बारह प्रेरित व ऐतिहासिक मसीही चर्च की बुनियाद डालने के लिए उनके अधिकार के साथ किये गये कार्य परमेश्वर के उद्धार के इतिहास का एक अनोखा भाग थे और वह घटना भी अनोखी व ऐतिहासिक घटना थी। प्रेरितो 8: 12-17 में भी हम आज की तारीख में यह शिक्षा नहीं पा सकते कि कब लोगों ने पवित्र आत्मा बपतिस्मा प्राप्त किया था।

(3) आज विश्वासी लोग विश्वास करते ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लेते हैं।

इफिसियों 1:13-14 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। बाइबल उस समय के बारे में क्या शिक्षा देती है जब लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलता है?

ध्यान दें। प्रेरितों के काम में यहूदियों(प्रेरितों 2),सामरियों(प्रेरितों 8) और अन्याजियों(प्रेरितों 10)(प्रेरितों 1:8 से तुलना करें) में मसीही कलीसिया प्रारम्भ करने की ऐतिहासिक घटना का वर्णन करने के बाद, बाइबल हमें यह सिद्धान्त सिखाती है कि जब कभी लोग सुसमाचार को सुनते और उस पर विश्वास करते हैं तो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा होता है। यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोग तुरन्त ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त कर लेते हैं, इसमें किसी अगुवे या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा मध्यस्थता करने की कोई आवश्यकता नहीं होती(प्रेरितों 2:38-39)।

4.पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने पर प्रगट होने वाले चिन्ह।

(1) पवित्र आत्मा से जुड़े चिन्हों के बारें में बाइबल क्या वर्णन करती है।

खोजें व चर्चा करें। पवित्र आत्मा से जुड़े चिन्हों के बारें में बाइबल क्या बताती है?

बाइबल हमें आंधी, आग, और अन्यान्य भाषा बोलने जैसे चिन्हों के बारे में बताती है।

प्रेरितों 2:1-11; प्रेरितों 10:46 को **पढ़ें।**

ध्यान दें। बाइबल, उद्धार के सम्बन्ध में परमेश्वर के इतिहास के साथ इस बात को जोड़ती है कि जब प्रभु यीशु के चेलों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया,उन्होंने प्रचण्ड आंधी की सनसनाहट को सुना जो स्वर्ग से उतरी और पूरा घर उससे भर गया। उन्होंन आग की सी फटती हुई जीभों को देखा जो सभी चुनें हुए चेलों पर आ ठहरीं। और वे सब आत्मा से भरकर इस संसार की अन्यान्य भाषा में बोलने लगे, और परमेश्वर के अद्‌भुत कामों की गवाही देने लगे।

पिन्तेकुस्त के पहले दिन ही आंधी और आग का चिन्ह उन लोगों के लिए वास्तव में अनोखा था-क्योंकि उन्होंने कभी अपने जीवन में ऐसा अनुभव नहीं किया था। आज की तारीख में अन्यान्य भाषा का बोला जाना जारी रह सकता है, लेकिन बाइबल हमें यह शिक्षा नहीं देती है कि ऐसा आगे भी होता रहेगा या होना चाहिए। संसार में अन्यान्य भाषा (मनुष्यों की भाषाआं)में बात करना निश्चय ही अन्यान्य भाषा (स्वर्गदूतों की बोली) से अलग था,जिसका अनुभव कुरिन्थियों की कलीसिया में किया गया (1 कुरिन्थियों 13:1)।

बाइबल बताती है कि मसीही समाज में इस चिन्ह को एक सामान्य चिन्ह के तौर पर देखा जाने लगा।

प्रेरितों 2:37-47 **पढ़े।**

ध्यान दें। बाइबल, उद्धार के सम्बन्ध में परमेश्वर के इतिहास के साथ इस बात को जोड़ती है कि जब यहूदियों में प्रथम चेलों ने पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया था तब उन्होंने अपने आपको प्रेरितों से शिक्षा पाने,संगति रखने, रोटी तोड़ने, प्राथना करने के लिए समर्पित किया। दूसरे शब्दों में, इस तरह से मण्डली का निर्माण हुआ।

यह पूर्वधारणा कि 3000 यहूदियों ने भी अन्यान्य भाषा में बात की व्यवस्था से मेल नहीं खाती क्योंकि बाइबल इस बारे में कोई बात नहीं करती और निश्चय ही लूका इस महत्वपूर्ण तथ्य का लिखना नहीं भूल सकता। बाइबल में आत्मा के बपतिस्में के बाद जो सामान्य व साधारण चिन्ह सामने आया वह मण्डलियों या कलीसियाओं को सक्रिय होना था (प्रेरितों 2:47;4:4; 5:14;6:7; 8:12; 11:21;13:48;14:21-23 इत्यादि)

(2) बाइबल पवित्र आत्मा के बपतिस्में से जुड़े चिन्हों के बारे में क्या कहती है।

खोजें व चर्चा करें। बाइबल पवित्र आत्मा के बपतिस्में से जुड़े चिन्हों के बारे में क्या कहती है?

ध्यान दें। बाइबल हमें सिखाती है कि हर एक मसीही के उद्धार प्राप्त व्यक्तिगत जीवन में,पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद पवित्र आत्मा के तीन प्रत्यक्ष चिन्ह प्रगट होने चाहिए:

वह मसीह की देह का हिस्सा बनना चाहिए, जिसका अर्थ कलीसिया या मण्डली का भाग होना है(1कुरिन्थियों 12:12-27)

उसे पापमय स्वभाव को मारकर, आत्मा के फल लाने वाला होना चाहिए, खासतौर पर प्रेम!(गलातियों 5:22-23)

उसे उन आत्मिक वरदानों को इस्तेमाल करते हुए मसीह की सेवा करनी चाहिए जो पवित्र आत्मा ने उन्हें दिये हैं। बाइबल में विशेष तौर से यह नहीं बताया गया है कि कब या किस समय मसीही के जीवन में आत्मिक वरदान प्रगट होगें। यह सिद्धता की दिशा में मसीही जन की आत्मिक बढ़ौतरी और कलीसिया की सेवाओं के प्रति उसके समपर्ण पर निर्भर करता है(1कुरिन्थियों 12:3-7,11,30-31;13:1)

ख पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना।

यदि पवित्र आत्मा मात्र एक ऐसी शक्ति होती जिसे कोई व्यक्ति किसी निश्चित परिमाप में प्राप्त कर सकता तो, मसीहीयों का पवित्र आत्मा पाने के सम्बन्ध में प्रबल रवैय्या होता कि "मैं पवित्र आत्मा को ज्यादा से ज्यादा किस प्रकार प्राप्त कर सकता हूँ (अर्थात ज्यादा से ज्यादा उसकी सामर्थ्य को)"। लेकिन पवित्र आत्मा तो एक व्यक्ति होने के कारण, आप पर कब्जा करके आपको किसी खास परिमाप में प्रभावित कर सकता है, इसलिए मसीहियों का पवित्र आत्मा के प्रति प्रबल रवैय्या यह होना चाहिए कि,"कि पवित्र आत्मा मुझ पर किस तरह ज्यादा से ज़्यादा कब्ज़ा कर सकता है?","पवित्र आत्मा कैसे मेरे जीवन को अधिक प्रभावित कर सकता है?" एक व्यक्ति कभी परमेश्वर पर (यीशु मसीह या पवित्र आत्मा पर)कब्ज़ा नहीं कर सकता परन्तु परमेश्वर (यीशु मसीह, पवित्र आत्मा)एक मसीही जन पर कब्ज़ा या अधिकार करना चाहता है, और वह ऐसा कर सकता है और करेगा बशर्ता मैं उसे ऐसा करने की स्वतन्त्रता प्रदान करूं।

परमेश्वर पवित्र आत्मा से मेरा सम्बन्ध महज शक्ति या चमत्कारों तक ही सीमित नहीं है, वरन यह मामला पवित्र आत्मा के मेरे जीवन में वास करने के माध्यम से यीशु मसीह द्वारा मेरे जीवन पर पूरी तरह से प्रभुता करने का है! इसलिए मेरा प्रमुख प्रश्न होना चाहिए कि पवित्र आत्मा के मेरे जीवन में वास करने के द्वारा किस प्रकार मेरे जीवन को प्रभावित कर सकते तथा मेरे जीवन को दृढ़ बना सकते हैं।" पवित्र आत्मा से भरे जाने का अर्थ है कि परमेश्वर (यीशु मसीह या पवित्र आत्मा) मुझ पर कब्ज़ा,प्रभुता करता है और बाइबल के द्वारा मेरी अगुवाई करता है, और मेरे जीवन व सेवाकाई को फलवन्त बनाता और मुझे प्रभावित करके

अपने अधीन होने में मेरी सहायता करता है! आत्मा से परिपूर्ण मसीही पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति समर्पित व्यक्ति होता है! पूर्ण रूप से समर्पित व्यक्ति पवित्र आत्मा से भरा हुआ व्यक्ति होता है।

1.पवित्र आत्मा से भरे जाने जाने की प्रतिज्ञा।

यीशु ने विश्वासियों से यह प्रतिज्ञा की कि पवित्र आत्मा एक जीवन के जल के नदियों के समान होगा जो उनके भीतर से बह निकलेगा(यूहन्ना 7:37-39)। उसने विशेषकर के अपने चेलों (प्रेरितों से) से प्रतिज्ञा की कि वे सामर्थ्य पाएंगे और यहूदियों,सामरियों और अन्यजातियों और जगत के छोर तक उसके गवाह होगें(प्रेरितों 1:8)। पवित्र आत्मा हमें धरती पर सेवा करने के लिए स्वर्ग की शक्ति प्रदान करता है!

2. पवित्र आत्मा से भरे जाने की प्रतिज्ञा का पूर्ण होना।

बाइबल बताती है कि जब लोगों ने पवित्र आत्मा को प्राप्त किया तो बहुत से भिन्न प्रकार के प्रगटिकरण सामने आये। बाइबल में बहुत से ऐसे प्रमाण हैं कि जब लोगों ने पवित्र आत्मा पाया तो लोगों के जीवन में उद्धार के इतिहास से सम्बन्धित कैसे कैसे काम हुए। परन्तु ये घटनाएं या उनके परिणाम आज की मण्डली में आवश्यक तौर पर लागू होने वाले या लागू किये जाने वाले नियम नहीं है।

बाइबल, पवित्र आत्मा पाने के बाद प्रगट हुए भिन्न भिन्न प्रमाणों या प्रगटीकरणों के बारे में बताती है:

- लूका 1:41-43। एलिजाबेथ को विशेष ज्ञान प्राप्त हुआ कि जो बच्चा मरियम के गर्भ में ह, वह मसीह है।
- लूका 1:67-79। जर्कयाह ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु के भविष्य के बारे में भविष्यद्वाणी की।
- लूका 4:1-2। यीशु मसीह ने शैतान की परिक्षाओं पर विजय प्राप्त की।
- प्रेरितों 2:4 यीशु के 120 चेलों ने जब पवित्र आत्मा को बपतिस्मा पाया तो वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर अन्यान्य भाषाओं में परमेश्वर के अद्‌भुत कामों के बारे भविष्यवाणी करने लगे।
- प्रेरितों 4:8 पतरस को तुरन्त बोलने की हिम्मत और प्रेरणा मिली(मरकुस 3:11)-प्रेरितों 4:31। चेलों को परमेश्वर के वचन बोलने का साहस व हिम्मत प्राप्त हुई।
- प्रेरितों 6:3,8-10। प्रथम डीकनों ने जब पवित्र आत्मा पाया तो उनमें आत्मा के फल लगे और वे अविश्वसनीय बुद्धि के साथ परमेश्वर का वचन प्रचार करने लगे। और स्तिफनुस को परमेश्वर की आत्मा के द्वारा अद्‌भुत चमत्कार करने की सामर्थ्य प्रदान की गयी।
- प्रेरितों 7:55 स्तिफनुस को मृत्युञ्जय मसीह को उसकी मसीह को उसकी महिमा में देखने की योग्यता प्राप्त हुई।
- प्रेरितों 9:17-22। पौलुस और अधिक सामर्थ्य में होकर प्रचार करता और शत्रुओं का सामना करता हुआ बाइबल से साबित करता रहा कि यीशु ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह है।
- प्रेरितों 11:24. बरनाबास बहुत से लोगों को मसीह में ले आया।
- प्रेरितों 13:9-11 पौलुस को जादूटोना करने वालों व झूठे भविष्यद्वक्ताओं पर परमेश्वर के न्याय को घोषित करने का अधिकार मिला।
- प्रेरितों 13:49-52. नये मसीही लोग सताव के बावजूद भी आनन्दित थे।

3. पवित्र आत्मा से भरे जाने के विषय में शिक्षा।

इफिसियों 5:15-21 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। बाइबल के अनुसार जब लोग पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाते हैं तो उनके क्या लक्षण होते हैं?

बाइबल स्पष्ट तौर पर *सिखाती* है कि जब मसीही लोग पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो तो उनके क्या लक्षण होते हैं: इस अनुच्छेद में ध्यान देने योग्य तीन बाते हैं: मुख्य क्रिया, आधारित क्रिया व उनका सयुंक्त होना या जोड़ा जाना।

(1) मुख्य क्रिया एक आज्ञा है जो आज भी लागू होती है।

मुख्य क्रिया को हम पद 18 में पाते हैं,"आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ"।

- मुख्य क्रिया एक अनिवार्य कार्य के रूप में प्रगट की गयी है जो दर्शाती है कि किया जाने वाला काम एक आदेश या आज्ञा है। बाइबल बताती है कि एक मसीही को पवित्र आत्मा से भरे जाने की आज्ञा दी गयी है। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना कोई विकल्प नहीं वरन एक दायित्व है। जिसे हर एक मसीही को अवश्य पूरा करना चाहिए।
- मुख्य क्रिया वर्तमान नियमित काल में दी गयी है जो यह दर्शाती है कि यह काम लगातार किया जाने वाला और आज भी मान्य है। बाइबल बताती है कि मसीहियों को लगातार व बार बार आत्मा से भरा जाना चाहिए ।
- मुख्य क्रिया निष्क्रिय अवस्था है और यह दर्शाती है कि कार्य परमेश्वर पर निर्भर करता है मसीहियों पर नहीं। आत्मा से भरने का काम केवल परमेश्वर ही कर सकता है। कोई भी मनुष्य, चाहे वह अगुवा हो या अधिकाई से वरदान पाया हुआ व्यक्ति हो यह काम नहीं कर सकता। यह कार्य केवल सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर ही कर सकते हैं और उन्होंने ऐसा करने का वायदा किया है।

अत: बाइबल बताती है कि आत्मा से परिपूर्ण जीवन को साधारण मसीही जीवन कहा जाता है।

(2) आधारित क्रियाएं विशेषण हैं जो मुख्य क्रियाओं पर निर्भर होती है।

19-21 वचन में पाये जाने वाले पांच विशेषण वे वर्तमान विशेषण हैं जो मुख्य क्रिया पर आधारित हैं मुख्य क्रिया के साथ समयकालीन कामों को प्रकट करते हैं, जिनका पालन करना अनिवार्य है और जो नियमित तौर पर व बार बार मान्य हैं। वे विशेषण हैं: "बोलना", "गाना","संगीत बनाना" "धन्यवाद देना" तथा 'समर्पित होना। बाइबल बताती हैं कि आत्मा से परिपूर्ण मसीहियों में निम्नलिखित विशेषताएं होती है:

- आत्मा से परिपूर्ण मसीही दूसरे मसीहियों के साथ मिलकर परमेश्वर की महिमा करता है। वह कभी उन पार्टियों का हिस्सा नहीं बनेगा जो शराब, गदर और नैतिक भ्रष्टाचार से भरपूर हो(इफिसियों 5:3-13; 1 पतरस 4:3-4)। इसके बजाय वह,दूसरे मसीहियों के साथ मिलकर बातचीत करेगा,गीत गायेगा और संगीत बजाएगा(सच कहें तो, वह संगीत के वाद्यों के साथ जुगलबन्दी का मज़ा उठाएगा)। इस प्रकार की मसीही सभाओं का उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना और एक दूसरे की उन्नति करना है। यह आत्मा के फल *आनन्द* का उदाहरण है(गलातियों 5:22)
- आत्मा से भरे हुऐ मसीही को अपनी बोली पर संयम होता है(याकूब 3:1-12; भजन 141:3)। वह कभी लोगों व परिस्थितियों के प्रति नकारात्मक,आलोचनात्मक और दोषारोपण करने वाला नहीं होगा। वह कभी असन्तुष्ट या कृतघ्न होकर शिकायत करने या बहस करने वाला नहों होगा(फिलिप्पियों 2:14)। इसकी बजाय वह सन्तुष्ट(फिलिप्पियों 4:11;1तीमुथीयुस 6:6)और सारी परिस्थितियों में परमेश्वर का धन्यवाद देन वाला होगा(1 थिस्लुनिकियों 5:18)। यह आत्मा के फल *संयम* का एक उदाहरण है(गलातियों 5:23; 1 कुरिन्थियों 7::9;9:24-27)।
- आत्मा से भरे मसीही अधीन होते हैं। वह कभी घमण्डी नहीं होगा वह कभी अकेला राही या स्वावलम्बी नहीं होगा। वह कभी असहयोग करने वाला, फूटडालने वाला,स्वार्थी या आत्म केन्द्रित जन नहीं होगा। बल्कि, वह अधीन व समर्पित होगा। मसीही जन हमेशा अपने आप को छोटा बनाकर रखेगा और वह हमेशा उन क्षेत्रों पर सेवा करने के लिए तैयार रहेगा जहां कोई और सेवा निभाने के लिए जाना न चाहता हो(यूहन्ना 13:1-17)। वह हमेशा दूसरों की भलाई सोचने वाला जन होगा(फिलिप्पियों 2:4)। वह अपने से बढ़कर दूसरों का आदर करेगा(रोमियों 12:10)। वह हमेशा मैत्रीभाव रखने वाला,शिष्ट, सज्जन,नम्र और ध्यान रखने वाला जन होगा। यह आत्मा के फल नम्रता का एक उदाहरण है (गलातियों 5:23)
- अत: बाइबल बताती है कि आत्मा की परिपूर्णता से मसीही जीवन आकर्षक हो जाता है।

(3) पद 17 से 18 तथा 15 से 17 वचन संयोग से आत्मा से परिपूर्ण जीवन से जुड़े हैं ।

नये नियम की मूल ग्रीक भाषा में पद 17 व 18 में "और " एक संयोजक है। अत: आत्मा से परिपूर्ण मसीही में वे विशेषताएं पायी जाएंगी जो 15 से 17 वचन में लिखी हुई हैं:

- मसीही जन हमेशा अपने व्यवहार को लेकर सर्तक रहेगा। वह अपनी मर्जी से चलने वाला व्यक्ति होने से बचेगा, जो कहता है कि उसे परमश्वर की जरूरत ही नहीं है(न्यायियों 21:25)। इसक बजाय, उसके जीवन के हर क्षेत्र में वह यह

दिखाने का प्रयास करेगा कि उसने अपनी पुरानी जीवन शैली को त्याग दिया है और उसने पवित्र व धार्मिक जीवन शैली को अपना लिया है और उसमें ही बढ़ रहा है।

- आत्मा से परिपूर्ण मसीही व्यक्ति में व्यवहारिक समझ होगी। वह ऊँचे से ऊँचे लक्ष्य को हासिल करने के लिए हर भरसक प्रयास करेगा। वह अपने बाइबल के ज्ञान को अपने दैनिक जीवन में इस्तेमाल इस तरह करेगा जिससे परमेश्वर के नाम को महिमा मिल (इफिसियों 5:15)।
- आत्मा से परिपूर्ण व्यक्ति परमेश्वर द्वारा दिये गये प्रत्येक अवसर का इस्तेमाल करेगा(इफिसियों 5:16)
- आत्मा से परिपूर्ण मसीही नियमित तौर पर परमेश्वर की इच्छा को जानने और उसे मानने का प्रयास करेगा, जैसा कि बाइबल में लिखा है(इफिसियों 5: 17)। वह लगातार खोजता रहेगा कि परमेश्वर किन बातों से प्रसन्न होता है(इफिसियों 5:10)।

4. पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का अभ्यास।

सिखाएं। पहली बार पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को सुसमाचार सुनना और यीशु मसीह पर विश्वास करना जरूरी है। (इफिसियों 1:13)

प्रश्न. लेकिन मसीही जन तब क्या करें जब वे पवित्र आत्मा से पूर्ण महसूस न करें, अर्थात जब उन्हें ऐसा महसूस न हो कि उनका जीवन यीशु मसीह की प्रभुता के प्रति समर्पित है?

(1) आत्मा से परिपूर्ण जीवन को बहाल करें।

1 यूहन्ना 1:9; इफिसियों 4:25-32; 5:8-11; याकूब 4:5-10 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। आत्मा से परिपूर्ण जीवन को बहाल करने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

आप ऐसा क्या करें कि पवित्र आत्मा फिर से आपके जीवन पर नियन्त्रण करके उसे चलाये?

ध्यान दें। किसी भी प्रकार का पाप पवित्र आत्मा को शोकित करता और परमेश्वर और आपके बीच सम्बन्ध में अलगाव को उत्पन्न करता है(यशायाह 59:1-2)। फिर भी,जब आप पाप करते हैं, तब पवित्र आत्मा आपको नहीं छोड़ता है क्योंकि आप पहले से ही धर्मी ठहराए जा चुकें हैं और यीशु मसीह ने यह प्रतिज्ञा की है कि पवित्र आत्मा तुम्हारे साथ होगा और तुम में होगा(यूहन्ना 14:16-17)।

लेकिन परमेश्वर और आपके बीच सम्बन्ध में गड़बड़ी को सुधारने क लिए तथा पुन: पवित्र आत्मा के कार्यों को अपने जीवन में अनुभव करने के लिए,आपको अपने जीवन में निम्नलिखित काम करने चाहिए:

- जितने पापों के बारे में आपको बोध है उनको अंगीकार करें और परमेश्वर की क्षमा को प्राप्त करें और उस पर विश्वास करें(1यूहन्ना 1:9)।
- अपने जीवन में सारे पापमय गतिविधियों (नीतिवचन 28:13)और अपने जीवन में गलत सम्बन्धों से रिश्ता तोड़ दें(1कुरिन्थियों 15:33)। हर प्रकार के पाप से दूर रहें।
- अगर आपने किसी के प्रति कोई अपराध किया है तो उनसे क्षमा मांगे(मत्ती 5:23-24; याकूब 5:16)। जितना सम्भव हो आपस में प्रत्यर्पण कर लें, मसलों को सुलझा लें और सबके साथ शान्ति बनाकर रखें(रोमियो 12:17)। इस पहलू को दैनिक वार्तालाप कहा जाता है। यह प्रेम का एक भाव है(लूका 6:27-28)।
- अपने आप को परमेश्वर के हाथों में समर्पित या अधीन कर दें, उसकी आज्ञाओं का पालन करें और उसी के अनुसार अपना दैनिक जीवन जियें(याकूब 4:5-10)। यह भी प्रेम प्रकट करने का एक तरीका है(यूहन्ना 14:21.23)।

(2) आत्मा से परिपूर्ण जीवन के लिए प्रार्थना करें।

फिलिप्पियों 4:6-7; मत्ती 7:7-11; लूका 11:9-13 को **पढ़ें।**

खोजें और चर्चा करें। आप यीशु मसीह से अपने लिए क्या करने के लिए कह सकते हैं?

ध्यान दें। हर एक मसीही जन परमेश्वर से आत्मा से परिपूर्ण जीवन की सच्चाई व उसके प्रत्येक पहलू के बारे में पूछ सकता है।

- आत्मा के नियन्त्रण के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा आपके जीवन में वास करके एक बार फिर से आपके जीवन पर अपना नियन्त्रण या कब्ज़ा कर ले। (गलातियों 5:18)

- आत्मा के फलों के पाने के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा आपके जीवन में एक नया व ताज़ा काम करें तथा आपके विचारों, स्वभाव, आदतों,चरित्र को अपने फलों के द्वारा बदल दे(गलातियों 5:22-23)।
- आत्मा के वरदानों के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा अपने आत्मिक वरदानों के द्वारा आपको किसी विशेष सेवा के लिए तैयार करें(इफिसियों 4:7,11-12)। तथापि, आत्मिक वरदान देना हमेशा सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर के हाथ में है (1कुरिन्थियों 12:11)!

(3) आत्मा से परिपूर्ण जीवन बनाकर रखें।

खोजें और चर्चा करें। आप किस प्रकार से आत्मा से परिपूर्ण जीवन को कायम रखते हैं?

ध्यान दें। आत्मा से परिपूर्ण जीवन लगातार शिक्षा प्राप्त करने से कायम रहता है।

पवित्र आत्मा शिष्यता के हर पहलू के लिए अनिवार्य है:

- मसीह का आत्मा आपके जीवन को केन्द्र बिन्दु है(यूहन्ना 16:14)। आत्मा महिमित मसीह को प्रगट करता है। वह आपके यीशु मसीह व कलीसिया के जीवन को आपके जीवन का मुख्य केन्द्र बना देता है।
- आत्मा और परमेश्वर का वचन (इफिसियों 6:17)। जिस तलवार को इस्तेमाल परमेश्वर का आत्मा करता है वह परमेश्वर का वचन है। वह आपको बाइबल में लिखे हुए वचनों को याद दिलाता है, उनका मतलब समझाता है और उन्हें आपके जीवन में लागू करता हैं।
- आत्मा और प्रार्थना (रोमियों 8:26-27; इफिसियों 6:18)। पवित्र आत्मा प्रार्थना करने वरन सही रीति से प्रार्थना करने में सहायता करता है।
- पवित्र आत्मा और संगति(रोमियों 5:5)।पवित्र आत्मा संगति करने के लिए शान्ति व प्रेम प्रदान करता है।
- पवित्र आत्मा और फल लाना(लूका 12:11-12; 1 कुरिन्थियों 12:11)। पवित्र आत्मा गवाही देने के लिए शब्द व सेवा करने के लिए वरदान देता हैं।
- आत्मा और आज्ञाकारिता(प्रेरितों के काम 1:8; 5:32; 1 पतरस 1:2)। पवित्र आत्मा,परमेश्वर द्वारा हमें बताए गये कार्यों को करने के लिए हमें शक्ति प्रदान करता है।
- साराशं। पवित्र आत्मा से भरा जाना एक साधारण मसीही जीवन को प्रगट करता है अर्थात ऐसे जीवन जिसे हम बार बार पवित्र आत्मा की नियन्त्रण में लाते हैं, जिसका मतलब है एक ऐसा जीवन जिसे बार-बार प्रभु यीशु मसीह की प्रभुता या अधिकार के अधीन लाया गया हो।
- जब पवित्र आत्मा उस व्यक्ति के विचार,स्वभाव,आदतों या चरित्र को पवित्र आत्मा के फलों के द्वारा बदलता है, समय के बीतने पर उस व्यक्ति का नवीनीकरण प्रकट होने लगता है।
- जब पवित्र आत्मा परमेश्वर द्वारा दिये गये काम को पूरा करने के लिए एक उपयुक्त आत्मिक वरदान प्रदान करता है, तब प्रगट हो जाता है कि वह उस व्यक्ति को सेवा के लिए तैयार कर रहा है।

ग. पवित्र आत्मा के फल

रोमियों 8:9-16; गलातियों 5:13-25।

खोजें व चर्चा करें। किस प्रकार आपके भीतर पापमय स्वभाव की उपस्थिति या पवित्र आत्मा की उपस्थिति प्रगट होती है?

1. पापमय स्वभाव का प्रगटीकरण।

हमारे भीतर विद्यमान पापमय स्वभाव हमारे शरीर के कामों जैसे यौन अनैतिकता की, मूर्तिपूजा या किसी विचारधारा की अति, और सामाजिक पाप जैसे स्वार्थी महत्वाकाक्षाएं और झगड़े।

2. पवित्र आत्मा का प्रगटीकरण।

पवित्र का वास करना आत्मा के फलां से प्रगट होता है। पवित्र आत्मा की उपस्थिति बुनियादी आत्मिक गुणों में प्रगट होते हैं, जैसे प्रेम,आनन्द और शान्ति; लेकिन ये सब सामाजिक रिश्तों में प्रगट होते हैं, जैसे धीरज, करूणा, भलाई, और परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता, दूसरों के प्रति सज्जनता,तथा अपने में संयम रखना।

जब आप एक मसीही हैं, तो आप मसीह के हैं और यीशु मसीह का आत्मा आप में वास करता है। आप पापमय स्वभाव की अधीनता में रहने के लिए मजबूर नहीं हैं,वरन अब आपका कर्तव्य है कि आप अपने भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा के नियन्त्रण में होकर जीवन व्यतीत करें। पवित्र आत्मा पापमय स्वभाव के शत्रु है इसलिए वह उसे समाप्त करने में आपकी सहायता करेगा।

पवित्र आत्मा आपके भीतर प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास नम्रता और संयम उत्पन्न करेगा। पवित्र आत्मा आपकी उन मार्गों में अगुवाई करेगा जिनमें परमेश्वर आपको चलाना चाहता है। इस तरह से पवित्र आत्मा आपको चलाने वाली व प्रभावित करने वाली शक्ति बन जाता है और आप अधिक से अधिक उसके अधीन होकर उसके साथ सहयोग करते हैं।

अगले अध्याय में आत्मा के फल के सम्बन्ध में अध्ययन करें(मैनुएल 4, अध्याय 46 देखें)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज सीखी गयी सभी बातों के आधार पर परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए समूह में छोटी प्रार्थना करें।

या समूह को दो दो या तीन के समूह में बांट लें और फिर सीखी गयी बातों के आधार पर प्रतिउत्तर देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ मिलकर " पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाना व परिपूर्ण होना" की शिक्षाओं के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: अय्यूब 38,39,40,41,व 42 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन। घर में ही अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। गलातियों 5:13-26। शीर्षक: संसार में आत्मा के फल युद्ध। बाइबल अध्ययन में दिये गये पाँच कदमों को इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 46

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **अय्यूब 38,39,40,42**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पाढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (अय्यूब 38:39,40,42)से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[सुसमाचार]* **शिष्य बनाना : मत्ती 28:18-20**

क-ध्यान करना

मत्ती 28:16-20 **पढ़ें।**

निम्नलिखित याद करने वाले पद को वचन को श्वेत/श्याम पट लिखें।

शिष्य बनाना मत्ती 28:18-20
यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं॥ मत्ती 28:18-20

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पर लिखें:

1. महान दावा ... मत्ती 28:18

यीशु एक महान दावा करते हैं । उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के पश्चात् परमेश्वर पिता ने उन्हें सारा अधिकार प्रदान कर दिया है ।न केवल स्वर्ग का अपितु पृथ्वी का भी ।

1) भविष्यद्वाणी की परिपूर्ति स्वरूप अधिकार ।

यह पुराने नियम की एक भविष्यद्वाणी की परिपूर्ति थी ।

दानियेल 7:13,14 में यह इस प्रकार है। दानिय्येल 7:13–14 मैं ने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश–देश और जाति–जाति के लोग और भिन्न–भिन्न भाषा ने वाले सब उसके आधीन होंय उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा॥

यह नये नियम की एक भविष्यद्वाणी की भी परिपूर्ति थी । अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान से पहिले यीशु ने यह भविष्यद्वाणी की । मत्ती 16:28 '' मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कितने ऐसे हैं; कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।''

2) उसकी मृत्यु एवं पुनरूत्थान के पूर्व तथा पश्चात् अधिकार ।

देखें मैनुएल 3,अध्याय 30 ,प्रश्न 1 ।(मत्ती 28:18)''क्या ऐसा भी समय रहा जब यीशु के पास पूर्ण अधिकार नहीं था ?''

अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान से पहिले यीशु के पास बड़ा अधिकार था । पिता परमेश्वर ने सारी बातें उसके आधीन कर दी थीं ।मत्ती (11:27)। उसने बीमार को चंगा किया ,दुष्टात्मा ग्रस्त को छुड़ाया और अधरंग को बहाल किया ।(मत्ती 4:24)।हालांकि यह सब उसने एक सीमा में किया, क्योंकि उसे मरकर जी उठना शेष था । उसने चंगा हुए कोढ़ी और दृष्टिहीन से कहा कि यह बात किसी से न कहें ।(मत्ती 8:4,9:30)।उसने एक सांसारिक राजा बनाये जाने से इनकार कर दिया ।(यूहन्ना 6:14,15)। उसने स्वर्गदूतों की बारह पलटन की अभिरक्षा लेने से इनकार कर दिया ।(मत्ती26:53)।उसने मुर्दों को जिलाया पर अपने शत्रुओं को उसे घूंसे मारने , कोड़े लगाने, मुंह पर थूकने ,सिर पर कांटों का ताज रखने , सिर पर सरकंडे से मारने और अन्ततः क्रूसित करने दिया । (मत्ती26:67,27:1,2,26:31)।

अपनी मृत्यु तथा पुनरूत्थान से पूर्व यीशु ने अपने असीमित अधिकार का पूर्ण उपयोग नहीं किया ,क्योंकि उसने जान बूझ कर स्वेच्छा से स्वयं को खाली कर दिया। (फिलिप्पियों 2:6–8)

परंतु उसकी मृत्यु ,पुनरूत्थान ,स्वर्गारोहण और स्वर्ग में सिंहासन पर विराजमान होने के पश्चात् , वह स्वर्ग और पृथ्वी पर अपने असीमित अधिकार का उपयोग करने लगा ! वह अपने चेलों के मार्फत् आश्चर्यकर्म करने लगा और हर जगह सुसमाचार प्रचार करने के लिये निडर और साहसी बनाता रहा । सुसमाचार की घोषणा के द्वारा वह लोगों को शैतान के साम्राज्य से खींचकर अपने ही राज्य में प्रवेश कराता है ।(कुलिस्सियों 1:13)। जब तक हर एक घुटना न झुक जाए और हर एक जीभ यह अंगीकार न कर ले कि वही सच्चा प्रभु है तब तक कोई भी रूकावट उसे रोक नहीं सकेगी । (फिलिप्पियों 2:9–11,यशायाह 45:23)।

(3)एक प्रतिफल के रूप में अधिकार ।

यीशु को उद्धार के लिये किये गये परिपूर्ण कार्य के प्रतिफल स्वरूप यह असीमित अधिकार मिला ।(इफिसियों1:19–23, फिलिप्पियों 2:9–11; प्रकाशितवाक्य 5:5)। उसके प्रथम आगमन के समय से ही यीशु ने संसार को जीत लिया है और यह संसार लगातार जीते जाने की स्थिति में ही रहता है ।(यूहन्ना 16:33)।प्रेरित और उसके अनुयाइयों को यह मांग रखनी चाहिये कि हर एक क्षेत्र के हर एक व्यक्ति को यह मानना चाहिये कि यीशु मसीह ही राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है ।(प्रकाशितवाक्य17:14,19:16)

(2) महान आदेश (मत्ती 28:19)

प्रभु का महान अधिकार ही उस महान आदेश को संभव बनाता है

मत्ती 28:19–20 '' इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।''

{1} कदम बढ़ाएं

यीशु के शिष्य को इस बात की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये कि संसार के लोग उन तक आएं, पर उन्हें स्वयं कदम उठाते हुए संसार के लोगों तक पहुंचना चाहिये । उन्हें अपने आसपास के लोगों तक, अन्य शहरों के लोगों तक और अन्य देशों के लोगों तक पहुंचना चाहिये । बाईबल के आरंभ से ही परमेश्वर ने परिवार , और हर संस्कृति से लोगों को अपने लोगों में समावेश करने की मंशा रखी है ।(उत्पत्ति12:3)।

आरंभ से ही परमेश्वर ने जगत में खोए हुए लोगों से प्रेम रखा ।(यूहन्ना 3:16)। जगत के खोए हुए लोग परमेश्वर से अनभिज्ञ,पाप में दबे , परमेश्वर के सच्चे न्याय के आधीन हैं । परमेश्वर ने उन से बिना किसी जाति, राष्ट्रीयता ,भाषा या संस्कृति के भेदभाव से प्रेम किया.है ।(यूहन्ना 3:16)।

ये खोए हुए लोग ,जिनसे वह प्रेम करता है , उसी समय ,उसके अनन्त चुनाव के पात्र भी होते हैं ।(रोमियों 8:29–34,9:11–12,11:5 ,इफिसियों 1:4,2 थिस्स्लुनीकियों 2:13–14, 2 तिमुथियुस 1:9–10, 1पतरस 1:1–2,प्रकाशितवाक्य 17:14)

चूंकि यीशु ने मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा परमेश्वर की पवित्र शर्त पूरी कर दी है ,परमेश्वर ने योजना बनाई कि यीशु के द्वारा मिलने वाले, उद्धार के संदेश को ,यरूशलेम से प्रारंभ कर जगत की हर जगह तक पहुंचाए ।(प्रेरितों के काम 1:8)।पहले तो प्रेरित थे, पर अब, सभी मसीही उसके संदेश वाहक हैं ।

(2) सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाना ।

महान आदेश की यह मुख्य क्रिया है ।अन्य क्रियाएं हैं ''जाओ,ष्बपतिस्मा दो,'' और ''आज्ञा मानना सिखाओ'' सहयोगी क्रियाएं हैं ।अतः इनमें भी हमें आदेशात्मकता दिखाई देती है । यह एक लगातार लागू रहने वाला आदेश है । एक शिष्य मसीही के रूप में पैदा नहीं होता परन्तु उसे अनुयायी बनाया जाता है । अन्य मसीहियों के द्वारा काम करते हुए नवीन रचना ,परिवर्तन.,उन्नति और फलवन्त करने के द्वारा परमेश्वर उसे शिष्य बनाता है । एक शिष्य यीशु का अनुयायी होता है जो आनुसरण करते हुए सीखता है । एक शिष्य के स्पष्ट गुण होते हैं जो बाईबल में दर्शाए गये हैं (मैनुएल 2 पाठ 23 देखें) । आदेश यह है कि समस्त देशों से अधिकतम् शिष्य बनाए जाएं । वे सुसमाचार प्रचार , जल का बपतिस्मा और यीशु की आज्ञा का पालन करने के द्वारा शिष्य बनाए जाते हैं ।

(3) पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो ।

<u>जल में बपतिस्मा देने का आदेश ।</u> यीशु ने आज्ञा दी कि नये विश्वासियों को जल में बपतिस्मा दें । जब लोग ईमानदारी से यीशु मसीह पर विश्वास लाते हैं ,अर्थात ,जब वे उसे अपने ह्रदय और जीवन में स्वीकार करते हैं ,वे यह दर्शा देते हैं कि उन्हों ने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लिया है ।(अर्थात् उन का नया जन्म हो गया है) (प्रेरितों के काम 11:14–18 , 15रू7– ।उन के मन का अंगीकार और उनके होंठों का इकरार (रोमियों10:9–10)यह दर्शाता है कि पवित्र आत्मा द्वारा मसीह की एक देह में,उन का बप्तिस्मा हो चुका है ,अर्थात, वे एक विश्व व्यापी मसीही कलीसिया के सदस्य बन गये हैं ।(1 कुरिन्थियों 12:12–13)।

<u>जल में बपतिस्मा की विधि।</u> जल का बप्तिस्मा पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का एक चिन्ह है ।कभी – कभी विश्वासी का जल से बपतिस्मा किया गया । इस का मतलब यह नहीं कि उन्हें जल में डुबाया गया ,क्योंकि इसका मतलब यह है कि फिलिप्पुस ने खोजे को जल में डुबाते हुए स्वयं भी डुबकी ली ,क्या जल में डुबने से ऊपर आने में उनका बपतिस्मा हुआ । हुआ यह था, कि वे उथले से गहिरे जल में गये । जब वे जल के मध्य खड़े हुए तब फिलिप्पुस ने जल लेकर खोजे पर उंडेला । फिर वे उथले जल से होकर बाहर आए (प्रेरितों के काम 8:38,39)। जब पौलूस खड़े होकर यीशु का नाम पुकार रहा था तब हनन्याह ने भी उसे घर में जल से बपतिस्मा दिया । उसके उपर जल के डालने से प्रतीकात्मक रूप से उसके पाप धुल गये ।(प्रेरितों के काम 22:16)। एक प्रतीक कि पवित्र आत्मा ऊपर से विश्वासियों पर उंडेला गया ।(तीतुस 3:5–7, प्रेरितों के काम 2:3,17,33 य10:44–45,11:15–16)।

<u>मसीही बपतिस्मा का अर्थ।</u> मसीही बपतिस्मा एक बाह्य चिन्ह और छाप है (रोमियों 4:11) कि यीशु मसीह उस विश्वासी का प्रतिनिधि बन गया है (रोमियों 5:17–19), और विश्वासी उसके आरंभ से अन्त तक किये गये परिपूर्ण कार्य में सहभागी बन गया है ।परिणाम स्वरूप विश्वासी मसीह के साथ मर गया है ,मसीह के साथ जी उठा है और मसीह के साथ स्वर्ग में विराजमान है ।(रोमियों 6:3–5 ,इफिसियों 2:4–7)। वह क्षमा प्राप्त कर धर्मी ठहराया गया है (रोमियों 5:1), तथा अनुग्रह और प्रेम के आधीन खड़ा है (रोमियों 6:14,8:35,39),वह देह के पुनरूत्थान में सहभागी होगा (फिलिप्पियों 3:20,21) और कभी भी तिरस्कृत न होगा (रोमियों 8:1), क्योंकि उसके पास अनंत जीवन है (यूहन्ना 3:16,5:24)

<u>मसीही बपतिस्मा तीन बातों का प्रतीक होता है ।...</u>

- 'एक विश्वासी की आत्मिक स्थिति और जीवन शैली ष्मसीह मेंष् होती है तथा न्याय की दृष्टि से वह मसीह की धार्मिकता और पवित्रता में सहभागी होता है ।(1 कुरिन्थियों 1:30) । यह सब पूर्व प्राप्त होता है ।
- 'एक विश्वासी का नया जन्म हो चुका है (एक नया आत्मिक स्वभाव प्राप्त कर चुका है ।)(तीतुस 3:5–7)और वह अभी ,आनेवाले समय में और अब से हमेशा एक धार्मिक और शुद्ध जीवन जी सकता है ।(रोमियों6:1–8), वह यीशु का एक चेला बन सकता है ,(मत्ती 28:19),मसीह की देह का एक अंग बन सकता है (1 कुरिन्थियों 12:12–13) और परमेश्वर की वाचा धारक लोगों में शामिल हो सकता है (गलातियों3:26–29)। यह उसके वर्तमान की एक सच्चाई होती है ।
- विश्वासी अन्ततः आत्मा और देह में मसीह के समान होगा ।(1यूहन्ना 3:1–3, फिलिप्पियों 3:20–21)। यह भविष्य की आशा है ।

जल द्वारा मसीही बपतिस्मा पाप क्षमा का चिन्ह और छाप है(प्रेरितों.के काम 2:38) और पाप धुल चुके हैं (प्रेरितों के काम 22:16), अर्थात इस बात का चिन्ह और छाप है कि परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराए जा चुके हैं ।

जल द्वारा मसीही बपतिस्मा इस बात का चिन्ह और छाप है कि त्रिएक परमेश्वर से एकरूप हो चुके ,जिसने अपने दिव्य स्वभाव में एक परमेश्वर में तीन विभेदों को दर्शा दिया है ।(मत्ती28:19)। जल द्वारा मसीही बपतिस्मा इस बात का चिन्ह और छाप है कि यीशु मसीह में एक हो गये हैं (प्रेरितों के काम 2:38)और इसी कारण परमेश्वर में सिद्ध किये गये भूतकाल,वर्तमान काल तथा भविष्यकाल के उद्धार के कार्य में सहभागी हो गये हैं ।(रोमियों 6:1–8 इफिसियों 2:5–6)। जल द्वारा मसीही बपतिस्मा परिवर्तन का चिन्ह और छाप है रूआपका सोच बदल गया है ,आप की दिशा बदल गयी है ,आपका व्यवहार बदल गया है और आपका पुनर्निर्माण हो गया है ।(प्रेरितों के काम 3:19), पाप क्षमा हो गये(प्रेरितों के काम 2:38) ,पाप मिटा दिये गये (प्रेरितों के काम 3:19) या पाप धो दिये गये हैं (प्रेरितों के काम 22:16) ।मत्ती 28:19 के अनुसार जल द्वारा मसीही बपतिस्मा इस बात का भी चिन्ह और छाप है कि त्रिएक परमेश्वर के कामों में आप की सहभागिता है अर्थात संसार के हर देश में अपने शिष्य बनाना । संक्षेप में रू जल द्वारा मसीही बपतिस्मा आत्मा से बपतिस्मा का चिन्ह और छाप है (प्रेरितों के काम 10:47–48)।

बाईबल स्पष्ट रूप से जल द्वारा बपतिस्मा की शिक्षा देती है और हर मसीह को इसे लेने का आदेश देती है ,लेकिन बाईबल जल द्वारा बपतिस्मा की कोई विधि नहीं बताती !

(4)यीशु ने जो आज्ञा दी उसे मानना सिखाओ।

एक विश्वासी बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद, यीशु मसीह की शिक्षाओं को सुनकर और उन बातों को मानकर लगातार आगे बढ़ता रहता है। इस से यह स्पष्ट होता है कि यीशु मसीह के बारे में जानना ही केवल काफी नहीं है। विश्वासियों को उनके ज्ञान के अनुसार व्यवहार भी करना चाहिए।

3.महान प्रतिज्ञा (मत्ती 28:20)

महान प्रतीज्ञा महान आदेश को मूर्तरूप देती है । यह मात्र एक प्रतीज्ञा नहीं है ।यह एक सच्चाई है । सच्चाई यह है कि यीशु मसीह दिन भर,हर दिन ,संसार के अंत तक अपने शिष्यों के साथ है । जब यीशु कहते हैं 'देखो' तो उनका तात्पर्य है 'ध्यान से देखो'। महान आदेश कोई सहज कार्य नहीं है। यीशु की उपस्थिति की सच्चाई के बिना महान आदेश असंभव हो जाता । अब यह न केवल संभव ही है अपितु आज्ञाकारी विश्वासी के लिये एक वास्तविकता भी है ।

ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** प्रभुता: रोमियों 12:1-2.
3) ***पुनः अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) *[संसार में जीवन बिताना]* **संसार में आत्मा के फल : गलातियों 5:13-26**

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए गलातियों 5:13-26 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर गलातियों 5:13-26 को एक साथ पढं।
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

***ध्यान दें।* इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**
या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?

लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हों। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस मं बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।

(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँट गयें विचार एक ही समान हों।

खोज 1. पापी स्वभाव का प्रकटीकरण ।

हमारे भीतर विद्यमान पापी स्वभाव भौतिक रीति से यौन अपराध और अति के द्वारा , आत्मिक रीति से मूर्तिपूजा और जादू टोना और सामाजिक पाप जैसे स्वार्थ और झगड़े के द्वारा प्रकट हो जाता है ।

खोज 2 भीतर विद्यमान पवित्र आत्मा का प्रकटीकरण ।

भीतर विद्यमान पवित्र आत्मा स्वयं को आत्मा के फल के द्वारा प्रकट करता है । जब आप मसीही बनते हैं , तब आप यीशु मसीह के होते हैं,और परमेश्वर अर्थात मसीह का आत्मा ,या पवित्र आत्मा आपके शरीर के भीतर रहता है । यदि आप मसीही हैं तो मसीह आप में है ! तब आप बाध्य होते हैं: आपको पवित्र आत्मा के नियंत्रण में जीना है ,अर्थात ,आप को आत्मा को यह अनुमति देना है कि वह आपकी अगुवाई करे और आप में आत्मा का फल लगे । आत्मा का ही आप पर नियंत्रक प्रभाव होना चाहिये तथा आप को सहर्ष ,स्वेच्छा से और आभारपूर्वक आत्मा के साथ सहयोग करना चाहिये । आत्मा के फल के द्वारा ही ,जो आत्मा आप को देता है , आप अपनी उच्छंखल शारीरिक कामनाओं पर विजयी हो सकते हैं । आत्मा का कार्य मूल आत्मिक गुणों से प्रकट होता है ,जैसे प्रेम आनंद और शांति ,ऐसे सद्गुणों से जो सामाजिक सम्बन्धों में जैसे धीरज, कृपा, भलाई तथा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता में अन्य लोगों के प्रति नम्रता , और स्वयं के प्रति आत्म संयम से प्रकट होता है ।

कदम 3 प्रश्न व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?
आईये हम 1 तीमुथीयुस 6:3-19 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं और फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछें।

लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाँटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये हैं)

5:13–15

प्रश्न 1. सच्ची स्वतंत्रता की प्रकृति कैसी होती है ?

ध्यान दें,

वास्तविक स्वतंत्रता का यह अर्थ नहीं कि आप जो चाहे कर सकते हैं ।

संसार में कई लोग मन की स्वतंत्रता पर विश्वास रखते हैं ।वे सोचते हैं कि स्वतंत्रता का मतलब है कि आप जो चाहे सोच या तय कर सकते हैं , जो चाहे करने के लिये स्वतंत्र हैं , कुछ भी कह सकते हैं और कुछ भी बन सकते हैं । स्वतंत्रता का मतलब है कि आप अपने प्राकृतिक सोच के अनुसार चलें ,विशेषकर आपकी प्राकृतिक पापमय लालसाओं में।

वास्तविक स्वतंत्रता का अर्थ है कि आप जो सही है , उसे करने के लिये स्वतंत्र किये गये हैं ।

बाईबल के अनुसार वास्तविक स्वतंत्रता कभी भी यह छूट नहीं देती कि आप अपनी शारीरिक कमनाओं और लालसाओं के अनुसार चलें । इसके विपरीत वास्तविक स्वतंत्रता में आप वही करते हैं , जो वांछित होता है ! बाईबल में वास्तविक स्वतंत्रता है हम यीशु की शिक्षा के अनुरूप चलें । बाईबल में वास्तविक स्वतंत्रता यीशु से अनुबंधित है ,इसीलिये उसकी इच्छानुरूप कार्य करने में सक्षम है । यूहन्ना 8:32–36 में यीशु कहते हैं ।''यदि तुम मेरी शिक्षाओं में बने (पालन) रहो ,तो तुम सचमुच मेरे चेले ठहरोगे ,तब तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा ....मैं तुम से सच कहता हूं कि जो पाप करता है वह पाप का दास है ... यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे तो तुम सचमुच स्वतंत्र होगे ।''

परमेश्वर ने मनुष्य को ऐसा बनाया है कि वह कभी भी हर व्यक्ति और हर बात से स्वतंत्र नहीं हो सकता है ! हर मनुष्य किसी न किसी व्यक्ति या वस्तु से बंधा रहता है । वे सभी लोग जो यीशु से स्वतंत्र रहना चाहते हैं , वास्तव में पाप की शक्ति के गुलाम होते हैं ! पाप के दास लोग परमेश्वर की व्यवस्था को न तो स्वीकार करते हैं ,और न ही कर सकते हैं ।(रोमियों 8:7–8) ।वे यह सोचकर कि वे स्वतंत्र हैं , मनमानी करते हुए पापमय स्वाभाव में लिप्त रहते हैं ,लेकिन वे कभी स्वतंत्र होते ही नहीं !!

इसके विपरीत ,सभी लोग, जो यीशु जी से सम्बद्ध हैं ,वे सभी पाप से सचमुच स्वतंत्र होते हैं ! वे यीशु के गुलाम मात्र नहीं ,परंतु इससे अधिक होते हैं ! वे परमेश्वर के परिवार के होकर ''परमेवर के बच्चे'' या ''परमेश्वर के बेटे और बेटी'' कहलाते हैं ,और यह शुद्ध आत्मिक अर्थ में होता है ।

सच्ची स्वतंत्रता पारस्परिक प्रेमपूर्ण सेवाभाव में है ।

बाईबल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आज्ञा है ''मरकुस 12:30–31'' और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।'' और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखनारू इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।''मूसा और नबियों की व्यवस्था इसी पर आधारित है'' ।(मत्ती 22:37–40) ।यदि सच्ची स्वतंत्रता यह है कि आप उचित वांछित कार्य करें ,तब वास्तविक स्वतंत्रता है परमेश्वर से प्रेम ,अन्य लोगों से प्रेम और स्वयं से प्रेम करना है । मसीही प्रेम का स्वरूप है कि वह स्वार्थपरक नहीं (1 कुरिन्थियों 13:5)अपितु अन्य लोगों की सेवा में है ।

5:16.

प्रश्न 2 .एक नया जन्म पाए मसीही की कौन सी दो बड़ी जिम्मेदारियां हैं ।

ध्यान दें।

हर विश्वासी की यह ज़िम्मेदारी है कि वह पवित्र आत्मा पर निर्भर होकर जिए ,अर्थात, यीशु मसीह पर निर्भरता ।इसका मतलब है कि आप का एक स्वामी और प्रभु है ।

हर मसीही की यह जिम्मेदारी है कि पापमय कामनाओं से न हारे पर उन्हें समाप्त कर दे । (रोमियों 8:13).इसका मतलब यह है कि हम सतत् रूप से आत्मिक संघर्ष में रत रहते हैं ।

5:17

प्रश्न 3 . एक मसीही अपने भीतर इतने बड़े द्वन्द का सामना क्यों करता है ?

ध्यान दें।

एक उनमुक्तितावादी ,व्यवस्थावादी और विश्वासी में अंतर ।

'उनमुक्तितावादी – वह अपनी स्वाभाविक कामनाओं पर चलता है और उसका विवेक उसे उसके पापों के विषय में दोषी नहीं ठहराता । पाप पर विजय पाने की उसे कोई इच्छा नहीं होती ।

व्यवस्थावादी – वह परमेश्वर के अनुग्रह को नहीं चाहता है ,पर अपनी ही शक्ति से व्यवस्था का पालन कर ,पाप नहीं करना चाहता है । परंतु उसे पापों पर विजय नहीं मिलती और उसे निश्चित सर्वोत्तम विजय की अनुभूति नहीं होती ।

'विश्वासी के भीतर एक पीड़ादायक द्वन्द होता है , पर इसके उपरांत भी उस के भीतर एक उत्तम निश्चय होता है , कि परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया है, और अन्ततः वह सभी पापों पर विजयी होगा ।

केवल मसीहियों में आत्मिक द्वन्द ।

जब तक पवित्र आत्मा परमेश्वर की नैतिक और आत्मिक आज्ञाओं को एक व्यक्ति के लिये सार्थक नहीं बना देता ,तब तक वह अपने पापों के प्रति बेपरवाह रहता है । वह बिना किसी दोषभावना के झूठ ,चोरी ,छल और हत्या करता है ।(रोमियों 2:14,15) । या फिर वह आत्मकेंद्रित, स्वधर्मी और बिना किसी लाज के , परमेश्वर से स्वतंत्र होता है ।

परन्तु जब एक व्यक्ति नया जन्म पा लेता है ,अर्थात ऊपर से जन्मा , तो पवित्र आत्मा उसके ह्रदय, मन और देह में वास करता है । इसके पश्चात् यदि वह झूठ बोलता या छल करता है तो उसमें दोषभावना आती है । तब यदि वह स्वार्थी बनकर अथवा परमेश्वर का लिहाज किये बिना, कोई काम करता है तो उसे शर्मिंदगी महसूस होती है ।उसके भीतरी पापमय स्वभाव और पवित्र आत्मा के मध्य एक वास्तविक द्वन्द चलता है । यदि एक विश्वासी अपने भीतर अपनी पापमय लालसाओं और पवित्र आत्मा के मध्य द्वन्द को पाता है, तो उसे जान लेना चाहिये कि उसका नया जन्म हो गया है , और परमेश्वर उसके भीतर काम कर रहा है ।

भीतरी द्वन्द की प्रकृति।

आत्मिक द्वन्द में आपको यह बोध रहता है ,कि जो भला काम आप करना चाहते हैं वह नहीं कर पा रहे हैं , और कभी – कभी आप वह काम कर जाते हैं जो आप करना नहीं चाहते हैं ।(रोमियों 7:19) । आप परमेश्वर की नैतिक और आत्मिक (परमेश्वर का सत्य)आज्ञाओं से प्रसन्न रहते हैं , परंतु उसी समय आप अपने भीतर विद्यमान बुराई से भी घृणा करते हैं ।(रोमियों 7:15,20)। पुराना पापमय स्वभाव आपको गुलाम बनाता है ,अर्थात ,यह महसूस कराता है कि आप भीतर कार्यरत सामर्थ के गुलाम हैं और उससे पार नहीं पा सकते । (रोमियों 7:23)। यह सच्चाई, कि आप अपने भीतर एक आत्मिक द्वन्द में है , इस बात का प्रमाण है कि पवित्र आत्मा आपके भीतर काम कर रहा है ! द्वन्द तो सुखद नहीं होता पर यह अहसास कि पवित्र आत्मा भीतर कार्यरत है ,तसल्ली देता है ।

5:18

प्रश्न 4 इस बात का क्या अर्थ होता है कि एक मसीही व्यवस्था के आधीन नहीं परन्तु आत्मा के चलाए चलता है ?

ध्यान दें।

1) बाईबल के अनुसार व्यवस्था परमेश्वर की धर्ममय आवश्यकता है ।

अर्थात, हर व्यक्ति सिद्ध जीवन जिये और हर भूल का उचित दंड मिले । क्योंकि परमेश्वर सौ प्रतिशत पवित्र और धर्मी है तो उसकी अपेक्षा और मांग है कि सभी सौ प्रतिशत सिद्ध बनें ,और वह हर आज्ञा को तोड़ने का सौ प्रतिशत दण्ड दे ।

यदि परमेश्वर सौ प्रतिशत आज्ञापालन का आदेश न दे और आज्ञा तोड़ने वाले को दंड न दे , तो वह स्वयं पवित्र और धर्मी नहीं ठहरेगा ।

बाईबल में लिखा है कि ''जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह श्रापित है(गलातियों 3:10) ।'' परमेश्वर सौ प्रतिशत से कम सिद्धता नहीं चाहता ।क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा। (याकूब 2:10) ऐसा व्यक्ति इसलिये दोषी ठहरता है क्योंकि उसने नियम नहीं पर नियम देने वाले स्वयं परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया । अतः हर प्राकृतिक मनुष्य कानूनन् व्यवस्था के आधीन है ।

2) सभी धार्मिक व्यक्ति भी कानूनन् व्यवस्था के आधीन रहते हैं ।

कई धर्म के लोगों की यह मन्यता है कि न्याय के समय परमेश्वर अपनी न्याय की तराजू में हर एक व्यक्ति के भले और बुरे कामों को तौलेगा । इन लोगों की यह मान्यता है कि यदि भले काम, बुरे कामों से अधिक निकले, तो हो सकता है कि परमेश्वर उन्हें क्षमा करे (धर्मी ठहरा कर बचा ले) और स्वर्ग में एक जगह दे दे । वे दिन में कई बार प्रार्थना करते हैं,वे लगातार उपवास करते हैं, वे अपने धर्म गुरूओं के प्रवचन सुनते हैं , वे यरूशलेम जैसे धार्मिक स्थलों की तीर्थयात्रा करते हैं , वे दान देते और अन्य भले काम करते हैं ,क्योंकि उन्हें यह प्रबल आशा रहती है कि उनके धर्म के काम और अन्य भले काम ,न्याय के दिन में उनकी धार्मिक उदासीनता और बुरे कामों से अधिक भारी हो सकेंगे ।

जब कि बाईबल यह बताती है कि इस तरह के कार्य पूर्णतः व्यर्थ होते हैं ! कोई भी व्यक्ति व्यवस्था के कामों को करने के द्वारा धर्मी नहीं ठहर सकेगा (गलातियों 2:16) क्योंकि कोई नहीं जो व्यवस्था का पूर्ण पालन करता है , और कोई कर भी नहीं सकता है ।(रोमियों 8रू7,8)। सभी मनुष्य परमेश्वर के मानक के सामने अयोग्य ठहरते हैं ।(रोमियों 3:10–12,23)। वे सभी जो यह सोचते और सिखाते हैं कि धार्मिक नियमों का पालन कर लोग धर्मी (क्षमा,उद्धार) ठहरते हैं ,परमेश्वर द्वारा शापित होते हैं ।(गलातियों 3:10–13)।

(3) मसीही लोग वैधानिक रीति से व्यवस्था के आधीन नहीं रहे ।

परमेश्वर का प्रेम, परमेश्वर की धार्मिकता की प्रतिपूर्ति करता है।क्योंकि परमेश्वर धर्मी ही नहीं अपितु प्रेम भी है ।उसने स्वयं ही धार्मिकता की समस्त मांग को पूरा कर पापी को धर्मी ठहरा दिया ।परमेश्वर ने स्वयं ही यीशु मसीह में मानव स्वाभाव को धारण किया ,और हर एक विश्वास करने वाले का स्थान लिया और इस प्रकार मानव की सब से बड़ी समस्या को हल कर दिया । जहां एक ओर यीशु मसीह ने धरती पर 100 प्रतिशत धर्मी और पवित्र जीवन जिया । केवल यीशु ही सिद्ध और पवित्र था ।(इब्रानियों 4:15) । वहीं दूसरी ओर उस ने परमेश्वर की व्यवस्था की मांग को पूरा किया , कि पाप के हर दंड को विश्वासियों के स्थान पर मरने के द्वारा , उन के पापों का 100 प्रतिशत बलिदान और प्रायश्चित बन गया ।(2 कुरिन्थियों 5:21)।

परमेश्वर ने मसीह में मसीह पर विश्वास करने वालों को अति जटिल बातों से बचाया है ।(प्रेरितों के काम 13:39)।

वे जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं ,यह मानते हैं कि परमेश्वर की व्यवस्था का पालन कर वे कभी भी धर्मी (क्षमा और उद्धार) नहीं ठहर सकते हैं ।वे मानते हैं कि उन्हें एक उद्धारकर्ता चाहिये ,जिसने उन के स्थान पर परमेश्वर के सारे नियम का पालन किया हो ,और उनके पापों का पूरा प्रायश्चित किया हो । यीशु मसीह ने अपने सभी विश्सावासियों की, परमेश्वर की व्यवस्था की ,आवश्यकता और मांग को पूरा किया है !(मत्ती 5:17)। क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा मसीह ने विश्वासियों को व्यवस्था के श्राप से छुटकारा दिया है !(गलातियों 3:13)। यीशु मसीह अपने विश्वासियों को, पाप के दास बनाने वाली, दमनकारी सामर्थ से स्वतंत्र कर दिया है !(रोमियों 6:6) यीशु मसीह अपने विश्वासियों को ,पाप से लगातार पराजित होने पर ,विजय प्रदान करते हैं ।(1 कुरिन्थियों 10:13)।

यीशु मसीह के विश्वासी अब व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरने का प्रयास हीं करते ।यीशु मसीह के विश्वासी यह मानते हैं कि यीशु ने उनके स्थान पर एक धर्मी जीवन जिया ,कि यीशु मसीह ने उनके स्थान पर पाप के दंड को सहा ,और यह कि यीशु मरा और जीवित हो उठा और सर्वदा जीवित है, ताकि वे भी पुनरूत्थित होकर सदैव जीवित रहें ! एक मसीही बनने से पहले लोग व्यवस्था के आधीन रहते हैं, लेकिन एक मसीही बन जाने के बाद वे व्यवस्था के आधीन नहीं होते । इसका मतलब है कि वे अब परमेश्वर की व्यवस्था के पालन के द्वारा (क्षमा ,मुक्ति) धर्मी नहीं ठहरते, हालांकि यीशु ने यह, उनके लिये कर दिया है । अब मसीहियों के जीवन में व्यवस्था जीवन के नियंत्रण की अधिकारी नहीं रही ,क्योंकि पवित्र आत्मा उनके भीतर रहकर नियंत्रण करता है ।(गलातियों 5:18)

(4) पर मसीही अभी भी परमेश्वर के नैतिक नियमों का पालन करते हैं ।

यह सत्य है कि मसीही व्यवस्था के पालन से धर्मी नहीं ठहरते (क्षमा,उद्धार) , पर इसका मतलब यह नहीं कि वे यह पर्वाह नहीं करते कि व्यवस्था क्या कहती है ।नया जन्म पाए मसीही, फिर भी परमेश्वर के नैतिक और आत्मिक नियमों का पालन करते हैं ,(दस आज्ञाएं) (मरकुस 12:29–31; रोमियों 13:8–10; गलातियों 5:14) ।फर्क बस इतना है कि अब व्यवस्था धर्मी (क्षमा,मुक्ति) ठहराए जाने का साधन नहीं ,परंतु एक दिग्दर्शक (दिशासूचक, नक्शा या ज्योति) है जो एक मसीही को धार्मिकता के जीवन (क्षमा, मुक्ति अभी) में आगे बढ़ने में सहायक है ।

5:19–21

प्रश्न 5 आपका पापमय.स्वभाव अभी भी आप पर नियंत्रण रखता है, इसके स्पष्ट सूचक संकेत क्या.हैं ?

टिप्पणी .. पापमय स्वभाव के सपष्ट सूचक संकेत इस प्रकार हैं ,जिनका पवित्र आत्मा विरोध नहीं करता.है ।

(1) यौन सम्बन्धी कुटिलताएं .

- यौन दुराचार – इसका तात्पर्य है वह सभी विचार ,वचन या कर्म जो विवाह – सम्बन्ध के पूर्व या परे किये जाते.हैं । इसका आशय समस्त अनैतिक यौन सम्बन्ध ,जैसे व्यभिचार (1कुरिन्थियों 5:1:6:13,18,:7:2) ।अन्यजातियों में यौन दुराचार का आध्यत्मिक दुराचार से निकट सम्बन्ध.होता है ,उदाहरण के लिये मूर्तिपूजा ।(कुलिस्सियों 3:5)।
- अशुद्धता – इस शब्द का अर्थ है समस्त विचार ,वचन और कर्म जो अप्राकृतिक यौनाचार से सम्बद्ध हैं , जैसे कि पोर्न(नग्र) चित्र,यौन परिकल्पनाएं , गंदे चुटकुले ,प्रेम प्रदर्शन और स्पर्श (1थिस्सुलीनीकियों 4:7)
- अय्याशी – इस शब्द का मतलब है यौनोत्तेजना, अशोभनीय और बेधड़क होना । इसमें अशोभनीय आचरण ,और समस्त प्रकार की यौन अति तथा कुरीति जैसे वेश्यावृति ,समलैंगिकता , स्त्री समलैंगिकता ,घनिष्ठ सम्बंधियों के मध्य यौनाचार,अप्राकृतिक यौन ,और पशुगमन का समावेश होता है ।(लैव्यवस्था18:6,20,22,23; 20:10,13,15,17: इफिसियों 4:19; 2पतरस2:7)

(2) झूठे ईश्वरों सम्बन्धी कुटिलताएं

मूर्तिपूजा – इस शब्द का अर्थ है आकृतियों की आराधना करना तथा उन से जुड़े कर्मकाण्ड करना ,जैसे मूर्ति को चढ़ाया गया मांस खाना ,जब कि उनका विवेक इस का विरोध करता है ,मंदिर में प्रचलित व्यभिचार तथा अशोभनीय या नग्न नृत्य । निश्चित रुप से बाईबल द्वारा प्रकट एक सच्चे परमेश्वर का स्थान , किसी वस्तु या व्यक्ति को दे दिया जाता है । किसी अन्य धर्म द्वारा अविष्कृत देवता की आराधना मूर्तिपूजा है , अनीश्वरवाद अपने ''अहम्'' को ही ''ईश्वर ''मानना है ।

जादू टोना – इस का अर्थ है वे जादुई विधियां या टोना , जिसमें गुप्त शक्तियों के नाम पर , शरीर पर कुछ बांधा जाता है या विशेष स्थानों पर रखा जाता है,चौघड़िया या धार्मिक वाक्य दीवारों पर लिखे जाते हैं और समय – समय पर मंत्रोच्चारण किया जाता है ।(निर्गमन 7:11) ।इसमें ज्योतिष और राशिफल भी सम्मिलित होता है ।(यशायाह 47:9–13)। जादू टोना करने वाले परामानव शक्ति रखने का दावा करते हैं ।(प्रेरितों के काम 8:9; 13:8; 19:13,19; प्रकाशितवाक्य 9:21; 21:8) जब परमेश्वर में विश्वास का स्थान जादू टोना ले ले, तो इसे एक तरह की मूर्तिपूजा कह सकते हैं ।

(3) बैरभाव सम्बन्धी कपट

घृणा – इस शब्द का वास्तविक तात्पर्य है शत्रुता या विरोध ।(इफिसियों 2:16)

कलह – इसका मतलब है झगड़ना या परस्पर विरोध ।(1 तिमुथियुस 6:4 , तीतुस 3:9)

जलन – इस शब्द का अर्थ है अत्याधिक स्वत्व – बोध । इसमें झगड़े का आशय है, जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति या विषय के प्रति इतनी अंधभक्ति रखता है , कि जब उस व्यक्ति या विषय से अलग किसी का नाम लिया जाता है , तो वह बहुत तकरार करने लगता है । जलन रखनेवाला व्यक्ति अपने हीरो के बहुत करीब रहते हुए उसपर सर्वाधिकार रखना चाहता है ।

क्रोध के दौरे – इस शब्द से तात्पर्य है अति क्रोधित होना या क्रोध की अग्नि में जलना ।ऐसा तब होता है जब किसी की कोई कामना पूरी नहीं होती अथवा उसकी इच्छा पूरी होने में रूकावट डाली जाती है ।

स्वार्थी महत्वाकांक्षा – इस शब्द का अर्थ हे कि गलत तरीके से अपने लाभ के राजनैतिक पद को प्राप्त करने की होड़ । दुर्भाग्यवश कलीसिया में भी कुछ लोग ऐसे होते हैं ,जो किसी पद या स्थान को अपने लिये पाने में लगे रहते हैं (फिलिप्पियों 1:17; 2:3),और ऐसा करने के लिये वे अनुचित तरीके अपनाते हैं , जैसे वोट हासिल करने के लिये निजी और सार्वजनिक रूप से झूठे वायदे करना ।

मतभेद – इससे तात्पर्य है टुकड़े या मतभेद पैदा करना ।यह शब्द बाईबल कि गलत शिक्षा देने से भी जुड़ा है ।(रोमियों 16:17)।

गुटबाजी – इस शब्द से आशय है गुट,समूह या मतावलम्बन ।और यह आगे चलकर कट्टरता या विधर्म को पैदा करता है ।

डाह – जब कि जलन में अपना कुछ खो देने का भय रहता है लेकिन डाह में दूसरे की चीजें देखकर अप्रसन्नता होती है ।डाह के कारण ही हाबिल की हत्या हुई य युसूफ कुएं में डाला गया य कोरह और उसके सहयोगियों ने अपने आत्मिक अगुवे से विद्रोह किया य शाऊल ने दाऊद का पीछा किया य उड़ाऊ बेटे के दृष्टांत में बड़े भाई ने अपने पिता से कटु शब्द कहे यऔर मसीह को क्रूसित किया । वास्तविक मसीही प्रेम कभी डाह नहीं करता है ।(1कुरिन्थियों 13:4)

(4) नशे सम्बन्धी कुटिलता

पियक्कड़पन– यूनानी शब्द का अर्थ है मतवालापन अथवा बढ़–चढ़ कर पीना । बाईबल शराबखोरी को एक बीमारी ही नहीं परन्तु पाप भी मानती हे । जब भी नशे की व्यक्तिगत जिम्मेदारी को कम या नजर अंदाज कर दिया जाता है , तब सभ्यता पतन की ओर बढ़ते हुए , अन्ततः नाश हो जाती है ।

उनमुक्तता – इस शब्द से आशय है अत्याधिक उत्सवधर्मिता,शराबखोरी या रंगरेली मनाना । मूल रूप से मशाल लेकर सड़कों पर जुलूस निकाला जाता था ,आनंद गीत गाते थे और , शराब के देवता बकस या डायोनिसस के सम्मान में महाभोज किया जाता था । इसका आनंद लेने वाले खूब मांस खाते ,छक कर शराब पीते और बहुत शोर करते थे । कई नये मसीही , विश्वासी बनने से पहले, इसमें बढ़ –चढ़ कर भाग लेते थे ।

(5) एक गंभीर चेतावनी

पौलूस प्रेरित यह चेतावनी देते ं कि इस प्रकार का जीवन यापन करने वाले परमेश्वर के राज्य वारिस न होंगे । उनके विरोधियों के वचन ष्आओ बुराई करें कि भलाई पैदा होष् निश्चित ही एक झूठ था ।(रोमियों 3रू8 य 6रू1) जब कि कोई भी व्यक्ति भले काम करने के द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता तो निश्चित ही इन बुरी बातों के द्वारा भी कोई परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता ।यीशु मसीह के एक नये विश्वासी को अंधकार के सभी कामों को अलविदा कह देना चाहिये ।आन्यथा वह यह साबित कर देता है कि वह अभी भी ज्योति में नहीं चल रहा है ।(1 कुरिन्थियों 6:11; इफिसियों 5:7–12)।

5:22–23

प्रश्न 6 – इस सत्य के क्या प्रकट प्रमाण हैं कि पवित्र आत्मा आप पर नियंत्रण रखता है ?

ध्यान दें। नया जन्म पाए ,पवित्र आत्मा द्वारा नियंत्रित जीवन के संकेत इस प्रकार हैं ।

(1) आत्मा का फल आत्मिक विशेषताएं हैं ।

- प्रेम – यह सब से महत्वपूर्ण मसीही सद्गुण है । यह वह प्रेम नहीं जो एक स्त्री–पुरूष के मध्य होता है ।यह वह लगाव भी नहीं जो माता –पिता कि अपने बच्चों के प्रति होता है । यह वह मित्रता भी नहीं जो मित्रों के बीच होती है । पर यह वह प्रेम है जो परमेश्वर ,मसीह में, विश्वासियों से रखता है (रोमियों 8:39) ,और जो विश्वासी,मसीह में परमेश्वर से,और एक दूसरे से रखते हैं । इस प्रेम के आत्म – त्यागी स्वरूप का वर्णन 1 कुरिन्थियों 13:1–8 में मिलता है ।(मैनुएल 2 ,पाठ 14 का बाईबल अध्ययन देखें)

- आनंद – इस शब्द का अर्थ है – प्रसन्न चित्त होकर खुशी मनाना ।विश्वासियों को प्रसन्न चित्त होकर परमेश्वर की आज्ञा पालन करने से यह मिलता है । विश्वासी जन अत्यन्त दबाव में भी आनंदित रह सकते हैं ,क्योंकि वे जानते हैं कि उनके जीवन में सारी बातें मिलकर भलाई को ही उत्पन्न करती हैं ।(रोमियों 8:28) ।
- शांति – जहां एक ओर इस शब्द का अर्थ होता है लड़ाई,झगड़े, युद्ध,भय और चिढ़ का न होना, वहीं दूसरी ओर इस का अर्थ होता है परमेश्वर की सामर्थ में, टूटे हुए सम्बन्ध और परिस्थितियों को चंगा करना ।

(2) आत्मा का फल सामाजिक विशेषताएं हैं ।

- धीरज – इस शब्द का अर्थ है आपको क्रोधित करनेवाले,विरोध या सताने वाले लोगों के प्रति धीरज रखना ।धीरज क्रोध में जलता नहीं ।धीरज लम्बे समय तक,अन्य लोगों से आहत होने पर भी सहता रहता है।
- कृपा – इस शब्द का अर्थ है दया, सज्जनता या कोमलता जो विशेषकर महिलाओं (लूका 13:10–13) बच्चों (लूका 18:15–17) और पापियों (लूका 23:24) के प्रति होती है ।
- भलाई – इस शब्द का अर्थ है पवित्र आत्मा द्वारा रचित हर विवरण की नैतिक और आत्मिक दक्षता । इसका मतलब है सीधी चाल (इफिसियों 5:9) तथा उदारता (गलातियों 5:22)।

(3) आत्मा का फल तीन प्रकार के सम्बन्धों में सद्गुण।

- विश्वासयोग्यता – इस शब्द का अर्थ विश्वास भी हो सकता है ,लेकिन सद्गुणों के इस क्रम में विश्वासयोग्यता या वफादारी कहा जा सकता है ।
- सज्जनता – इस शब्द का अर्थ है लिहाज ,सौजन्य, नम्रता या विनम्र समर्पण ।
- आत्म– नियंत्रण – इस शब्द का अर्थ है यौनाचार में आत्मसंयम। इसका मतलब है भावना और वासना पर नियंत्रण रखना ।

5:23

प्रश्न 7 . आत्मा के फल के विरूद्ध कोई आज्ञा नहीं । इसका क्या अर्थ है ?

ध्यान दें। पवित्र आत्मा द्वारा प्रभाव में लाए गये आत्मिक और सामाजिक सद्गुण के विरोध में कोई नियम नहीं ।नियम सामान्यतः कुछ बातों पर रोक लगाते हैं ।जब पौलूस कहते हैं कि इनके विरूद्ध कोई व्यवस्था नहीं तो वे यह कहते हैं कि इन सद्गुणों (आत्मा के फल) द्वारा समस्ता अवगुणों(पापमय स्वभाव के कार्य) पर जय प्राप्त करें ।

हालांकि , मसीही लोग पाप के स्वभाव पर जय पाने का निरंतर प्रयास नहीं करते । वे तो केवल पवित्र आत्मा पर ध्यान देते हैं जो उन में कार्य करता है , और आत्मा के सद्गुणों पर चलते हैं (गलातियों 5:16,18,25)। वे अपना ध्यान यीशु पर और स्वर्ग की सच्चाईयों पर लगाते हैं (रोमियों 7:25; कुलिस्सियों 3:1–4)।वे अपना ध्यान प्रेम पर लगाते हैं जो व्यवस्था की उत्तम बातों का सार है ।(गलातियों 5:14)।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम गलातियों 5:13-26 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा,और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. गलातियों 5:13-26 से इस्तेमाल की जाने वाली सम्भव बातों के उदाहरण।

5:13 स्मरण रखें कि परमेश्वर ने आपको पाप की शक्ति का दास होने के लिये नहीं, परंतु मुक्त होकर दूसरों को प्रेम करने और उनकी सेवा करने के लिये बुलाया है ।

5:15 स्मरण रखें कि प्रेम के अभाव के कारण लोग एक दूसरे का नाश करते हैं ।(जैसे ..युद्ध)

5:16 केवल.जब आप पवित्र आत्मा के नियंत्रण में रहेंगे तभी आप अपने पापमय स्वभाव की कामनाएं पूरी नहीं करोगे

5:17 स्मरण रखें कि पवित्र आत्मा सदैव ही पापमय स्वभाव के कामों के विरोध में ही रहता है ।

5:24 स्मरण रखें कि सच्चे मसीही ,पापमय स्वभाव की लालसाओं और कामनाओं को क्रूस पर चढ़ा चुके हैं ।

(2) गलातियों 5:13–26 के आधार पर व्यक्तिगत अमल के उदाहरण ।

हालांकि मैं अपने भीतर चल रहे पुराने पापमय स्वभाव और पवित्र आत्मा के मध्य हो रहे द्वन्द को पसंद नहीं करता ,मैं इस बात से हर्षित होता हूं कि पवित्र आत्मा वास्तव में मेरे भीतर रहता और काम करता है । इसलिये मैं पवित्र आत्मा के साथ कदम मिलाकर चलना चाहता हूं ।

जब कि मेरे जीवन में मुझे पापमय स्वभाव की बातों से छुटकारा पाना है ,तो मेरे जीवन का मुख्य ध्येय है कि मुझमें आत्मा के फल लगें ,विशेषकर यह कि परमेश्वर, अन्य लोगों और स्वयं से प्रेम रखूं ।

कदम 5. प्रार्थना	**प्रतिउत्तर**
आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें 1 तीमुथीयुस 6:3-19 में सिखाई हैं। (जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)	

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूह में होकर **प्रार्थना करते रहें।** एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ गलानियों 5:13-26 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: सभोपदेशक 1,2,3,और 4 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। शिष्य बनाना: मत्ती 28:18-20। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 47

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ परमेश्वर के लिए शिष्य निर्माण करने के इस पाठयक्रम व समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंपे।

2	**आराधना** (20 मिनट) *[स्वभाव का प्रगटीकरण]* **परमेश्वर व उसकी शिक्षाओं के प्रति खुद को समर्पित करना**

इस अध्याय में हम अपने आप को परमेश्वर व परमेश्वर की शिक्षाओं के प्रति समर्पित होने के द्वारा अपनी आराधना को प्रगट करना सीखेंगे।

1. समर्पण।

सर्मपण का अर्थ किसी चीज या किसी व्यक्ति के हाथों में अपने आप को सौंप देना होता है। इस अर्थ अपने आपको पूरी तरह से परमेश्वर के हाथों में सौंप देना होता है। यह भाव सेवा करने के दौरान प्रगट होता है।

2. हमारे शरीरों को समर्पित करना।

रोमियों 12:1; 6:12-13,19 को **पढ़ें।**

शरीरों। यहां पर हमारे शरीरों का अर्थ केवल हमारी देह से नहीं है। इसमें हमारी आत्मा, हमारा पूरा व्यक्तित्व भी शामिल है क्योंकि हमारा शरीर और उसके अंग मिलकर ही हमारी आत्मा, हमारे अस्तित्व व हमारे चरित्र के भावों को प्रगट करते हैं।

जोवित बलिदान। जब पशु बलि पशु को मारकर दी जाती है, उसी प्रकार से हमें हमारे बलिदान को हमारे शरीरों में जीवित अवस्था में परमेश्वर के सम्मुख लाना चाहिए। अब हम अपने पापमय स्वभाव के द्वारा चलायमान होकर अपने शरीर में जीवित नहीं हैं, लेकिन हमारा नया जन्म पाया हुआ स्वभाव हम पर प्रभुता करता है।

पवित्र बलिदान। 'पवित्र' शब्द का अर्थ है अलग किया हुआ व समर्पित। एक तरफ तो हम संसार की बुराई से अपने आप को अलग करते हैं। और दूसरी ओर इसी पापमय संसार में हम अपने आप को परमेश्वर व उसके कार्यो के लिए समर्पित करते हैं।

परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला बलिदान। हम अपने आप को हर एक उस बात के लिए समर्पित करते हैं जिसे परमेश्वर मान्यता देते या उसकी प्रशसां करते हैं। हम जिन जगहों पर जाते हैं, जिन गतिविधियों को करते हैं और जिन लोगों से हम मिलते हैं उन सब के द्वारा हम परमेश्वर का प्रसन्न करना चाहते हैं।

आराधना या सेवा करने का कार्य। इस प्रकार से अपने जीवनों को प्रत्येक दिन परमेश्वर के हाथों में सौंपने के द्वारा हम आत्मिक आराधना में शामिल हो जाते हैं! आराधना केवल चर्च या मण्डली में ही नहीं होती है! आराधना हमारे दैनिक जीवन में भो सक्रिय रहती है। हम परमेश्वर के राज्य व धार्मिकता की सेवा प्रतिदिन अपने जीवन को समर्पित करने के द्वारा परमेश्वर की सेवा करते हैं।

3. हमारे मन का समर्पण।

रोमियों 12:2 **पढ़ें।**

इस संसार के संदृश न बनो। हम अपने आप को इस बुरे संसार के स्वरूप में अपने आप को नहीं ढलने देते। हम नहीं चाहते कि यह संसार हमें अपने सांचे में ढाल दे। एक मसीही जन हर प्रकार की बुराई के सदृश्य बनने से बचना चाहता है**:** नास्तिक विचार धाराओं, झूठे धर्म, यौन अनैतिकता, बुरे मित्रों, निराशाजनक चर्चा, अश्लील पत्रिकाओं, आपत्तिजनक गतिविधियों,

भड़कीले वस्त्रों ,रूढ़ीवादी राजनीति, मादक पदार्थों का सेवन, हद से ज्यादा खेल से इत्यादि। एक मसीही व्यकित हर बुरे प्रभाव से बचना चाहता है। दूसरे लोगों की जीवनशैली और उनके आचरण की नकल हमें खींचकर परमेश्वर से दूर ले जाने वाली एक ऐसी शक्ति बन सकती है, जिससे परमेश्वर अप्रसन्न रहता है।

परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बदलना। हम अपने आप को नियमित तौर पर नये होते जाने के लिए समर्पित करते हैं। हालांकि सदृशता लोगों के बाहरी कार्यों के द्वारा प्रगट होती है, लेकिन रूपान्तरण अन्दरूनी बदलाव या विचारों, लक्ष्यों और स्वभाव का रूपान्तरण परमेश्वर के वचन द्वारा होता है। यह तब होता है जब हम सहयोग करने के लिए अपने आपको परमेश्वर के वचनों व उसकी आत्मा के हाथों में समर्पित कर देते हैं। आन्तरिक रूपान्तरण जो अन्ततः बाहरी बदलाव के द्वारा प्रगट होता है, परमेश्वर का प्रसन्न करने वाले जीवन को जीने का सबसे बेहतर तरीका है।

4. अपने अंगों को समर्पित करना।

आंखें। मत्ती 6:22-23। हम अपनी आंखों को परमेश्वर को समर्पित करते हैं, क्योंकि हमारी आंखें वे द्वार हैं जिनके द्वारा हम अपनी आत्मा में चीज़ों को प्रवेश करने देते हैं(अय्यूब 31:1)।

कान। यशायाह 50:4-5। हम अपने कानों को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करते हैं, क्योंकि हमारे कानों के द्वारा ही हम परमेश्वर की वाणी को सुन सकते हैं।

जीभ। मत्ती 12:34-37। हम अपनी जीभ को परमेश्वर के हाथों में समपित करते हैं, क्योंकि हमारी जीभ प्रगट करती है कि हमारे हृदय में क्या है(इफिसियों 4:15,29)।

आराधना।

समय लेकर एक या दो वाक्यों में परमेश्वर की आराधना करें।

आराधना करने के लिए आप अपने शरीर का कौन सा हिस्सा परमेश्वर को समर्पित करना चाहते हैं।

3.	**बाँटना** (20 मिनट)	*[एकान्त समय]* **सभोपदेशक 1-4**

- ***आगे बढ़कर*** (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (सभोपदेशक 1,2,3 व 4)से क्या सीखा।
- अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70मिनट)	*[अगुवाई]* **मसीही अगुवे की विशेषताएं**

नय नियम में शिक्षा केवल अगुवे तक ही सिमित हैं।

मैनुएल 3 में, कलीसिया की अगुवाई के लिए अध्याय 34 देखें(1पतरस 5:1-7 पर बाइबल अध्ययन)

मैनुएल 4 में , मसीही कलीसिया में अगुवाई के एतिहासिक विकास के लिए परिशिष्ट 4 देखिए।

मैनुएल 4 में , डीकनों के लिए देखिए।

मैनुएल 6 में , मण्डली में महिलाओं के लिए परिशिष्ट 3 देखें।

मैनुएल 6 में , कलीसिया के अगुवों को सेवा के लिए भेजने के सामारोह के लिए अध्याय 17 देखें।

क.विश्वव्यापी कलीसिया के बुनियादी अगुवे

परिचय। विश्वव्यापी कलीसिया या मण्डली का प्रधान व अनन्त अगुवा यीशु मसीह है। विश्वव्यापी कलीसिया के बुनियादी अगुवे यीशु मसीह के प्रेरित पौलुस थे।

कलीसिया मसीह की देह है। यह देह संसार की बहुत सी मण्डलियों से मिलकर बनी होती (अर्थात स्थानीय मसीही संगतियां या व्यक्तिगत कलीसियाएं)है।

बाइबल में एक मण्डली(1 कुरिन्थियों 1:2) घर में संगति किया करती थी(घरेलू कलीसिया) (1कुरिन्थियों 16:19)। बाइबल के अन्दर सारी मण्डलियां स्वावलम्बी थी:"यरूशलेम की कलीसिया"(प्रेरितों 11:22),"अन्ताकिया की कलीसिया"(प्रेरितों 11:25),"सीरिया व किलकिया की कलीसिया"(प्रेरितों 15:41), "केसरिया की कलीसिया" (प्रेरितों 18:22) और "इफिसुस की कलीसिया"(प्रेरितों 20:17)। इन कलीसियाओं में केवल पुरनिये थे और पुरनियों के ऊपर कोई अधिकारी नहीं था। केवल मसीह ही हर एक मण्डली का प्रधान है।

1.यीशु मसीह ।

(1) मसीह व विश्वव्यापी कलीसिया।

मत्ती 16:18; इफिसियों 1:22-23; 1पतरस 2:25; 5:4(प्रेरितों 20:28) **पढ़ें।**

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह का विश्व व्यापी कलीसिया से क्या रिश्ता है?

ध्यान दें। यीशु मसीह सारे संसार में कलीसिया का संस्थापक, निर्माता और स्वामी है। यीशु सम्पूर्ण कलीसियाओं का प्रधान, बिशप(संरक्षक) और प्रमुख चरवाहा (पासबान) है। वह अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा नये नियम की कलीसिया का संस्थापक और स्वामी है। वह अपनी ज़मीनी और आसमानी सेवाकाई के कलीसिया का निर्माण करने वाला है। वह ही एकमात्र प्रधान, और विश्वव्यापक मसीही सेवकाई का मुख्य अगुवा है। बाइबल में एक भी ऐसा संकेत नहीं दिया गया है कि कोई जन इस धरती पर यीशु मसीह का प्रतिनिधी बनेगा।

(2) मसीह बाइबल के द्वारा ही अपने अधिकार का इस्तेमाल करता है।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह किस प्रकार से कलीसिया व मसीहियों के जीवन में अपने अधिकार को इस्तेमाल करता है?

पढ़ें। यूहन्ना 8:31-32;(प्रेरितों 2027-32; इफिसियों 6:17; 1 तीमुथीयुस 3:14-15; 2 तीमुथीयुस 3:16-17; तीतुस 1:9; इब्रानियों 4:12-13)।

ध्यान दें। मसीह बाइबल व उसकी शिक्षाओं के द्वारा अपने अधिकार का इस्तेमाल करता है। बाइबल, मसीहियों व कलीसिया के लिए मसीह की प्रगट इच्छा है। मसीह ने कलीसिया को अपना संविधान प्रदान किया है, अर्थात, बुनियादी शिक्षाएं जिसके द्वारा कलीसिया को चलाया जाना चाहिए। इन शिक्षाओं को ही नये नियम में अपनाया गया।

मसीहियों को बाइबल में लिखी हुई बातों से (1 कुरिन्थियों 4:6-7;1 कुरिन्थियों 1:19)! मसीहियों को पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कही गयी बातों से (व्यवस्थाविवरण 4:2; 5:32;यहोशू 1:7;यशायाह 29:13;यिर्मयाह 8:8) और नये नियम के प्रेरितों की बातों से आगे नहीं बढ़ना चाहिए(मत्ती 4:4-7; प्रेरितों 26:22; 28: 25; 1पतरस 1:9-12;2पतरस 3:1-2; प्रकाशितवाक्य 22:18-19)। मसीहियों में ऐसी रीतियों को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए जो परमेश्वर के वचनों को विरोध करती हैं। (मत्ती 15:3,6; मरकुस 7:7-8)!

(3) मसीह, पवित्र आत्मा के द्वारा अपने अधिकार का इस्तेमाल करता है।

ध्यान दें। पवित्र आत्मा मसीह का आत्मा और धरती पर मसीह का प्रतिनिधि है। वह ही प्रत्येक स्थानीय व विश्वव्यापी मण्डली में यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है।

पढ़ें। यूहन्ना 16:13-15;(यूहन्ना 14:26; 15:26; 20:21-23;लूका 24:49;प्रेरितों 1:5-8)। पवित्र आत्मा के द्वारा, मसीह ने प्रेरितों को उनका काम पूरा करने के लिए तैयार किया, विशेषकर कलीसिया के बुनियादी अगुवे होने के लिए। पवित्र आत्मा के द्वारा, मसीह ने उनकी सत्य में अगुवाई की, उन्हें याद दिलाया की जब वह धरती पर था तो उसने उन्हें क्या शिक्षाएं दी थीं, और उन्हें वे सारी बातें सिखाई जो उनकी जानकारी के लिए ज़रूरी थीं। इस तरह से, मसीह के प्रेरित मसीह के अधिकृत

गवाह थे, जिन्होंने सुसमाचार प्रचार किया और लोगों को मसीह का अनुयायी बनाया और उन्होंने इस सारी सच्चाई को नये नियम की पुस्तकों में लिखा।

पढ़ें। प्रेरितों 15:28। पवित्र आत्मा के द्वारा, मसीह ने यरूशलेम की कलीसिया के पुरनियों और यीशु मसीह के प्रेरितों के साथ मिलकर अन्ताकिया की कलीसिया का प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों की सभा व उनके निर्णयों की अगुवाई की। प्रेरितों 16:4 में इस्तेमाल किया गया शब्द 'ठहराया'(ग्रीक:डोगमाटा केकरीमीना) एक कानूनी शब्द है लेकिन इस मतलब जबरन थोपना नहीं है, वरन इसे हम प्रेरितों की ओर से सुझाव मान सकते हैं। इस सुझाव को स्वीकार या अस्वीकार किया जा सकता है। मसीहियों को मूर्तिपूजा और यौन अनैतिकता से दूर रहना है(प्रेरितों 16:4)। और उस समय पर मसीहियों को अपने स्वतन्त्र आचरण के द्वारा यहूदियों को चोट न पहुचाएं। विश्वास में कमजोर भाईयों की खातिर उन्हें कुछ जरूरी चीजों को त्यागना था: 'कुछ जरूरी चीज़ों को'(ग्रीक:अपानागकेस),खास तौर पर मूर्तियों को समर्पित किया गया भोजन, गला घोंटे गये पशु का खून पीना या मीट खाना(प्रेरितों 15:28-29; रोमियों 14:1-6)। अत: दूसरी या तीसरी सदी की परम्परागत कलीसिया के परिषद के अधिकार के क्षेत्र में इसके द्वारा कुछ भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

बाइबल में नये नियम की कलीसिया में पुरनियों के ऊपर किसी भी प्रकार के परिषद या उनके प्रतिनिधित्व को ठहराये जाने का कोई भी प्रमाण प्राप्त नहीं है। नये नियम के समय में आधुनिक दौर के समान परिषद, धर्मसभा, या किसी भी डिनोमिनेशन का सम्मेलन जैसी कोई चीज़ नहीं थी और न ही इस बात का जिक्र पाया जाता है कि विश्व व्यापक तौर पर सब कलीसियाए मिलकर सार्वभौमिक कलीसियाओं की देखभाल कर रही थीं।

पढ़ें। यूहन्ना 16:8; (रोमियों 8:5-10; गलातियों 5516, 18,25; इफिसियों 6:17)। पवित्र आत्मा आज भी मसीहियों और उनके पुरनियों को याद दिलाता है, लेकिन उसकी बात कभी भी बाइबल की शिक्षा का विरोध नहीं करती।

(4) मसीह स्थानीय मण्डलियों के अधिकारियों के द्वारा अपने अधिकार का इस्तेमाल करता है।

प्रेरितों के काम 20:28 को **पढ़ें।** मसीह अपने अधिकार का इस्तेमाल मण्डली में पाये जाने वाले पुरनियों के दल के द्वारा(स्थानीय मसीही मण्डली जो किसी घरेलू कलीसिया या घरेलू संगति में मिलती है),लेकिन यह कार्य तब ही सम्भव हो पाता है जब पुरनिये स्वयं बाइबल के सत्य और अधिकार के प्रति समर्पित होते हैं। यह जानकर बहुत आराम मिलता है कि जब भी कहीं मण्डली मसीह के नाम में काम करने या आराधना करने के लिए जमा होते हैं तो वह उनके बीच में मौजूद होता है(मत्ती 18:20; 28:20)।

(5) मसीह के कामों के उदाहरण।

खोजें व चर्चा करें। पवित्र आत्मा द्वारा मसीह के कामों कुछ विशेष उदाहरण क्या हैं?

- यूहन्ना 16:8-10 **पढें।** मसीह लोगों को पाप, धार्मिकता और न्याय के प्रति निरूत्तर करता है।
- यूहन्ना 3:3-8; 2 थिस्लुनिकियों 2:13-14; 1 पतरस 1:2 **पढ़ें।** वह सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा लोगों को बुलाता है, उन्हें नया जन्म पाने के लिए प्रोत्साहित करता है,उनका उद्धार करता और उन्हें शुद्ध करता है।
- 1कुरिन्थियों 12:4-7, 11; इफिसियों 4:7 **पढ़ें।** वह अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए आत्मिक वरदानों की सहायता से मसीहियों को तैयार करता है।
- मरकुस 13: 34; 1 कुरिन्थियों 3:6; 12:5-7 **पढ़ें।** उसने संसार व मण्डली के अन्दर सेवा करने के लिए हर एक मसीही को कोई न कोई काम सौंपा।
- 1 कुरिन्थियों 12:18, 24-26 **पढ़ें।** वह जैसा जहां चाहता है अलग अलग स्थानीय मण्डलियों में मसीहियों को व्यवस्थि करता है ताकि विविधता होने पर भी मण्डलियों में एकता बनी रह।

तथापि, इन सभी क्षेत्रों में मसीहियों की व्यक्तिगत और पारस्परिक जिम्मेदारी होती है। यदि वे अपनी जिम्मेदारियों को पूरा नहीं करेगें तो वे कभी भी अपने जीवन में मसीह के कार्यों का अनुभव नहीं कर पाएंगे।

2. यीशु मसीह के प्रेरित ।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के प्रेरित कौन थे? उनके काम व अधिकार क्या थे?

(1)यीशु मसीह के प्रेरित अनोखे प्रकार के लोग थे।

मरकुस 3:13-19 **पढ़ें।** यीशु मसीह के प्रेरित अनोखे प्रकार के लोग थे, क्योंकि उन्हें व्यक्तिगत तौर पर मसीह के द्वारा चुना गया, बुलाया गया, तैयार किया गया और भेजा गया, ताकि वे उसके गवाह बन सकें खास तौर पर उसके पुनरूत्थान के(प्रेरितों 1:21-22)।

(2) यीशु के प्रेरितों के सामने एक अनोखा लक्ष्य रखा गया।

यूहन्ना 16:12-15; (यूहन्ना 20:19-23; प्रेरितों के काम 1:8)**पढ़ें।** उन्हें विशेष काम के लिए पवित्र आत्मा की विशेष परिमाप से परिपूर्ण किया गया था: अर्थात कलीसिया के इतिहास के प्रारम्भ में सत्य की घोषणा करने के लिए, नये नियम की जिन पुस्तकों को उन्होंने लिखा उस में सत्य को लिखने के लिए, और हर जगह पर पहली स्थानीय कलीसिया स्थापित करने के लिए। इसलिए उन्हें विश्वव्यापी कलीसिया के जनक कहा गया(इफिसियों 2:20; प्रकाशितवाक्य 21:14)।

(3)यीशु मसीह के प्रेरितों के पास विशेषाधिकार प्राप्त थे।

पढ़ें। मत्ती 16:18-19; 18:18। उन्हें अपनी शिक्षाओं द्वारा सम्पूर्ण कलीसिया के लिए सिद्धान्तों को स्थापित करने का अधिकार दिया गया(प्रेरितों 15:28-29; 2तीमुथीयुस 1:13-14), मसीहियों को उनकी शिक्षाओं को मानने का आदेश देने का अधिकार(प्रेरितों 16:4; रोमियों 6:17; 2 कुरिन्थियों 10:4-6; 2 थिस्लुनिकियों 3:14), परमेश्वर के राज्य में लोगों को शामिल करना तथा किसी को निकालना(प्रेरितों 8:14-17; 5:1-11), स्थानीय कलीसिया के अगुवे की नियुक्ति का अधिकार(प्रेरितों 14:23) और एक प्रेरित होने के विशेष चिन्हों को प्रगट करने का अधिकार दिया गया है(मरकुस 16:20; 2 कुरिन्थियों 12:12;इब्रानियों 2:3-)।

(4) यीशु मसीह के प्रेरितों का कोई उत्तराधिकारी नहीं है।

प्रेरितों 1:21-26;(इफिसियों 2:19-20; 3:4-5;प्रकाशितवाक्य 21:14)। यीशु मसीह के प्रेरितों में यीशु मसीह के ग्यारह चेले (लूका 24:9,33) और पौलुस प्रेरित (प्रेरितों 22:14; 26:15-18; 1 कुरिन्थियों 1:1; 9:1)शामिल हैं। यीशु के प्रेरितों के उत्तराधिकारी नहीं है क्योंकि उसके बाद की समय के लोग उन आवश्यक मांगों को पूरा नहीं कर पाए जो प्रेरितों 1:21-22 पर आधारित थीं। यीशु मसीह के प्रेरितों की संख्या हमेशा बारह ही रही(प्रकाशितवाक्य 21:14)। बाइबल में एक भी ऐसा जिक्र नहीं दिया गया है जिसमें यह बताया हो कि प्रेरितों के वंशज आगे चलकर बिशप बनें। केवल यीशु मसीह ही कलीसिया के बिशप या प्रधान थे (1पतरस 2:25)।

(5) यीशु मसीह के प्रेरित कलीसिया के प्रेरितों से अलग होना चाहिए।

मसीही मण्डलियों के प्रेरित मण्डलियों के प्रतिनिधी या राजदूत(2 कुरिन्थियों 8523; फिलिप्पियों 2:25) या विस्तृत बोध रखने वाले मिश्नरी प्रेरित, तथा मण्डलियों को स्थापित करने के द्वारा मसीह और उसके कामों का प्रतिनिधित्व लोग थे(प्रेरितों 14:1-4; 1 थिस्लुनिकियों 2:6-7)। जिन लोगों को प्रेरिताई एक आत्मिक वरदान के तौर पर प्राप्त हुई है(1कुरिन्थियों 12:28;इफिसियों 4:11-16) उन्हें मण्डली पर अधिकार जताने के लिए नहीं,वरन उन्हें सेवा करने के लिए नियुक्त किया गया है, खास तौर पर कलीसिया में मसीहियों को तैयार करने के लिए। इन सभी प्रेरितों,भविष्यद्वक्ताओं, प्रचारकों, शिक्षकों और पासबानों को कलीसिया के पुरनियों की अधीनता में होकर काम करना चाहिए(1तीमुथीयुस 5:17)। यहां तक कि प्रेरित पतरस ने भी जहां सेवकाई निभाई वहां की मण्डली में सह पुरनिए के रूप में काम किया (पतरस 5:1-2)। यीशु मसीह के प्रेरितों(पौलुस और यूहन्ना)ने लोगों को झूठे शिक्षकों से सावधान रहने के लिए कहा: अर्थात ऐसे लोगों से सावधान रहने को जो अपने आप को यीशु के प्रेरितों के समान बताते हैं। ऐसों का पर्दाफाश होना चाहिए और ऐसों का सामना करना चाहिए(2 कुरिन्थियों 11:1-15; प्रकाशितवाक्य 2:2; यूहन्ना 9-10)।

सारांश। यीशु मसीह सदैव विश्वव्यापी कलीसिया के संस्थापक, निर्माता और स्वामी है। विश्व व्यापी कलीसिया मसीह की देह है। यीशु मसीह के चेले या प्रेरित उस विश्व व्यापी कलीसिया के बुनियादी अगुवे थे। मसीह ने उनका इस्तेमाल करते हुए

यहूदियों,सामरियों, और अन्यजातियों के बीच में प्रथम ऐतिहासिक कलीसियाओं की स्थापना की और स्थानीय मण्डलियों में अगुवों को तैयार किया व ठहराया।

ख. मसीही मण्डलियों में प्रशिक्षित अगुवे।

परिचय। पुरनिये, पुराने नियम के समय में नियुक्त किये गये अगुवे थे। पुरनिये नये नियम के समाज (अर्थात विश्व व्यापी कलीसिया जो अलग अलग स्थानों में बहुत सी स्थानीय कलीसिया से मिलकर बनी है)में परमेश्वर द्वारा नियुक्त किये गये अगुवे भी हैं। जब वे जीवित थे, तब मसीह के प्रेरितों ने स्थानीय कलीसियाओं में पुरनियों के रूप में भी काम किया(प्रेरितों 6:2-4; 1पतरस 5:1; 2 यूहन्ना 1:1)। डीकनों को किसी स्थानीय कलीसिया की अगुवाई करने के लिए नहीं नियुक्त किया गया है बल्कि वे कलीसिया के अन्दर कुछ विशेष काम करने के लिए ठहराए गये हैं।

1. पुराने नियम में पुरनिए।

निर्गमन 3:16; 18:17-26; व्यवस्थाविवरण 1:9-18; 31:28; भजन संहिता 107:32 **पढ़ें।**

खोजें और चर्चा करें। किस प्रकार से पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था?

ध्यान दें। लगभग 1407 ई.पू मरूस्थल में, मूसा ने कहा था " इसलिए तुम अपने अपने गोत्र में से बुद्धिमान और प्रसिद्ध पुरूष चुन लो, और मैं उन्हें तुम पर मुखिया ठहराऊँगा (व्यवस्थाविवरण 1:13)। परमेश्वर के पुराने नियम के समाज में, अर्थात 1447 ईसा पूर्व में(निर्गमन 3:18;4:29), पुरिनये गोत्रों के मुखिया हुआ करते थे(व्यवस्थाविवरण 31:28; 1 शमूएल 4:3;एज्रा 6:7; नहेमायाह 19:1) या वे किसी कुल के अगुवा हुआ करते थे(2 शमूएल 12:17)। जब इस्राएली लोग आकर फिलिस्तीन में बस गये,हर शहर व नगर या किसी प्रमुख स्थान में उनके अपने पुरनिये या प्रधान होने लगे(व्यवस्था विवरण 21:3;रूत 4:2 नीतिवचन 31:23)।

प्राचीनों का चुनाव मुख्यत: उनकी योग्यताओं, परमेश्वर का भय मानने, उनकी विश्वासयोग्यता, बेईमानी से की जाने वाली कमाई से घृणा(निर्गमन 17:26),उनकी अगुवाई(गिनती 11:16-17), उनकी बुद्धि, उनकी समझ और समाज में उनकी प्रतिष्ठा के आधार पर किया जाता था(व्यवस्थाविवरण 1:9-18)। उनका काम हजारों,सैकड़ों और पचास लोगों पर व दस-दस लोगों पर, अपनी योग्यता, अनुभव, विशेष करके सेवा करने की योग्यता के अनुसार सभी प्रकार के लोगों का न्याय करना था।

परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता, महायाजक,याजकों और लेवियों को नियुक्त किया लेकिन उन्हें इस्राएल में लोगों पर प्रभुता करने या अपनी पीछे अपने वंशजों प्रभुता का अधिकार देने के लिए नहीं ठहराया गया था वरन उन्हें इस्राएक में विविध धार्मिक सेवाएं निभाने के लिए चुना गया था। भविष्यद्वक्ता लोगों के सामने परमेश्वर व उसके वचनों का प्रतिनिधित्व करते थे और याजक परमेश्वर के सामने लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे। जब इस्राएल के लोगों ने अपने लिए एक राजा होने का चुनाव किया, उस समय वास्तव में परमेश्वर को अपने एकमात्र राजा स्वीकार करने स इनकार कर दिया। (1शमूएल अध्याय 8)

2. मिडो-फारसी,यूनानी और रोमी साम्राज्य के समय में प्राचीन ।

विदेशी राजनैतिक साम्राज्य में पुरनियों न अगुवाई को कई वर्गो व श्रेणियों में विभाजित कर दिया।

(1)मिडो- फारसी साम्राज्य का काल(559-331 ई.पू)

बेबिलोन की गुलामी के पश्चात(538 ई.पू), विदेशी मिडो-फारसी साम्राज्य काल के दौरान, एज्रा के अधीनता में एक सत्ता का उदय हुआ(458 ई.पू), जो कुछ प्रमुख स्थानीय अगुवों व न्यायधीशों व न्यायपालिकाओं से मिलकर बनी थी(एज्रा 7:25-26;10514)।

(2) ग्रीक सैल्यूसाइट साम्राज्य का दौर (312 ई.पू से आगे)

इस दौरान, एक ईकाई जिसे 'पुरिनयों की परिषद' (ग्रीक: गेरोऊसिया)कहा जाता था अपने अस्तित्व में आयी, जो पुरनियों, याजकों और महायाजकों से मिलकर बनी हुई थी। इसने राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व किया(1 मकाबीस 12:6)। अत: एक पुरनियों का परिषद पूरे यहूदी राष्ट्र का संचालन कर रहा था।

(3)रोमी सम्राज्य काल(प्रथम शताब्दी ई.पू और ई.प)

इस काल के दौरान, हर एक स्थानीय जिलों में अपना 'पुरनियों का परिषद' था। इस प्रकार से उनके बीच में बहुत से पुरनियों के परिषद थे। रोमी पैरवी करने वालों के काल में(6-66 ई.प.), 'पुरनियों की सबसे बड़ी परिषद' यरूशलेम में थी और उसे

'सेन्हेद्रिन' के नाम से जाना जाता था। इसमें पुरनिये, मुख्य याजक और व्यवस्थापक शामिल थे(मत्ती)। पुरनिये सेन्हेद्रिन में सह सदस्य थें जो यरूशलेम के कुलीन परिवार के लोगों से मिलकर बनी थी। रोमी सम्राज्य ने सेन्हेद्रिन को सभी राष्ट्रीय मुद्दों पर हस्तक्षेप करने का अधिकार दिया था(लेकिन उन्हें कर, राजनेताओं और अगुवों पर अधिकार नहीं था)। सेन्हेद्रिन को यहूदियों के बीच में टुकड़ियों में रहने वालों के रूप में भी जाना जाता था (प्रेरितों 22:5)।

3. नये नियम की यहूदी मण्डलियों में प्राचीन।

प्रेरितों 1:15-26 **पढ़ें।** प्रेरित पौलुस व लगभग 120 विश्वासियों ने यहूदा की जगह पर प्रेरित होने के लिए मत्ती को चुना। लेकिन ऐसा जान पड़ता है कि पतरस ने अपने अधिकार की हद पार करके यह काम किया, क्योंकि हम उस के बाद मत्ती का जिक्र फिर कभी नहीं पाते और मसीह ने पौलुस को अपना प्रेरित होने के लिए चुना(प्रेरितों 9:15; प्रेरितों 22:6-10; प्रेरितों 26:12-18; 1 कुरिन्थियों 9:1;रोमियों 1:1)।

प्रेरितों 2:42; प्रेरितों 6:1-4; 1 पतरस 5:1; 3 यूहन्ना 1 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। यहूदियों के बीच में प्रथम मण्डली का मार्गदर्शन किस प्रकार से किया गया?

ध्यान दें। नये नियम के काल में, पिन्तेकुस्त के बाद, चेलों का पहला दल यरूशलेम में परमेश्वर का समुदाय बन गया, पुराने नियम के समय में भी सम्भत: इसी वर्ग के लोगों में से परिवार के मुखिया और प्रभावशाली लोगों को पुरनिये के रूप में चुना गया था। उन्हें डीकनों के समान मण्डली के विश्वासियों द्वारा ही चुना गया था(प्रेरितों 6:1-7)।

लूका(प्रेरितों6:4),पतरस (1 पतरस 5:1) और यूहन्ना (3 यूहन्ना 1) स्पष्ट बताते हैं कि यीशु मसीह के प्रेरित निश्चय ही स्थानीय मण्डलियों में पुरनियों के रूप में कार्यरत थे। मण्डली में पुरनियों का प्रमुख काम प्रार्थना करना और परमेश्वर के वचनों को बांटना था (प्रेरितों 6:4)।

4. नये नियम की गैर मसीही मण्डली में प्राचीन।

प्रेरितों 14:23; तीतुस 1:5 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। गैर मसीहियों के बीच में स्थापित की गयी मण्डलियों को मागदर्शन किस प्रकार किया गया?

ध्यान दें। प्रेरित व उनके सह-कार्यकर्ता(आधुनिक मिश्नरी या कलीसिया के चर्च-स्थापित करने वालों से तुलना करें। ने नई कलीसिया की स्थापना की। प्रत्येक मण्डली में अगुवाई करने के लिए पुरनियों को ठहराया गया, जिस तरह से प्रितों की पुस्तकें स्पष्ट रूप से बताती है। मण्डलियों में कभी भी केवल एक मण्डली नहीं थी(उदाहरण के लिए एक याजक या एक पासबान),लेकिन सदैव पुरनियों को एक दल हुआ करता था, जो मण्डली के सारे कार्यों को किया करते थे। अगुवों के इस दल को पुरनियों का परिषद कहा जाता था।(1 तीमुथीयुस 4:14)।

सारांश। यीशु मसीह कलीसिया का सस्थापक, निर्माता और स्वामी है(मत्ती 16:18; प्रेरितों 20:28)। वह ही कलीसिया का सिर,बिशप व प्रधान अगुवा है(इफिसियों 1:20-23; 1पतरस 2:25;5:4)। वह ही वास्तव में महायाजक और परमेश्वर द्वार ठहराया गया प्रेरित है और उसे मसीहियों द्वारा स्वीकार किया गया है(इब्रानियों 3:1)। यीशु मसीह आज भी अगुवा है: वह ही सम्पूर्ण कलीसिया की देह का प्रमुख चरवाहा और बिशप है।

उसने मसीही मण्डली स्थापित करने के लिए उन्हें बुलाया(मत्ती 16:18-19; इफिसियों 2:20; प्रकाशितवाक्य 21:14)। प्रेरित सम्पूर्ण कलीसिया के एतिहासिक बुनियादी अगुवे थे।

यीशु मसीह के प्रेरित और उनके सह कार्यकर्ताओं ने पुरनियों को प्रथम कलीसिया के अगुवे होने के लिए ठहराया था(प्रेरितों 14:23; तीतुस 1:5)। अगुवे आज भी स्थानीय कलीसिया में ठहराये गये अगुवे होते हैं ! जबकि यीशु मसीह के चेलों के कोई उत्तराधिकारी नहीं हो सकते(प्रेरितों 1:21-22), बाइबल में यीशु मसीह के प्रेरितों द्वारा लिखित निर्देशों के अनुसार प्रत्येक मण्डली लगातार प्रेरितों को अपने अगुवे के रूप में चुनते रहे(प्रेरितों 20:17,28;1 तीमुथीयुस 3:1-7,14-15;5:17-22; तीतुस 1:5-9; 1पतरस 5:1-4)।

ग. प्राचीनों का परिषद

परिचय । नये नियम के अनुसार, प्रत्येक मण्डली उन में एक समूह के द्वारा संचालित होनी चाहिए, जिन्हें पुरनियों को दल या ईकाई कहा जाता है(ग्रीक: प्रेसब्यूटेरियन)(1 पतरस 4:14; प्रेरितों 20:17,28)। आज हम इस प्रकार के पुरनियों के दल को बोर्ड ऑफ एल्डर या पुरनियों का परिषद कह सकते हैं। नये नियम में, शब्द चरवाहा(यूनानी भाषा: पोईमेन, इंगलिश: पास्टर)और संरंक्षक (यूनानी: एपिस्कोपोस, अग्रेजी में: बिशप) को हमेशा पुरनियें के साथ में जोड़ा जाता है।

1. 'प्राचीन', 'चरवाहा' और 'संरक्षक)।

प्रेरितों 20:17,28; तीतुस 1:5,7, 1 पतरस 5:1-4 पढ़ें।

खोजें व चर्चा करें। नये नियम में पाये जाने वाले 'प्राचीन', 'चरवाहे' और 'संरक्षक' शब्दों में क्या फरक है?

ध्यान दें।

(1) नये नियम में इन शब्दों को अन्दर ही अन्दर अलग अलग परिस्थितियों में इस्तेमाल किया गया है?

पुरनियों के लिए ग्रीक शब्द है 'प्रेस्ब्यूटरस'। अंग्रेजी भाषा का शब्द 'याजक' यूनानी प्रेस्ब्यूटर्स से लिया है।

डीकन के लिए यूनानी भाषा में 'डीआकोनोस" के नाम से जाना जाता है। अग्रेजी का शब्द डीकन अग्रेजी के शब्द डीकोनास से जन्मा है।

चरवाहे के लिए चरवाहा शब्द 'फोईमिन' है, और चरवाहें को लैटिन भाषा में 'पास्टर' कहा जाता है। अग्रेजी का शब्द पास्टर लैटिन के शब्द पास्टर से आता है।

यूनानी भाषा में निरिक्षक शब्द'एपिस्कोपोस' है। अंग्रेजी भाषा में कहा जाने वाला शब्द 'बिशप' शब्द 'इपिसकोपोस' से लिया गया है।

नये नियम काल के दौरान(30-97 ई.प), शब्द पुरनिया (यूनानी: प्रेस्ब्यूटेरोस, अग्रेजी में: प्रीस्ट), चरवाहा(लैटिन और अंग्रेजी में: पास्टर) और निरिक्षक(यूनानी: एपिसकोपोस, अंग्रेजी में: बिशप) को मतलब एक ही व्यक्ति से है।

- प्रेरितों के काम में, सारे पुरनियों ने एक चरवाहें(पासबान) और निरिक्षक(बिशप) के रूप में काम किया(प्रेरितों 20:28)!
- तीतुस में, सारे पुरनिये(तीतुस 1:5) निरिक्षक(बिशप) कहलाये (तीतुस 1:7)।
- 1पतरस में, सारे पुरनियों(1पतरस5:1) ने चरवाहों (पासबानों) और निरिक्षकों (बिशप)(1पतरस5:2) का काम प्रधान चरवाहे अर्थात यीशु मसीह की अधीनता में रहते हुए किया।

यह स्पष्ट दिखाता है कि लूका,पौलुस और पतरस ने पुरनिया, चरवाहा और निरिक्षक शब्द का इस्तेमाल नये नियम में बहुतायत से किया। वर्तमान में भले ही इन शब्दों को एक दूसरे से अलग समझा जाने लगा हो लेकिन नये नियम के काल में इन तीनों शब्दों का अर्थ एक ही था।

(2) नया नियम सिखाता है कि प्रत्येक मण्डली में अपनी पुरनियों की परिषद थी जिन्हें अगुवा माना जाता था।

नये नियम की कलीसिया में अगुवों के बीच में कोई वर्गीकरण नहीं था। मसीही कलीसियाओं में केवल एक ही तरह से अगुवों को ठहराया गया था, जिन्हें हर मण्डल में पुरनियों के परिषद के नाम से जाना जाता था(यूनानी: प्रेस्ब्यूटीरियन)(1पतरस 4:14)। इस पुरनियों की इस ईकाई में सभी पुरनिए अपनी मण्डली से जुड़ी अगुवों की जिम्मेदारियों को पूरी किया करते थे(प्रेरितों 11:30; 14:23; 15:2,22; 20:17; 1तीमुथीयुस 5:17; तीतुस 1:5; याकूब 5:14;1पतरस 5:1)।

(3) इन अलग अलग शब्दों के मतलब

तीन शब्द: 'प्रेस्ब्यूर्टस' का अर्थ पुरनिया,'पोईमन' या पास्टर का मतलब चरवाहा और 'इपिस्कोपोस' का अर्थ निरिक्षक कलीसिया में तीन अलग अलग उपाधियों या कार्यालय को नहीं दर्शाते। ये सब मिलकर एक कलीसिया के कार्यालय, अर्थात पुरनिये को दर्शाते हैं। वे कलीसिया के अगुवों के समूह को तीन अलग अलग पहलुओं से प्रदर्शित करते हैं।

शब्द 'पुरनिया' उनके कार्यालय और उनकी परिपक्वता,अनुभव और उस आदर को दर्शाता है, जो इन अगुवों को प्राप्त था।

'चरवाहा' या 'निरिक्षक' शब्द उनके कार्य के स्वभाव को दर्शाते हैं।

नया नियम हमें यह सिखाता है कि सभी स्थानीय कलीसियाओं के पुरनिए चरवाहे और मण्डली के निरिक्षक हैं। उन सभी को पासबानी करने,प्रबन्ध करने और शिक्षा प्रदान करने क अधिकार प्राप्त हैं।

(4) मसीही कलीसिया में अगुवाई के ऐतिहासिक विकास से वर्गीकरण या श्रेणीबद्धता की ओर।

अब आप मैनुएल 4, परिशिष्ट 19 'मसीही कलीसिया के अगुवेपन का ऐतिहासिक विकास'।

2. बाइबल के अनुसार पुरनियों या प्राचीनों की योग्यताएं।

1तीमुथीयुस 3:1-7; तीतुस 1:6-9 **पढ़ें।**

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के अनुसार एक प्राचीन में क्या योग्यताएं होनी चाहिए?

ध्यान दें। किसी भी पुरूष को केवल तभी पुरनिये या प्राचीन के रूप में ठहराया जा सकता है जब वह बाइबल की मांगों या अपेक्षाओं को पूरा करता हो।

प्राचीनों की योग्यताओं को तीन भागों में बांटा जा सकता है:

(1) उसका व्यक्तिगत व्यवहार ।

वह अपने स्वभाव और इच्छाओं में संयमी होना चाहिए। धन के क्षेत्र में,वह ईमानदार और इस धरती पर अपने लिए सम्पत्ति इकट्ठा करने वाला नहीं होना चाहिए।

(2) उसका पारिवारिक जीवन।

महिलाओं के क्षेत्र में, वह अपनी पत्नी के प्रति वफादारी का नमूना होना चाहिए। यदि वह अविवाहित है, तो उसे सभी महिलाओं के प्रति शुद्धता का नमूना होना चाहिए। बच्चों के सन्दर्भ में उसे अपने बच्चों को मसीह पर भरोसा रखना और आज्ञा मानना तथा अपने माता पिता का आदर करना सिखाना चाहिए।

(3) उसकी सेवकाई की योग्यता

पविपक्वता के सन्दर्भ में, वह नया चेला या अपरिपक्व मसीही नहीं होना चाहिए(1तीमुथीयुस 3:6)। बाइबल के सन्दर्भ में, उसकी बुनियाद अटल सिद्धान्तों पर रखी होनी चाहिए,और वह प्रचार करने,शिक्षा देने और लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए बाइबल का इस्तेमाल करने में सक्षम होना चाहिए(1तीमुथीयुस 3:2; तीतुस1:9)।

3. प्राचीनों के काम।

(1) प्राचीन का सबसे पहला काम परमेश्वर की भेड़ों अर्थात विश्वासियों का चरवाहा या पासबान होना है।

प्रेरितों के काम 20:28-31; 1 पतरस 5:2 पढ़ें।

खोजे और चर्चा करें। मण्डली का पासबान या चरवाहा होने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। चरवाहों, अर्थात प्राचीनों को लोगों को मण्डली के लोगों की चरवाही करने की जिम्मेदारी सौंपी जाती है।

चरवाहे के रूप में एक प्राचीनों की जिम्मेदारियां:

- उनकी ज़िम्मेदारी है कि वे ठीक उसी तरह से मण्डली की देखभाल करें जिस प्रकार से यीशु, अर्थात अच्छा चरवाहा,सारे संसार में कलीसिया की देखभाल करता है(1पतरस 2:25; भजन 23)।
- एक साथ मिलकर प्राचीन लोग मण्डली के लोगों की आत्मिक बढ़ौतरी और उनकी कुशलता को ध्यान में रखते हुए उनको खिलाते,उनकी सुरक्षा करते,उनकी देखभाल करते और उनका मार्गदर्शन करते हैं।
- प्राचीनों का यह कर्तव्य है कि वे एक साथ मिलकर अनाथ, विधवाओं और नये विश्वासियों जैसे मण्डली के जरूरत मन्द लोगों की चिन्ता व देखभाल करें।(1तीमुथीयुस 5:16)
- वे लोगों के घर जाकर बीमारों के लिए प्रार्थना करते हैं(याकूब 5:14-15)।
- प्राचीन एक साथ मिलकर झूठे शिक्षकों व मण्डली के लोगों को बहकाने वाले लोगों के प्रति चौकन्ने होते हैं (प्रेरितों 20:29-31)

हर एक प्राचीन दूसरे प्राचीन पर और मण्डली के सदस्यों पर नज़र रखता है(प्रेरितों 20:28)। इस तरह से, मण्डली के सदस्य व प्राचीन एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी ठहरते हैं।

प्राचीनों को पासबान के रूप में अपने काम को एक पद या उपाधि के रूप में नहीं लेना चाहिए, वरन एक सेवा मानकर करना चाहिए। इसके अलावा एक मण्डली में केवल एक ही पासबान नहीं होना चाहिए। प्राचीनों के समूह में हर एक पासबान या चरवाहा होना चाहिए और उसके पास पासबानी करने की ज़िम्मेदारी होनी चाहिए।

(2) प्राचीन की दूसरी जिम्मेदारी परमेश्वर के भवन का भण्डारी होना है।

1थिस्लुनिकियों 5:12-15; 1 तीमुथीयुस 3:5; 5:17;तीतुस 1:7।

खोजें व चर्चा करें। कलीसिया का भण्डारी होने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। एक भण्डारी होने के नाते, प्राचीनों को मण्डली की सम्पत्ति और गतिविधियों को निर्देशित करने और उनका प्रबन्ध करने की ज़िम्मेदारी प्राप्त होती है।(यूनानी: ओईकोस)

भण्डारी के रूप में प्राचीन की जिम्मेदारी(निर्देशक व प्रबन्धक):

प्राचीनों को (डीकन नहीं हैं) मण्डली के कामों को निर्देशित करना चाहिए।

- थिस्लुनिकियों और तीमुथीयुस में, प्राचोन के काम अधिकार करना, *निर्देशित करना या प्रबन्ध करना बताया गया है, जिसका अर्थ है कि वह एक आदर्श के रूप में लोगों की अगुवाई करता है*(यूनानी: प्रो-हिस्तीमि)
- तीतुस की पुस्तक में, प्राचीन के काम *भण्डारीकरण,प्रबन्ध करना और सम्पूर्ण घराने की व्यवस्थित करने के रूप म* दर्शाया गया है। (यूनानी: ओईकोनोमोस)

तथापि, एक प्राचीन के काम करने का तरीका उसके हाथों में सौंपे गये लोगों पर प्रभुता करना नहीं, लेकिन उनके आगे एक नमूना बनकर अगुवाई करना है(1 पतरस5:2-3)। यदि कोई प्राचीन अपने परिवार का ठीक प्रकार से रखरखाव नहीं कर सकता(1तीमुथीयुस 3:4-5)या उसके बच्चों या पत्नि को उसका ज्यादा ध्यान या समय चाहिए, तो उसे अपने परिवार को पर्याप्त समय देने के लिए इस्तीफा दे देना चाहिए। उसके जीवन में सारी जिम्मेदारियों को लेकर एक सन्तुलन होना चाहिए।

प्राचीन मण्डलियों की सभा का संचालन करते हैं।

वे नियमित और विशेष सभाओं को प्रोत्साहित व उनकी अगुवाई करते हैं।

- नियमित सभाओं का मतलब उदाहरण के तौर पर प्रभु के दिन अर्थात रविवार को छोटे छोटे समूहों में बाइबल अध्ययन,प्रार्थना और संगति के लिए मिलना है (प्रेरितों 2:42)।
- विशेष सभाएं उदाहरण के लिए बपतिस्मा की सभा या प्रभु भोज व ईस्टर का उत्सव,विवाह और दफन या किसी के घर पर दौरा करना और लोगों को तैयार या प्रशिक्षित करने वाली सभा तथा अन्धकार की शक्तियों के खिलाफ आत्मिक युद्ध करने के लिए प्रार्थना सभा हैं।

प्राचीन संसार भर में मण्डली के संचालन का काम संभालते हैं।

वे इन गतिविधियों को प्रोत्साहित करते तथा इनका संचालन करते हैं।

- वे कलीसिया के सदस्यों को अपने परिवारों और पड़ोस में सुसमाचार प्रचार करने के लिए, स्थानीय संस्कृति और स्कूलों,समाज और सरकार में मसीही गवाही बनने के लिए (मत्ती 5:13-16; 10:32-37; प्रेरितों 5:42)और संसार में हर प्रकार के लोगों के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं(1तीमुथीयुस 2:1-2)।
- वे दूसरे क्षेत्रों और देशों में मिश्नरी कार्यों, विशेष दर्शन के साथ काम करने वाली मसीही संस्थाओं और दूसरे स्थानों में जरूरत मन्द मण्डलियों की सहायता करते हैं(रोमियों 16:23-24; फिलिप्पियों 1:5; 4:15-16; 3यूहन्ना 5-8; 2 कुरिन्थियें 8)।

प्राचीन मण्डली में प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन करता है।

वे इन गतिविधियों को प्रोत्साहित करते और इनका संचालन करते हैं।

- वे अपनी मण्डली में शिष्य निर्माण करने वाले कार्यक्रम का आयोजन करते हैं। सभी लोगों को मसीही परिपक्वता में बढ़ना ज़रूरी है।
- वे अलग अलग प्रकार की सेवा कार्य करने के लिए सदस्यों को तैयार करते हैं(इफिसियों 4:11-16)।
- वे बपतिस्मा की कक्षाओं, बच्चों, जवानों, व्यस्कों, प्रौढ़ और सुसमाचार प्रचार करने वाले दल के लिए शिक्षा की कक्षाओं का आयोजन करते हैं।

प्राचीन कलीसिया के सदस्यों को एक मसीही के रूप में व्यक्तिगत तौर पर कार्य करने में सहायता करते हैं।

वे प्रोत्साहित करते तथा निरिक्षण करते हैं कि कहां व्यक्तिगत तौर पर सहायता की जा सकती हे।

- वे सारे सदस्यों से अनुरोध करते हैं कि वे आपस में एक दूसरे से प्रेम करें और भले कामों को करन में प्रयत्नशील रहें(इब्रानियों 10:24-25)
- वे धीरज व सावधानी के साथ निर्देश देते हुए सदस्यों को सुंधारते, डांटते और विशेषतौर पर उन्हें प्रोत्साहित करते हैं(2तीमुथीयुस 4:1-5; तीतुस 2:15)।
- वे उन सभी सदस्यों को परामर्श देने का प्रबन्ध करते हैं जिनके जीवन में समस्याएं व चोट हैं(1 थिस्लुनिकियों 5:12-15)।
- वे उन सदस्यों को अनुशासित करते हैं जिन्होंने कोई गम्भीर पाप कर दिया हो(मत्ती 18:15-17)।

प्राचीन, मण्डली के सदस्यों की अलग अलग व्यक्तिगत कार्यों को करने में सहायता करता है।

वे निम्नलिखित गतिविधियों का प्रोत्साहित करते और उनमें लोगों की सहायता करते हैं।

- वे मण्डली के सभी सदस्यों को, परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत तौर दिये गये कामों व वरदानों के आधार पर अलग अलग कामों में सक्रिय होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- वे उन्हें अपने आत्मिक वरदानों और योग्यताओं को ढूंढ़ने में सहायता करते तथा उन्हें अवसर प्रदान करते हैं कि वे उन लक्ष्यों को पूरा करने में उन वरदानों को इस्तेमाल कर सकें। इसमें लोगों को उसकाना(अग्नि प्रज्वलित करना),परखना, जांचना,सीमित करना और इस बात का ध्यान रखना कि सभी आत्मिक वरदान बाइबल की शिक्षाओं के अनुसार कार्य कर रहे हैं (1तीमुथीयुस 4:14; 2 तीमुथीयुस 1:6; 1 थिस्लुनिकियों 5:19-21; 1 कुरिन्थियों 12:10; 1 यूहन्ना 4:1; 1 कुरिन्थियों 14:26-40)।

(3) प्राचीन का तीसरा काम परमेश्वर के वचन का शिक्षक होना है।

1 थिस्लुनिकियों 5:12; 1 तीमुथीयुस 3:2; 5:17 और तीतुस 1:9 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। मण्डली में परमेश्वर के वचनों का शिक्षक होने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। एक शिक्षक के रूप में, प्राचीनों को उपदेश देने,शिक्षा देने, सलाह व लोगों को उलाहना देने के लिए **बाइबल का इस्तेमाल करनी की** जिम्मेदारी सौंपी गयी है।

- शिक्षक व उपदेशक के रूप में प्राचीन की जिम्मेदारियां:
- वे मसीही और गैर मसीही के सामने समान रूप में परमेश्वर का वचन प्रचार करते हैं(1तीमुथीयुस 5:17)।
- वे मसीही व गैर मसीहियों के साथ में यीशु मसीह के बारे में चर्चा करने के लिए एक समान तरीके से बाइबल का इस्तेमाल करते हैं(प्रेरितों 17:1-4,11)।
- वे बाइबल के लिखित वचनों के अनुसार ही सदस्यों को परमेश्वर की सिद्ध इच्छा को लोगों के सामने प्रगट करते हैं (प्रेरितों 20:20-27)।
- वे सदस्यों को मसीह की आज्ञाएं मानना सिखाते हैं। (मत्ती 28:20)
- मसीह के वचनों से बुद्धि का इस्तेमाल करते हुए वे सदस्यों के मनों में परमेश्वर के वचन की छाप छोड़ते या उसके द्वारा उन्हें चेताते हैं, वे डरपोकों को साहस दिलाते हैं,वे निकम्मे लोगों को चेतावनी देते और विरोध करने वाले लोगों को प्रेम से समझा देते हैं(कुलुस्सियों 3:16; 1 थिस्लुनिकियों 5:12-15; 2 तीमुथीयुस 2:23-26)
- वे सैद्धान्तिक बातों पर चर्चा करते (प्रेरितों के काम 15; 2 तीमुथीयुस 1:13) और झूठी शिक्षाओं का खण्डन करते हैं।

(4) प्राचीन का चौथा काम परमेश्वर व लोगों का सेवक होना है।

मत्ती 20:25-28; 1 पतरस 5:2-3 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। मण्डली में परमेश्वर व लोगों का सेवक होने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। सेवक होने के नाते, प्राचीनों को स्वेच्छा से, सेंत मेंत व जिज्ञासा के साथ परमेश्वर व लोगों का सेवक होने की जिम्मेदारी सौंपी गयी है। सेवक होने के नाते प्राचीन दूसरों के फायदे के लिए काम करते हैं।

सेवा करना केवल काम ही नहीं परन्तु एक प्राचीन की विशेषता भी है। यह प्राचीन होने के लिए परमेश्वर की अपेक्षा का सार है। मण्डली में प्राचीनों क अगुवाई करने की शैली संसार के अगुवों के अगुवाई की शैली से बिल्कुल भिन्न होनी चाहिए। प्राचीनों को स्वेच्छा से, सेत मेत और जिज्ञासा के साथ सेवा करनी चाहिए(1 पतरस 5:2)।

यीशु और पतरस दोनो ने ही उन लोगों पर प्रभुता करने से मना किया है, जिन्हें परमश्वर ने प्राचीनों के हाथों में सौंपा है। वरन उन्हें मण्डली के लोगों के लिए एक आदर्श होना चाहिए। विश्वासियों को आदेश देते हुए अगुवाई करने की बजाय, प्राचीनों को उनके सामने एक नमूने के तौर पर चलना चाहिए। मण्डली के सदस्यों से सेवा टहल करवाने की बजाय,प्राचीनों को सदस्यों की सेवा करनी चाहिए(मरकुस 10:45; लूका 22:25-27)।

4. प्राचीनों का प्रशिक्षण ।

प्राचीन आवश्यक तौर पर थिओलोजिकल सेमिनरी या बाइबल कॉलेज जाकर ही प्रशिक्षित नहीं होते और न ही उनका पूर्णकाल के कार्यकर्ता होना ज़रूरी है ।

नये नियम में सामान्यत: पूर्ण समय के पासबान, उपदेशक व शिक्षक नहीं थे। फिर भी,प्राचीन को शिक्षा देने में निपुण(1तीमुथीयुस 3:2) और मसीह सिद्धान्तों की मजबूत पकड़ रखने वाला होना चाहिए(1तीतुस1:9)![1]

नये नियम मे कुछ प्राचीन केवल उपदेशक व शिक्षक ही थे(1 तीमुथीयुस 5:17), लेकिन बाइबल इस बारे में नहीं बताती है कि वे पूर्ण समय की सेवाकाई करने वाले लोग थे। बाइबल में वर्तमान काल में पाये जाने वाले बाइबल कौलेज के समान कॉलेज का जिक्र नहीं मिलता। बाइबल हमें यह नहीं बताती है कि जो लोग बाइबल कॉलेज या सेमिनरी में शिक्षा प्राप्त किये हुए है केवल उन्हें ही प्रचार करने या परमेश्वर के वचनों की शिक्षा देने का अधिकार है। सभी मसीहियों को एक दूसरे को सिखाने और चेताने के लिए प्रोत्साहित किया गया है (कुलुस्सियों 3:16; मत्ती 28:19)।

हालांकि बहुत से मसीही जन तीमुथीयुस और तीतुस को आधुनिक युग में पूर्ण समय के पासाबानों के रूप में मान्यता देते हैं, लेकिन वे मण्डल के प्राचीन (पास्टर)से थोड़ा सा बढकर थे। उन्होंने पौलुस के साथ लम्बी यात्राएं की थीं और वे उसके सहकर्मी व मिश्नरी थे। हालांकि तीमुथीयुस और तीतुस आधुनिक बाइबल कॉलेज के समान कॉलेज में प्रशिक्षित लोग नहीं थे,लेकिन उन्हें प्रेरित पौलुस के साथ रहते हुए ही प्रशिक्षण प्राप्त हो गया था, जिस प्रकार प्रेरितों ने यीशु के साथ रह कर ही प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया था।

5. प्राचीनों के अधिकार

(1) प्राचीनों को केवल अपने ही कार्य क्षेत्र में अधिकार प्राप्त था।

उनका अधिकार सीमित है। लोगों को उद्धार देने और उनकी बुलाहट को सुनिश्चित करने और कलीसिया में उन्हें विशेष जिम्मेदारी देने का काम यीशु मसीही का है। प्राचीन को विश्वासियों के धन और उनकी सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं है। उनको सदस्यों के परिवारों,नौकरियों और उनके समय पर कोई अधिकार नहीं है। इसलिए यीशु ने प्राचीनों को आज्ञा दी कि वे उन सदस्यों पर प्रभुता न करें जो उनके हाथों में सौंपे गये हैं।

(2) कम आयु के प्राचीनों को अधिकार है।

यद्यपि मण्डली में जवानों और बुजुर्ग प्राचीनों के बीच में एक दूसरे के प्रति अधीनता की आवश्यकता है(1पतरस 5:5), जवान प्राचीनों को कलीसिया के सदस्यों को शिक्षा देने,समझाने,डांटन और जरूरत पड़ने पर अपने से बड़ी उम्र के प्राचीनो को भी समझाने का अधिकार दिया गया है(1तीमुथीयुस 1:3-5; 4:11-13; 5:20; 2तीमुथीयुस 2:22-26)। फिर भी सारे प्राचीनों को एक दूसरे से आदर के साथ व्यवहार करना चाहिए (1तीमुथीयुस 3:2; 551-2;तीतुस 1:7)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[प्रतिक्रियाएं]* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज सीखी गयी सभी बातों के आधार पर परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए समूह में छोटी प्रार्थना करें।

या समूह को दो दो या तीन के समूह में बांट लें और फिर सीखी गयी बातों के आधार पर प्रतिउत्तर देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) [निर्धारित कार्य] **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ मिलकर " मसीही अगुवे की विशेषताएं" की शिक्षाओं के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: सभोपदेशक 5,6,7,8 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन। घर में ही अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। प्रेरितों के काम 20:17-38। शीर्षक: संसार में कलीसिया की अगुवाई को आगे बढ़ाना। बाइबल अध्ययन में दिये गये पाँच कदमों को इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

अध्याय 48

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **सभोपदेशक 5-8**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (सभोपदेश 5,6,7,और 8)से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) [शिष्यता] **शिष्यता से सम्बन्धित पदों का पुनरावलोकन**

क. याद की गयी आयतों का पुनरावलोकन करने का तरीका

पहले से याद की गयी बाइबल की आयतों का पुनरावलोकन करने के निम्नलिखित भाग हैं:

1. पुनरावलोकन करना

पुनरावलोकन करने का अर्थ है कि जिन आयतों को रोज़ आपन याद किया था उनमें से 5 को फिर से दोहराएं। आयतों को बार बार दोहराना उसे याद करने व उसको सही उच्चारण करने का सबसे बेहतर तरीका है। इसलिए आप उन 5 आयतों को आने वाले 5 सप्ताहों में दिन में कम से कम एक बार जरूर दोहराऐं जिन्हे आपने सबसे अन्त में याद किया था। इस तरीके से आप बाइबल की हर एक नयी आयत को 'पुन: दोहराव ' प्रणाली में आने से पहले 35 बार दोहरा चुके होते हैं।

2 पुन: दोहराव प्रणाली।

पुन: दोहराव प्रणाली का अर्थ है कि आप पहले याद की गयी सारी आयतों को तीन सप्ताह में एक बार जरूर दोहराते हैं। पुन: दोहराव प्रणाली आपके द्वारा याद की गयी आयतों को याद रखने का सबसे बेहतर तरीका है। अत: 100 पहले याद की गयी आयतो में से, 5 आयतों को प्रत्येक दिन दोहराएं। अत: आप पहले से याद की गयी आयतों को 3 सप्ताह में एक बार पुन: दोहराते हैं।

3. साथ ले कर चलें।

कण्ठस्थ वचनों के कार्ड होल्डर या आयतों को लिखने वाली कॉपी को साथ में रखें। यात्रा के समय, या दिन में खाली समय को आयतें दोहराने, मनन करने तथा प्रार्थना करने के लिए इस्तेमाल करें। पहले याद की गयी 5 आयतों को फिर से दोहराएं। जिन आयतों को आपने पहले दोहराया था उन्हें फिर से दोहराएं। आयतों में लिखी बातों पर मनन करें तथा उसके अनुसार प्रार्थना करें।

4. मूल्यांकन करें।

एक दूसरे से यह जानने के लिए पूछें कि क्या अभी भी आप याद की गयी आयत को ठीक तरह से जानते हैं।

सामुहिक सभाओं के दौरान लोगों को दो-दो के समूह में बांट दें और आपस में एक दूसरे द्वारा सबसे आखिर में याद की गयी आयतों को जांचें। इसके अलावा कभी कभी,दो दो के समूह में बंटकर पहले याद की गयी 5 बाइबल की आयतों की श्रृंखला की भी जांच करें। एक दूसरे के साथ मिलकर जांचे कि क्या आपको उस आयत का शीर्षक, हवाला या बिना किसी गलती के वह पूरी आयत याद ह। सकेंतक के रूप में, कभी आप शीर्षक, कभी हवाले या कभी बाइबल की आयत के पहले कुछ शब्द बता सकते हैं।

ख. "सुसमाचार" की श्रृंखला को दो दो लोग मिलकर दोहराएं

1. प्रभुता। रोमियों 12:1-2 2. इनकार। लूका 9:23 3. सेवा : मरकुस 10:45	4. देना। 2 कुरिन्थियों 9:6-7 5: शिष्यों का निर्माण करना: मत्ती 28:18-20

4 **बाइबल अध्ययन** (70मिनट) ***[संसार में जीवन बिताना]***

संसार में अगुवाई को भावी हाथों में सौंपना : प्रेरितों 20:17-38

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए प्रेरितों के काम 20:17-38 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर प्रेरितों के काम 20:17-38 को एक साथ पढ़ें।

आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

ध्यान दें। **इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**

या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?

लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हों। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।

(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँटे गयें विचार एक ही समान हों।

खोज 1.हमेशा अपनी अगुवाई को आगे बढ़ाने या सौंपने का समय आता है।

हमेशा ऐसा समय आता है जब नये मसीही अगुवों को चुना जाए और ऐसे अगुवों के स्थान पर नियुक्त किया जाए जिन्हें और किसी कार्य के लिए कहीं और भेजा जा रहा हो। प्रेरित पौलुस ने इफिसुस में जाकर एक मण्डली को पाया (प्रेरितों 19) और दो वर्षो में ही एक कलीसिया की स्थापना कर दी(प्रेरितों 19:10)। पौलुस को लेकिन ऐसा महसूस हुआ कि वह यहूदियों सताव के कारण जल्द ही मर जायेगा (प्रेरितों 20:3,19, 22-23; 21:10-13)और हो सकता है कि यह उसका इफिसुस में आखिरी दौरा हो (प्रेरितों 20:25,38)।प्रेरितों 20 अध्याय नये अगुवों के सन्दर्भ में बहुत से महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को बताता है। जब आप नये मसीही अगुवों की खोज करें तो उनमें, प्रेरितों 20 में पायी जाने वाली विशेषताओं को जरूर ढूँढें।

खोज 2. पुराने अगुवों को नये अगुवों के लिए एक आदर्श सामने रखना चाहिए।

नये अगुवों को ऐसे ही चुनकर नियुक्त नहीं कर देना चाहिए। उन्हें प्रार्थना के साथ चुना जाना चाहिए, और ज़रूरत हो तो उन्हें प्रशिक्षित करके तब उन्हें नियुक्त करना चाहिए। यीशु मसीह ने अपने चेलों का चुनाव करने, प्रशिक्षित करने और उन अगुवों को नियुक्त करने के लिए जो इस धरती पर उसकी सेवाकाई को आगे बढ़ाने वाले थे,दो से साढ़ें तीन वर्ष का समय लिया। परन्तु सबसे बढ़ी सच्चाई यह है कि पुराने अगुवों को नये अगुवों के सामने आदर्श रखने, उनके ईश्वरीय चरित्र और उनकी निपुण अगुवाई के द्वाराउन्हें शिक्षा प्रदान करना,चाहिए (उदाहरण के लिए, अगुवे के रूप में दाऊद, भजन 78:72)।

कदम 3 प्रश्न व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?

आईये हम प्रेरितों के काम 20:17-38 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं और फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछें।

लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाँटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये हैं)

20: 17

प्रश्न 1. मण्डली के पुरनिये की योग्यता क्या होनी चाहिए?

ध्यान दें। प्रेरितों ने पत्रियों में स्पष्ट रूप से मण्डली में पुरनियों की योग्यताओं के बारे में लिखा हुआ है। पुरनियों का चुनाव कभी भी उनके रूतबे, शक्ति या समाज में उनकी सम्पत्ति के आधार पर नहीं होना चाहिए। उसका चुनाव सदैव उसके व्यक्तिगत जीवन, उसके परिवार और यीश् मसीह के प्रति उसकी सेवकाई को ध्यान में रखकर होना चाहिए।

उसके व्यक्तिगत जीवन व उसके आचरण से जुड़ी आवश्यक योग्यताएं।

उनमें से कुछ आवश्यक योग्यताएं निम्नलिखित हैं: वह सुनाम व्यक्ति होना चाहिए,शान्त, संयमी, आदरणीय, पहुनाई करने वाला होना चाहिए, पियक्कड़ या मारपीट करने वाला न हो; वरन कोमल हो और झगड़ालू और न लोभी हो, असन्तुष्ट न हो, बाहर वालों में उसका सुनाम हो(1तीमुथीयुस 3:1-7)। वे निर्दोष और एक ही पत्नी के पति हों,जिन के लड़के वाले विश्वासी हों, जिन में लुचपन और निंरकुशता का दोष नहीं हो, न हठी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करने वाला, और न नीच कमाई का लोभी लेकिन पहुनाई करनेवाला, भलाई का चाहनेवाला,संयमी, न्यायी,पवित्र और जितेन्द्रिय हो(तीतुस 1:5-9)। उसक अपने व्यवहार और विश्वास में दूसरों के लिए उदाहरण होना चाहिए(इब्रानियों 13:7)। वह लोगों की अगुवाई करने का इच्छुक होना चाहिए उन पर प्रभुता करने वाला नहीं, नम्र व्यक्ति और अपनी भेड़ों के लिए एक उदाहरण होना चाहिए। छोटे शब्दों में, उसकी इच्छाओं और स्वभाव के साथ साथ उसमें संयम भी पाया जाना चाहिए। पैसों के क्षेत्र में अगर बात करें तो वह भरोसेमन्द और पैसों का लालची नहीं होना चाहिए। रिश्तों के सम्बन्ध में बात करें तो वह नम्र और दूसरों पर प्रभुता करने वाला नहीं होना चाहिए। उसके प्रभाव की बात करें तो,उसे दूसरों के सामने एक आदर्श रखना चाहिए(1 पतरस 5:1-5)।

उसके परिवार से सम्बन्धित आवश्यकताएं ।

आवश्यता यह नहीं है कि उसका शादीशुदा होना जरूरी है, परन्तु वह मनचला या इश्कबाज़ नहीं होना चाहिए। यदि वह विवाहित है, तो उसे अपनी पत्नी के साथ विश्वासयोग्य बने रहने में एक आदर्श बनना चाहिए। यदि वह अविवाहित है तो उसे स्त्रियों के पति पवित्र रहने में एक आदर्श होना चाहिए। यदि उसके बच्चे हैं तो, उसे उन्हें यीशु मसीह में विश्वास और मसीह की आज्ञापालन करने तथा अपने माता पिता का आदर करना सिखाना चाहिए।

उसकी आत्मिक योग्यताओं के विषय में आवश्यकताएं।

अगर परिपक्वता की बात करें तो वह कोई नया विश्वासी या अपरिपक्व विश्वासी नहीं होना चाहिए। बाइबल की बात करें तो,वह अटल मसीही सिद्धान्तों पर विश्वास करने वाला और अपनी सेवकाई के अलग अलग क्षेत्रों में बाइबल का इस्तेमाल करने वाला होना चाहिए।

20:18-19

प्रश्न 2.पौलुस की व्यक्तिगत अगुवाई की विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें।

मसीही अगुवों में खोये हुए लोगों के लिए मन में बोझ होता और अलग अलग स्थानों में उन तक पहुंचने का दर्शन होता है। पौलुस महज एक मसीही अगुवा या किसी मण्डली का पासबान नहीं वरन वह यीशु मसोह का प्रेरित था। यीशु मसीह ने अपने ग्यारह प्रेरितों और प्रेरित पौलुस का इस्तेमाल करके इस धरती पर अपनी कलीसिया की स्थापना की। सबसे पहले पतरस ने यहूदियों के बीच (प्रेरितों 2) सामरियों के बीच में(प्रेरितों 8)अन्यजातियों के बीच में(प्रेरितों 10) कलीसिया को स्थापना की। मत्ती 16:18 में आप यीशु द्वारा पतरस से कहे गये शब्दों पर गौर करें। परन्तु प्रेरित पौलुस ने पूर्वी और पश्चिमि रोमी सम्राज्य में चारों तरफ मण्डलियों को फैला दिया और एशिया माइनर (टर्की) और सीरिया(प्रेरितों 9:30; गलातियों 1:21-23; प्रेरितों 13-14),साइप्रस (प्रेरितों 13),मकिदूनिया(प्रेरितों16), ग्रीस (प्रेरितों17-19),इकिनियुम(अलबानिया)(रोमियों 15:19), क्रेत(तितुस 1), इटली(रामियों 15:23; प्रेरितों 19:21)और सम्भवत: स्पेन में (रोमियों 15:24,28)प्रथम मण्डलियों की स्थापना की।

मसीही अगुवे जीवन व्यतीत करने और सेवा करने के क्षेत्र में एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

मसीही अगुवा का आचरण व उसका स्वभाव उसके उपदेशों व शिक्षाओं से ज्यादा प्रभावशाली ढंग से बोलता है। यीशु ने उसे बताया कि उसे अन्धकार में एक ज्योति होना चाहिए; उसे स्वादहीन समाज में नमक और अनुसरण करने वाले लोगों के लिए एक आदर्श होना चाहिए(मत्ती 5:14-16; मत्ती 20:25:28)।

20:20-27

प्रश्न 3. प्रेरित पौलुस के अपने निजी अगुवाई के लक्ष्य क्या हैं?

ध्यान दें।

(1) मसीही अगुवा बाइबल में प्रगट की गयी परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा को प्रचार करता है(प्रेरितों 20:27)।

मसीही अगुवे के लिए कम से कम परमेश्वर की इच्छा को जानना जरूरी है। विश्वासी को केवल सुसमाचार या बाइबल के कुछ भाग को नहीं चुनना चाहिए,परन्तु उसे बाइबल में पायी जाने वाले सम्पूर्ण इच्छा को जानना जरूरी है। बाइबल के संदेश में एकता है।

- मसीही अगुवों को नये विश्वासियों को पुराने नियम से निम्नलिखित विषयों पर शिक्षा प्रदान करना चाहिए: बाइबल की प्रवृति, सृष्टि, मनुष्य का पाप में फँस जाना, विश्वासियों के लिए परमेश्वर का उद्धार, बाइबल के अनुसार मसीह के पूर्वज, परमेश्वर की वाचा, मनुष्य का विश्वास, क्षमा, व्यवस्था और अनुग्रह, बाइबल की ऐतिहासिक पुस्तकें, धर्मतन्त्र में परमेश्वर का राज्य, बाइबल में पायी जाने वाली कविताएं, बाइबल में इस्राएल,दानिय्येल की पुस्तक के अनुसार संसार में पाये जाने वाले राज्य।
- मसीही अगुवों को नये विश्वासियों को नये नियम से निम्नलिखित विषयों पर शिक्षा देनी चाहिए: मसीह का जीवन,मसीह की मृत्यु,मसीह का पुनरूत्थान, मसीह की प्रभुता, परमेश्वर का राज्य, मसीही समाज या कलीसिया(विश्वव्यापी और व्यक्तिगत/स्थानीय), मसीही बढ़ौतरी, शिष्यों का निर्माण,मज़दूरों को प्रशिक्षण देना, अगुवों को तैयार करना,मसीही पुरूषों व स्त्रियों का सम्बन्ध, आत्मिक युद्ध, पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व व उसके कार्य,मण्डली के कामों में अपने वरदानों का इस्तेमाल करना और यीशु मसीह का दूसरा आगमन।
- मसीही अगुवों को नये विश्वासियों को जानना और विश्वास करना ही नहीं परन्तु करना भी सिखाना चाहिए। उन्हें नये विश्वासियों को परमेश्वर के वचनों को अपने व्यवहारिक जीवन में इस्तेमाल करना सिखाना और मसीही चरित्र की शिक्षा प्रदान करना चाहिए।

(2) मसीही अगुवाई किसी भी सहायत सिद्धान्त या बात का प्रचार करता है। (प्रेरितों 20:20)

एक मसीही के लिए उतना ही सुनना काफी है जिससे उसकी कुछ सहायता हो सके। विश्वासियों को मनुष्यों के द्वारा रची गयी कहानियों, राजनैतिक विचारधाराओं और कार्यक्रमों, दूसरे लोगों के विरूद्ध बोयी जाने वाली बुराई, झूठे भविष्यद्वक्ता की झूठी

शिक्षाओं या आत्मिक मामलों में किसी व्यक्ति के अपने ही व्यक्तिगत विचार सुनने की आवश्यकता नहीं है। मसीही अगुवों को अच्छी तरह से अपने आपको तैयार करना चाहिए, बाइबल का विस्तृत विवरण करना चाहिए , और लोगों को उन सारी बातों को सिखाना चाहिए जिससे उनकी उन्नति सम्भव हो (इफिसियों 4:29)।

(3) मसीही अगुवे लोगों को सार्वजनिक तौर पर व घर घर जाकर शिक्षा देते हैं(प्रेरितों 20:20)।

एक पुरनिया बाइबल की शिक्षा देने में निपुण होना चाहिए(1 तीमुथीयुस 3:2)। कुछ मसीही अगुवे मण्डली या कलीसिया में सार्वजनिक तौर पर बाइबल से उपदेश देते हैं(1तीमुथीयुस 5:17), जबकि दूसरे लोग विश्वासियों के घर में जाकर छोटे-2 समूहों में शिक्षा देते हैं (प्रेरितों 5:42; 17:1-4)।

(4) एक मसीही अगुवा बिना कोई भेद के सभी लोगों को बताता है कि वे मन फिरा कर विश्वास करना चाहिए (प्रेरितों 20:21)।

मसीही अगुवे केवल वाह वाह कहने वाले लोगों को केवल भाषण नहीं देते, वरन वे संदेश के प्रति प्रतिक्रिया देने के लिए लोगों को उत्साहित करते हैं। वे गैर विश्वासियों को एकमात्र परमेश्वर की ओर मन फिराकर अपने पूर्ण मन से पश्चाताप करने के लिए आमन्त्रित करते हैं। इसका मतलब है कि गैर मसीही लोग स्वीकार करते हैं कि वे पापी, भटके हुए हैं और उन्हें एक उद्धारकर्ता की जरूरत है। वे लोगों को यीशु मसीह पर विश्वास करने के लिए आमन्त्रित करते हैं, जिसने उनके बदले अपनी जान दी, और मुर्दो में से जीवित हो गया ताकि वे नया जीवन प्राप्त कर सकें।

(5) मसीही अगुवा कैद व कष्टों को सहने के लिए तैयार रहता है (प्रेरितों 20:22-23)।

मसीही अगुवों के लिए यह अपने आप में एक कठिन बुलाहट है। लेकिन मसीह व उसके राज्य की खातिर दु:ख उठाने का एक बढ़ा प्रतिफल है। प्रभु यीशु मसीह, जो एक धर्मी न्यायी है, वह उन्हें धार्मिकता के मुकुट से सुशोभित करेगा(2 तीमुथीयुस 4:8)और वे प्रभु यीशु मसीह की महिमा में भागीदार होगें। यहां पर यीशु मसीह की महिमा का अर्थ नया स्वर्ग और नया आकाश है जहां पर केवल धार्मिकता और धर्मी लोग वास करेंगे। पुराना फिरदौस वो सुन्दर बगीचा था, जहां पर लोग पाप कर सकते थे और असल में उन्होने वैसा किया भी(उत्पत्ति 2:15-17; 3:6)! लेकिन नयी धरती उस पुराने फिरदौस के कहीं अधिक सुन्दर है। वह सुन्दरता पूरी धरती को ढांप लेगी(प्रकाशितवाक्य 21:1-2), केवल यीशु में विश्वास करने वाले लोग ही उसमें वास करेंगे(प्रकाशितवाक्य 21:8,27)और उसके बाद कभी मनुष्य पाप करके दुबारा नहीं मरेगा(प्रकाशितवाक्य 21:4-5;यूहन्ना 11:25-26)।

(6) एक सच्चा मसीही हमेशा अपना काम पूरा करने वाला होता है(प्रेरितों 20:24)

सच्चे मसीही अगुवे कभी हार नहीं मानते। वे तब तक धीरज को पकड़े रहते हैं जब तककि परमेश्वर द्वारा उन्हें सौंपा गया काम पूरा नहीं हो जाता(यूहन्ना 17:4; यूहन्ना 19:30; कुलुस्सियों 4:17)।

20:28-31

प्रश्न 4. मण्डली में पुरनियों को कौन नियुक्त करता है और उनका क्या काम होता है?

ध्यान दें।

(1) पवित्र आत्मा कुछ लोगों को मण्डली के ऊपर पुरनिये के रूप में ठहराता है।

वह इस कार्य को निम्नलिखित तरीकों से करता है:

- वह उम्मीदवार नया-जन्म पाया हुआ व्यक्ति होना चाहिए। नया जन्म हमेशा पवित्र आत्मा का कार्य होता है। (यूहन्ना 3:3-8)
- उम्मीदवार नया विश्वासी न हो, वरन मसीह का चेला हो, अर्थात वह एक परिपक्व विश्वासी होना चाहिए। (1तीमुथीयुस 3:6)
- ऐसा व्यक्ति जो मण्डली में सक्रिय हो और यह प्रमाणित हो कि परमेश्वर उनके और उनकी सेवाकाई के साथ है, अर्थात परमेश्वर का आत्मा उनके द्वारा कार्य करता है, वह व्यक्ति चुनाव करने के लिए बेहतर विकल्प होगा(2कुरिन्थियों 10:18; प्रेरितों 6:3)

- पुरनियों को चुनाव करने वाली मण्डली के लोग भी, नया जन्म पाये हुए विश्वासी होना चाहिए(प्रेरितों 1:21-22; 6:3)।
- गैर मसीहियों का पुरनियों के चुनाव या नियुक्ति में शामिल होना निषेध है।

(2) पुरनिये के कर्तव्य निम्नलिखित हैं:

- एक मण्डली की अगुवाई करने के लिए पुरनियों के एक परिषद का होना जरूरी है(2 तीमुथीयुस 4:14), जिस में एक नहीं परन्तु बहुत से पुरनिए (पास्टर या याजक) शामिल होते हैं।
- पुरनिया विश्वासी का चरवाहा और विश्वासियों से जुड़ी सभी प्रकार की सवकाई का संरक्षक होना चाहिए। एक चरवाह अपनी भेड़ों को खिलाता,अगुवाई करता तथा उनकी सुरक्षा करता है। एक संरक्षक अपनी मण्डली के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करता तथा अपनी भेड़ों के बीच होने वाली प्रत्येक गतिविधी पर नज़र रखता है।
- पुरनियों को अपने ऊपर भी नजर रखने की आवश्यकता होती है। पुरनिये केवल अपनी भेड़ों के ही आत्मिक व नैतिक जीवन के लिए जिम्मेदार नहीं होते,वरन वे पुरनियों के भी आत्मिक और नैतिक जीवन के लिए ज़िम्मेदार होते हैं। इसलिए किसी भी मण्डली में एक से ज़्यादा पुरनियों का होना बहुत ज़रूरी है! हर एक पुरनिये(हर एक मसीही अगुवा)को अपने जीवन व सेवकाई के सन्दर्भ में अपनी पत्नी और पुरनियों के परिषद के प्रति ज़िम्मेदार व उत्तरदायी होना चाहिए(प्रेरितों 20:28)।
- पुरनिये को अपनी भेड़ों(कलीसिया) की झूठे शिक्षकों से रखवाली करनी चाहिए जो उन्हें परेशान करने की कोशिश कर सकते हैं।
- पुरनियों को पौलुस के आदर्श का अनुपालन करते हुए यदि कहीं पर किसी को चेतावनी देने की ज़रूरत हो तो ज़रूर देना चाहिए।

20:32-35

प्रश्न 5. मसीही अगुवों की किस प्रकार सहायता की जानी चाहिए?

ध्यान दें।

मण्डली विश्वास करती है कि परमेश्वर अपने लोगों की देखभाल करता है(प्रेरितों 20:32)।

पौलुस ने जिन लोगों की देखभाल की थी वह अब उनको छोड़कर जा रहा है, परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि उस ने उन्हें त्याग दिया है। उसने उन्हें परमेश्वर के हाथों में सौप दिया और परमेश्वर का वह अनुग्रह जो कमाया नहीं जा सकता, वह निश्चय ही उनकी उसी तरह देखभाल करेगा जिस प्रकार से यीशु मसीह ने अपने साथ रहने वाले चेलों की देखभाल की थी। उसने उन्हें बाइबल में पाये जाने वाले परमेश्वर के वचन के हाथों सौंप दिया, जिस से उनकी उन्नति होगी व विश्वासियों के बीच में जगह भी मिलेगी।

इफिसुस की मण्डली के लिए अब दूसरों पर निर्भर होने की बजाय अपने पैरों पर खड़े होने का समय था। उनके साथ एक ऐसा परमेश्वर था जो उन्हें कभी नहीं छोड़ने वाला था(इब्रानियों 13:5-6; मत्ती 28:20)! उनके पास परमेश्वर का वचन अर्थात बाइबल थी, जिसके द्वारा वे निरन्तर आत्मा में बढ़ते रहेगें। और उनके पास पुरनियों का परिषद था जो उनकी अगुवाई और सरंक्षण कर सकता था।

अगुवों के भरण पोषण करने का अधिकार।

यद्यपि पौलुस ने यदा कदा ही मण्डलियों से आर्थिक मदद प्राप्त की(1 कुरिन्थियों 9:6),लेकिन उसने शिक्षा दी कि पुरनिये, जो पूरी तरह से कलीसिया की सेवाकाई में शामिल हैं, वे "दुगने आदर" और वेतन या आर्थिक भुगतान के हकदार हैं। यह खास तौर पर उन लोगों के लिए लागू होता है जो बाइबल का प्रचार करते और शिक्षा देते हैं। मजदूर को उसकी मजदूरी मिलना जरूरी है(1तीमुथीयुस 5:17-18)। यीशु मसीह ने आज्ञा दी है कि जो लोग सुसमाचार सुनाने का कार्य करते हैं उनकी पूर्ति सुसमाचार से ही होनी चाहिए(1 कुरिन्थियों 9:7-14)। निश्चय ही मसीही अगुवे को आर्थिक सहायता प्राप्त करने का अधिकार है, लेकिन उसे मण्डली से आर्थिक सहायता की मांग करने का अधिकार नहीं हैं।

अगुवे को बिना किसी आर्थिक मदद के सेवा करने का अधिकार है(प्रेरितों 20:33-34)।

प्रेरित पौलुस ने मण्डलियों की बिना किसी आर्थिक सहायता मांगे या कोई वेतन लिए सेवा की थी। वास्तव में पालुस को अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों व अपने सहकर्मियों की जरूरतों को पूरी करने के लिए अपनी मेहनत की कमाई से पूर्ति करने में संतोष मिलता था। पौलुस द्वारा ऐसा करने का निर्णय लेने का कारण यह भी हो सकता है, कि उस समय में बहुत से झूठे प्रेरित सक्रिय थे जो पैसां के लिए मण्डली में सेवा किया करते थे। वह मसीहियों के लिए एक आदर्श रखते हुए प्रगट करना चाहता था कि जो कुछ उसे प्राप्त हुआ है, वह यीशु मसीह की ओर से सेंत मेंत में प्राप्त हुआ है (1कुरिन्थियों 4:7), और जो कुछ वह दूसरों को देता है वह भी सेंत मेत देता है(मत्ती 10:8)। वह निश्चय ही किसी मसीही मण्डली पर भार नहीं डालना चाहता था(2 कुरिन्थियों 11:9)।

अगुवों की ज़िम्मेदारी है कि वे ज़रूरत मन्द लोगों के साथ साझा करें (प्रेरितों 20:35)।

चाहे मसीहियों को सपोर्ट मिलता हो या वे खुद कोई काम करके पैसा कमाते हों, लेकिन यह उनकी ज़िम्मेदारी है कि वे मण्डली में ज़रूरत मन्द लोगों के साथ में अपनी आशीषों को साझा करें(याकूब 2:14-17; 1यूहन्ना 3:16-18)। मसीही अगुवों को इस क्षेत्र में लोगों के सामने एक आदर्श स्थापित करना चाहिए। प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं कहा,"देना लेने से उत्तम है"।

20:36-38

प्रश्न 6. प्रेरित पौलुस और इफिसियों की कलीसिया आपस में किस प्रकार सम्बन्ध रखती है?

ध्यान दें।

प्रार्थना के बन्धन ने दोनों को आपस में जोड़ रखा था।

जब पौलुस जाने पर था, तो सभी लोगों ने उसके सामने घुटने टेके और पौलुस ने उनके लिए प्रार्थना की।

वे प्रेम के बन्धन से आपस में बंधे थे।

उसके पश्चात वे शोकित होकर रोने लगे, उन्होंने एक दूसरे को गले लगाया और एक दूसरे को चूमा।

दूसरे अगुवे के हाथ में अगुवाई सुपुर्त करने का यह एक बहुत अच्छा तरीका है।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम प्रेरितों के काम 20:17-38 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा,और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. प्रेरितों 20:17-38 के आधार पर सम्भवत: लागू की जाने वाली बातों के उदाहरण।

20:17 महीने में एक बाद, अगुवों को प्रार्थना करने तथा उनके लक्ष्यों को पूरा करने के लिए प्रशिक्षण हेतू एकत्रित करें।

20:18 अगुवा होने के नाते जो बातें आप बोलते(शिक्षा देते) हैं उन्हें करने का अभ्यास करें।

20:19 अगुवे के रूप में हमेशा नम्र बने रहें।

20:20 ऐसे विषयों पर प्रचार न करें जिसे किसी को कोई लाभ नहीं होने वाला है।

20:21 श्रोताओं या विश्वासियों को परमेश्वर के वचन के प्रति प्रतिउत्तर देने की बुलाहट देत हुए अपने प्रचार को समाप्त करें।

20:23 इस तथ्य को स्वीकार करें कि मसीही अगुवों के लिए सताव सहना, कष्ट उठाना और कारावास उनके जीवन का ही हिस्सा है।

20:24: काम खत्म करने वाले व्यक्ति बनकर उस कार्य को पूरा करें जो प्रभु यीशु मसीह ने आपको सौंपा है(यूहन्ना 4:34; 17:4; 1 कुरिन्थियों 7:24-27; कुलुस्सियों 5:17; 2 तीमुथीयुस 4:7; इब्रानियों 12:1-3)।

20:25 याद रखें कि अनुग्रह का सुसमाचार(प्रेरितों 20:24) राज्य का सुसमाचार(प्रेरितों 20:25;8:12; 28:23,31) एक ही है।

20:27 परमेश्वर की पूर्ण इच्छा को लोगों के बीच में प्रचार करने का संकल्प करें।

20: 28 अगुवा होने के नाते लोगों के लिए एक चरवाहा बनें, और एक संरक्षक बनकर अपने साथ काम करने वाले कार्यकर्ताओं की गतिविधियों पर नज़र रखें।

20:29-31.प्रभु यीशु मसीह की भेड़ों की भेड़ियों से(झूठे शिक्षकों) से रखवाली करें।

20:31. अपनी भेड़ों को बार बार झूठे शिक्षकों के सम्बन्ध में चेतावनी देते रहें।

20:32 नये अगुवे के हाथ में अगुवाई सौंपने से पहले, उसे परमेश्वर, उसके अनुग्रह और उसके वचनों के हाथों में सौंपे।

20:33-34 यदि सम्भव हो तो, अपनी व अपने सह-कर्मियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए आपूर्ति करें।

20:35. याद रखें कि देना लेने से उत्तम होता है।

20:36 जब आप प्रार्थना करें तो अपने घुटनों पर होकर प्रार्थना करें।

20:37 कभी कभार अपने भाईयों व बहनों पर सामाजिक तौर पर अपने प्रेम को प्रगट करें।

2. प्रेरितों 20:17-38 के आधार पर व्यक्ति तौर पर इस्तेमाल की जाने वाली बातों के उदाहरण।

मैं अपने उपदेशों और शिक्षाओं को इन दो सीमाओं में बीच में ही रखना चाहता हूँ। एक तरफ तो परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा को प्रचार करें, न कि केवल बाइबल के कुछ ही चुनिन्दा या पसन्दीदा अनुच्छेदों को। दूसरा, कभी भी ऐसे विषयों पर उपदेश या शिक्षा न दें जिस से किसी को कोई लाभ होने वाला नहीं है।

मैं जो भी शिक्षा देता हूँ उन्हें सबसे पहले अपने जीवन में अभ्यास करना चाहता हूँ। मैं जो कुछ अपने जीवन में करता या बोलता हूँ, या मैं जो कुछ हूँ वह विश्वासियों के लिए एक आदर्श होना चाहिएं। मैं समझ गया हूँ कि मैं हमेशा किसी न किसी को प्रभावित करता हूँ। या तो मैं कुछ काम न करके गलत आदर्श स्थापित करने के द्वारा नकारात्मक प्रभाव डालता हूँ। या ऐसे काम करने के द्वारा जिससे लोगों को यीशु मसीह की समानता प्राप्त करने में मदद मिलती है, लोगों के जीवन में सकारात्मक प्रभाव डालता हूँ। मैं एक जीवन परिवर्तित करने वाला बनना चाहता हूँ। मैं एक शिष्य र्निमाण करने वाला बनना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें प्रेरितों के काम 20:17-38 में सिखाई हैं।
(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूह में होकर **प्रार्थना करते रहें।** एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रेरितों के काम 20:17-38 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: मरकुस 1:1-4:20 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। चौथी श्रंखला "1-5 शिष्यता" का पुनरावलोकन। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

परिशिष्ट 16 *देना*
दशमांश एवं पुराने नियम की व्यवस्था

दशमांश है अपनी कमाई का एक दसवां हिस्सा देना। यद्यपि यीशु मसीह के सबब से अपनी कमाई का दसवां हिस्सा देना काफी मसीहों के लिए वैध है, बाईबल यह नहीं सिखाती की मसीहों को दशमांश देना चाहिए। बाईबल में दशमांश का सम्बंध समारोहपूर्ण व्यवस्था से है। जैसे कि मन्दिर, याजकपद, जानवरों के बलिदान और शारीरिक खतना। नए नियम में समारोहपूर्ण व्यवस्था पूरी कर दी गई है एवं एक तरफ रख दी गई है।

क. प्राचीन काल में दशमांश

1. दशमांश इस्राएल तक ही सीमित नहीं था।

देश की उपज का दशमांश, व्यापारिक जीवन के मुनाफे और युद्ध–लूट और इस हिस्से को विशेष रूप से किसी ईश्वर को समर्पित करना, शामी साथ ही साथ इंडो–जर्मनिक राष्ट्रों की प्राचीन संस्कृति थी।

2. बाईबल के इतिहास में दशमांश के कई अर्थ थे।

(1) किसी महत्वपूर्ण के प्रति आदर के चिन्ह के रूप में।
अब्राहम (2167–1992 ई.पू) नें मलिकिसिदक, सालेम के राजा और परमप्रधान परमेश्वर याजक, को युद्ध–लूट का दसवां दिया। यह अपने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण किसी अन्य के प्रति आदर का चिन्ह था (उत्पत्ति 14:18–20)।

(2) परमेश्वर के प्रति प्रण के छुटकारे के लिए दशमांश ।
याकूब (2007–1860 ई.पू.) ने बेतेल में परमेश्वर के साथ प्रण किया। ''यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिये रोटी, और पहिनने के लिये कपड़ा दे, और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊं: तो ..... जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूंगा'' (उत्पत्ति 28:20–22)।

(3) एक सांसारिक मालिक को किराए के भुगतान के रूप में दशमांश ।
यूसुफ (करीब 1877 ई.पू.) मिस्र के लोगों के लिए एक आपातकालीन उपाय स्थापित किया, देश की उपज के दो दसवें अंश फिरौन को देने के लिए (उत्पत्ति 47:24,26)। यह सांसारिक दशमांश था और पवित्र दसवांश से इसमें अंतर किया जाना चाहिए।

(4) पुराने करार की आराधना सभा के समर्थन के रूप में दशमांश ।
निर्गमन के बाद परमेश्वर ने मूसा को दी गई व्यवस्था में पवित्र दशमांश की आज्ञा दी (1447–1407 ई.पू.), अर्थात पुराने करार की अवधि के दौरान उसके लोगों की आराधना सभा के एक भाग के रूप में दशमांश (लैव्यव्यवस्था 27:30–34)।

(5) राजा (सरकार) को कर के भुगतान के रूप में दशमांश ।
शमूएल भविष्यवक्ता (1060–1032 ई.पू.) ने चेतावनी दी थी कि इस्राएल के राजा अपने सबसे अच्छे पुरुषों और महिलाओं को उनके सांसारिक महत्वाकांक्षा की सेवा के लिए लेंगे, अपने सर्वश्रेष्ठ खेत अपने परिचारिकाओं को देने के लिए लेंगे, और एक नागरिक कर के रूप में उनकी फसल,अंगूर की पैदावार और भेड़–बकरियों का दसवां अपने सांसारिक राज्यों को चलाने के लिए लेंगे (1 शमूएल 8:11–20)।

ध्यान दें: पुराने नियम के समारोहपूर्ण व्यवस्था के अनुसार दशमांश को छोड़कर यह सभी उदाहरण ऐतिहासिक हैं।

ख. पुराने नियम की व्यवस्था के अनुसार दशमांश

1. दशमांश इस्राएल के समारोहपूर्ण या अनुष्ठान व्यवस्था का हिस्सा था (१४४७ –१४०७ ई.पू.)।

समारोहपूर्ण व्यवस्था की विषय–सूची।

- समारोहपूर्ण व्यवस्था ने निम्नलिखित के संबंध में कानून निर्धारित किए:
- पवित्र लोग (याजक, लेवी)
- पवित्र स्थान (सभा का तम्बू या मिलाप का तम्बू, मन्दिर)

- पवित्र समय (सब्त, धार्मिक पर्व और एक उपवास का दिन)
- पवित्र कार्य (बलिदान, भेंट,पहला फल, पहला बच्चा और दसवांश लानाय खतना, प्रक्षालन और केवल शुद्ध भोजन खाना)

समारोहपूर्ण व्यवस्था का उद्देश्य।

समारोहपूर्ण व्यवस्था पवित्र भूमि (इस्राएल) में परमेश्वर की आराधना से निपटी। इसने पुराने नियम की अवधि के लोगों को सिखाया कैसे परमेश्वर चाहता था वे उसके पास आयें और उसकी आराधना करें। परमेश्वर ने इस्राएल को मूर्ति पूजा नष्ट करने और अन्य जातियों की तरह उसकी आराधना न करने की आज्ञा दी (व्यवस्थाविवरण 18:9–13)! परमेश्वर ने स्थान को चुना, जहाँ उसने सभी इस्राएलियों को वेदी के लिए नियुक्त भेटों को और सभी अन्य बलिदानों को जो वेदी के लिए नियुक्त नहीं थे लाने को कहाः नामतः, दशमांश, विशेष उपहार (संभवतः पहले फल), प्रण लिए उपहार, स्वेच्छाबलि भेंट (व्यवस्था या प्रण द्वारा आवश्यक उपहार नहीं) और पहलौठे (व्यवस्थाविवरण 12:1–6)। जानवरों के पहलौठे भोजन के रूप में याजकों के लिए परोसे जाते थे और यह विशेष भेंटों के रूप में तैयार किए जाते थे (गिनती 18:15–20)। या पहलौठे जानवर येरुशलेम में बलिदान के पर्व के दौरान भोजन के रूप में परोसे जाते थे (व्यवस्थाविवरण 12:7,17)। शायद, याजकों ने पहलौठे जानवरों का बलिदान पर्व तैयार किया और साथ में जानवरों को देने वालों को आमंत्रित किया था।

2. <u>दशमांश की सामग्री पूरी तरह स्पष्ट रूप से तय नहीं थी</u>।

पुराने नियम में कुछ अंश के अनुसार, दशमांश में ''वो सब जो आपकी खेतें हर साल उपजाति हैं'' आता था, नामत;, अनाज, नया दाखरस और तेल (व्यवस्थाविवरण 14:22–23; 26:24; 26:12 गिनती 18:27–30; नहेम्याह 10:37; 13:12)। अन्य अंशों के अनुसार, दशमांश में ''मिट्टी से अनाज, पेड़ो से फल, जानवरों के झुंड या झुण्ड से हर दसवां'' जो चरवाहे की लाठी के निचे से गुजरता है, अर्थात, वार्षिक गिनती के दौरान सभी नवजात जानवरों में से आता था (लैव्यव्यवस्था 27:30, 32:2 इतिहास 31:6; यर्मियाह 33:13)।

3. <u>दशमांश की मंजिल पूरी तरह स्पष्ट रूप से तय नहीं थी</u>।

पुराना नियम एक पवित्र दशमांश नहीं, परन्तु तीन पवित्र दशमांश के बारे में बोलता है !

(1) पहला दशमांश लेवियों के लिए दशमांश था।

पढ़ें लैव्यव्यवस्था 27:30–33; गिनती 18:5–7, 20–24।

पहला दशमांश मिलापवाले तम्बू में समारोहपूर्ण सेवा के लिए था। परमेश्वर ने लेवी के गोत्र को मिलापवाले तम्बू में और बाद में मन्दिर में अपनी सेवा के लिए अलग किया। केवल लेवियों का एक परिवार, हारुन का परिवार,गवाही के तम्बू में याजक के रूप में, परदे के अन्दर, और वेदी पर हर चीज के साथ सेवा करेंगे। लेवियों के बाकी मिलापवाले तम्बू के वहाँ अन्य काम करेंगे। क्योंकि परमेश्वर ने लेवियों को अपनी सेवा के लिए बुलाया, परमेश्वर ने उनकी आजीविका की भी व्यवस्था की थी। परमेश्वर ने आज्ञा दी कि इस्राएलियों के दशमांश मिलापवाले तम्बू में सेवा करने वालों को दिए जायेंगे, अर्थात, लेवी गोत्र के लिए।

<u>पहला दशमांश लेवियों के लिए था।</u> इस्राएल में दशमांश लेवियों को देने के लिए हैं, इस्राएल की भूमि की वरासत के हिस्से और मिलापवाले तम्बू में अपने काम के वेतन के रूप में सेवा के लिए हैं।

<u>पहले दशमांश का दशमांश याजकों के लिए था।</u> तथापि,लेवियों को इन अनाज और दाखरस के दशमांश का सबसे अच्छा दसवां हिस्सा याजकों को देना पड़ता था। परमेश्वर के प्रति दशमांश का दशमांश लेवियों के पहले फल के रूप में सेवा थी, जैसे कि सभी इस्राएलियों को सबसे बेहतरीन तेल, दाखरस और अनाज अपनी उपज के पहले फल के रूप में परमेश्वर को देना होता था (गिनती 18:12)।

परमेश्वर ने निम्नलिखित को याजकों की आमदनी के रूप में समनुदेशित कियाः

- अति पवित्र भेंट, पवित्र भेंट, हिलाई जानेवाली भेंट के अलग किये भाग, फसल के पहले फल, परमेश्वर को समर्पित हर एक चीज और पहलौठे (गिनती 18:8–19 व्यवस्थाविवरण 18:1–5)।
- लेवियों को दिए गए सभी दशमांश का दसवां भाग (गिनती 18:25–28)।
- युद्ध की लूट का हिस्सा (गिनती 31:25–29) और अधर्म के लिए क्षतिपूर्ति, यदि वास्तविक मालिक मर गया और कोई करीबी रिश्तेदार नहीं है (गिनती 5:6–10)।

(2) दूसरा दशमांश परमेश्वर की उपस्थिति में आनंदपूर्ण पर्व के लिए दशमांश था।

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 12:5–7,11–19; 14:22–27।

दूसरा दशमांश येरुशलेम में आनंदपूर्ण पर्व के लिए था। समस्त इस्राएल के अनाज, नए दाखरस और तेल की उपज का दशमांश परमेश्वर की उपस्तिथि में उसके नाम के आवास स्थान पर खाये जाते थे, अर्थात, यरूशलेम के मंदिर में। इसी समय झुंडों और झुण्डों के पहलौठे भी खाये जाते थे और ये इस बलिदान के भोजन में मांस के भाग के रूप में कार्य करते थे (व्यवस्थाविवरण 15:19–20)। यह हर साल हुआ, संभवतया उस समय के दौरान जब इस्राएली शरद ऋतु में झोपड़ियों का पर्व मनाने के लिए येरुशलेम को जाते थे (निर्गमन 23:16)। यहाँ, दशमांश को लेवियों के लिए आय के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर के साथ सहभागिता करने के लिए एक साधन के रूप में माना जा रहा है !
यदि एक इस्राएली यरूशलेम को अपने दशमांश ले जाने के लिए बहुत दूर रहता था, तो उसको उसे बेचने की अनुमति थी और जो चाहे उसे पैसे से खरीद सकता थारू मवेशी, भेड़, दाखरस, अन्य किण्वित पेय या जो भी वह पर्व के लिए चाहता था (यूहन्ना 2:13–14)। इकठ्ठे अपने सम्पूर्ण परिवार, दासों, और अपने नगर के लेवियों के साथ, वह परमेश्वर की उपस्तिथि में यह खाता था, इस प्रकार हमेशा परमेश्वर को आदर देना सीखता रहता था।

बाद के यहूदी धर्म में दूसरा दशमांश । पहली शताब्दी ई. में यहूदी शिक्षकों ने दशमांश को '' एक दूसरा दशमांश '' बना दिया, लेवियों को पहला दशमांश देने के लिए अलग करने के बाद नौ–दसवें हिस्से में से दसवां हिस्सा निकलना। यह संभव है कि यह ''दूसरा दशमांश '' का सचमुच में कोई मतलब नहीं था, क्योंकि ऐसा सोचना उचित नहीं है कि बहुत सारा खाना पहलौठे जानवरों के माँस के साथ एक ही बलिदान भोज में उपभुक्त किया जाता था। हो सकता है शब्द ''दशमांश'' फिर ''पूरे का एक हिस्सा'' अर्थ में तकनीकी अर्थ की तुलना में अधिक लोकप्रिय था। दूसरे हाथ पर, वहाँ शाब्दिक अर्थ न स्वीकार करने के लिए कोई कारण नहीं है और ध्यान दें कि इस तरह के भव्य उत्सव भोजन होने के लिए ही बने थे। स्पष्ट रूप से हम आज नहीं जानते कि क्या वास्तव में उन दिनों में क्या मतलब था।

(3) तीसरा दशमांश जरूरतमंद लोगों के लिए दशमांश था।

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 14:28–29; 26:12–15।

जरूरतमंद और उसके मृत्यूत्तर गित के लिए तीसरा दशमांश। हर तीन साल के अंत में उस साल की उपज के दशमांश उन लेवियों को खाना देने के लिए नगरों में इकठ्ठे किये जाते थे जिनके पास अपनी कोई आवंटन या वरासत नहीं थी, और पराये मनुष्यों, अनाथों और विधवाओं के लिए जो उन शहरों में रहते थे। सामान्य में, यह जरूरतमंद लोगों के लिए एक दशमांश था। वह जरूरतमंद लोग आकर खा सखते थे और संतुष्ट हो सकते थे। जिसका अर्थ है कि वे इस तरह अपनी आजीविका के लिए सहारा प्राप्त कर सकते थे। यह दशमांश हर्षित बलिदान भोज का उल्लेख नहीं कर सकता, क्योंकि वह यरूशलेम में आयोजित किया जाता था।

हालांकि, इस दशमांश के पवित्र चरित्र को बनाए रखने के लिए, मृत्यूत्तर गित के बाद इस दशमांश को लाना निर्धारित किया गया था। लाने वाले को परमेश्वर के सामने घोषणा करनी पड़ती थी, संभवतया येरुशलेम की यात्रा के दौरान (व्यवस्थाविवरण 26:13–15)। उसे घोषणा करनी पड़ती थी की वह पूरा दशमांश लाया है और यह की उसने इसको अशुद्ध नहीं किया जब यह उसके घर में था। इस दशमांश को ''पवित्र भाग'' कहते हैं क्योंकि, हालांकि यह वास्तव में आराधनालय में नहीं लाया गया था, तब भी यह परमेश्वर के लिए समर्पित था (जैसे परमेश्वर की सेवा)। घोषणा नई कृषि वर्ष के लिए एक आशीष के साथ समाप्त हो जाती थी।

दूसरा दशमांश हर तीसरे साल तीसरा दशमांश हो जाता है। '' तीसरे वर्ष का दशमांश '' (व्यवस्थाविवरण 14:28–29) शायद परमेश्वर की उपस्थिति में हर्षित भोज के लिए दशमांश के रूप में ही है '' दूसरा दशमांश '' (व्यवस्थाविवरण 14:22–27), लेकिन हर तीसरे साल यह एक अलग गंतव्य के लिए दिया गया था, अर्थात् गरीब के लिए। दशमांश का आकार शायद वास्तविक में दसवां भाग था। पहली शताब्दी ईस्वी में यहूदी शिक्षक इस दशमांश को '' गरीबों के लिए दशमांश '' कहते थे।

निष्कर्ष। यदि व्यवस्थाविवरण 14:28 को '' तीसरे वर्ष की दूसरी दशमांश '' के रूप में समझा जाए, तो पुराने नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर के लोगों को वास्तव में कम से कम दो दशमांश अलग निकालने आवश्यक थे, जो उनकी उपज के पांचवें हिस्से के बराबर,

परमेश्वर और इस्राएल में उसकी सेवा करने के प्रति थे। मंदिर में सेवा की मदद के लिए हर वर्ष एक दशमांश लेवियों के पास जाता था। और हर साल दो सालों के लिए दूसरा दशमांश येरुशलेम में पर्व के खाने के लिए इस्तेमाल होता था। परन्तु हर तीसरे साल यह दूसरा दशमांश गरीबों के लिए उनके नगर में अलग किया जाता था।

4. दशमांश इस्राएलियों द्वारा परमेश्वर को भूमि–किराए के भुगतान की तरह थे।

दशमांश परमेश्वर के थे। वे '' परमेश्वर के प्रति पवित्र '' थे, अर्थात, वे परमेश्वर के लिए अलग किए होते थे और परमेश्वर की सेवा के प्रति समर्पित थे (लैव्यव्यवस्था 27:30)। पवित्र भूमि (इस्राएल) प्रभु की थी, परन्तु इस्राएलियों को उसके फल खाने की अनुमति थी (लैव्यव्यवस्था 25:23)। दशमांश एक प्रकार से किरायेदारों (इस्राएली) के द्वारा मालिक (परमेश्वर) को भूमि–किराए का भुगतान था। दशमांश देने ने व्यक्त किया कि इस्राएली पवित्र भूमि के किरायेदारों से ज्यादा कुछ नहीं थे ! वे कभी भी पवित्र भूमि के मालिक नहीं थे। खेतों और जानवरों के झुण्डों की अच्छी उपज ने परमेश्वर की अच्छाई की घोषणा की। इसलिए इस्राएलियों ने उस उपज के एक हिस्से को श्रद्धांजलि के रूप में मालिक को दिया था।

5. दशमांश का आदान–प्रदान नहीं किया जा सकता है, लेकिन धन देकर बचाया जा सकता है।

एक यहूदी लेख के अनुसार (बेकोरोथ 58ब), जानवरों को एक वी के आकार भेड़शाला में एक समय में केवल एक पशु के निकास के साथ संचालित किया जाता था। वे चरवाहे के द्वारा उनकी गिनती करते हुए उसकी लाठी के निचे से निकलते थे (यिर्मयाह 33:13)। चरवाहा हर दसवें जानवर को अपनी लाठी से छूता था और ये लाल रंग के साथ लकड़ी के एक टुकड़े से चिह्नित किये जाते थे। मालिक को इस तरह से इस प्रक्रिया को व्यवस्थित नहीं करना होता था कि वह खुद के लिए सबसे अच्छा जानवरों को रख सके। यदि वह भेड़ों का आदान प्रदान करने का दोषी पाया जाता था,अथार्त, अपने लिए एक अच्छा जानवर उठाने जबकि परमेश्वर को एक बुरा जानवर देने का, तो दोनों ही जानवर परमेश्वर को देने होते थे। फिर भी, किसी भी वस्तु के रूप में दशमांश को धन देकर बचाना, उदाहरण के लिए एक विशेष भेड़ के लिए, अनुमति दी गई थी। यदि मालिक दशमांश का कोई भी भाग (विशेष रूप से वही भेड़) अपने लिए रखना चाहता था, वह दशमांश को पैसे में बदल सकता था, लेकिन फिर उसे दशमांश के मूल्य का पांचवां भाग जोड़ना पड़ता था और प्रभु को देता था (लैव्यव्यवस्था 27:30–33) ।

ग. देश–निष्कासन के बाद दशमांश

देश–निष्कासन के बाद, दशमांश एक प्रकार से मंदिर के सेवकों के सहारे और मंदिर सेवा को बनाए रखने के लिए मंदिर कर बन गया।

1. नहेम्याह ने राज्यपाल होने की अपनी पहली अवधि के दौरान फिर से दशमांश की शुरूआत की (445–433 ई.पू.)।

देश–निष्कासन से बाबुल को वापसी के बाद (538 ई.पू.), इस्राएलियों ने मंदिर का पुनर्निर्माण किया (एज्रा 6:15, 521–516 ई.पू.)। बाद में, अगुवों , याजकों और लेवियों ने एक बाध्यकारी समझौता बनाया, उसे लिखित किया और उस पर अपनी मोहरें लगा दीं (नहेम्याह 9:38), जिसमें उन्होंने मूसा के द्वारा दी परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने का वादा किया (नहेम्याह 10:29)। इसमें बाहरी लोगों से शादी नहीं करने का मुद्दा, सब्त को रखना, एक प्रकार के मंदिर कर का भुगतान करके मंदिर सेवा को बनाए रखना, बलिदान की आग के लिए लकड़ी का योगदान, फसल के पहले फल के साथ ही गाय–बैल और भेड़–बकरी का पहलौठा लाना, और अंत में लेवियों के पास अपनी फसलों का एक दशमांश लाना (नहेमायाह 10:30–39) शामिल था।

हालांकि, वहाँ मूसा की व्यवस्था के संबंध में एक अंतर था (1447–1407 ई.पू.)। देश–निष्कासन के बाद, लोग मंदिर में दशमांश नहीं लाये, परन्तु लेवीयों को बाहर जाना पड़ा और हर शहर में लोगों से दशमांश इकट्ठा करना पड़ा। यह याजकों की देखरेख में किया गया, जिन्होंने दशमांश का दसवां हिस्सा पाया। दशमांश मंदिर के आंगन में भंडारों में संग्रहीत किया गया (नहेम्याह 10:37–39)। इस प्रकार, नहेम्याह के दिनों में, याजकों और लेवियों ने, जिनमें गायक और द्वारपाल शामिल थे, अपनी आय दशमांश से प्राप्त करी (नहेम्याह 12:44–47)।

2. मलाकी ने इस्राएलियों को दशमांश लाने के लिए चेताया (432–420 ई.पू.)।

बाद में, जब नहेम्याह यरूशलेम से अनुपस्थित था (433–432 ई.पू.), मंदिर के भंडार–गृह के प्रभारी याजक ने लेवियों के भुगतान को नजरअंदाज कर दिया और इस तरह उन्हें मंदिर में सेवा करने के बजाय अपने स्वयं के आय को अर्जित करने के लिए वापस ग्रामीण इलाकों में जाने को मजबूर किया (नहेम्याह 13:4–10)।
मलाकी नबी के माध्यम से, परमेश्वर ने इस्राएल को उसे दशमांश और भेंटों में लूटने के लिए डांटा (मलाकी 3:6–12) और इस तरह

यरूशलेम के मंदिर में उसकी आराधना होने में लूटने के लिए। वास्तव में, परमेश्वर ने उनके पूर्वजों के समय से उसकी राजाज्ञाओं से दूर रहे इस्राएलियों को दोषी ठहराया। इस्राएलियों ने वास्तव में कभी व्यवस्था नहीं राखी थी और न ही दशमांश की व्यवस्था। इस लापरवाही का यह परिणाम था कि परमेश्वर फिर से इस्राएल पर एक अभिशाप ले आया था, जिसमें सूखे (हाग्गै 1:2–11) और टिड्डियों (योएल 1:4,13) के कारण फसल की विफलता शामिल थी। परमेश्वर ने उन्हें खेतों की उपज का सारा दशमांश भंडारगृह में लाने के लिए प्रबोधित किया, जो येरुशलेम में मंदिर के आंगन में खड़ा है, जिससे इतना हो कि वहाँ मंदिर के सेवकों के लिए पर्याप्त सहारा हो सके और मंदिर सेवा जारी रह सके। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा करी, कि यदि इस्राएलियों ने ऐसा किया, परमेश्वर फिर से स्वर्ग के जलद्वार

खोल देंगे और उनकी खेतों पर वर्षा करेंगे (उत्पत्ति 7:11–12), इसका नतीजा होगा प्रचुर मात्रा में फसल और वह उनकी फसलों के भक्षण से टिड्डियों को रोकेगा (मलाकी 3:11–12)।

मलाकी 3:10 नए नियम की अवधि के दौरान मसीहों के लिए एक आज्ञा नहीं है, लेकिन पुराने नियम की अवधि के दौरान यहूदियों के लिए समारोहपूर्ण व्यवस्था का पालन करने के लिए संबोधन है (दशमांश और जानवर बलिदान, आदि) और इस प्रकार पुराने नियम की मंदिर सेवा, याजकों और लेवियों को बनाए रखने के लिए।

3. नहेम्याह ने अपने राज्यपाल होने के दूसरी अवधि के दौरान फिर से दशमांश को बहाल किया (432 ई.पू.)।

प्रत्यक्ष स्पष्ट रूप से लोगों ने मलाकी के उपदेश पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि जब नहेम्याह वापिस येरुशलेम आया, उसको अपना पुराना काम बहाल करना पड़ा, नहेम्याह ने अधिकारियों को डांटा, लेवियों को वापिस उनके काम पर बुलाया, यह देखा कि दशमांश यरूशलेम में भंडार गृह में लाये जाएँ और भरोसेमंद पुरुषों को लेवियों और याजकों के ये उपहार के वितरण की जिम्मेदारी लेने के लिए नियुक्त किया (नहेम्याह 3:11–13)।

घ. दशमांश का इतिहास

दशमांश का इतिहास पुराने नियम में पूरी तरह स्पष्ट नहीं है

1. निर्गमन की शुरुआत में दशमांश (1447 ई.पू.)।

सीनै पर मूसा की सेवकाई की शुरुआत के दौरान, ''भूमि की सारी उपज का दशमांश'' साथ ही साथ ''झुंड और झुण्ड का दशमांश'' परमेश्वर के थे (लैव्यव्यवस्था 27:30,32)।

2. निर्गमन के दौरान दशमांश (1446 –1407 ई.पू.)।

बाद में, हारून की उच्च याजकपन के दौरान, केवल ''भूमि की सारी उपज का दशमांश'' लेवियों की आय के रूप में उल्लेख किया गया है (गिनती 18:20–32)।

3. निर्गमन के अंत में दशमांश (1407 ई.पू.)।

बाद में, मूसा के समय के अंत की ओर, ''भूमि की सारी उपज का दशमांश'' आराधनालय में पर्व के भोजन में सेवन के लिए लाया जाता था, जबकि, हर तीसरे साल इस दशमांश था स्थानीय लेवियों और जरूरतमंद लोगों के बीच सहारे के एक प्रकार के रूप में विभाजन किया जाता था (व्यवस्थाविवरण 12:6–7,11–12,17–19; 14:22–29)।

4. देश–निष्कासन से पहले दशमांश (713–696 ई.पू.)।

देश–निष्कासन से पहले, राजा हिजकिय्याह ने मंदिर शुद्ध करवाया, मंदिर में आराधना बहाल करी, याजकों और लेवीयों के कर्तव्यों को फिर से उनको सौंपा, मंदिर के सेवकों के कारण लोगों को अपने हिस्से लाने के लिए आदेश दिया, एक ''प्रभु को समर्पित पवित्र वस्तुओं का दशमांश'' इनमें शामिल हैं ''भूमि की सारी उपज का दशमांश'' (अनाज, दाखरस, तेल, शहद) साथ ही साथ ''झुंड और झुण्ड का दशमांश'' (2 इतिहास 31:2–10) ।

5. देश–निष्कासन के बाद दशमांश (445–420 ई.पू.)।

देश–निष्कासन के बाद, '' भूमि की सारी उपज का दशमांश '' ने एक प्रकार के मंदिर कर के चरित्र का अधिग्रहण कर लिया, लोगों द्वारा लाया नहीं, परन्तु लेवीयों और याजकों द्वारा एकत्र किया गया उन्हें मंदिर सेवकों के रूप में सहारा देने के लिए (नहेमायाह

10:37–39;13:12–13;मलाकी 3:6–12)।

6. पहली शताब्दी ईस्वी के दौरान दशमांश।

इतिहासकार जोसेफस (1 शताब्दी ईस्वी) के समय के दौरान यहूदी शिक्षकों ने इस प्रकार से समस्या का हल कियारू

- हर साल यहूदियों को अपने पहले दशमांश लेवियों को जरुर देने चाहिए। लेवियों को इस दशमांश का दसवां भाग याजकों को देना चाहिए। यह मंदिर सेवा में लेवियों और याजकों के साहारे के रूप में है (लैव्यव्यवस्था 27:30,32, गिनती 18:20–32)।

- हर साल यहूदियों को यरूशलेम में अपना दूसरा दशमांश जरुर लाना होगा। इसने मंदिर में बलिदान भोजन के लिए भोजन के रूप में सेवा की है (व्यवस्थाविवरण 14:22–27)।
- हर तीसरे वर्ष यहूदियों को अपने शहरों में अपने तीसरे दशमांश को भंडार में जमा करना चाहिए। इसने उस नगर में गरीबों के लिए सहारे का काम किया (व्यवस्थाविवरण 14:28–29; 26:12–15)।

निष्कर्ष। पहली शताब्दी ईस्वी के दौरान यहूदी शिक्षकों ने वास्तव में यहूदियों के लिए हर साल दो दशमांश और तीन दशमांश हर तीसरे वर्ष अलग करना आवश्यक कर दिया ! हालांकि, यहूदियों के कानून के शिक्षक कानून बनाने के लिए लोकप्रसिध्द थे, लेकिन उन्हें रखने के लिए नहीं (मत्ती 23:1–4; लूका 11:46)।

ङ मसीह के सूली पर चढ़ने से पहले नए करार में दशमांश

पढ़ें मत्ती 23:23–24। फरीसियों और कानून के शिक्षकों ने 613 विशेष कानून तैयार किए (365 रोक और 248 आज्ञाएँ) मूसा की व्यवस्था के अनुवाद के रूप में। इन कानूनों को बड़ों की परंपरा कहा जाता था (मरकुस 7:3)। यीशु ने उनके बारे में कहा,'' ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपादेश करके सिखाते हैं।'' '' क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा को टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो। ... इस प्रकार तुम अपनी रीतियों से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो (मरकुस 7:7–8,13)।'' वे कपटी थे, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों के लिए पुराने नियम की व्यवस्था की आवश्यकताओं को अधिक बढ़ाया और अधिक–खिंचा।

उदाहरण के लिए, वे छोटी खुशबूदार जड़ी बूटियाँ दशमांश में देते थे, जो उनके बाग में उगती थीं और उनके भोजन में मसाले के रुप में इस्तेमाल की जाती थीं। हालांकि पुराने नियम की व्यवस्था में इसकी आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने कभी भी अपने अनुयायियों (यहूदी और परधर्म अनुयायी) से ऐसा ही करने की माँग नहीं की। पुराने नियम की व्यवस्था जड़ी बूटी ,पुदीना,सोआ और जीरे के दशमांश के बारे में कुछ नहीं कहती। इसके बजाए, व्यवस्था ने ,'' भूमि की सारी उपज '' की मांग की है। तत्काल संदर्भ में विस्तार से बताया है कि पमेश्वर का इरादा था की इसमें '' अनाज, नया दाखरस और भूमि से तेल '', '' पेड़ों से फल '' और '' झुंडों और झुण्डों में से पहलौठे '' हों। फरीसियों और कानून के शिक्षकों ने बाईबल के मूल्यों को उल्टा कर दिया। उन्होंने छोटे मुद्दों पर जोर डाला और व्यवस्था के महत्यपूर्ण मुद्दे, जैसे न्याय, दया और विश्वासयोग्यता को नजर अंदाज कर दिया।

यीशु कहते हैं कि फरीसियों को व्यवस्था द्वारा आवश्यक दशमांश को नजर अंदाज न करते हुए न्याय, दया और विश्वासयोग्यता का अभ्यास करना चाहिए था, यहूदियों को यह कहते हुए यीशु छोटी खुशबूदार जड़ी बूटियों के दशमांश का समर्थन नहीं करते हैं, इस प्रकार अपने ही तर्क को हराते हैं। वह बल्कि कहते हैं कि पुराने नियम की व्यवस्था में और अधिक महत्वपूर्ण मामलों की उपेक्षा के बिना दशमांश को सम्मान देते हुए पुराने नियम के अध्यादेश को देखना चाहिए।

यह ध्यान रखना महत्यपूर्ण है कि यीशु कहते हैं, यह मसीहों के लिए नहीं, लेकिन यहूदियों के लिए महत्वपूर्ण है और यीशु ने अपने सूली पर चढ़ाये जाने से पहले यह कहा, जब कलीसिया की अभी स्थापना भी नहीं हुई थी ! यीशु के मृत्यु से पहले, परमेश्वर के समीप जाने और उसकी आराधना करने के लिए पुराने नियम की आवश्यकताऐं अभी भी जगह में थीं। जब तक मसीह को अभी क्रूस पर चढ़ाया नहीं गया था – और इस तरह – तब तक परमेश्वर के पुराने नियम की समारोहपूर्ण व्यवस्था के नियम अभी तक पुरे, रद्द और निराकृत नहीं हुए थे, दशमांश के संबंध में नियमन अभी भी मान्य थे (लूका 18:12)।

बाईबल के सही अनुवाद के लिए कुछ महत्यपूर्ण नियम निम्न प्रकार से हैं:

- श्रोतागणों पर ध्यान दें। यीशु ने यहूदी फरीसियों और व्यवस्था की शिक्षकों से बोला और मसीहों से नहीं।
- समय पर ध्यान दें। अपने क्रूस पर चढ़ने से पहले यीशु ने उनसे बोला, जिसने समारोहपूर्ण व्यवस्था के लिखित नियमों को पूरा, रद्द और निराकृत किया, दशमांश सहित।
- इरादे पर धयान दें। यीशु का यहूदी फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों को सिखाने का इरादा था कि उनके पास बाईबल के मूल्यों और सत्य को मोड़ने का कोई अधिकार नहीं था (मत्ती 15:1–20)। मत्ती 23:23–24 में यीशु का मसीहों को सीखने का कोई इरादा नहीं था कि मसीहों को दशमांश देना चाहिए !

च. नए नियम में यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने के बाद दशमांश

1. बाईबल में शब्द ''कानून'' के कई अर्थ हैं।

(1) परमेश्वर की आवश्यकता के रूप में कानून।

परमेश्वर का कानून है परमेश्वर की पवित्र और धर्मी आवश्यकता कि सभी लोग 100% सही जीवन जीने चाहिए और यह कि उसकी व्यवस्था के अपराधों को दण्डित किया जाना चाहिए।

सभी लोग ''परमेश्वर की व्यवस्था के निचे हैं'' (रोमियों 2:12–16)। परमेश्वर का कानून सिद्ध धार्मिकता की मांग करता है। परन्तु क्योंकि किसी ने उसकी व्यवस्था को नहीं रखा (याकूब 2:10) और कोई प्राकृतिक मनुष्य परमेश्वर की व्यवस्था रख नहीं सकता (रोमियों 8:7–8), सभी लोग निन्दित (बर्बाद) हैं (रोमियों 3:19; 8:1) और परमेश्वर के श्राप के निचे हैं (गलातियों 3:10)। एक भी व्यक्ति परमेश्वर की व्यवस्था को रखने से न्यायसंगत नहीं ठहरेगा (गलातियों 2:16, रोमियों 3:20)। कोई भी परमेश्वर की पवित्र और धार्मि आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकता !

परमेश्वर की पवित्र और धर्मी आवश्यकताओं को पुराने नियम की अवधि के दौरान नैतिक व्यवस्था, औपचारिक व्यवस्था और नागरिक व्यवस्था में व्यक्त किया गया है।

(2) पुराने नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर की नैतिक आवश्यकताओं के रूप में कानून।
परमेश्वर का कभी इरादा नहीं था कि उसकी नैतिक व्यवस्था, दस आज्ञायों में संक्षेपित (निर्गमन 20:1–17) या प्यार की व्यवस्था में (व्यवस्थाविवरण 6:5; लैव्यव्यवस्था 19:18), लोगों द्वारा धार्मिकता पाने की कोशिश के साधन बन जाएँ, क्योंकि इस व्यवस्था को पाने से पहले लोग बचे थे (निर्गमन 20:1–2) ! नैतिक कानून परेमश्वर की आवश्यकताएँ थी कि कैसे उसके बचाये हुए लोग (इस्राएली) परमेश्वर के लोग होते हुए इस संसार में जी सकें।

(3) पुराने नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर की समारोहपूर्ण आवश्यकताओं के रूप में कानून।
समारोहपूर्ण (अनुष्ठान) व्यवस्था परमेश्वर की माँगें थी कि कैसे उसके लोग (इस्राएली) समीप आयें और परमेश्वर की आराधना करें । समारोहपूर्ण व्यवस्था को पवित्र व्यक्तियों (याजक, लेवी), पवित्र स्थान (मिलाप का तम्बू, मंदिर), पवित्र समय (सब्त, पर्व और एक दिन का उपवास), पवित्र कार्य (खतना, बलिदान, भेंटें, पहला फल, पहलौठे और दशमांश लाना, प्रक्षालन और केवल शुद्ध खाद्य पदार्थ खाने) के बारे में व्यवस्था में विभाजित किया गया। याद रखें कि तथाकथित ''पहला दशमांश'' का एक धार्मिक कर के रूप में इस्राएल के धार्मिक मंदिर सेवा की सहायता करने के लिए कार्य करता था और तथाकथित ''दूसरा दशमांश'' का एक प्रकार से इसराइल में धार्मिक–सामाजिक त्योहार के रूप में कार्य था।

(4) पुराने नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर की नागरिक आवश्यकताओं के रूप में व्यवस्था।
परमेश्वर का कभी ऐसा इरादा नहीं था कि इस्राएल दुनिया के सभी अन्य देशों के रूप में एक राजनीतिक राज्य हो। उसका इरादा था कि खुद राजा के रूप होते हुए इसराइल एक धर्मशासित राज्य हो (1 शमूएल 8:7–20; यूहन्ना 18:36–37) ! नागरिक (सामाजिक) व्यवस्था परमेश्वर की आवश्यकताएँ थीं कि कैसे उसके लोगों को (इस्राएल) एक धर्मशासित राज्य के रूप में कार्य करना चाहिए। नागरिक व्यवस्था विशेष रूप से धर्मशासित राज्य इस्राएल के कानून प्रणाली के साथ निपटती थीः कानून जो संपत्ति,शादी, रोग, अपराध, गुलाम, युद्ध और राजाओं से संबंधित था। याद रखें कि तथाकथित ''तीसरा दशमांश'' एक सामाजिक कर प्रणाली के रूप में कार्य करता था जो इस्राएल के धर्मशासित राज्य के भीतर गरीब और जरूरतमंद लोगों को सहायता करता था।
इसके अलावा, राजा अपने सांसारिक परिचारकों को देने के लिए अपने लोगों को उनके पुरुषों, भूमि, फसल, अंगूर की पैदावार और भेड़–बकरियों का दसवां भाग भुगतान करने के लिए मजबूर करता था (1 शमूएल 8:7–20)।

2. यीशु मसीह के पहले आगमन पर कानून पूरा किया गया था।

(1) नैतिक व्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति

परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था को दो तरीकों में पूरा किया गया था। अपने पहले आगमन में यीशु मसीह ने विश्वासियों के स्थान पर परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था के पवित्र और धर्मी आवश्यकताओं को पूरा किया और उसने परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था के सही अर्थ की घोषणा की।

परमेश्वर की धर्मी आवश्यकताओं को 100% पूरा दिया जब यीशु मसीह की क्रूस पर मरे और मरे हुओं में से पुनर्जीवित हुए यह साबित करने के लिए कि पिता परमेश्वर ने हमारे स्थान पर उद्धार के पूरे काम को स्वीकार कर लिया है। यीशु मसीह ने एक पूर्ण निष्पाप जीवन जीने के द्वारा परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था की सभी मांगों को पूरा किया (इब्रानियों 7:26) और एक–बार–हमेशा–के लिए अपने लोगों (वह लोग जो उसमें विश्वास करते हैं) के सभी पापों के प्रायश्चित के लिए एक आदर्श बलिदान के रूप में क्रूस पर मरे (इब्रानियों 7:27)। क्रूस पर अपने लोगों के लिए अभिशाप बनने के द्वारा उन्हें व्यवस्था के अभिशाप से छुड़ा लिया (गलतियों 3:13) । यीशु मसीह इस प्रकार हमेशा के लिए सिद्ध महायाजक बन गए (इब्रानियों 7:28)।

यीशु ने उद्धार के सन्देश (मरकुस 1:14–15) और परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था के सही अर्थ की घोषणा की। उसने यह घोषणा करी कि कैसे परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के बचाये हुए लोगों की तरह जीना चाहिए (मत्ती 5:17–48 और सब दृष्टान्त)। यीशु मसीह इस प्रकार अनंतकाल के लिए सिद्ध नबी बन गए (व्यवस्थाविवरण 18:18–19; प्रेरितों के काम 3:22–23)।

इस प्रकार, नैतिक व्यवस्था पूरी हुई और मसीह के जीवन और शिक्षा में अपने सिद्ध अर्थ को पाया। नैतिक व्यवस्था पूरी की गई, परन्तु रद्द नहीं। नैतिक व्यवस्था आज भी परमेश्वर के लोगों के लिए इस संसार में कैसे जीने की आवश्यकता है (मत्ती 22:36–40, रोमियो 13:8–10) !

(2) समारोहपूर्ण व्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति।

यीशु मसीह के पहले आगमन पर पुराने नियम की समारोहपूर्ण व्यवस्था की सभी परछाईयाँ, प्रकार और रसमें नए नियम के प्रकाशन में वास्तविकताएँ बन गयीं (इब्रानियों 8:5; 10:1–4; नीचे देखें 4–5 बिंदु)।

इस प्रकार समारोहपूर्ण व्यवस्था की आवश्यकताएँ पूरी हुईं। ष्यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं। लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूंष् (मत्ती 5:17) ।

इस प्रकार समारोहपूर्ण व्यवस्था की आवश्यकताएँ रद्द हुईं। ''उसने हमारे सब अपराधों को क्षमा किया, लिखित संहिता को रद्द किया (अर्थात परमेश्वर की धर्मी आवश्यकता को सिद्ध करने और सारी अधार्मिकता को दंडित करने के लिए), उसके नियमों के द्वारा (समारोहपूर्ण व्यवस्था), जो हमारे खिलाफ था और हमारे विरोध में खड़ा था (क्योंकि किसी ने उसे नहीं रखा या रख सकता है); उसने उस को क्रूस पर कीलों से जड़कर साम्हने से हटा दिया'' (कुलुस्सियों 2:13–14)।

इस प्रकार समारोहपूर्ण व्यवस्था की आवश्यकताएँ निराकृत हुईं। मसीह ने बाधा को नष्ट कर दिया है, दुश्मनी के विभाजन की दीवार (यहूदी मसीही जिन्होंने व्यवस्था रखने की कोशिश की और अन्यजाति मसीही जिन्होंने व्यवस्था नहीं रखी के बीच) अपने शरीर में व्यवस्था को आज्ञाओं और नियमों के साथ खत्म करके (इफिसियों 2:14–15)।

(3) नागरिक व्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति।

अपने पहले आगमन पर यीशु ने अपने राज्य की स्थापना करी, केवल इस्राएल में ही नहीं, परन्तु सरे विश्व में ! वह सिद्ध राजा बन गया, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु (प्रकाशितवाक्य 19:16),जिसको धरती पे सारा अधिकार मिला है (मत्ती 28:18) और जिसका राज्य अन्य सभी राज्यों को चकनाचूर कर देगा और उनका अंत कर देगा (दानिय्येल 2:44)। नए नियम में परमेश्वर के राज्य के बारे में उसकी सभी शिक्षाएं और दृष्टान्त पुराने नियम में इस्राएल के धर्मशासित राज्य की नागरिक व्यवस्था को प्रतिस्थपित करते हैं (मत्ती 21:42–44), दुनिया में सभी राष्ट्रों की व्यवस्था से बढ़कर, और दिशा निर्देश बन गए हैं जिसके द्वारा उसके लोगों को दुनिया के हर देश में रहना चाहिए (मत्ती अध्याय 5 से 7)।

इस प्रकार राष्ट्र–इस्राएल के राज्य की नागरिक व्यवस्था की आवश्यकताओं को नए नियम में पढ़ाये गए परमेश्वर के राज्य के सिद्धांतों के द्वारा प्रतिस्थपित किया गया है।

(4) नए नियम की अवधि में नैतिक व्यवस्था का कार्य।

नए नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था का कार्य पुराने नियम की अवधि के दौरान नैतिक व्यवस्था के समान है। नैतिक व्यवस्था परमेश्वर की नजर में कभी भी न्यायसंगत होने का साधन नहीं थी और अब भी परमेश्वर की नजर में न्यायसंगत होने का साधन नहीं है।

एक हाथ पर नैतिक व्यवस्था कानून तोड़ने वालों, विद्रोहियों, धर्मभ्रष्ट और पापी, अपवित्र और अधार्मिक और जो कुछ परमेश्वर की मजबूत शिक्षा के विपरीत है को बेनकाब और निंदित करती है (1 तीमुथियुस 1:8–11), ताकि लोगों को एहसास हो कि उन्हें मुक्तिदाता यीशु मसीह की जरुरत है !

दूसरे हाथ पर नैतिक व्यवस्था अब भी परमेश्वर की दिशानिर्देश है अपने लोगों (मसीहों) को दिखाते हुए कैसे इस संसार में उन्हें परमेश्वर के लोग होते हुए जीना है (मत्ती 22:37–40, रोमियों 13:8–10य गलातियों 5:14)। मत्ती 5:21–48 में यीशु मसीह अपने राज्य में परमेश्वर के लोग होते हुए जीने के लिए नैतिक व्यवस्था को परमेश्वर के दिशानिर्देश के रूप में सिद्ध अर्थ देते हैं। नैतिक व्यवस्था कभी भी रद्द या निराकृत नहीं हुई !

3. यीशु मसीह के पहले आगमन पर व्यवस्था रद्द कर दी गई थी।

पढ़ें कुलुस्सियों 2:13–14।

(1) व्यवस्था ने सभी लोगों पर आरोप लगाया और की निंदा की।
''लिखावट'' (लिखित संहिता) स्पष्ट रूप से पुराने नियम की व्यवस्था को अपने दोनों नैतिक और औपचारिक पहलुओं में संदर्भित करता है (कुलुस्सियों 2:16–17)। इस्राएलियों को एक लिखित अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा जा सकता है जब वे परमेश्वर की व्यवस्था के नियमों और विनियमों का पालन करने के लिए खुद को एक अभिशाप के द्वारा बाँध लेते हैं (व्यवस्थाविवरण 27:26)। जबकि कोई भी कभी व्यवस्था को रखने में सक्षम नहीं हुआ (रोमियों 3:10–12, याकूब 2:10), हर एक परमेश्वर के अभिशाप के निचे था (गलातियों 3:10)। परमेश्वर की सम्पूर्ण व्यवस्था सभी लोगों के लिए एक विरोधी थी, उन पर परमेश्वर के पवित्र और धर्मी आवश्यकताओं का उल्लंघन का आरोप लगाती थी, और उन्हें परमेश्वर के सामने अपराध बोध और शर्म करने के लिए निंदित करती है (रोमियों 3:19–20)। परमेश्वर की व्यवस्था ने लोगों को उनके पाप दिखाए और इस प्रकार उनकी उद्धार की जरूरत (रोमियों 7:7–8)। परमेश्वर की व्यवस्था ने पुराने नियम की अवधि के दौरान मसीह के पहले आगमन तक लोगों पर अधीक्षण करना, आरोप लगाना और निंदा करना जारी रखा (गलातियों 3:24–25)। व्यवस्था लोगों के खिलाफ थी और लोगों के खिलाफ खड़ी हुई (कुलुस्सियों 2:14)।

(2) यीशु मसीह ने उस में विश्वासियों के लिए व्यवस्था को रद्द (निरसित, निराकृत) कर दिया।
अपनी मृत्यु पर व्यवस्था को कीलों से क्रूस पर ठोक देने के द्वारा, यीशु मसीह ने व्यवस्था को परमेश्वर की नजर में कम जाना हुआ अपेक्षा के औचित्य साधन के रुप में लिया। यीशु मसीह में विश्वासियों के लिए व्यवस्था की माँगें मर गयीं जब यीशु मसीह मरा। व्यवस्था की माँगें अब उनको और निंदित नहीं करती हैं। परन्तु यीशु में विश्वास रखनेवाले भी व्यवस्था की माँगों के प्रति मर गए जब वह मसीह के साथ मरे। वे अब व्यवस्था को रखकर न्यायसंगत होने की कोशिश नहीं करते (रोमियों 7:1–6)। यीशु मसीह ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा विश्वासियों के लिए व्यवस्था की बाँधने की सामर्थ को रोक दिया है। इस प्रकार बाईबल सिखाती है कि यीशु मसीह ने व्यवस्था को रद्द कर दिया है, अर्थात, उसने विश्वासियों के लिए व्यवस्था को निरसित या निराकृत कर दिया है। व्यवस्था अब विश्वासियों पर दोष या निन्दित (बर्बाद) नहीं कर सकती। तथापि, अविश्वासी और गैर–मसीह अब भी व्यवस्था के निचे आते हैं और अंतिम न्याय के दिन व्यवस्था के द्वारा ही उनका न्याय होगा (रोमियों 2:12–16)।

4. यीशु मसीह के पहले आगमन पर व्यवस्था समाप्त कर दी गई।

पढ़ें इफिसियों 2:13–18 ।

(1) व्यवस्था ने यहूदी विश्वासियों को गैर यहूदी विश्वासियों से अलग कर दिया।
देश–निष्कासन की अवधि के बाद यहूदी धार्मिक शिक्षकों और अगुवों ने जोर को नैतिक व्यवस्था से मोड़ के समारोहपूर्ण व्यवस्था की ओर कर दिया। व्यवस्था रखने की बाहरी दिखावट अंदरुनी और परमेश्वर की व्यवस्था की धर्मी आवश्यकताओं के प्रति वास्तविक आज्ञाकारिता की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण बन गई (मत्ती 5:17–48)। यहाँ तक कि उन्होंने व्यवस्था के प्रति समारोहपूर्ण व्यवस्था में 613 परंपरागत नियमों और अपने स्वयं के नियमों को जोड़कर शून्य बना दिया (मत्ती 15:1–20)।

इस प्रकार यहूदी धार्मिक शिक्षकों और अगुवों ने केवल यहूदी विश्वासियों के लिए मंदिर के आँगन के चारों ओर क्षेत्र को आरक्षित करने

के लिए एक शाब्दिक दीवार का निर्माण किया और मंदिर के आंगन में अन्यजाति विश्वासी के प्रवेश पर रोक लगाने के लिए एक लिखित चिन्ह लगा दिया।

इफिसियों 2:15 में पौलुस समारोहपूर्ण व्यवस्था और इसके नियमों की तुलना इस शाब्दिक दीवार से करता है। देश–निष्कासन के बाद यहूदी धार्मिक शिक्षकों और अगुवों ने समारोहपूर्ण व्यवस्था को एक आध्यात्मिक दीवार में बदल दिया जिसने यहाँ तक कि जातीय यहूदियों को उन अन्यजातियों से अलग रखा जिन्होंने यहूदी विश्वास स्वीकार कर लिया था। और मसीह की आने के बाद यहूदी मसीह कुछ समारोहपूर्ण कानून पकड़े रहना चाहते थे जैसे खतना, शुद्ध भोजन कहना, दशमांश लाना,सब्त को रखना और यहूदी पर्व और उपवास। इस रीती से यहूदी मसीहों ने अपने और गैर–यहूदी मसीहों के बिच एक आध्यात्मिक दीवार खड़ी कर दी, जो यह समारोहपूर्ण व्यवस्था को नहीं रखते थे। यह विभाजन एशिया माइनर में मसीहों के दो समूहों के बीच शत्रुता का कारण बना।

(2) यीशु मसीह ने समारोहपूर्ण व्यवस्था को समाप्त कर दिया, वह यह है कि, सब विश्वासियों के लिए उसके अस्तित्व का अंत कर दिया।
क्रूस पर मरने के द्वारा, यीशु मसीह ने यह यहूदी मसीहों और अन्यजाति मसीहों के बिच षविभाजन दिवारष को नष्ट कर दिया। उसने समारोहपूर्ण व्यवस्था को समाप्त कर दिया, वह यह है कि, समारोहपूर्ण व्यवस्था के अस्तित्व का अंत कर दिया। उसने ऐसा यहूदी मसीहों

और अन्यजाति मसीहों में से एक मसीह समाज बनाने के लिए किया (इफिसियों 2:14–22; 10:16; इफिसियों 3:3–6)। यीशु मसीह ने न केवल इस धारणा को ही हटाया कि नैतिक व्यवस्था लोगों को सही ठहरा सकती है, परंतु समारोहपूर्ण व्यवस्था को परमेश्वर के समीप जाने और आराधना करने के साधन के रुप से भी हटाया है।

5. व्यवस्था स्थायी रूप से यीशु मसीह के पहलेआगमन पर बदल गई।

यीशु के पहले आगमन के साथ व्यवस्था का भी स्थायी बदलाव आ गया है (इब्रानियों 7:12)। नए नियम की शिक्षा साफ दिखती है कैसे समारोहपूर्ण व्यवस्था के अनेक भाग समाप्त कर दिए गए हैं: कैसे पुराने नियम की अवधि की परछाईयाँ नए नियम की अवधि की वास्तविकता में बदल गयीं (कुलुस्सियों 2:17)।

(1) छाया और वास्तविकता के रूप में याजक।
हारून के क्रम में पुराने नियम के याजक नए नियम के मलिकिसिदक के क्रम के याजकों के लिए विमर्श किया गए। इस्राएल में याजकों को समाप्त कर दिया और दुनिया के सभी विश्वासियों के लिए एक और केवल महायाजक द्वारा बदल दिया गया, यीशु मसीह (इब्रानियों 7:11–28)।

(2) छाया और वास्तविकता के रूप में मंदिर।
पुराने नियम का मिलाप का तम्बू और येरुशलेम में भौतिक मंदिर समाप्त कर दिए गए (मत्ती 27:51, प्रेरितों के काम 7:48–49, 17:24–25, प्रकाशितवाक्य 21:22) और नए नियम के आत्मिक मसीह समाज (कलीसिया) के साथ बदल दिए गए। नए नियम का मंदिर कोई धार्मिक इमारत शामिल नहीं करता है, परंतु परमेश्वर की आत्मा के द्वारा अंद्रुनीवास वाले लोगों का समूह (2 कुरिन्थियों 6:14; इफिसियों 2:19–22)।

(3) छाया और वास्तविकता के रूप में यहूदी पर्व।
पुराने नियम के यहूदी पर्व समाप्त कर दिए गए (रोमियों 14:5, कुलुस्सियों 2:16–17, गलातियों 4:8–11)। यीशु ने नए नियम में केवल दो मसीह समारोहों की शुरूआत कीरू प्रभु भोज (मत्ती 26:26–28य 1 कुरिन्थियों 11:23–26) और पानी के साथ बपतिस्मा (मत्ती 28:19)। अन्य सभी आधुनिक मसीही त्योहार जैसे क्रिसमस, गुड फ्राइडे, ईस्टर, उदगम और पेन्टीकोस्ट की तरह अन्य सभी बाद में परंपरा में पैदा हुए हैं। वे आवश्यक नहीं हैं, लेकिन मनाया जा सकते है।

(4) सब्त छाया और वास्तविकता के रूप में।
पुराने नियम के सब्त का समारोहपूर्ण पहलू, अर्थात्, सप्ताह के सातवें दिन इसे रखते हुए, समाप्त कर दिया और आराम और ताजा होने द्वारा बदल दिया गया था, अन्य विश्वासियों के साथ बैठना और अच्छा करना और लोगों के जीवन बचाने के द्वारा (मरकुस 2:23–28, 3:1–6) सप्ताह के किसी भी दिन (प्रेरितों के काम 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:2)। ष्एक आदमी एक दिन अन्य की तुलना में अधिक पवित्र मानता हैय एक और आदमी हर दिन एक जैसे मानता है (वे दोनों श्परमेश्वर के लिए ऐसा करते हैं)। हर एक अपने ही मन में निश्चय किया जाना चाहिए (रोमियों 14:5–6)।

(5) छाया और वास्तविकता के रूप में समारोहपूर्ण प्रार्थना।
पुराने नियम की समारोहपूर्ण प्रार्थना एक दिन में तीन बार यरूशलेम की ओर मुँह करके (भजन संहिता 55:17; दानिय्येल 6:10) नए करार में परमेश्वर के साथ अकेले में प्रार्थना द्वारा बदल दिया गया था और प्रार्थना करनी जैसे ष हे हमारे पिताष (मत्ती 6:5–15)।

(6) छाया और वास्तविकता के रूप में उपवास।
पुराने नियम के उपवास उनके शोक के साथ ही समाप्त कर दिए गए और नए नियम के मसीह की लगातार उपस्तिथि के आनन्द से बदल दिए गए (मत्ती 6:16–18, 9:14–17; मरकुस 2:18–22)। नबी जकर्याह ने भविष्यवाणी की थी कि ऐसा होगा (जकर्याह 8:19)।

(7) छाया और वास्तविकता के रूप में बलिदान।
पुराने नियम में सभी जानवरों के बलिदानों की भेंटों को समाप्त कर दिया गया क्योंकि नए नियम में उन्हें पूरा किया और एक बार सभी के लिए यीशु मसीह के क्रूस पर बलिदान के द्वारा बदल दिया गया था (यूहन्ना 1:29, इब्रानियों 07:27, 9:9–14,25–26; 10:10)। यूनानी शब्द ''एफापैक्स''का अर्थ है ''एक बार में'' या ''सब के लिए एक बार'' और घटना की निश्चितता और अन्तिम स्थिति को नियुक्त करना।

(8) छाया और वास्तविकता के रूप में दशमांश।
नए नियम के दशमांश देने बंद कर दिए गए एयर नए नियम के देने के तरीके में बदल दिए गए (मरकुस 12:41–44, लूका 6:38, 1 कुरिन्थियों 16:2, 2 कुरिन्थियों 8:3,12,14, 9:6–7)। देखें ''देना'' नियमावली 4, सबक 44 में ।

(9) छाया और वास्तविकता के रूप में खतना।

पुराने नियम के शारीरिक कहते को समाप्त करके नए नियम में दिल के आत्मिक खतने के द्वारा बदल दूय गया। (रोमियों 2:28–29, 1 कुरिन्थियों 7:17–20, गलतियों 6:15)।

(10) प्रक्षालन (शुद्धि संस्कार) छाया और वास्तविकता के रूप में।

पुराने नियम प्रक्षालन शुद्धि संस्कार या छिड़काव के माध्यम से धोना या ऊपर से व्यक्ति पर पानी डालना और उंडेलना थे। यह पाप और संसार की गन्दगी को धोने को संकेत करते थे लैव्यव्यवस्था 14:1–9; लैव्यव्यवस्था 4:1–5:13; 15:11; यहेजकेल 36:25–27; मरकुस 7:2–4; लूका 11:38–39; यूहन्ना 13:5,9–10; इब्रानियों 10:19–22)। वे आगे की ओर इशारा करते पुनर्जन्म के लिए छाया के रूप में सेवा करते थे (पापों का धोया जाना) और नए नियम में पवित्र आत्मा के द्वारा शुद्धिकरण (प्रेरितों के काम 2:38; 10:44–48; तीतुस 3:5–6; ईब्रानियों 10:22), (प्रेरितों के काम 22:16) पानी के साथ बपतिस्मा में प्रतीक है।

(11) छाया और वास्तविकता के रूप में स्वच्छ खाद्य पदार्थ।

शुद्ध खाद्य पदार्थरथों के प्रति पुराने नियम के विनियमनों ने शुद्धिकरण की एक छाया के रूप में सेवा की (व्यवस्थाविवरण 14:1–3)। परमेश्वर के वचन के द्वारा जो विश्वासी को एक ही बार हमेशा के लिए शुद्ध करता है नए नियम में यह विनियम समाप्त किया गया (यूहन्ना 15:3; इफिसियों 5:26)। मसीह ने अपने पहले आगमन बाद सभी खाद्य श्शुद्धश घोषित कर दिए (मरकुस 07:19, रोमियों 14:2–6,13–23, कुलुस्सियों 2:16, 1 तीमुथियुस 4:3–5)।

निष्कर्ष।

यीशु मसीह ने एक–बार–सारे–समय के लिए पुराने नियम की समारोहपूर्ण व्यवस्था को परिपूर्ण (मत्ती 5:17),रद्द और समाप्त कर दिया। वे रद्द, निरस्त, निराकृत, मिटाये (कुलुस्सियों 2:14) और समाप्त (उनके अस्तित्व को समाप्त किया) (इफिसियों 2:15) किये गए हैं। ये समारोहपूर्ण व्यवस्था को फिर से दुनिया भर के व्यापक मसीही कलीसिया में कभी पुनः शुरू नहीं किया जा सकता है। या किसी भी व्यक्तिगत मसीह मण्डलियों में और इस तरह फिर से मसीहों के बीच विभाजन के कारण बन है।

इसलिए पुराने नियम की समारोहपूर्ण व्यवस्था के विनियम जैसे याजकों की नियुक्ति, वेदी और मंदिर का निर्माण, सब्त और अन्य यहूदी पर्व रखना और उपवासों की अवधि, जानवर बलिदान लाना,लड़कों का शारीरिक खतना करना, धार्मिक अनुष्ठानों से पहले प्रक्षालन, समारोहपूर्ण शुद्ध खाने का सेवन और किसी भी मसीही मंडली में फिर से पेश नहीं किया जा सकता है।

इसके अलावा दशमांश के पुराने नियम विनियमन (मलाकी 3:10) किसी भी मसीही मंडली में एक मसीही कर्तव्य या आवश्यकता के रूप में फिर से पेश नहीं किया जा सकता है! परमेश्वर की मसीहों से आवश्यकता नहीं है कि वे दशमांश या उनकी आय का कोई अन्य प्रतिशत दें।

लेकिन परमेश्वर सिखाता है कि मसीहों को स्वेच्छा से, विश्वास के साथ, उदारता से , स्वतंत्र रूप से और हंसमुख होकर देना चाहिए (2 कुरिन्थियों 9:6–7) ! और वह बलिदान के साथ देने की सिफारिश भी करता है (लूका 6:38; प्रेरितों के काम 20:33–35; 2 कुरिन्थियों 8:3,9)।

परिशिष्ट 17 (मसीही चरित्र)

क्रोध व संयम

यह अध्ययन मसीही चरित्र के सन्दर्भ में है। आप क्रोध के साथ किसी तरह निपटते हैं? आपको संयम कैसे प्राप्त होता है?

क्रोध व उसके कारण

1. क्रोध क्या है?

क्रोध किसी गलत काम या अन्याय को देखकर उत्पन्न होने वाली अति अप्रसन्नता के कारण प्रगट की जाने वाली भावना है। लेकिन अपना क्रोध प्रगट करते समय, हमें अपनी मर्जी से जैसा चाहे अपना गुस्सा प्रगट करनी की आज़ादी नहीं है। क्रोध अधिकतर पापमय तरीके से सामने आता है(जिसके परमश्वर की योजना पीछे छूट जाती है)। क्रोध को धार्मिक तरी से सामने आना चाहिए(जिससे परमेश्वर की इच्छा पूरी हो)।

1शमूएल 20:30-33; इफिसियों 4:26; लूका 14:21; यूहन्ना 2:13-17; रोमियों 1:18।

चर्चा करें। पापमय क्रोध क्या है और धार्मिक क्रोध क्या है।

ध्यान दें।

पापमय क्रोध अप्रसन्नता दर्शाने का एक कठोर भाव है, जिसमें मनुष्य लोगों को चोट पहुँचाने और सम्पत्ति को नाश करने की कोशिश करता है।

धार्मिक क्रोध, गलत कामों के प्रति सही या उचित कदम उठाने की मजबूत पहल करता है।

2. लोगों को गुस्सा क्यों आता है?

चर्चा करें। वे कौन कौन से कारण हैं जिनकी वजह से लोगों को गुस्सा आता है?

ध्यान दें।

- अन्याय। जब आप अन्याय होता हुआ देखते है या खुद दबाव या अन्याय सहते हैं।
- सताव। जब आपकी अपनी इच्छाओं, आकाक्षाओं, लक्ष्यों और आशाओं को पूरा करने से रोका जाता है।
- उसकाना। जब आपको अकारण मांगों, वार्तालाप के अभाव और बुरे व्यवहार के द्वारा उसकाया जाता है।
- चोटिल होना। जब आप लोगों की बातों व कामों से चोटिल होते हैं। जब लोग आपके साथ में उचित व्यवहार नहीं करते या आपको अस्वीकार कर देते हैं।
- भय। जब आपको असफलता या अस्वीकार किये जाने से डर लगता है।
- नुकसान। जब आप किसी प्रिय जन को, सम्पत्ति को, व्यापार को या किसी व्यक्ति के साथ अच्छे सम्बन्ध को खो देते हैं,इत्यादि।
- असहाय। जब आप असहनीय लोगों के साथ सहयोग नहीं कर पाते हैं। आप थके हुए, अनिंद्रा के शिकार या सहयोग नहीं कर सकते हैं।
- निराशा। जब लोग व परमेश्वर *आपकी* अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाते।

क्रोध की प्रतिक्रियाएं व उनके परिणाम

1. क्रोध की सीढ़ी का दृष्टान्त

क्रोध की सीढ़ी का दृष्टान्त हमें दिखाता है कि लोग क्रोध में किस प्रकार अलग अलग प्रतिक्रियाएं देते हैं और उसके परिणाम क्या होते हैं।

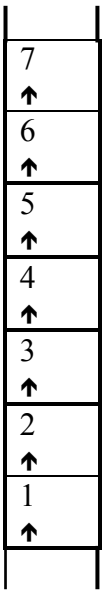

नियन्त्रिय क्रोध ही क्रोध प्रगट करने का सही तरीका है।

कैद किया हुआ क्रोध, सीमित भद्दा गुस्सा है।

भद्दा दिखने वाला क्रोध, बेतहाशा शोर मचाने वाला गुस्सा है

बेईज्जती करने वाला क्रोध अनियन्त्रित व बातों से जाहिर होने वाला गुस्सा है।

उपद्रवी क्रोध, अनियन्त्रित व विनाशकारी क्रोध है।

छुपा हुआ क्रोध दबाया गया या दफनाया गया क्रोध है।

बहिष्कृत गुस्सा, बार बार दबाया जाने वाला, न ध्यान दिया जाने वाला या इनकार किया जाने वाला गुस्सा है।

सिखाएं। क्रोध की सीढ़ी का दृष्टान्त हमें क्रोध में मनुष्य की प्रतिक्रिया और उसके क्रम के बारे में सिखाता है:

सबसे बुरी प्रतिक्रिया से नीचे तक

सबसे उत्तम प्रतिक्रिया से ऊपर तक।

क्रोध को लेकर सात सम्भवत: प्रतिक्रियाएं निम्नलिखित हैं:

सबसे ऊपर सबसे उत्तम प्रतिक्रिया।

7. नियन्त्रिय क्रोध ही क्रोध प्रगट करने का सही तरीका है। क्रोधित व्यक्ति पहिचानता और अपने, परमेश्वर व उसकाने वाले के सामने इस बात को जाहिर करता है कि वह गुस्सा है और वह अपने गुस्से को उचित रूप में व्यक्त भी करता है। वह अपने गुस्से को उसकाने वाले मुद्दे तक ही सीमित रखता है और उसे उसकाने वाले व्यक्ति पर ही दिखाता ह, लेकिन उसका तरीका भावनात्मक या अभद्र व्यवहार के साथ नहीं, वरन संयम व तमीज़ के साथ प्रगट होता है। संयम के साथ प्रगट किया गया क्रोध पापमय नहीं होता है (इफिसियों 4:26)। नियन्त्रित क्रोध हमेशा मेल मिलाप और सच्ची शान्ति की खोज में रहता है।

6. कैद किया हुआ क्रोध, सीमित भद्दा गुस्सा है। क्रोधित व्यक्ति अभी भी अपने गुस्से को अभद्र तरीके(चिल्लाकर या अलग अलग प्रकार के चेहरे बनाकर)से प्रगट करता है परन्तु फिर भी वह अपने गुस्से को उसकाने वाले मुद्दे व उसकाने वाले व्यक्ति तक ही सीमित रखता है। वह दूसरे लोगों को अपने ग़स्से में शामिल नहीं करता और वह बीते काल के गढ़े मुर्दे भी नहीं उखाड़ता।

5. भद्दा दिखने वाला क्रोध, बेतहाशा शोर मचाने वाला गुस्सा है। गुस्सा करने वाला व्यक्ति शोर मचाकर अपना गुस्सा सबको दिखाता है। भद्दा क्रोध, अक्रोशित व्यवहार,अर्थात चिल्लाने, शोर मचाने या परेशान करने, हाथ पैर चलाने, डरावने चेहरे बनाने (गुस्सैल चेहरा,मेज़ पर अपना हाथ पटकने, जमीन पर लात मारने) या किसी दूसरे तरीके से हल्ला मचाने(जैसे दरवाजा पटकना और जोर जोर से संगीत बजाने)के द्वारा प्रगट होता है। भद्दा क्रोध असंदिग्ध लोगों को प्रभावित करता है(परिवार, मित्र,पड़ोसी और सहकर्मी)।

4.बेईज्जती करने वाला क्रोध अनियन्त्रित व बातों से जाहिर होने वाला गुस्सा। क्रोधित व्यक्ति अपनी बातों व शारीरिक प्रतिक्रियाओं द्वारा अपना गुस्सा सब को दिखाता है। बेईज्जती करने वाला क्रोध गाली गलौच,कटु शब्दा और चोट पहुचाने वाली बातों द्वारा, शालीनता या आत्म सम्मान को नुकसान पहुंचा कर या किसी की प्रनिष्ठा में सेंध लगाकर प्रगट होता है। यह गुस्सा कठोर शब्दों के उच्चारण, श्राप देने, बिगड़े नामो को लेने, दोष लगाने, तुच्छ दिखाने या प्रेम रहित आलोचनाओं द्वारा प्रगट होता है यह सब करते हुए आदमी चिल्लाता और शोर मचाता है। यह गुस्सा गन्दे चेहरे बनाकर या अश्लील मुद्राओं द्वारा भी प्रगट होता है।

3. उपद्रवी क्रोध, अनियन्त्रित व विनाशकारी क्रोध है। क्रोधित व्यक्ति अपनी शारीरिक क्रियाओं,शब्दों और चेहरे के हाव भाव द्वारा अपना क्रोध सभी पर प्रगट करता है। उपद्रवी क्रोध, केवल श्राप देना,कसम खाना,गालिया देने जैसे अपशब्दों की बौछार में व्यक्य नहीं करता वरन वह अनियन्त्रित उपद्रव जैसे कि समपत्ति को नुकसान पहुंचाना,सामान फेंकना, लोगों को मारना और उन्हें चोट पहुंचाना, जानबूझकर दुर्घटना करना यहां तक कि कत्ल करने के द्वारा भी प्रगट होता है। उपद्रवी क्रोधी न केवल क्रोध करने वाले को वरन दूसरों को भी बहुतायत से नुकसान पहुंचाता है।

2. छुपा हुआ क्रोध दबाया गया या दफनाया गया क्रोध है। यह क्रोध मनुष्य के अन्दर भिन्न तरीकों से प्रगट होता है। यह एक मानसिक समस्या के तौर पर प्रगट हो सकता है, जैसे हीन भावना, दुखी होना या आत्महत्या के ख्याल मन में आना(योना 4:3)। क्रोधित लोग ज्यादातर समझदारी से निर्णय नहीं लेते वरन वे अपने ऊपर ही सारी झुंझलाहट मिटा देते हैं(अय्यूब 18:4)। क्रोध स्वभाव में समस्याओं के द्वारा भी प्रगट हो सकता है, उदाहरण के लिए नफरत(परमेश्वर, देश व व्यक्ति के प्रति),एक अक्षमा की आत्मा विद्वेषपूर्ण व बदला लेने वाले विचार वरन एक बुरा व उपद्रव से भरा विचार। यह सामाजिक समस्याओं में भी प्रगट हो सकता है, अर्थात असामाजिक व सत्तावादी विरोधी व्यवहार में, जैसे जान बूझकर देरी करना, स्कूल में हमेशा निम्न स्तर पर उर्त्तीर्ण होना, भद्दी मजाक करना, मादक पदार्थों का इस्तेमाल करना, अवैध तरीके से गर्भवती होना, अपराध करना,परिवारों और कलोसियाओं को तोड़ना। यह क्रोध अपनी गलतियों के लिए परमेश्वर व दूसरों को दोषी ठहराने के द्वारा भी प्रगट हो सकता है। यह क्रोध कम धमकाये गये लोगों पर भी प्रगट होता है जिन पर किसी प्रकार को संदेह नहीं होता(पत्नी,बच्चे, कर्मचारी और कुत्ता)।

1. बहिष्कृत गुस्सा, बार बार दबाया जाने वाला, न ध्यान दिया जाने वाला या इनकार किया जाने वाला गुस्सा है। यह गुस्सा मनुष्य में अलग तरीके से प्रगट होता है: यह मनोवैज्ञानिक समस्याओं द्वारा प्रगट हो सकता है, जैसे दबाब, चिन्ता,मानसिक असन्तुलन इत्यादि। यह सामाजिक समस्याओं द्वारा प्रगट हो सकता है, जैसे कि अकेले रहने वाला या दूसरे से अलग रहने वाला व्यक्तित्व, कठोर या ठण्डा रिश्ता या चिड़चिड़ा या आलोचनात्मक स्वभाव। यह शारीरिक समस्याओं में भी प्रगट हो सकता है जैसे, सिर दर्द, कब्ज़ होना, अल्सर होना और कभी कभी हार्ट-अटैक होना। यह कभी कभी विनाशकारी व्यवहार में भी प्रगट हो सकता है, जैसे अधिक मात्रा में शराब या धूम्रपान करना। बहिष्कृत क्रोध अधिकतर क्रोध करने वाले व्यक्ति को ही नुकसान पहुंचाता है।

निचले स्तर पर अति बुरी प्रतिक्रिया

2. क्रोध के प्रति प्रतिक्रिया के फायदे और नुकसान।

चर्चा करें। गुस्सा या क्रोध करने का एक तरीका दूसरे तरीके से अच्छा क्यों है?

ध्यान दें। गुस्सा करने का एक तरीका दूसरे से इसलिए बेहतर है क्योंकि किसी प्रकार के गुस्से से कम नुकसान होता है।

उदाहरण के लिए,

(1)बहिष्कृत क्रोध। बहिष्कृत क्रोध सबसे घातक क्रोध इसलिए है क्योंकि क्रोधित व्यक्ति कभी भी यह मानने को तैयार नहीं होता कि वह गुस्सा है। क्रोधित व्यक्ति दृढ़ता से इस बात पर अड़ा रहता है कि वह गुस्सा नहीं है! वह किसी समस्या के होने से इनकार करता है और जब समस्या ही नहीं तो उसका समाधान करना असम्भव हो जाता है। क्रोध धीरे धीरे क्रोधित व्यकित को ही नुकसान पहुचाता है और उसे पता भी नहीं चलता कि यह सब क्रोध के कारण हो रहा है।

(2) छुपा हुआ क्रोध। छुपा हुआ गुस्सा भी अपने आप में अत्यधिक नुकसान पहुंचाने वाला गुस्सा होता है, क्योंकि गुस्सैल व्यक्ति जानता है कि वह गुस्सा है और भीतर ही भीतर समस्या के कारण घुट रहा है,लेकिन वह अपनी समस्या को सबसे छुपाए रहता है। क्योंकि वह व्यक्ति अपनी समस्या का सामना करने से इनकार करता है,इस कारण वह उसके परिणामों से चंगाई प्राप्त नहीं कर सकता।

(3) उपद्रवी क्रोध। उपद्रवी गुस्सा सभी को नुकसान पहुंचाता है, क्योंकि इसके तहत व्यक्ति उग्र रूप धारण करके सामान व सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाता है। तथाति, यह क्रोध प्रगट को जाने के कारण कम से कम इसका उपचार किया जा सकता हैं, और कारण इसके क्रोधित व्यक्ति में छुपे और बहिष्कृत क्रोध के आन्तरिक नुकसान से बचा जा सकता है।

(4)बेईज्जती करने वाला क्रोध। बेईज्जती करने वाला क्रोध भी विनाशक है, क्योंकि वह बातों के द्वारा लोगों को चोटिल करता है। तथापि यह उपद्रवी क्रोध की तुलना में बेहतर कदम हैं, क्योंकि क्रोधित व्यक्ति को अपने उपद्रवी और विनाशकारी क्रिया पर संयम होता है।

(5) भद्दा दिखने वाला क्रोध। भद्दा क्रोध वास्तव में गुस्सा जाहिर करने का एक गलत तरीका है। लेकिन यह कदम बेईज्जती करने वाले क्रोध से बेहतर है, क्योंकि इस दशा में क्रोधित व्यक्ति अपनी उपद्रवी और विनाशक क्रिया को नियन्त्रित करने में सक्षम होता है।

(6)कैद किया हुआ क्रोध। कैद किया गया क्रोध, अब तक अपना क्रोध प्रगट करने वाले सभी तरीकों की तुलना में बहुत बेहतर होता है। क्रोध प्रगट करने की सीढ़ी में यह एक और उच्च कदम है, क्योंकि इस अवस्था में गुस्सा करने वाला मुद्दे तक सीमित रहकर, जिस व्यक्ति के प्रति वह अपना गुस्सा जाहिर कर रहा होता है उस पर दरियादिली बरतकर और गुस्सा करने तरीके को सीमित करने के द्वारा अपने अधिक संयम का परिचय देता है।

(7) नियन्त्रित क्रोध। नियन्त्रित क्रोध ही इकलौता ऐसा तरीका है जिसमें कोई पाप नहीं होता। व्यक्ति दूसरों पर गुस्सा जाहिर करते समय संयम बरतता है। परमेश्वर चाहते हैं कि मसीहो लोग इसी तरह से अपने क्रोध को प्रगट करें। इस शैली के द्वारा लोग दूसरों को या खुद को चोट पहुंचाने के द्वारा परमेश्वर के विरूद्ध कोई पाप नहीं करते। वरन वे गुस्से में परमेश्वर की इच्छा को ही पूरा करते हैं।

ग. क्रोध के साथ व्यवहार करना

सिखाएं कि आप किस तरह से क्रोध के साथ व्यवहार करते सकते हैं या व्यवहार करना चाहिए?

1. पापमय क्रोध के परिणामों पर ध्यान दें।

खोजें और चर्चा करें। यदि आप पापमय क्रोध से नहीं निपटते हैं तो क्या परिणाम होता है?

ध्यान दें। पापमय क्रोध आपको मूर्ख बना देता है(सभोपदेशक 7:9)। क्रोध से केवल बुराई उत्पन्न होती है(भजन 37:8) पापमय क्रोध उस धार्मिक का निर्वाह नहीं करता जिस परमेश्वर चाहता है(याकूब 1:19-20)। क्रोध आपकी प्रार्थनाओं को प्रभावित कर सकता है(1 तीमुथीयुस 2:8)। क्रोध आपको अगुवाई करने के लिए अयोग्य ठहराता है(तीतुस 1:7)। पापमय क्रोध पवित्र आत्मा को शोकित करता है(इफिसियों 4:30-31)। इस प्रकार का क्रोधित व्यक्ति निश्चय ही परमेश्वर के न्याय का सामना करेगा(मत्ती 5:22)।

2. क्रोध की सीढ़ी को चढ़ने का प्रयास करें।

चर्चा करें। आप किस प्रकार से क्रोध की सीढ़ी को चढ़ते हैं?

ध्यान दें। अपने क्रोध को प्रगट करने में न डरें,परन्तु हमेशा बाइबल के अनुसार व समाज में ग्रहणयोग्य तरीके से अपने क्रोध को प्रगट करें। चिड़चिड़ाहट व पापमय क्रोध से बचें(इफिसुस 4:31)। अगली बार अपने क्रोध को सीढ़ी के अगले कदम पर चढ़कर प्रकट करने का प्रयास करें। अपने क्रोध को प्रगट करने के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले तरीके के लिए खुद को सराहें।

3. अपने क्रोध को संयम के साथ प्रगट करें।

खोजें व चर्चा करें। आप अपने क्रोध को संयम के साथ किस प्रकार से प्रगट करते हैं?

(1) अपने कामों के लिए जिम्मेदारी लेने के द्वारा संयम प्रगट होता है।

आप चाहें जितना भी चोटिल महसूस करें, परमेश्वर दूसरों के प्रति अपने भाव प्रगट करने के तरीके के लिए आपको जिम्मेदार ठहराते हैं(मत्ती 5:22)। यदि आप सोचते हैं कि आपकी भावनाएं अभी भी फूट पड़ना चाहती है, तो आपको उन्हें कुछ और समय के लिए दबा कर रखने की जरूरत है। उदाहरण के लिए, लम्बी सैर के लिए निकल जाएं, बाइबल की आयत पर मनन करें, प्रार्थना करके लिखें कि आप क्या सोचते और महसूस करते हैं, लेकिन अपने गुस्से को तब तक प्रगट करने का इन्तजार करें जब तक कि आप अपनी भावनाओं को अपने नियन्त्रण में नहीं ले आते।

(2) दूसरों के साथ में धीरज धरते हुए संयम प्रगट करें।

लोगों को समझने का प्रयास करें(नीतिवचन 14:29)। किसी आपसी मतभेद को भड़काने की बजाय, झगड़े को शान्त करें(नीतिवचन 15:18)। बहस जीतने की बजाय, खुद अपने स्वभाव पर विजय प्राप्त करें(नीतिवचन 16:32)। बदला लेने की बजाय, ठोकरों के कारण को नज़रअन्दाज करें(नीतिवचन 19:11)। अपने गुस्से को किसी पर उतारने की बजाय,अपने आपको नियन्त्रण में रखें(नीतिवचन 29:11)।

(3) धीरे और सकारात्मक बातें बोलकर संयम को प्रगट करें।

धीम धीमे गुस्सा होना सीखें, इसका अर्थ है कि हर बात पर न चिड़चिड़ाएं या हर बात को व्यक्तिगत आक्रमण समझकर स्वीकार न करें, जो आत्म-केन्द्रित बातों में प्रगट हो जाता है(याकूब 1:19)। एक दिन से ज्यादा किसी से नाराज़ न रहें(इफिसियों)। जल्दी गुस्सा करने वाले लोगों से दूर रहे क्योंकि उनकी संगति आपकों प्रभावित कर सकती है(नीतिवचन 22:24-25)। अपने गुस्से को दबाये, इनकार किये, और नज़रअन्दाज किये हुए, उस व्यक्ति के सकारात्मक गुणों पर ध्यान दें जिससे आप गुस्सा हैं(रोमियों 12:10)। दूसरों द्वारा आपके प्रति किये गये गलत कामां को लेखा न रखें(1 कुरिन्थियों 13:5)।

4. समझदारी के साथ अपने क्रोध को प्रगट करें।

खोजे व चर्चा करें। आप समझदारी के साथ अपने क्रोध को किस तरह से व्यक्त करते हैं?

(1)पहल करें।

मत्ती 5:23-24; 18:15 **पढ़ें।**

ध्यान दें। यह काम आप दूसरे व्यक्ति के साथ मेलमिलाप करने के लिए पहल करने के द्वारा कर सकते हैं। इस बात की परवाह किये बगैर कि किसकी गलती थी, आपको पहल करते हुए समस्या को सुलझाने की इच्छा व्यक्त करनी चाहिए।

(2) स्वीकार करें कि आप गुस्सा या क्रोधित हैं

याकूब 5:16 **पढ़ें।**

इस बात को स्वीकार करें कि आप खुद से, परमेश्वर से और उसकाने वाले व्यक्ति से गुस्सा हैं। परमेश्वर से समझ मागें कि आप उस व्यक्ति से बात कर सकें जिससे आप गुस्सा है(याकूब 1:5)।

(3) सहायता कर सकने वाले तरीके के द्वारा बातचीत करें।

इफिसियों 4:15,29 **पढ़ें।**

ध्यान दे। आपको चोट पहुंचाने वाले व्यक्ति से इस तरह से बातचीत करें जो सहायक हो।

- आपकी बातों में सच्चाई होनी चाहिए। दूसरे व्यक्ति को सन्तुष्ट या मामले को शान्त करने के लिए, जितनी आपसे गलती हुई है उसका ज्यादा की जिम्मेदारी अपने ऊपर न लें। आप दोनों ही पक्षों को अपने गलत कामों की जिम्मेदारी लेना सीखना है।
- आपकी बातें सहायक होनी चाहिए। अपने धार्मिक गुस्से, आलोचनाओं और डांट को तरीके से व सहायक तरीके से प्रगट करिये। पहले से योजना तैयार करें कि आप क्या, कब और कैसे इन बातों को कहेंगे। भड़काऊ मुद्दे पर साथ मिलकर चर्चा

करें, लेकिन उन पुरानी बातों को न उखाड़े जिनका इस बात से कोई मतलब नहीं है। एक दूसरे की बात पूरी होने तक एक दूसरे बातों को सुने। एक दूसरे के दृष्टिकोण और भावनाओं को समझने का प्रयास करें। समस्या को बढ़ाने में अपने योगदान को स्वीकार करने में देरी न करें। तब तक समाधान की खोज करते रहें जब तक आप दोनों पक्षों को यह पता नहीं चल जाता कि कौन कदम उठाना चाहिए।

- आपकी बातचीत प्रेम के साथ होनी चाहिए। प्रेम धीरजवन्त है,कृपालु,उदार, नम्र, दीन,शिष्ट,नि:स्वार्थ,विनीत,क्षमा करने वाला, जिम्मेदार, सुरक्षा प्रदान करने वाला, भरोसेमन्द, सहायक, आशावादी और सुरक्षित रखने वाला होता है।

5. अपने गुस्से को मनोहर तरीके से व्यक्त करें।

सिखाएं। ध्यान रखें की आपके शब्द, आपकी बात करने का लहज़ा, आपके हाव भाव और आपकी शारीरिक मुद्राएं अस्विकृति नहीं वरन स्वीकृती प्रस्तुत करें(नीतिवचन 15:13)।

6. पलटा न लें,वरन क्षमा और प्रेम करें।

खोजें और चर्चा करें। जिस व्यक्ति से आप गुस्सा हैं आपको उनके प्रति क्या करना चाहिए?

(1) अपने हृदय की गहराई से उस व्यक्ति को बार बार **क्षमा करें**(मत्ती 18:21-35)।

(2) उससे **प्रेम करें**, उसे आशीषित करें, उसके लिए प्रार्थना करें और उसके लिए भले काम करें(लूका 6:27-28)।

(3) कभी अपना **पलटा न लें**(रोमियों 12:14-21)।

7. होने दें कि परमेश्वर आपकी चोटिल भावनाओं को चंगा करे।

खोजे और चर्चा करें। आपको अपनी चोटिल भावनाओं के साथ क्या करना चाहिए?

(1) प्रार्थना करें व परमेश्वर के साथ अपनी चोटिल भावनाओं के बारे में बात करें।

भजन 62:8; 34:18।

ध्यान दें। परमेश्वर से आपकी भावनाओं को बदलने के लिए,तथा आपकों लगातार क्रोध से भरे विचारों और भावनाओं से आज़ाद करने के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपकों अपने बैरी को प्रेम करने व उसे क्षमा करने में सहायता करे।

(2) एक सलाहकार से बातचीत करें और मित्रों के साथ मिलकर प्रार्थना करें।

याकूब 5:13-16 को **पढ़ें।**

ध्यान दें। यदि आपको क्षमा करने या अपने बैरी को प्रेम करने में दिक्कत आती है, तो अपनो भावनाओं को सलाहकार के साथ बांटें या एक या दो मसीहियों से आपकी चंगाई के लिए प्रार्थना करने को कहें।

परिशिष्ट 19

अगुवापन

मसीही कलीसिया में अगुवेपन का ऐतिहासिक विकास

आज विभिन्न मसीह संप्रदायों के अगुवेपन संरचनाओं के विभिन्न प्रकार है। कैसे इस विकास ने स्थान लिया ? इस अध्यन का इरादा आपकी मसीह संगती के अगुवेपन संरचनाओं को बदलने का नहीं है। यह केवल नए नियम की अवधि के बाद की कई अगुवेपन संरचनाओं के ऐतिहासिक विकास का एक सारांश विवरण देना चाहता है।

क. प्राचीनों की नियुक्ति
(बाईबल आधारित शिक्षा) (30–97 ई.पू.)

1. नया नियम केवल प्राचीनों की संस्था की नियुक्ति सिखाता है।

1. यीशु मसीह अपने आत्मा के माध्यम से अगवाई करता है।

नया नियम अगुवापन श्रेणीबद्ध संरचना के किसी भी प्रकार को नहीं सिखाता है ! मण्डलियों (कलीसियाओं) के ऊपर कोई छाता संगठन नहीं था। पुनरुत्थान, उदगम और स्वर्ग में यीशु मसीह का राज्यभिषेक होने के बाद, उसने धरती पर शुरू किये कार्य को जारी रखा। (प्रेरितों के काम 1:1; यूहन्ना 7:37–39) और अपने चेलों पर अपना पवित्र आत्मा उंडेल दिया (प्रेरितों के काम अध्याय 2) (ई. 30)। पवित्र आत्मा यीशु मसीह का आत्मा है, जो हर एक मसीह के साथ और अंदर होने के लिए आया है, पृथ्वी पर यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करते हुए (यूहन्ना 14:16–18; यूहन्ना 16:13–15; रोमियों 8:9–10)। मण्डलियों को उनके सिर, यीशु मसीह के द्वारा नियंत्रित किया गया (इफिसियों 1:20–22), मसीह की आत्मा से (प्रेरितों के काम 9:31) और मसीह के वचन के माध्यम से (यूहन्ना 8:31; 14:21)।

(2) पवित्र आत्मा प्रेरितों और प्राचीनों की संस्था के माध्यम से अगुवाई करता है।

पवित्र आत्मा (मसीह का आत्मा) ने ग्यारह चेले का इस्तेमाल किया (प्रेरितों के काम 2:14) यहूदियों के बीच पहली मण्डली की स्थापना के लिए यरूशलेम में (प्रेरितों के काम 2:41–42) (ई. 30) और सारे यहूदिया में, गलील और सामरिया में आधे–यहूदियों के बीच (प्रेरितों के काम 8:1,4; प्रेरितों के काम 9:31) (ई. 30–40) और कैसरिया में गैर–यहूदियों (अन्यजातियों) के बीच (प्रेरितों के काम अध्याय 10 और 11) (ई. 40) और अन्ताकिया में (प्रेरितों के काम 11:19–24) (ई. 44)। यीशु मसीह के प्रेरित, अद्वितीय थे कि अगुवे थे जिन्होंने कलीसियाओं की स्थापना की और अद्वितीय, लेकिन अस्थायी अधिकार पाए हुए थे।

और पौलुस के परिवर्तन के बाद (प्रेरितों के काम 9:1–30) (करीब ई. 34) पवित्र आत्मा ने उसे किलिकिया में तुर्की में (गलतियों 1:21–23) (ई. 36–44) और सीरिया में (प्रेरितों के काम 11:25–26) (ई 44–46) मण्डलियों की स्थापना के लिए इस्तेमाल किया। अन्ताकिया की मण्डली ने यरूशलेम की मण्डली के प्राचीनों को उपहार भेजा है (प्रेरितों के काम 11:30) । बाद में पवित्र आत्मा ने पौलुस और बरनबास को धर्म–प्रचार यात्रा के लिए अलग किया जिसके लिए वह बुलाए गए थे (प्रेरितों के काम 13:1–4)।

पहली धर्म–प्रचार यात्रा (ई. 47–48) पर उन्होंने हर जगह मण्डलियों (कलीसियाओं) की स्थापना करीरू साइप्रस में (प्रेरितों के काम 13:4–5) और विशेष रूप से तुर्की में (गलातियों 1:21–23) (ई. 36–43) और सीरिया में (प्रेरितों के काम 11:25–26) (ई. 44–46) और हर मण्डली के लिए प्राचीनों की परिषद को नियुक्त किया (प्रेरितों के काम 14:21–23) । यरूशलेम सम्मेलन के दौरान अन्ताकिया और यरूशलेम (प्राचीन और प्रेरित जो अभी भी यरूशलेम में रहते थे), पतरस, यूहन्ना और याकूब ने पौलुस के माध्यम से परमेश्वर की सेवकाई को स्वीकार किया (प्रेरितों के काम 15:1–35; गलातियों 2:1–10)।

दूसरी मिशनरी यात्रा (ई. 50–52) पर पौलुस और उसके साथियों ने तुर्की, मैसेडोनिया और ग्रीस (प्रेरितों के काम 18:22 से 15:36) के शहरों में मण्डलियों की स्थापना की।

तीसरी मिशनरी यात्रा (ई 52–57) पर उन्होंने तुर्की और ग्रीस (प्रेरितों के काम 21:16 से 18:23) में सेवा की, कुरिन्थ (प्रेरितों के काम 18:11) में 1 $_{1/2}$ साल के लिए और इफिसुस में लगभग 3 साल के लिए (प्रेरितों के काम 19:8–10) । मीलेतुस में पौलुस ने इफिसुस की मण्डली के प्राचीन निकाय को निर्देश दिए, कहते हुए कि पवित्र आत्मा ने प्राचीन निकाय को मण्डली के अधिदर्शक और चरवाहे होने के लिए नियुक्त किया था (प्रेरितों के काम 20:17,28) (ई. 57)।

रोम में अपनी पहली कारावास (ई. 60–61) के दौरान पौलुस ने इफिसुस और फिलिप्पी की मण्डलियों को पत्र लिखा था और उल्लेख

किया की वहाँ अधिदर्शक और सेवक थे (1 तीमुथियुस 3:1,12; फिलिप्पियों 1:1)।

अपनी चौथी मिशनरी यात्रा (ई. 61–64) पर पवित्र आत्मा ने प्रेरित पौलुस को तिमोथी और तीतुस को पत्र लिखने के लिए (2 तीमुथियुस 3:16) प्रेरित किया और निर्देश देने के लिए कि प्रत्येक मंडली के नेतृत्व में क्या किया जाना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:14–15), नामतः, प्राचीन निकाय के माध्यम से (1 तीमुथियुस 4:14), उनकी शर्तों, कार्य और अधिकार के लिए (1 तीमुथियुस 3:1–7; 1 तीमुथियुस 5:17–22; तीतुस 1:5–9)।

पवित्र आत्मा ने प्रेरित पतरस को भी (ई. 63–65) (2 पतरस 1:20–21; 2 पतरस 3:1–16) तुर्की के प्रांतों में मण्डलियों को अपने पत्र लिखने के लिए प्रेरित किया (1 पतरस 1:1) और निर्देश देने के लिए कि प्रत्येक मण्डली का नेतृत्व कैसे किया जाना चाहिए, नामतः प्राचीन निकाय के माध्यम से (''प्राचीन'' बहुवचन में) । उसने आवश्यक शर्तें, कार्य और प्राचीनों के अधिकार (1 पतरस 5:1–7) के बारे में भी निर्देश दिए ।

इस प्रकार, नए नियम की अवधि के दौरान प्रेरितों और उनके साथियों ने नई मण्डलियों को स्थापित किया और हर मण्डली के लिए प्राचीन निकाय नियुक्त किया प्रेरितों के काम 14:23; तीतुस 1:5)। प्राचीन निकाय को एक ''परेसबुटेरिअन'', ''एक परिषद या प्राचीन मण्डल'' (1 तीमुथियुस 4:14) कहा जाता था।

पदाधिकारी व्यक्ति को ''प्राचीन''[1] कहा जाता था (प्रेरितों के काम 20:17; 1 पतरस 5:1); और कभी–कभी ''एक अधिदर्शक''[2] (तीतुस 1:7 पद्य 5 की तुलना करें) या ''एक चरवाहा''[3] (प्रेरितों के काम 20:17,28; फिलिप्पियों 1:1; 1 तीमुथियुस 3:21)।

मण्डलियों में प्राचीनों के लिए प्रयुक्त अन्य शब्द थेः ''प्राचीन या मार्गदर्शक''[4] (प्रेरितों के काम 15:22; इब्रानियों 13:7,17,24), ''मुखिया व्यक्ति''[5] (शासक, निदेशक, प्रबंधक) (रोमियों 12:8; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12; 1 तीमुथियुस 5:17) और ''घर प्रबंधक'' (शाब्दिकः अर्थशास्त्रि, प्रबंधक) 6 (तीतुस 1:7)।

नए नियम की अवधि के दौरान (ई. 30–97), पदः प्राचीन[7], अधिदर्शक[8], चरवाह[9] और वह पदाधिकारी व्यक्ति[10] (1 थिस्सलुनीकियों 5:12) या निदेशक[11] (1 तीमुथियुस 5:17) सभी एक और एक ही व्यक्ति के लिए दिखाते हैं किसी भी भेदभाव के (अधिनियमों 20:17,28; 1 पतरस 5:1–2), क्योंकि नया नियम केवल प्राचीनों की नियुक्ति की बात करता है और किसी भी अन्य प्रकार के अगुवे (अगुवों से ऊपर) की नहीं !

मण्डली का नेतृत्व प्राचीन निकाय के द्वारा होता था (मण्डल या प्राचीनों का परिषद)[12] (1 तीमुथियुस 4:14) । सभी प्राचीन बराबर थे, भले ही कुछ प्राचीनों के पास प्रचार करने और सिखाने का कार्य भी था (1 तीमुथियुस 5:17)। प्राचीनों ने कोई धार्मिक प्रशिक्षण कलिज या बाइबल विद्यालय में प्राप्त नहीं किया। वे सिर्फ मण्डली में सबसे परिपक्व विश्वासी थे और नेतृत्व करने के लिए बाइबिल की योग्यता और बाइबिल कार्यों के आधार पर नेतृत्व के लिए चुने गए थे।

हर एक मण्डली अन्य मण्डलियों से संगठनात्मक स्वतंत्र थी (डोटा नियमावली 03 परिशिष्ट 12, शब्द ''कलीसिया''[13] के अर्थ को देखें)।

---

[1] यूनानीः प्रेसबुटेरोस, हिन्दीः याजक, प्राचीन
[2] यूनानीः एपिस्कोपोस, हिन्दीः धर्माध्यक्ष, पर्यवेक्षक
[3] यूनानीः पोइमन, लैटिन और हिन्दीः पादरी, चरवाहा
[4] यूनानीः हैगोउमोनोस
[5] यूनानीः प्रोहिस्टेमेनोस
[6] यूनानीः ओइकोनोमोज
[7] यूनानीः प्रेसबुटेरोस, हिन्दीः याजक, प्राचीन
[8] यूनानीः एपिस्कोपोस, हिन्दीः धर्माध्यक्ष, पर्यवेक्षक
[9] यूनानीः पोइमनय लैटिनः पादरी और हिन्दीः पादरी, चरवाहा
[10] यूनानीः प्रोहिस्टेमीनोस हूमन
[11] यूनानीः प्रोहेस्टटेस परेसबुटेरोइ
[12] यूनानीः परेसबुटेरिअन
[13] यूनानीः एककलेसिया

(2) नया नियम किसी भी छाता संगठन (धर्मसभा या परिषद) की नियुक्ति नहीं सिखाता है।

यरूशलेम में मसीहों के महान सताव (प्रेरितों के काम 8:1–4) के बाद (लगभग ई. 33), विश्वासी विभिन्न देशों में फैल गए और सुसमाचार प्रचार किया। लोगों की एक बड़ी संख्या (ई. 44 से पहले) सीरिया में अन्ताकिया में यीशु मसीह में विश्वासी बन गए। यरूशलेम की मण्डली ने बरनबास को उनकी मदद करने के लिए भेजा । उसने तुर्की में तरसूस से पौलुस को अपनी मदद करने के लिए लिया (प्रेरितों के काम 11:25–27) (ई. 44–46)। अन्ताकिया में मण्डली की स्थापना इस सारे धर्म–प्रचार कार्य के परिणाम के रूप में हुई।

बाद में कई यहूदी मसीही यरूशलेम से अन्ताकिया को गए और इन अन्यजाति लोगों का पीछा करने की कोशिश की कि उन्हें मसीही बनने से पहले खतना करवाने के द्वारा यहूदी बनना पड़ेगा ! उन्होंने उन्हें सिखाया कि बचाये जाने से पहले उनका शारीरिक रूप से खतना होना चाहिए (प्रेरितों के काम 15:1)। अन्ताकिया की मण्डली ने बरनबास और पौलुस को इस समस्या का हल करने के लिए यरूशलेम में मण्डली को मिलने के लिए भेजा। दो स्थानीय मण्डलियों के बीच यह परामर्श धर्मसभा या सभी चर्चों का परिषद नहीं था, क्योंकि इस क्षेत्र में अन्य मण्डलियाँ (स्थानीय कलीसियाएँ) या पूरी दुनिया में मण्डलियाँ प्रतिनिधित्व नहीं कर रहीं थीं !

इसके अलावा, प्रेरितों के काम 15 केवल कैसे कलीसिया के इतिहास में एक समस्या हल किया गया था से संबंधित है, लेकिन यह नहीं सिखाता है कि कैसे एक समस्या का समाधान किया जाना चाहिए। यह एक अच्छा उदाहरण है कि कैसे दो अलग–अलग मसीही मण्डलियाँ एक साथ मिल कर पारस्परिक समस्या को हल कर सकती हैं, लेकिन बाइबिल यह नहीं सिखाती कि परमेश्वर ने किसी देश में सभी मौजूदा मण्डलियों (स्थानीय कलीसियाएँ) पर या दुनिया में अध्यक्षता (शासन) करने के लिए धर्मसभा या परिषद को नियुक्त किया है !

ख. धर्माध्यक्षों का ऐतिहासिक विकास (एक श्रेणीबद्ध अगुआई) (ई. 97–323)

1. ऐतिहासिक विशेषताएँ ।

कलीसिया के इतिहास की यह अवधि मसीही कलीसिया के अंदर कई संघर्षों द्वारा चिह्नित है। यह यहूदियों के धर्म के आंतरिक प्रभावों और अन्य जातियों के बुतपरस्त धर्मों और रोमी साम्राज्य की राजनीति के बाहरी प्रभावों और उसके बुतपरस्त दर्शन की वजह से था। अंत में, ''दुनिया भर'' मसीही कलीसिया विजयी रही थी। शब्द ''दुनिया भर'' (यूनानीः कैथोलिकोस) का मतलब ''सामान्य'', ''सार्वजनीन'' एक अकेली मण्डली (एक स्थानीय कलीसिया) के विपरीत है। ''दुनिया भर'' के लिए शब्द ''कैथोलिक'' इस ग्रीक शब्द से लिया गया है।

2. श्रेणीबद्ध अगवाई संरचना बनाने के लिए बाईबल पारिभाषिक के परिवर्तन ।

दूसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान ''इस्राएल राष्ट्र–राज्य के समारोहपूर्ण व्यवस्था के पुराने नियम की अगुवाई'' (''महायाजक'', ''याजक'' और ''लेवियों'' से मिलकर) एक महान्तशाही में बदल गई थी और ''नए नियम कलीसिया की अगुवाइ'' पर बिना अधिपत्र के अधिरोपित की ।

(1) पारम्परिक धर्माध्यक्षों की उत्पत्ति।

इस अवधि के दौरान, यूनानी शब्द ''एपिस्कोपोस'' (जिसका अर्थ है ''अधिदर्शक'') (हिन्दीः धर्माध्यक्ष) ने प्राचीनों के कार्यों में से एक को वर्णित नहीं किया, मण्डली में अगुवाई के कार्य, लेकिन सभी स्थानीय कलीसियाओं के प्राचीनों के ऊपर एक नया कार्य और पदवी का वर्णन करना शुरू किया। एक ही व्यक्ति के लिए शब्द ''धर्माध्यक्ष'' इस्तेमाल किया जाने लगा जो दुनिया भर में कलीसिया में एक प्रकार का नए नियम का महायाजक बन गया। स्थानीय मण्डली में अधिदर्शक या पर्यवेक्षक होने के बजाय, दुनिया भर में कलीसिया में वह ''अधिदर्शक'' या जिले का अगुवा, दुनिया भर में कलीसिया में सर्वोच्च पद बन गया। प्रेरितों की मृत्यु हो गई थी तो अधिदर्शकों को बिना बाईबल अधिपत्र के ''प्रेरितों के उत्तराधिकारियों'' के रूप में माना गया !

धीरे–धीरे यह माना जानने लगा कि केवल धर्माध्यक्ष बपतिस्मा, प्रभु भोज, शादी और अंतिम संस्कार सेवाओं और प्राचीनों के अभिषेक के रूप में मसीही कलीसिया की आधिकारिक सेवकाईयों का प्रदर्शन कर सकते थे। इस रीति से धर्माध्यक्षों ने खुद को कलीसिया के लिए परम आवश्यक बना दिया ! दूसरी और तीसरी शताब्दी ईस्वी के धर्माध्यक्षों ने किसी भी बाईबल के अधिकार या औचित्य के बिना खुद

को कलीसिया का अगुवा बना लिया ! धर्माध्यक्ष ने स्थानीय मण्डलियों या जनपदों के एक पूरे क्षेत्र का नेतृत्व किया। इस अवधि के समय में धर्माध्यक्ष खुद किसी के द्वारा अधीक्षण में नहीं थे।

(2) पारम्परिक याजकों (पादरियों) की उत्पत्ति।

इस अवधि के दौरान यूनानी शब्द ष्प्रेसबुटेरोसष (अर्थः प्राचीन) (हिन्दीः याजक); मसीह कलीसिया में मूल और केवल अगुवाई के कार्य को अब कोई वर्णित नहीं कर रहा था जो की प्राचीन निकाय में सांझी अगुवाई थी (प्रेरितों के काम 14:23; प्रेरितों के काम 20:17,28; 1 पतरस 5:2–4) । शब्द ''याजक'' एक ही व्यक्ति के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा जो एक प्रकार का एक मण्डली (पल्ली) में नए नियम का याजक बन गया । एक याजक ही अगुवा, चरवाहा या एक स्थानीय मण्डली या पल्ली का पादरी बन गया बजाय प्राचीन निकाय[14] बने ।

धीरे–धीरे यह माना जाने लग गया था कि केवल याजक ही स्थानीय मण्डली में उपदेश और बाद में संस्कार प्रदर्शन के रूप में कुछ सेवकाईयाँ प्रदर्शन कर सकते हैं। जनपदों के सभी याजकों की देखरेख धर्माध्यक्ष के द्वारा होती थी।

- **(3) पारम्परिक सेवक की उत्पत्ति।**

इस अवधि के दौरान यूनानी शब्द ''डियाकोनोस'' (अर्थः नौकर) (हिन्दीः उपयाजक) अब स्थानीय मण्डली में सेवा के मूल कार्य को वर्णित नहीं किया गया जो अन्य सेवकों के साथ साझा किया गया था (प्रेरितों के काम 6:3; फिलिप्पियों 1:1)। शब्द ''उपयाजक'' एक व्यक्ति के लिए के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा जो एक स्थानीय मण्डली में एक प्रकार से नए नियम का लेवी बन गया था। एक उपयाजक स्थानीय मण्डली या पल्ली के याजक (चरवाहा या पादरी) के सहायक या नौकर की तरह था। एक उपयाजक की देखरेख एक पुजारी (चरवाहा या पादरी) के द्वारा की जाती थी।

- **(4) लेकिन इन पारम्परिक कार्यों का कोई बाईबल आधार या अधिकार नहीं है।**

इस प्रकार नए नियम की अवधि के बाद, दूसरी और तीसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान, नेतृत्व की अवधारणा के ऐतिहासिक विकास ने मसीही कलीसिया में जगह ले ली । हालांकि, इस ऐतिहासिक विकास का कोई बाईबल आधार या अधिकार नहीं था !

इग्नाटियस (110 ई.) में अकेला प्रेरित पिता हुआ है जिसने राजतंत्रीय धर्माध्यक्ष (एक धर्माध्यक्ष का नियम) पर जोर दिया था । लेकिन उसने भी यह कभी नहीं कहा कि यह एक दिव्य संस्था है। वह केवल उनकी निजी राय थी। जेरोम (384 ई.) ने तीतुस 1:5 पर अपनी टिप्पणी में कहा कि एक ही धर्माध्यक्ष की सर्वोच्चता ''परमेश्वर के वास्तविक नियुक्ति के बजाए रिवाज के द्वारा से'' उठी, मसीही कलीसिया में विघटन को रोकने के लिए एक साधन के रूप में (वास्तव में हर किसी को कलीसिया में नियन्त्रित करने के लिए)।

लेकिन, न तो पुराना नियम है और न ही नया नियम मसीही कलीसिया में किसी पद की महान्तशाही सिखाता है ! और कलीसिया का इतिहास हमें सिखाता है कि एक नई कलीसिया के पद के रूप में धर्माध्यक्ष की नियुक्ति ने विघटन को नहीं रोका था ! वास्तव में कलीसिया में धर्माध्यक्षों के मध्य सर्वोच्च स्थान के लिए संघर्ष था (मत्ती 20:25–28 का उल्लंघन) जिससे अगुवों के बीच महान्तशाही आयी और कलीसिया में विघटन कई गुणा हो गया !

3. धर्माध्यक्ष और धर्माध्यक्षों की व्यवस्था ।

रोमी साम्राज्य में हर जगह और उससे परे भी, नई मसीही कलीसियाएँ अस्तित्व में आयीं। बाईबल सिखाती है कि मसीहों की केवल एक ''माँ'' है (अर्थात, स्वर्गीय यरूशलेम) (गलतियों 4:26)। लेकिन अगुओं की एक बडी संख्या तथाकथित ''मां कलीसियाएँ'' तथाकथित ''बेटी कलीसियाएँ'' की बात को जाने देना नहीं चाहते थे जिनकी स्थापना उन्होंने की थी। अतः स्वतंत्र मण्डली के प्राचीन के कार्य को एक नए पद में बदलकर (नामतःअधिदर्शक होते हुए) सभी स्थानीय मण्डलियों के सभी प्राचीनों के ऊपर मसीही कलीसिया में एक नया पद बनाया गया । नए पद या पदवी को ''धर्माध्यक्ष''[15] बुलाया गया था। धर्माध्यक्ष माँ कलीसिया के साथ ही साथ बेटी कलीसियाओं की देखरेख भी करता था। माँ कलीसिया अपने धर्माध्यक्ष के साथ सत्ता से जाना नहीं चाहती थी। वह शासन और नियंत्रण करना चाहती थी !

---

[14] यूनानीः परोइकिया, हिन्दीः पल्ली

[15] यूनानीः एपिस्कोपोसय हिन्दीः धर्माध्यक्ष

नए नियम में शब्द ''धर्माध्यक्ष'' ने केवल एक प्राचीन के पद के कार्य का वर्णन किया है। लेकिन दूसरी शताब्दी के दौरान शब्द ''धर्माध्यक्ष'' ने एक नया पद या पदवी का वर्णन करना शुरू किया।

नए नियम में प्राचीन निकाय[16] का कार्य स्वतंत्र मण्डली का प्रेक्षण[17] करना था। लेकिन दूसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान एक ही धर्माध्यक्ष एक विशेष क्षेत्र में सभी निर्भर मण्डलियों पर अधिदर्शक या पर्यवेक्षक बन गया !

केवल नए नियम कलीसिया में प्रेस्बायटेरिअल[18] नेतृत्व संरचना थी, अर्थात, हर मण्डली स्वतंत्र थी और पुरोहित निकाय या प्राचीनों के नेतृत्व में थीं (शब्द ''प्राचीन'' हमेशा बहुवचन में होता है)। लेकिन दूसरी और तीसरी शताब्दी के दौरान मसीही कलीसिया एपिस्कोपल[19] नेतृत्व संरचना में विकसित हुई, अर्थात, क्षेत्र में पिछली सभी स्वतंत्र मण्डलियों को निर्भर मण्डलियाँ बना दिया गया और एक धर्माध्यक्ष के अंतर्गत रखा गया (शब्द ''धर्माध्यक्ष'' विलक्षण है)। एक पुरोहितसंघ नेतृत्व संरचना से एक धर्माध्यक्षीय नेतृत्व संरचना का सटीक ऐतिहासिक विकास काफी स्पष्ट नहीं है। एक विशेष क्षेत्र में सभी निर्भर मण्डलियों ने धर्माध्यक्ष के नेतृत्व में एक बिशोपरिक[20] का गठन किया।

नए नियम में एक स्वतंत्र मण्डली का नेतृत्व करने के लिए केवल एक स्वतंत्र निकाय या एल्डर्स[21] का परिषद चुने गए थे। लेकिन दूसरी और तीसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान वहाँ एक बिशप[22] निर्भर मण्डलियों के एक पूरे क्षेत्र में अग्रणी था। यह धर्माध्यक्ष अन्य धर्माध्यक्षों से स्वतंत्र था। यह मसीही कलीसिया में श्रेणीबद्ध नेतृत्व संरचना की दिशा में पहला कदम था।

इस ऐतिहासिक विकास के लिए बाईबल का कोई अधिपत्र नहीं है! नया नियम श्रेणीबद्ध नेतृत्व संरचना के बारे में न कोई आज्ञा देता, सिखाता या यहां तक कि संबंधित भी नहीं है!

ग. पादरियों की सभाओं और परिषदों का ऐतिहासिक विकास (एक श्रेणीबद्ध सर्वनिहित संरचना) (ई.195–1870 के बाद)।

कलीसिया के इतिहास से पता चलता है कि कैसे मसीही कलीसिया में अगुवों ने चतुराई से खुद को उच्च नेतृत्व की स्थिति में पहुँचाया !

1. मण्डलियों की पादरियों की सभा (जलसा)[23]।

प्रेरितों के काम 15 अध्याय में दो अलग–अलग मण्डलियाँ खतने की समस्या पर चर्चा के लिए एक साथ इकट्ठे हुए। लेकिन यह जलसा एक विशेष क्षेत्र में सभी स्थानीय मण्डलियों का प्रतिनिधि जलसा नहीं था !

दूसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान हम पहली बार एशिया (आधुनिक तुर्की) के प्रांत में मसीही कलीसिया के प्रतिनिधि जलसों के बारे में पढ़ते हैं। पड़ोसी मण्डलियों के प्रतिनिधियों को एक धर्माध्यक्ष की पदच्युति या नियुक्ति (!) और मण्डलियों के झूठी शिक्षा (नई भविष्यवाणी की) रखने वाले सदस्यों के बहिष्कार के लिए आमंत्रित किया गया था।

ई. 195 में भी मसीही कलीसिया का इस तरह का जलसा गॉल (आधुनिक फ्रांस) में था जहां आयरेनेउस धर्माध्यक्ष था। इस जलसे के प्रतिनिधी प्राचीन, सेवक और मण्डलियों के सदस्य थे।

---

[16] यूनानीः प्रेसबुटेरिओन, हिन्दीः पूजास्थान, शब्द ''पुरोहित'' से लिया गया है जिसका अर्थ है ''प्राचीन''।
[17] यूनानीः एपिसकोपिओ
[18] शब्द ''प्रेस्बायटेरिअल'' शब्द ''पुरोहित'' से लिया गया है, जो ''एक प्राचीन'' के लिए यूनानी शब्द है।
[19] शब्द ''एपिस्कोपल'' शब्द ''एपि'' और ''सकोपिआ'' से लिया गया है, जो यूनानी शब्द हैं ''के ऊपर + देखना''
[20] एक ''धर्माध्यक्ष व्यवस्था'' है ''देखना'' या ''धर्माध्यक्ष या बाद में मुख्य धर्माध्यक्ष के लिए प्रतिबद्ध टुकड़ी''
[21] यूनानीः प्रेसबुटेरिओन
[22] यूनानीः एपिस्कोपोस
[23] यूनानीः ''ष्सुनोडोस'' का मतलब है साथी यात्री और प्रेम की एक ही सड़क पर यात्रा करने वाले लोगों के लिए आलंकारिक है (इफिसियों 9रू 1–2 से इग्नेशियस)।
[24] ईसाई विश्वकोश, कोक, कैम्पेन 1929

2. धर्माध्यक्षों की धर्मसभा (परिषद)।

तीसरी और चौथी शताब्दी ईस्वी के दौरान वेदांत धर्माध्यक्षता (कई अलग–अलग मण्डलियों पर एक ही धर्माध्यक्ष सत्तारूढ़) का विकास जारी रहा। इस अवधि के दौरान स्थानीय मण्डलियों के प्रतिनिधियों के जलसे (धर्मसभाएँ या परिषद) विशेष रूप से धर्माध्यक्षों की धर्मसभाओं या परिषदों (जलसों) में बदल गए।

रोम की धर्मसभा में प्रतिनिधि (ई. 254), अन्ताकिया (ई. 264, ई. 269) और एलविरा (ई. 305) धर्माध्यक्ष होने के अलावा, प्राचीन भी, सेवक और मण्डलियों के सदस्य भी थे। लेकिन अलेक्जेंड्रिया और इकुनियुम (ई. 235) के दूसरे धर्मसभा में प्रतिनिधि केवल धर्माध्यक्ष थे।

नाइसिआ की धर्मसभा में (ई. 325), जिसमें सेवक अभी भी भाग लेते थे, पहली धर्मसभा या परिषद थी जिसमे केवल धर्माध्यक्ष शामिल थे (!) और फैसला किया कि केवल धर्माध्यक्ष (!) मण्डलियों24 के सरकारी प्रतिनिधि हैं ! यही कारण है कि रोमन कैथोलिक कलीसिया ने नाइसिआ के परिषद को बना दिया ष्पहला परिषदष ! हालांकि धर्माध्यक्ष मूल रूप से मण्डलियों के सदस्यों द्वारा चुने जाते थे, चौथी शताब्दी ईस्वी से, मण्डलियों के सदस्यों को धर्मसभा (परिषदों) से बाहर निकाल दिया गया और निर्णय लेना धर्माध्यक्षों के लिए अनन्य विशेषाधिकार बन गया !

3. प्रांतीय धर्मसभाएँ (मुख्य धर्माध्यक्षों) के नेतृत्व में)।

चौथी सदी ईस्वी तक बड़े शहरों के धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) छोटे शहरों और कस्बों के धर्माध्यक्षों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण बन गया। इसके अलावा धर्मसभाएँ (परिषद), जो इन शहरों में आयोजित की गईं, प्रांतीय धर्मसभाएँ (परिषद) बन गईं। सबसे पहले एक बड़े शहर के धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) ने इन प्रांतीय धर्मसभाओं की अध्यक्षता एक विशेषाधिकार के रूप में की, लेकिन जल्द ही यह एक कानूनी अधिकार में बदल गया ! इस तरह से एक महानगर के धर्माध्यक्ष (बाद में: ''मुख्य धर्माध्यक्ष'') एक प्रांत में सभी धर्माध्यक्षों के प्रमुख बने।

उदाहरण के लिए, पश्चिम में रोम का धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) इटली में सभी धर्माध्यक्षों का प्रमुख बनाय अलेक्जेंड्रिया का धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) मिस्र, लीबिया और पैंटापोलिस में सभी धर्माध्यक्षों का मुखियाय कार्थेज का धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) पश्चिम अफ्रीका में सभी धर्माध्यक्षों का मुखियाय और लीओन का धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) गॉल (फ्रांस) में सभी बिशप के सिर। इसी तरह यरूशलेम के पूर्व बिशप (मुख्य धर्माध्यक्ष) में फिलिस्तीन में सभी बिशप के प्रमुख बनेय बिशप अन्ताकिया की (मुख्य धर्माध्यक्ष) सीरिया में सभी धर्माध्यक्षों का मुखियाय और कुरिन्थ का धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) ग्रीस में सभी धर्माध्यक्षों का मुखिया।

नाइसिआ 1 की धर्मसभा (परिषद) (ई. 325) ने निर्णय लिया कि यह बड़ी प्रांतीय धर्मसभाओं को एक साल में दो बार मुख्य धर्माध्यक्ष (बड़े शहर के धर्माध्यक्ष) के नेतृत्व में मिलना चाहिए और कि केवल धर्माध्यक्षों को मतदान का अधिकार था !

4. दुनियावी (दुनिया भर में) धर्मसभाएँ (परिषद)।

(1) 8 पूर्वी और 13 पश्चिमी परिषद।

धर्माध्यक्षों की बढती शक्ति ने सभी धर्मसभाओं (परिषदों) में उनके प्रभुत्व का नेतृत्व किया। दुनियावी धर्मसभाएँ (परिषद) प्रांतीय धर्मसभाएँ (परिषद) के समानांतर विकसित हुईं। 21 वीं शताब्दी तक 8 पूर्वी परिषद और 13 पश्चिमी परिषद, कुल 21 परिषद[25]। पहली 8 (पूर्वी) परिषदों को रोम (राजनीतिक) के सम्राट द्वारा एक साथ बुलाया गया:

(1) नाइसिआ 1 (325 ईस्वी)
(2) कांस्टेंटिनोपल 1 (381 ईस्वी)
(3) इफिसुस (431 ईस्वी)
(4) कैल्सेदोन (451 ईस्वी)
(5) कांस्टेंटिनोपल 2 (553 ईस्वी
(6) कांस्टेंटिनोपल 3 (680–681 ईस्वी)
(7) नाइसिआ 2 (787 ईस्वी)
(8) कांस्टेंटिनोपल 4 (869–870 ईस्वी)

(2) सुधारी हुईं तीन परिषद।

परिषदों में पोप के प्रभाव में वृद्धि हुई जब तक 1204 में जेहादियों द्वारा कांस्टेंटिनोपल की लूट पर पूर्वी और पश्चिमी कलीसिया के बीच फूट समापक बनी। तथाकथित सुधार परिषद थे:
पीसा की 16 वीं परिषद (1407)

---

[25] देखें ''www-catholicism-org/ रोमन कैथोलिक कलीसिया के दुनियावी परिषद''। इसमें सारी हठधर्मिता का सारांश है जो की तैयार किया गया था और झूठी शिक्षाऐं जिनकी इन परिषदों में निंदा की गई थी।

कॉन्सटांज की 17 वीं परिषद (1414–1418)[26]
बेसल की 18 वीं परिषद (1431–1443)।

ये सुधार परिषदों ने पोप (रोम के धर्माध्यक्ष) की शक्ति को तोड़ने और पोप के ऊपर धर्माध्यक्षों की परिषद को स्थापित करने कोशिश की। मसीही कलीसिया के लिए दुर्भाग्य पदक्रम सिद्धांत विजयी रहा था।

(3) सुधार–विरोधी परिषद और पहली वेटिकन परिषद।

सुधार जिसके द्वारा प्रोटेस्टेंट कलीसिया आयी की शुरुआत मार्टिन लूथर के साथ 1517 में शुरू हुई।

ट्रेंट (1545–1563) के पश्चिमी कलीसिया का 21वाँ परिषद (अर्थात रोमन कैथोलिक कलीसिया) एक सुधार–विरोधी परिषद था।

22 वाँ परिषद रोम (1869–1870) में वेटिकन में आयोजित किया गया था। रोमन कैथोलिक कलीसिया के सदस्यों के महान प्रभाव के तहत इस परिषद ने 18 जुलाई 1870 को ''पोप की अभ्रांतता'' का फैसला किया, एक सिद्धांत जिसे सब रोमन कैथोलिकों को विश्वास करना था ! भविष्य में परिषदों में लिए गए सभी निर्णय पोप द्वारा पुष्टि किए जाने थे !

घ. मुख्य धर्माध्यक्षों का ऐतिहासिक विकास, वयोवृद्ध और पोप (शीर्ष श्रेणीबद्ध) (ई 325 –600)।

परिषदों के भीतर धर्माध्यक्षों के बीच सत्ता संघर्ष था कि कौन सबसे ज्यादा और सबसे महत्वपूर्ण धर्माध्यक्ष है। इस तरह दुनिया में कैसरों के बीच अनात्मिक सत्ता संघर्ष कलीसिया में भी धर्माध्यक्षों के बीच अनात्मिक सत्ता संघर्ष बन गया !

1. ऐतिहासिक विशेषताऐं।

पहले दो शताब्दियों ईसवी के दौरान मसीही रोमी कैसर द्वारा सताए गए। लेकिन क्योंकि मसीहत बढ़ रही थी और बुतपरस्त धर्म जमीन खो रहे थे, कैसर कॉनस्टैनटिन ने ईस्वी 311 में मसीहों के लिए सुरक्षा का वादा किया। उसने और उसके सह–कैसरों ने ईस्वी 313 में मिलान के फतवे जारी किए और रोमी राज्य में मसीह धर्म को अन्य धर्मों के बराबर का दर्जा दिया। 306 और 323 के बीच दो ''ऑगस्टा'' की मृत्यु हो गई और तीन अन्य अगस्ता (मैक्सेंटियस, मैक्सिमिनस और लुसिनियस) हार गए थे। कॉनस्टैनटिन ने मसीहों के परमेश्वर को उसकी जीत के लिए जिम्मेदार माना और 323 में ''मसीही'' बन गया। हालांकि, उसने कभी कलीसिया की सभा में भाग नहीं लिया और उसके सिक्के मसीह को और उसके दो पक्षों पर अपराजेय सूर्य–देवता को दिखाते थे। ई. 323 से मसीह धर्म राजकीय धर्म बन गया और कॉनस्टैनटिन ने खुद को ''चर्च के विदेशी मामलों का धर्माध्यक्ष'' कहा। ई. 326 में उसने बाइजैन्टियम को मसीही विश्व साम्राज्य की राजधानी बनाया और उसका नाम बदल के कांस्टेंटिनोपल कर दिया (जो बाद में इस्तांबुल बन गया)। ई. 330 में वह राजनीतिक सत्ता के केंद्र को भी पश्चिम में रोम से पूर्व में कांस्टेंटिनोपल ले गया, वह भी शायद शक्तिशाली बुतपरस्त परिवारों के दबाव की वजह से।

चूंकि दुनिया कलीसिया में अग्रसर थी, तीसरी और चौथी शताब्दियों के दौरान मठवासी आदेश गृहस्थ–वर्ग और पादरियों के बीच खडे होने के लिए उभरे। जबकि साधारण मसीहों को परमेश्वर के नैतिक नियमों का पालन करना ही था, भिक्षुओं ने स्वेच्छा से खुद को ''संस्तुत चीजों'' जैसे उपवास और ब्रह्मचर्य से बाध्य कर लिया।

ई.450 तक पश्चिम में कुछ ही लोग यूनानी पढ़ सकते थे और ई. 600 तक पूर्व में कुछ ही लोग लैटिन में बोलते थे। राजनीतिक अखाड़े में दो शक्तिशाली साम्राज्य उभरेरू पूर्वी रोमी साम्राज्य कांस्टेंटिनोपल के साथ राजधानी के रूप में (ई. 476 तक) और राजधानी के रूप में रोम के साथ पश्चिमी रोमी साम्राज्य (ई. 1453 तक)। इन शताब्दियों में, पूर्व में यूनानी बोलती कलीसियाएँ और पश्चिम में लैटिन बोलती कलीसियाएँ एक दूसरे से अलग हो गए।

इस अवधि 325 से 600 ईस्वी के बीच तीन घटनाकर्मों ने ईसाई चर्च के भीतर जगह ले लीरू

- अध्यापन में मसीह सिद्धांत का विकास।
- आराधना सभाओं में मसीह समारोहों का बाह्यरूपन।
- नेतृत्व में मसीह पदानुक्रम का विकास।

---

[26] कॉन्सटांज का परिषद। ''क्रिस्टलिज्के एनसायक्लोपेडिए'' में पढ़ें इस परिषद में क्या हुआ, कोक कैम्पेन, 1925।

2. मुख्य धर्माध्यक्ष।

बड़े शहरों में रहते धर्माध्यक्ष को मुख्य धर्माध्यक्ष कहा जाता था। फिर मुख्य धर्माध्यक्षों ने उन मण्डलियों में जिन्हें यीशु मसीह के प्रेरितों ने स्थापित किया था और भी उच्च दर्जा प्राप्त किया। यह मुख्य धर्माध्यक्ष यरूशलेम के फिलिस्तीन, सीरिया में अन्ताकिया, तुर्की में इफिसुस, यूनान में कुरिन्थ, इटली में रोम, और मिस्र में अलेक्जेंड्रिया के शहरों में थे।

3. वयोवृद्ध।

नाइसिआ 1 की परिषद (ई. 325) ने रोम (पश्चिम में), अलेक्जेंड्रिया (दक्षिण में) और अन्ताकिया (पूर्व में) के धर्माध्यक्षों को अन्य धर्माध्यक्षों के ऊपर नियुक्त कर दिया और उन्हें ''वयोवृद्ध'' का शीर्षक दे दिया।

कांस्टेंटिनोपल 1 की परिषद (ई. 381) ने कांस्टेंटिनोपल के मुख्य धर्माध्यक्षों और इफिसुस की परिषद (ई. 431) ने यरूशलेम के मुख्य धर्माध्यक्षों को वयोवृद्ध की सूची में जोड़ा। इस प्रकार वहाँ पाँच वयोवृद्ध थेः रोम, अलेक्जेंड्रिया, अन्ताकिया, कांस्टेंटिनोपल और यरूशलेम में, कलीसिया में उच्चतम पदों पर ।

4. पोप।

(1) पोप।

धीरे–धीरे वहाँ दो वयोवृद्ध पूर्व–श्रेष्ठता के लिए प्रतिस्पर्धा कर थेरू रोम का वयोवृद्ध पश्चिम में और कांस्टेंटिनोपल का वयोवृद्ध पूर्व में। ई. 476 में पश्चिमी रोमी साम्राज्य के पतन के बाद, रोम के धर्माध्यक्ष शीर्षक 'वयोवृद्ध'' से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने मसीही कलीसिया में पूर्ण और सबसे महत्वपूर्ण पदवी के लिए निम्नलिखित तीन तर्क पर अपील से बोली लगाईः
उन्होंने मत्ती 16:18–19 को अपील किया, जिसका उन्होंने अनुवाद किया कि यीशु ने पतरस को प्रेरितों के बीच सर्वोच्च स्थान दिया । उन्होंने ऐतिहासिक तथ्यों से अपील की है कि दोनों प्रेरित पतरस और पौलूस रोम में रहते थे और काम किया।और उन्होंने कलीसिया की परंपरा पर अपील की है कि प्रेरित पतरस रोम का पहला प्रेरित था।

कांस्टेंटिनोपल में वयोवृद्ध शायद ही समयादेश और रोमी कैसर के खेलने की गेंद की तुलना में कभी अधिक थे। वे केवल राजनीतिक नेताओं के हाथ में एक उपकरण थे। इस प्रकार रोम वयोवृद्धों की पांच सीटों के रूप में न केवल वयोवृद्ध के बीच सबसे मानद पद पाता था (लैटिनः पृमाटुस ओनोरिस) लेकिन अंत में भी वयोवृद्धों के बीच सर्वोच्च पदवी (लैटिनः पृमाटुस ओरडिनीस) पाता था तथाकथित ईश्वरीय अधिकार के द्वारा, क्योंकि वे मत्ती 16:18–19 से सम्बंधित करते हैं। इस प्रकार राजनीति और धर्म के बीच सत्ता के संघर्ष में, पूर्व में कैसर जीता, लेकिन पश्चिम में वयोवृद्ध जीते !

2) राजतंत्रीय धर्माध्यक्षता।

रोम के धर्माध्यक्ष के रूप में पोप इनोसेंट 1 (401–417) ने अहंकार में दुनिया के सभी अन्य धर्माध्यक्षों की तुलना में अपने को उच्च अधिकारी होनें का खुद के लिए दावा किया। इस प्रकार रोमन कैथोलिक कलीसिया एक राजतंत्रीय धर्माध्यक्षता बन गया– धर्माध्यक्षों के महाविद्यालयएक की–एक अध्यक्षता में नेतृत्व , जिसमें कलीसिया में सबसे उच्च अधिकार रोम के धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष,वयोवृद्ध) के पास रहता है ।

रोम के धर्माध्यक्ष खुद को शीर्षक पिताजी (पोप) के साथ बुलाते थे, जिसका अर्थ है पिता । मूल रूप से सभी धर्माध्यक्षों को पापा के रूप में संबोधित किया जाता था, लेकिन अब इस शीर्षक का अकेले रोम के द्वारा दावा किया गया है। यीशु ने कहारू ष्पृथ्वी पर किसी को शपिताश नहीं बुलाना , क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, और वह स्वर्ग में हैष (मत्ती 23 2) राजतंत्रीय धर्माध्यक्षता।

रोम के धर्माध्यक्ष के रूप में पोप इनोसेंट 1 (401–417) ने अहंकार में दुनिया के सभी अन्य धर्माध्यक्षों की तुलना में अपने को उच्च अधिकारी होनें का खुद के लिए दावा किया। इस प्रकार रोमन कैथोलिक कलीसिया एक राजतंत्रीय धर्माध्यक्षता बन गया– धर्माध्यक्षों के महाविद्यालयएक की–एक अध्यक्षता में नेतृत्व , जिसमें कलीसिया में सबसे उच्च अधिकार रोम के धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष,वयोवृद्ध) के पास रहता है ।

रोम के धर्माध्यक्ष खुद को शीर्षक पिताजी (पोप) के साथ बुलाते थे, जिसका अर्थ है पिता । मूल रूप से सभी धर्माध्यक्षों को पापा के रूप में संबोधित किया जाता था, लेकिन अब इस शीर्षक का अकेले रोम के द्वारा दावा किया गया है। यीशु ने कहाः ''पृथ्वी पर किसी को ''पिता'' नहीं बुलाना , क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, और वह स्वर्ग में है'' (मत्ती 23:19) !

(3) प्रधान पादरी (उच्चतम याजक और उच्चतम शासक)।

• रोमन कैथोलिक कलीसिया का दावा है कि पोप के पास ''आध्यात्मिक और सांसारिक मामलों में सबसे अधिक अधिकार है।'' पोप ग्रेगरी 1 (ई 590–615) को पोप के पद की सांसारिक शक्ति (प्रधान पादरी) का संस्थापक कहा जाता है। पोप को केवल आध्यात्मिक मामलों में सर्वोच्च शक्ति के रूप में नहीं माना गया था, लेकिन सांसारिक मामलों में सर्वोच्च शक्ति के रूप में भी ! इस प्रकार पोप ने वह जगह ले ली जो केवल यीशु मसीह की थी !

हालांकि, यह दावा केवल यीशु मसीह के अंतर्गत आता है ! बाईबल कहती है, ''परमेश्वर ने यीशु मसीह को स्वर्गीय स्थानों में अपने दाहिने हाथ की तरफ बिठाया है, सभी नियम और अधिकार, सत्ता और प्रभुत्व, और हर शीर्षक जो दिया जा सकता है, न केवल वर्तमान

युग में ही लेकिन एक आने वाले के भी के ऊपर । और परमेश्वर ने उसके पैरों के नीचे सब बातों को रखा दिया है और उसे कलीसिया के लिए हर चीज का सिर होने को नियुक्त किया है'' (इफिसियों 1:20–22) !

• रोमन कैथोलिक कलीसिया का दावा है कि पोप ''पूरी मसीही कलीसिया का सार्वभौमिक धर्माध्यक्ष'' है।

केवल पहली वेटिकन परिषद से ही (1870) रोम के धर्माध्यक्ष (पोप) को ''पूरी मसीही कलीसिया के सार्वभौमिक धर्माध्यक्ष'' के रूप में माना जाता है। यह दावा सुधारी हुई कलीसियाओं के खिलाफ शुरू किया गया था ! इस प्रकार पोप ने भी धर्माध्यक्ष के रूप में यीशु की जगह ले ली। बाईबल कहती है, ''आप भटक रही भेड़ की तरह थे, परन्तु अब तुम आने प्राण के चरवाहे और अधिदर्शक (यूनानीः धर्माध्यक्ष) के पास मुड़ आये हो'' (1 पतरस 2:25) !

• रोमन कैथोलिक कलीसिया का दावा है कि पोप ''पूरी मसीही कलीसिया का चरवाहा है।''

पोप को भी ''पूरी मसीही कलीसिया का चरवाहा'' माना जाता है। इस प्रकार पोप ने मुख्य चरवाहे के रूप में यीशु मसीह की जगह ले ली। बाईबल कहती है, ''और जब मुख्य चरवाहा प्रगट होगा, तुम महिमा के ताज को पाओगे जो कभी ओझल नहीं होगा'' (1 पतरस 5:4; देखें यूहन्ना 10:16, इब्रानियों 13:20; 1 पतरस 2:25) !

• रोमन कैथोलिक कलीसिया का दावा है कि पोप ''पृथ्वी पर मसीह का प्रतिनिधि है।''

पोप को ''पृथ्वी पर मसीह का प्रतिनिधि'' भी माना जाता है। इस प्रकार पोप ने पृथ्वी पर यीशु मसीह के प्रतिनिधि के रूप में पवित्र आत्मा (यूनानीः पैराक्लेटोस) की जगह ले ली। यीशु कहते हैं, ''और मैं पिता से माँगूंगा और वह तुम्हें एक और सलाहकार (यूनानीः पैराक्लेटोस) हमेशा आप के साथ होने के लिए दे देंगे – सत्य का आत्मा। संसार उसे स्वीकार नहीं कर सकता और न ही उसे जानता है। लेकिन आप उसे जानते हैं, क्योंकि वह आप के साथ रहता है और आप में होगा'' (यूहन्ना 14:16–17,26; यूहन्ना 16:7–15) !

• रोमन कैथोलिक कलीसिया का दावा है ''रोमन कैथोलिक कलीसिया के बाहर कोई मोक्ष नहीं है''।

ऊपर दावों के आधार पर रोमन कैथोलिक कलीसिया का तर्क है कि रोमन कैथोलिक कलीसिया के बाहर मोक्ष संभव नहीं है। इस प्रकार रोमन कैथोलिक कलीसिया ने एकलौते मुक्तिदाता के रूप में भी यीशु मसीह की जगह ले ली।

यीशु कहते हैं, ''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं आ सकता है'' (यूहन्ना 14:6)। और प्रेरित कहते हैं, ''किसी अन्य में उद्धार नहीं मिलता, क्योंकि स्वर्ग के नीचे कोई अन्य नाम लोगों को नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हम बचाए जाएँ'' (प्रेरितों के काम 4:12) ! जब तक रोमन कैथोलिक कलीसिया यीशु मसीह, प्रेरितों और बाईबल के प्रति अनाज्ञाकारी रहती है, वह दुनिया में कभी अन्य मसीही कलीसियाओं को औपचारिक रूप से स्वीकार नहीं कर सकती !

सभी सच्ची मसीही कलीसियाएँ यीशु मसीह को पूरी मसीही कलीसिया का ''प्रभ'' (1 कुरिन्थियों 12:3), ''मुक्तिदाता'' (मत्ती 1:21) ''धर्माध्यक्ष'' और ''चरवाहा'' होने का अंगीकार करती हैं, कि पवित्र आत्मा पृथ्वी पर यीशु का प्रतिनिधि है और कि यीशु मसीह के बाहर कोई मोक्ष नहीं है !

ङ संप्रदाय का ऐतिहासिक विकास (पूर्वी रूढ़िवादी और पश्चिमी रोमन कैथोलिक कलीसियाओं के बीच विभाजन) (ई.600 – 1517)।

1. पूर्वी और पश्चिमी कलीसिया के बीच मनमुटाव।

मध्य युग 600–1517 तक रहा । पहली शताब्दी की इस अवधि के दौरान पश्चिमी लैटिन कलीसिया और पूर्वी यूनानी कलीसिया के बीच मनमुटाव विकसित हुआ। 1204 में आखिरकार इस मनमुटाव ने एक स्थायी फूट का नेतृत्व कियज्ञं

(1) रोम में प्रेरितों का दिखना।

पहली सदी में यीशु मसीह के प्रेरितों ने कई स्वतंत्र (अर्थात आत्म प्रचार, स्वावलंबी और स्वराज्य) मण्डलियों की स्थापना की थी।

हालांकि दूसरी से चौथी शताब्दी तक धर्माध्यक्ष और धर्माध्यक्षों के परिषदों के साथ नेतृत्व की पदानुक्रम व्यवस्था विकसित हुई। पूर्वी रोमी साम्राज्य में सभी धर्माध्यक्षों की समानता की एक मजबूत भावना थी, लेकिन पश्चिमी रोमी साम्राज्य में एक धर्माध्यक्ष एकलौता शासक बनना चाहता था। शुरुआत में पूर्वी धर्माध्यक्ष परिषदों में पश्चिमी धर्माध्यक्षों से अधिक सक्रिय थे। फिर भी पश्चिमी कलीसिया ने दुनियावी परिषदों के निर्णयों को स्वीकार कर लिया। पूर्वी धर्माध्यक्ष अधिक महाविद्यालय के धर्माध्यक्ष थे, जबकि रोम के धर्माध्यक्षों ने एक सम्राट के रूप में कार्य किया। पश्चिमी रोमी साम्राज्य में पोप (अर्थात, ''मुख्य धर्माध्यक्ष'' या ''पहला धर्माध्यक्ष'') ने ''सभी धर्माध्यक्षों का धर्माध्यक्ष'' होने का दावा किया। इस प्रकार रोम को ''मुख्य धर्माध्य'' या ''उच्चतम धर्माध्यक्ष''[27] की गद्दी के रूप में माना जाने लगा क्योंकि प्रेरित पतरस और प्रेरित पौलुस दोनों ने रोम में परिश्रम किया था।

(2) पूर्व में सम्राट की राजशाही।

पृथ्वी पर बाइजैन्टियम (अर्थात् कांस्टेंटिनोपल या इस्तांबुल) में रोमी सम्राट की राजशाही को स्वर्ग में परमेश्वर की राजशाही के ''नमूने'' (''छवि'' के लिए यूनानी शब्द) के रूप में माना जाता था। पूर्वी रोमी साम्राज्य में सम्राट को पृथ्वी पर परमेश्वर का प्रतिनिधि होने के लिए माना जाता था। पूर्वी कलीसियाओं के लोग गिरजे में मसीह (स्वर्ग में राजा) के दर्शाये नमूने और महल में जीवित सम्राट (पृथ्वी पर सम्राट) के नमूने के सामने दण्डवत करते थे।

पूर्व में पूर्वी कलीसिया और रोमी राज्य के बीच अलगाव की कोई कठोर रेखा नहीं थी। कलीसिया और राज्य को एक जीव के रूप में माना गया। पूर्वी कलीसिया (अपने धर्माध्यक्ष या वयोवृद्ध के माध्यम से) लोगों की आत्माओं की परवाह करती थी और बाइजैन्टियम में रोमी सम्राट (पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में) लोगों के शवों की परवाह करता था । रोमी सम्राट ने परिषदों को संभोदित किया, धर्माध्यक्षों ने फैसला किया की सच्चा विश्वास क्या है जिसे लोगों को प्रतीति करनी थी और रोमी सम्राट परिषद के फरमान भी जारी किया करता था !

(3) पश्चिम में पोप के निरंकुश कार्य ।

पश्चिम में जंगली लोगों के हमलों ने पश्चिमी रोमी साम्राज्य को तोड़ दिया था और इसने केवल पश्चिमी कलीसिया के निरंकुश ढांचे को मजबूत करने के लिए कार्य किया। क्योंकि सम्राट रोम से राज नहीं कर रहा था, रोम में पोप ने आध्यात्मिक के साथ–साथ राजनीतिक दायरे में अधिकार ग्रहण किया।

मध्य युग के दौरान कई युरोपीय जनजातियाँ पश्चिमी कलीसिया में जोड़ दी गयीं।

• एक तरफ, जनसंख्या एक राज्य कलीसिया चाहती थी – अर्थात, एक राज्य में एक ही कलीसिया।

• दूसरी तरफ, पोप कलीसिया राज्य चाहता था – अर्थात, संसार में एक ही राज्य एक ही रोम की कलीसिया के शासन के निचे। पोप कलीसिया और राज्य दोनों पर शासन करना चाहते थे। लेकिन पश्चिम में पोप को अभी तक पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में माना नहीं गया था ! तो वहाँ एक हाथ पर राजनीतिक राज्यों के राज–वंश्यों और दूसरे हाथ पर पश्चिमी कलीसिया के पोप के बीच एक निरंतर संघर्ष था।

(4) पश्चिम में पादरी (कार्यालय) और गृहस्थ–वर्ग (साधारण विश्वासी)।

पूर्व में कई जब्री मसीह शिक्षित पुरुष होने के साथ–साथ जब्री धर्मशास्त्री भी थे। उन्होंने धर्मशास्त्र पढ़ा, लिखा और पढ़ाया। लेकिन पश्चिम में जंगली हमलों का परिणाम यह तथ्य था कि पश्चिम में ज्यादातर जब्री लोग पढ़ या लिख नहीं सकते थे। यही कारण है कि वे धार्मिक मुद्दों को समझ नहीं सके। पश्चिम में शिक्षा और धर्मशास्त्र केवल पश्चिमी कलीसिया में पादरियों के लिए परिरक्षित वस्तु बन गए। पश्चिमी कलीसिया में शिक्षित पादरियों और अनपढ़ गृहस्थ–वर्ग के बीच एक तीखा विभाजन विकसित हो गयज्ञं

(5) पूर्व और पश्चिम में धार्मिक विकास।

पूर्वी यूनानी कलीसिया, अधिक काल्पनिक बन गई थी, जबकि पश्चिमी लैटिन कलीसिया और अधिक व्यावहारिक हो गई। पूर्वी यूनानी कलीसिया ने धर्म शिक्षा को आराधना और मरणोत्तर गित के संदर्भ में समझा, जबकि पश्चिमी लैटिन कलीसिया रोमी कानून से निकले कानूनी विचार से प्रभावित थी।

जब त्रिएकता के बारे में सोच रहे थे, पूर्वी यूनानी कलीसिया ने ईश्वरत्व या ईश्वरीय स्वभाव[28] के तीन–भागों से शुरू किया। जबकि पश्चिमी रोमी कलीसिया ने ईश्वरत्व की एकता के साथ शुरू किया।

---

[27] यूनानीः आर्ची–एपिस्कोपोस। ''मुख्य धर्माध्यक्ष की नजर'' एक मुख्य धर्माध्यक्ष की धर्माध्यक्ष व्यवस्था है, कोई जो सभी धर्माध्यक्षों ऊपर नियुक्त किया गया है।

[28] यूनानीः हूपोस्टासिस

जब क्रूस पर चढ़ाये जाने पर परिलक्षित किया गया, पूर्वी यूनानी कलीसिया ने मुख्य रूप से मसीह के बारे में विजेता (पुनर्जीवित) के रूप में सोचा, जबकि पश्चिमी रोमी कलीसिया ने मुख्य रूप से मसीह के बारे में शिकार (क्रूस पर चढ़ाया गया) के रूप में सोचा।

पूर्वी यूनानी कलीसिया ने देवत्वारोपण के बारे ज्यादा बात की (सर्वशक्तिमान ईश्वर के रूप में मसीह) (ग्रीकः पेंटाक्रेटर), जबकि पश्चिमी रोमी कलीसिया ने छुटकारे की अधिक बात की (मुक्तिदाता के रूप में मसीह) ।

जबकि सिद्धांत और जीवन के संबंध में, पूर्वी कलीसिया ने सैद्धांतिक निर्णय सभी धर्माध्यक्षों के परिषदों के अधीन किए, पश्चिमी कलीसिया ने उनके पोप की अचूकता को अपने विशेषाधिकार के रूप में माना।

(6) पश्चिमी पोप ने सार्वभौमिक सामर्थ का दावा किया।

पश्चिमी कलीसिया के केंद्रीकृत और राजतंत्रीय संरचना ने पहले पोप की पश्चिम में पूर्ण शक्ति का दावा करने के लिए नेतृत्व किया। लेकिन जब पश्चिम में पोप ने पूर्व में भी पूर्ण शक्ति का दावा करना शुरू किया, मुसीबत पैदा होना बाध्य हो गया।

(7) पश्चिमी पोप के कुछ दावे ।

• पोप इनोसेंट 1 (401–417) खुद के लिए दुनिया के सभी अन्य धर्माध्यक्षों की तुलना में एक उच्च अधिकार का दावा किया और शीर्षक ''पापा'' (पोप) का दावा केवल खुद के लिए किया।

• पोप ग्रेगरी 1 (590–615) ने दावा किया है कि पोप के पास न केवल आध्यात्मिक मामलों में सबसे अधिक अधिकार है, लेकिन सांसारिक मामलों में भी सबसे अधिक अधिकार है।

• पोप निकोलस 1 (858–867) रोम के धार्मिक प्रधान की ताकत को अन्य चार धार्मिक प्रधानों और कलीसिया में अन्य उच्च धर्माध्यक्षों और कलीसिया के बाहर सभी कैसर की ताकत से ऊँचा उठाया।

• पोप निकोलस 2 (1059) ''मेख्यों'' के लिए नए पोप का चुनाव करने का अधिकार प्रत्यायोजित किया, जिसमे 6 धर्माध्यक्ष, 50 पादरी और 14 सेवकों का महाविद्यालय शामिल था, सभी रोम के शहर में रहने वाले !

• पोप ग्रेगरी 7 (1073–1085) दुनिया के साथ कलीसिया के विसंघटन को लागू कियाय कलीसिया पर मठवासीपन के आदर्शों को लागू कियाय धर्माध्यक्षों और उच्च पदवी के मौजूदा ब्रह्मचारी को कलीसिया की सभी पदवियों पर लागू किया। विवाहित पादरियों को निकाल दिया गया। पादरी अब जब्री नेताओं सांसारिक लोगों द्वारा नियुक्त नहीं किये जाते थे। उसने कलीसिया –राज्य के माध्यम से दुनिया भर में एक धर्मतन्त्र स्थापित करने की कोशिश की, जिसमें पोप (सूर्य का प्रतीक) ने पृथ्वी पर मसीह की जगह ले ली और सभी राजाओं (चंद्रमा का प्रतीक) पर शासन किया।

• पोप इनोसेंट 3 (1215) परिभाषित किया ''पूर्व कैथेड्रा'': अपनी पवित्र कुर्सी से पोप का एःलान निर्णय सुनाना अचूक नया सिद्धांत बन गया। उसने बयान की पुष्टि की, ''विश्वासियों की सिर्फ एकमात्र सार्वभौमिक कलीसिया है, जिसके बहार कोई बिल्कुल भी बचा नहीं है।''

• पोप इनोसेंट 4 (1243–1254) दुनिया के सभी धर्माध्यक्षों के ऊपर (रोमी) मेख्यों को रखा गया और मानसेवी की निशानी के तौर पर लाल टोपी पहनते थे।

• पोप बोनिफेस 8 (1294–1303) पोप का आदेश पत्र जारी किया जोउनम सैन्कटम (1302) कहलाया। उसमे यह कहा गया कि सांसारिक तलवार आध्यात्मिक तलवार के अधीन है और सांसारिक शक्ति आध्यात्मिक शक्ति के अधीन है। उसने यह भी घोषणा की कि पोप की पूर्ण शक्ति में विश्वास मुक्ति के लिए जरूरी है !

(8) पोप की शक्ति को सीमित करने के लिए परिषदें असफल रहीं ।

पश्चिमी कलीसिया के पोप का प्रभाव अधिक से अधिक हो गया जब तक ईस्वी 1204 में पूर्वी और पश्चिमी कलीसिया के बीच विभाजन पश्चिमी जेहादियों द्वारा कांस्टेंटिनोपल के सैन्य बर्खास्त के साथ अंतिम बन गया।

पश्चिमी परिषद ''दुनियावी'' नहीं रहे (दुनिया–भर), क्योंकि लियोन्स 2 (ई. 1274) की 14 वीं परिषद से पश्चिमी रोमी कैथोलिक कलीसिया पूर्वी रूढ़िवादी कलीसियाओं को परिषदों में शामिल करने में विफल रही।

तथाकथित सुधार परिषदें निम्नलिखित थीरू मान्यता न प्राप्त पीसा की परिषद (ई 1409), कॉन्सटांज (विएना) (ई.1414–1418) की 16 वीं परिषद और फ्लोरेंस की 17 वीं परिषद (बेसल) (ई. 1431–1443) । सुधार परिषदों ने पोप की शक्ति को तोड़ने और पोप (रोम के धर्माध्यक्ष) के ऊपर धर्माध्यक्षों की परिषद स्थापित करने के लिए कोशिश की। दुर्भाग्य से यह विफल रहा और श्रेणीबद्ध सिद्धांत ने ऊपरी हाथ हासिल किया ।

(9) पोप का पूर्ण अधिकार ।

सुधार जिसका परिणाम प्रतिवाद करनेवाली मण्डलियाँ हुईं ईस्वी 1517 में मार्टिन लूथर के साथ जर्मनी में शुरू हुआ। प्रतिवाद करनेवाले मानते हैं कि केवल बाईबल का सही ढंग से अनुवाद ही अभ्रांत है।

ट्रेंट (ई. 1545–1549) की 19 वीं परिषद एक सुधार–विरोधी परिषद थी। इसने लूथर, काल्विन, और दूसरों के विधर्मों की निंदा की। इसने परम प्रसाद, मास के पवित्र बलिदान, संस्कारों (विशेष रूप से बपतिस्मा और पवित्र आदेश) और शादी, यातना, भोग और छवियों के उपयोग की शिक्षाओं पर फरमान जारी किए।

रोम (ई. 1869–1870) में वेटिकन 1 की 20 वीं परिषद ने 18 वीं जुलाई 1870 को रोमी कैथोलिक कलीसिया के सदस्यों के महान प्रभाव के तहत ''पोप की अभ्रांतता'' की घोषणा की और परिषदों के सभी लिए निर्णयों को पोप के अनुमोदन के अधीन कर दिया !

पोप की अभ्रांतता एक हठधर्मिता थी जिसमें रोमी कैथोलिक कलीसिया के सभी सदस्यों को विश्वास करना ही था ! पूर्वी कलीसिया में वयोवृद्ध (उच्चतम धर्माध्यक्ष) ने दृढ़ किया कि विश्वास (मसीही सिद्धांत और जीवन) के मामलों में अंतिम निर्णय मसीही कलीसिया के सभी धर्माध्यक्षों का प्रतिनिधित्व करते हुए परिषद के साथ ही होगा ।

वेटिकन परिषद (1870) से रोमी कैथोलिक कलीसिया के सदस्य पोप को ''चरवाहे और पूरी मसीही कलीसिया का सार्वभौमिक धर्माध्यक्ष'' के रूप में सम्मान देते हैं , एक घोषणा है विरोध में उसके जो प्रेरित पतरस बाईबल में सिखाता है, नामतः, कि कलीसिया का यीशु मसीह ''चरवाह (पादरी) और अधिदर्शक (धर्माध्यक्ष)'' है (1 पतरस 2:25; 1 पतरस 5:4) ! इस प्रकार, पोप ने यीशु मसीह की जगह ले ली !

रोमी कैथोलिक कलीसिया भी पोप को ''पृथ्वी पर मसीह के प्रतिनिधि'' के रूप में मानती है। लेकिन यह बयान उल्लंघन भी करता है उसका जो यीशु मसीह स्वयं पवित्र आत्मा के बारे में कहते हैं, ''मैं तुम्हे अनाथों के रूप में नहीं छोडूँगा; मैं तुम्हारे पास आऊँगा।'' यह दूसरा सलाहकार (प्रतिनिधि) हमेशा तुम्हारे साथ होगा और तुम्हारे अन्दर होगा। यह तुम्हें वह सब बातें याद दिलायेगा जो मेने तुमसे कही हैं (यूहन्ना 14:16–17,26)। मैं यह सलाहकार को तुम्हारे पास भेजूँगा। वह सब सत्य में तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा । वह मेरी महिमा करेगा । वह उसमे से लेगा जो मेरा है और उसे आपको ज्ञात करेगा (यूहन्ना 14:16–17,26, यूहन्ना 16:7–15) ! इस प्रकार, पोप ने पवित्र आत्मा की जगह भी ले ली ।

इस कारणवश रोमी कैथोलिक चर्च सिखाता है कि ''रोमी कैथोलिक कलीसिया के बाहर कोई मोक्ष संभव नहीं है''। इस प्रकार,रोमी कैथोलिक कलीसिया ने यीशु मसीह की केवल मुक्तिदाता के रूप में की जगह भी ले ली। यह बयान उसके विपरीत है जो यीशु कहते हैं, ''मैं मार्ग हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं आ सकता''(यूहन्ना 14:6)। यह उसके भी विपरीत है जो यीशु मसीह के प्रेरित कहते हैं, ''उद्धार किसी और में नहीं मिलता, क्योंकि स्वर्ग के नीचे और कोई दूसरा नाम लोगों को नहीं दिया गया जिसके द्वारा हमें जरुर बचना चाहिए'' (प्रेरितों के काम 4:12) !

यही कारण है कि रोमी कैथोलिक कलीसिया औपचारिक रूप से दुनिया में अन्य मसीही कलीसियाओं को मान्यता नहीं देता है ! फिर भी रोमी कैथोलिक कलीसिया सभी मसीही कलीसियाओं को फिर से रोमी कैथोलिक कलीसिया के नियंत्रण में लाने के लिए कड़ी कोशिश करती है।

(10) मत्ती 16:18–19।

• यीशु ने प्रेरित पतरस को कभी ''उच्चतम पदवी'' नहीं दिया। यह मत्ती 16:18–19 में लिखे यीशु मसीह के शब्दों का खंडन करेगी कि ''जो कोई भी तुम में से बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा दास हो, और जो भी पहला होना चाहे, तुम्हारा गुलाम होना चाहिए'' (मत्ती 20: 25–28)!

• और यीशु मसीह के प्रेरितों के पास कोई उत्तराधिकारी नहीं है । यीशु ने प्रेरित पतरस का उपयोग किया था यहूदियों के बीच पहली ऐतिहासिक मण्डली स्थापित करने के लिए (प्रेरितों के काम 2:14–42), अर्ध–यहूदियों के बीच पहली ऐतिहासिक मण्डली (सामरी लोग, प्रेरितों के काम 8:4–17) और पहली ऐतिहासिक मण्डली गैर–यहूदियों के बीच (अन्यजाति, प्रेरितों के काम 10:9–48)। इस प्रकार उसने मत्ती 16:18–19, मत्ती 18:18 और प्रेरितों के काम 1:8 में बयानों को पूरा किया ।

• मत्ती 16:18–19 पतरस के पोप के रूप में होने की बात नहीं करता, लेकिन यीशु मसीह के प्रेरितों को मसीही कलीसिया की

ऐतिहासिक नींव के रूप में (देखें इफिसियों 2:20 और प्रकाशितवाक्य 21:14)। एक ऐतिहासिक नींव के ''उत्तराधिकारी'' नहीं हो सकते । यीशु मसीह के प्रेरितों के कोई ''उत्तराधिकारी'' नहीं थे, क्योंकि एक भी व्यक्ति अर्हता प्राप्त नहीं करेगा ! बाईबल के अनुसार यीशु मसीह का प्रेरितों को यीशु मसीह के जीवन, विशेष रूप से मृत्यु और जी उठने की आंख और कान गवाही बनना जरुरी है (प्रेरितों के काम 1:21–22) और वह व्यक्तिगत रीति से चुना, बुलाया, प्रशिक्षित और यीशु के द्वारा बाहर भेजा हुआ होना चाहिए (मरकुस 3:13–14; लूका 6:13, यूहन्ना 20:21, प्रेरितों के काम 26:15–18; 1 कुरिन्थियों 9:1) !

(11) सच्ची मसीही कलीसिया केवल यीशु मसीह को दुनिया भर में कलीसिया के प्रमुख के रूप में अंगीकार करती है।

सभी सच्ची मसीही मण्डलियाँ यीशु मसीह को चरवाहा या पासबान[29] और अधिदर्शक या पृथ्वी पर पूरी मसीही कलीसिया का धर्माध्यक्ष[30] के रूप में अंगीकार करतीं हैं (यूहन्ना 10:16; इब्रानियों 13:20; 1 पतरस 2:25; 1 पतरस 5:4) और वे पवित्र आत्मा को पृथ्वी पर यीशु मसीह के प्रतिनिधि[31] के रूप में अंगीकार करतीं हैं (यूहन्ना 14:16–17,26, यूहन्ना 16:7–15) ! ना कोई पोप और ना ही आज की कलीसियाओं के अगुवों द्वारा दावा किए कोई शीर्षक (उदाहरण के लिए ''प्रेरित'', ''नबी'', ''धर्माध्यक्ष'', ''याजक'', ''पादरी'', ''आदरणीय'', आदि) यीशु मसीह की इस पदवी को ले सकते हैं !

2. "फिलिओक" मुद्दा।

नायसिन–कॉन्स्टैण्टिनोपॉलिटन पंथ (325 और 381) मूल रूप से पढ़ते हैं, "मैं प्रतीति करता हूँ कि ... पवित्र आत्मा, प्रभु, जीवन देने वाला, जो पिता से बढ़ता है, जिसकी पिता और पुत्र के साथ मिलकर आराधना की जाती है और मिलकर महिमा होती है"। लगता है इसने अरियसवाद (जिसने मसीह के ईश्वरीय स्वाभाव पर हमला किया) के खिलाफ रक्षा के रूप में स्पेन में जन्म लिया था (रोमियों 8:9–10; 1 पतरस 1:11)।

पश्चिमी लैटिन कलीसिया ने टोलेडो के परिषद के दौरान (589), शब्द जोड़े "और पुत्र की ओर से" (लैटिन में फिलिओक) पंथ करने के लिए कि अब इसे पढ़ते है, "मुझे विश्वास है ... पवित्र आत्मा, प्रभु, जीवन देने वाला, जो पिता से और बेटे से आया में" । यह जोड़ फ्रांस और जर्मनी में फैलाया, शारलेमेन द्वारा स्वागत हुआ और फ्रैंकफर्ट की परिषद (794)में अपनाया गया, एक अर्द्ध–मूर्ति परिषद में । शारलेमेन की अदालत में लेखकों ने फिलिओक को विवाद के मुद्दे में बनाया और पूर्वी यूनानी कलीसिया पर विधर्म का आरोप लगाया। 1054 में पश्चिमी मेख्य हम्बर्ट ने कांस्टेंटिनोपल में हागिया सोफिया की वेदी पर बहिष्कार का एक बुल (पोप की मोहर लगा खुला पत्र) रखा, लेकिन इसे खारिज कर दिया गया था। इस घटना ने पूर्वी यूनानी कलीसिया और पश्चिमी लैटिन (रोमी) कलीसिया के बीच फूट की शुरुआत की।

1109 में कांस्टेंटिनोपल के पूर्वी धर्म प्रधान सेर्गिअस ने डिप्टीच्स में से पश्चिमी पोप सेर्गिअस 4 का नाम निकाल दिया, जो की सभी धर्म प्रधानों के नाम की सूची थी, जीवित और मृत, जिनको "रूढ़िवादी" की मान्यता प्राप्त थी। प्रत्येक धर्म प्रधान ऐसी सूची रखता था । तकनीकी तौर पर, रोम की पश्चिमी कलीसिया और कांस्टेंटिनोपल की पूर्वी कलीसिया ऐक्य से बाहर थीं ।

3. धर्मयुद्ध।

धर्मयुद्ध (1096–1270) "पवित्र युद्ध" के रूप में इस्लामी फातिमियों और एक हाथ पर सेल्युक्स के द्वारा फिलिस्तीन में मसीहों और तीर्थयात्रियों पर दमन और उत्पीड़न और दूसरी ओर यरूशलेम को मुक्त करने के लिए पिआचेंजा और क्लेरमोंट (1095) में बैठकों में पोप अर्बन 2 की बुलाहट (अत्यंत गैर–मसीह) के लिए एक प्रतिक्रिया थी।

मसीहों को याद रखना चाहिए कि पवित्र युद्ध यीशु मसीह की शिक्षाओं और बाईबल (मत्ती 5:38–48) के पूरी तरह से खिलाफ हैं !

पश्चिमी लैटिन कलीसिया से धर्मयोद्धाओं ने 1098 में तुर्कों से अन्ताकिया पर कब्जा ले लिया, 1099 में यरूशलेम और पश्चिमी लैटिन धर्म प्रधानों की स्थापना की। 1187 तक यरूशलेम में एक पूर्वी यूनानी धर्म प्रधान और एकर में एक पश्चिमी लैटिन धर्म प्रधान था। दो प्रतिद्वंद्वी धर्माध्यक्ष एक ही सिंहासन का दावा करते थे और दो (तथाकथित "मसीही") समुदायों (पूर्वी और पश्चिमी) ने घृणा और कड़वाहट की आत्मा का परिचय दिया।

---

[29] यूनानी: पोईमन
[30] यूनानी: एपिस्कोपोस
[31] यूनानी: पैराक्लेटोस

पूर्वी बीजान्टिन निवासियों ने कांस्टेंटिनोपल 1182.में कई पश्चिमी लैटिन निवासियों की हत्या की। पश्चिमी धर्मयोद्धाओं ने जवाब दिया और 1204 में कांस्टेंटिनोपल को बर्खास्त कर दिया है और इसने पूरब में रूढ़िवादी कलीसिया और पश्चिम रोमी कलीसिया के बीच निश्चित विभाजन या फूट डाल दी ।

4. पूर्वी और पश्चिमी मसीही समुदायों ।

(1) वयोवृद्ध ।

रोम और कांस्टेंटिनोपल के वयोवृद्ध बीच प्रतिद्वंद्विता ने अंत में संसार भर[32] की मसीही कलीसिया में पहले महान विभाजन का नेतृत्व किया। पूर्व में मसीही कलीसिया में कई स्वतंत्र रूढ़िवादी कलीसियाएँ (संप्रदाय) शामिल थे, प्रत्येक अपने वयोवृद्ध के साथ । पश्चिम में मसीही कलीसिया को रोमी कैथोलिक कलीसिया कहा जाता था और रोम का पोप उनका मुखिया था। रूढ़िवादी कलीसियाओं के वयोवृद्ध और रोम का पोप अब अपने अधीन सभी धर्माध्यक्षों पर प्रभुता करते थे ।

(2) मुख्य धर्माध्यक्ष ।

बाद में वहां पश्चिम में इतने सारे धर्माध्यक्ष थे कि धर्माध्यक्षों और पोप के बीच अगुवों की एक और परत बन गई, नामतः, मुख्य धर्माध्यक्ष (शाब्दिकः पहले धर्माध्यक्ष)। एक मुख्य धर्माध्यक्ष अपने प्रांत (देश) में सभी धर्माध्यक्षों की अध्यक्षता करता था । पश्चिम और पूर्व में श्रेणीबद्ध नेतृत्व प्रणाली अंत में अपने मौजूदा स्वरूप पर पहुँच गई थी ।

(3) कलीसिया का पापी इतिहास ।

मसीहों को याद रखना चाहिए कि यह ऐतिहासिक विकास अनात्मिक कलीसिया के अगुवों द्वारा बनाया गया कलीसिया का पापी इतिहास था और जिसके पास कोई बाईबल का अधिकार या औचित्य नहीं है ! मसीही जो ''उससे आगे नहीं जाते जो लिखा है'' बाइबिल में (1 कुरिन्थियों 4:6) पश्चिमी रोमी कैथोलिक कलीसिया में और साथ ही पूर्वी रूढ़िवादी कलीसिया में नेतृत्व के इस ऐतिहासिक विकास को अस्वीकार करते हैं ।

च. संप्रदायों के सतत विकास (कट्टर सुधार) (ईसवी 1517)।

1. सुधार के अग्रणी ।

(1) जॉन वीक्लिफ (वायक्लिफ्फे) (1324–1384)।

वह इंग्लैंड में ऑक्सफोर्ड और लुटरवॉर्थ में रहते थे। उन्होंने धर्मशास्त्र में एक डॉक्टर था। उन्होंने खुले तौर पर पोप की ताकत के दुरुपयोग का विरोध किया, लगभग 1381 में लैटिन वुल्गेट से अंग्रेजी में बाईबल का अनुवाद किया और अवशेष, छवियों, भोग के पत्र के इस्तेमाल,और मास के विरुद्ध और विशेष रूप से तत्व परिवर्तन के सिद्धांत के विरुद्ध, अंगीकार के विरुद्ध, पुरोहिताई, मठ जीवन और रोमी कैथोलिक कलीसिया की महान्तशाही के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। कॉन्सटांज की परिषद (1415) में निन्दित किए जाने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई। 1417 में उनकी हड्डियों को खोदा और जला दिया (क्योंकि विधर्मियों को जलाया गया था) !

(2) जोहानस हस (1369–1415)।

वे बोहेमिया (पोलैंड) में रहते थे और रोमी कैथोलिक कलीसिया के खिलाफ वीक्लिफ के शोध करे से प्रभावित थे । उन्होंने रोमी कैथोलिक कलीसिया के भीतर हनन के खिलाफ लड़ाई लड़ी। प्राग में उनके शोध करे की निंदा की गई और 1415 में कॉन्सटांज की परिषद के दौरान उनकी निंदा हुई और जला दिया गए थे ।

2. मसीही कलीसिया में दूसरा महान विभाजन ।

(1) सुधार।

सोलहवीं शताब्दी के दौरान, रोमी कैथोलिक कलीसिया के अंदर कई अगुवों के हनन इतने महान थे कि कई लोगों को रोमी कैथोलिक कलीसिया के अंदर एक सुधार शुरू कर दिया । लोग जैसे लूथर (31 अक्टूबर 1517), ज्विन्गली (1522), केल्विन (1536), नॉक्स और अन्य रोमी कैथोलिक कलीसिया में अंदर से सुधार करना चाहते थे, लेकिन उस समय रोमी कैथोलिक कलीसिया के नेतृत्व नें सुधार का विरोध किया और अपनी ताकत पर बने रहे ।

---

[32] यूनानीः कैथोलिकोस

ट्रेंट की परिषद (1545–1549) ने षविधर्मियों श्के रूप में लूथर, केल्विन और दूसरों की निंदा की है और वे रोमी कैथोलिक कलीसिया से बहिष्कृत कर दिए गए थे । लेकिन रोमी कैथोलिक कलीसिया के संप्रदाय से बहिष्कार का परिणाम दुनिया भर में मसीह की देह से बहिष्कार नहीं है ! हालांकि इसने दुनिया भर में कलीसिया के भीतर 1517 में रोमी कैथोलिक कलीसिया और सुधार की कलीसिया के बीच दूसरा महान विभाजन करने के लिए नेतृत्व किया ।

(2) सुधार के द्वारा दिया जोर ।

सुधार कलीसिया पहली शताब्दी ईस्वी की नए नियम कलीसिया की ओर लौटना चाहती थी। जबकि रोमी कैथोलिक कलीसिया ने मांग की और अपनी पहचान पाई और बाहरी चीजों में शक्ति पाई, सुधार कलीसिया ने लोगों को अंदरुनी सुधार करने के लिए बुलाया । रोमी कैथोलिक कलीसिया ने कलीसिया की पदवियों (पादरी, धर्माध्यक्ष, मुख्य धर्माध्यक्ष, पोप) की शक्ति, संस्कारों और अच्छा कामों पर बल दिया। सुधार कलीसिया ने परमेश्वर के वचन पर जिस रूप में बाइबल में दर्ज है, विश्वास द्वारा औचित्य और एक परिवरतित जीवन (शुद्धीकरण) पर बल दिया ।

3. कई कलीसिया संप्रदायों में मसीही कलीसिया का चल रहा विभाजन।

(1) इंजील आंदोलन।

सोलहवीं सदी में पहले से ही, कई इंजील आंदोलन यूरोप, इंग्लैंड और अमेरिका में शुरू हो गए। पश्चिम में व्यक्तिवाद की भारी वृद्धि ने कई कलीसिया संप्रदायों की स्थापना के लिए नेतृत्व किया। क्योंकि यह कलीसिया संप्रदाय मानव संगठन हैं, वे अन्य कलीसिया संप्रदायों में फिर से विभाजित हो जाते हैं । प्रत्येक कलीसिया संप्रदाय कलीसिया नेतृत्व का अपना ही रूप विकसित किया है।

(2) कलीसिया का पापमय इतिहास।

मसीहियों को याद रखना चाहिए कि यह सब पापमय कलीसिया का इतिहास था जो मानव अगुवों द्वारा बनाया गया और इसमे बाईबल का कोई अधिकार या औचित्य बिल्कुल भी नहीं था ! मसीही जो ''उससे आगे नहीं जाते जो लिखा है'' बाइबिल में (1 कुरिन्थियों 4:6) इतिहास में सभी कलीसियाओं में नेतृत्व के इस ऐतिहासिक विकास को अस्वीकार करते हैं । परमेश्वर विभिन्न संप्रदायों में बंटवारे को शारीरिक या सांसारिक कहता है।

इस फूट का असली कारण अपरिपक्वता है (मसीही ''बच्चे'' बने रहे) (1 कुरिन्थियों 3:1–4) । समय की माँग शिष्यत्व है; मसीहियों की मदद करनी परिपक्व और कार्य पद्धति मसीही बनने के लिए (मत्ती 28:18–20) !

छ. मुख्य संप्रदाय (आधुनिक काल)।

1. धर्माध्यक्षीय कलीसियाएँ ।

धर्माध्यक्षीय कलीसियाएँ आम तौर पर मानती हैं कि केवल एक ही सच्ची कलीसिया है और वह कैथोलिक (दुनिया भर में फैली) है। स्थानीय कलीसियाओं में कोई स्वतंत्रता नहीं है। कलीसिया को दुनिया के भीतर एक दृश्य एकता बनकर रहना चाहिए। दृश्य एकीकृत कलीसिया प्राचीन रोमी साम्राज्य का एक प्रतिबिंब है।

जोर धर्माध्यक्ष के पद पर है, जो अन्य सभी कलीसियाओं को गले लगाता है।

वे मसीह को धर्माध्यक्ष परिषद के माध्यम से दुनिया भर में कलीसिया शासन रूप में मानते हैं (या रोमी कैथोलिक कलीसिया के मामले में: रोम के धर्माध्यक्ष द्वारा – पोप) और एक धर्माध्यक्ष के माध्यम से स्थानीय मण्डलियों को नियंत्रित करने वाला ।

2. सामूहिक कलीसियाएँ ।

सामूहिक कलीसियाएँ आम तौर पर मानती हैं कि हर स्थानीय कलीसिया (मण्डली) पूरी और सम्पूर्ण तरह से एक कलीसिया है और पूरी तरह से स्वतंत्र है। स्वतंत्र कलीसियाएँ (मण्डलियाँ) ज्ञान और व्यक्तिवाद के युग में स्वतंत्र लोगों का एक प्रतिबिंब है।

जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार किया है, लोगों विश्वास में आते हैं। विश्वासि खुद को एक मण्डली एकत्रित करते हैं (एक स्वतंत्र स्थानीय कलीसिया) जिसमें मसीह उपस्थित होता है (मत्ती 18:20) । वे स्वतंत्र रूप से खुद को बाईबल की कही बातों को करने के लिए आबद्ध रहते हैं। विश्वासी के पद पर जोर देने के लिए मण्डलियों को जानबूझके छोटे रखा जाता है । नई स्वतंत्र मण्डलियाँ पुरानी

स्वतंत्र मण्डलियों से अलग हो जाती हैं । कई स्वतंत्र मण्डलियाँ अक्सर मण्डलियों का एक ढीला महासंघ बना लेती हैं जिसमें प्रत्येक मण्डली पूरी तरह से स्वतंत्र रहती है ।

जोर विश्वासी के पद पर है, जो अपने ही परिचितों के दायरे के भीतर एक याजक, नबी और राजा है ।

वे मसीह को सीधे पवित्र आत्मा के माध्यम से विश्वासियों के हर स्वतंत्र मण्डली पर शासन करने वाला, बाईबल और मण्डली की सामान्य बैठक, जिसमें विश्वासि लोकतांत्रिक सिद्धांतों के अनुसार सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं । आधुनिक व्यक्तिवाद और लोकतंत्र के प्रभाव के तहत, एक स्वतंत्र मण्डली एक पूरी मण्डली के रूप में इकठ्ठा होती है चर्च समिति का चुनाव करने के लिए, जिसका कार्य उन निर्णयों को काम में लाना है जो मण्डली की सामान्य बैठक के दौरान लिए गए थे । उच्चतम आधिकारिक निकाय मण्डली की सामान्य बैठक है ।

3. धर्मसभाओं की कलीसियाएँ ।

धर्मसभाओं की कलीसियाएँ आम तौर पर मानती हैं कि हर स्थानीय मण्डली पूरी और सम्पूर्ण तरह से मसीह की एक कलीसिया है, लेकिन यह कि अन्य स्थानीय सभाओं से पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं है और एक राष्ट्र या राज्य के भीतर एक छाता संगठन के तहत आयोजित की जानी चाहिए। छाता संगठन को एक धर्मसभा कहा जाता है (जिसका अर्थ है ''एक साथ मिलकर आना'') ।

धर्मसभा प्राचीनों का इकठ्ठा होना है जो स्थानीय मण्डलियों को पूरी एक के रूप में प्रतिनिधित्व करने के लिए चुने गए हैं । धर्मसभाओं की कलीसियाएँ राष्ट्र या राज्य का एक प्रतिबिंब हैं ।

जोर प्राचीनों के पद पर है। प्राचीनों को जरुर बाईबल निर्देशों के आधार पर चुना जाना चाहिए और जरुर धर्मसभा द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व किया जाना चाहिए।

वे पवित्र आत्मा के माध्यम से स्थानीय स्तर पर राष्ट्रीय या राज्य कलीसिया पर शासन, बाइबिल और कलीसिया के नियुक्त पद जैसे कि पादरी, प्राचीन और सेवक और क्षेत्रीय धर्मसभाएँ और एक राष्ट्रीय धर्मसभा के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर के रूप में मसीह को मानते हैं।

4. प्रेज़्वीटर संबंधी कलीसियाएँ ।

प्रेज़्वीटर संबंधी कलीसियाएँ[33] मानती हैं कि हर स्थानीय कलीसिया (मण्डली) मसीह की कलीसिया (1 कुरिन्थियों 12:27) का एक पूरा और दृश्य प्रकाशन है। संगठन के संबंध में स्थानीय कलीसिया (मण्डली) पूरी तरह से स्वतंत्र है, लेकिन परामर्श और सहयोग के संबंध में अन्य स्थानीय कलीसियाओं के परस्पर आश्रित है।

जोर प्राचीनों[34] के पद पर है और प्राचीन बाईबल निर्देशों के आधार पर चुने होने चाहिए । अलग–अलग स्थानीय मण्डली निकाय या प्राचीनों[35] की परिषद द्वारा संचालित है। जोर हर विश्वासी के पद पर भी है। हर विश्वासी अपने ही परिचितों के दायरे के भीतर एक याजक, नबी और राजा है।

वे मसीह को पवित्र आत्मा (यूहन्ना 16:1–15), बाईबल (इफिसियों 6:17) और प्राचीन निकाय (1 तीमुथियुस 3:1–7,14–15) के माध्यम से कलीसिया में अकेला और सर्वोच्च अगुवा और हर स्थानीय कलीसिया (मण्डली) में शासी के रूप में मानते हैं । प्रत्येक अलग–अलग मण्डली केवल बाईबल की शिक्षा के आधार पर और सम्पूर्ण मण्डली की बैठक के दौरान अपना निकाय या प्राचीनों का परिषद चुनती है। इस प्रकार, प्राचीन निकाय और सम्पूर्ण मण्डली की सामान्य बैठक जाँच में एक दूसरे को पकड़े रहती है । सबसे उच्च अधिकार बाईबल के माध्यम से मसीह के साथ है। सब से ऊपर प्राचीन निकाय को यह देखना चाहिए कि मसीह और बाईबल की मजबूत शिक्षाऐं कलीसिया में केंद्रीय खड़े हों । केवल दूसरे स्थान पर प्राचीन निकाय मण्डली की सामान्य बैठक के लक्ष्यों (उद्देश्यों) को पूरा करता है। प्राचीन निकाय सम्पूर्ण दिल से परामर्श लेता और दुनिया भर में मसीह की एक देह के अन्य प्राचीन निकायों के साथ सहयोग भी लेता है ।

---

[33] शब्द ''प्रेस्बायटेरिअल'', नाम प्रेस्बिटेरियन कलीसिया (एक संप्रदाय) के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए, जैसे कि शब्द ''कैथोलिक'' नाम रोमी कैथोलिक कलीसिया (एक संप्रदाय) के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए।

[34] यूनानीः प्रेसबुटेरोस

[35] यूनानीः प्रेसबटेररिओं

5. स्वतंत्र कलीसियाएँ ।

स्वतंत्र कलीसियाओं का मानना है कि हर स्थानीय कलीसिया (मण्डली) जातीय, सांस्कृतिक और नेतृत्व के प्रति सम्मान के साथ अन्य कलीसियाओं से पूरी तरह से स्वतंत्र होनी चाहिए । कभी कभी वे मानते हैं कि वे एकलौते सच्चे संप्रदाय के हैं। स्वतंत्र कलीसिया एक संस्कृति के भीतर राष्ट्रवाद और स्वतंत्र समूह का एक प्रतिबिंब है। स्वतंत्र कलीसिया की अगुवाई अक्सर एक करिश्माई या सत्तावादी अगुवा करता है, जो अक्सर स्वतंत्र कलीसिया का ''संस्थापक'' या ''स्थापक'' भी हो सकता है । इस तरह के अगुवे अक्सर खुद के लिए उत्तम शीर्षक का दावा करते है, जैसेः ''नबी'', ''प्रेरित'', ''धर्माध्यक्ष'', ''याजक'' या ''पादरी'' आदि । स्वतंत्र कलीसिया में अक्सर ऐसे कपड़े पहनते हैं और मृत्यूत्तर गित होते हैं जो दूसरों से अलग होते हैं।

एक तरफ जोर समूह की भाषा और संस्कृति पर पड़ता है और दूसरी तरफ जोर करिश्माई और सत्तावादी अगुवे पर पड़ता है, जो एक ही समय में अपनी ही कलीसिया संप्रदाय में याजक, नबी, राजा, प्रेरित या धर्माध्यक्ष है ।

वे मानते हैं कि मसीह करिश्माई और सत्तावादी अगुवे के माध्यम से स्वतंत्र कलीसिया का नेतृत्व करता है। यदि उनके पास एक कलीसिया परिषद या मंडल है, तो ये आम तौर पर सत्तावादी अगुवे के निर्णय की पुष्टि करते हैं ।

ज. नया नियम शिक्षण
(प्राचीन अपनी पदवी में)।

1. प्राचीन निकाय ।

नया नियम सिखाता है कि एक स्थानीय मण्डली का नेतृत्व किसी एक व्यक्ति के द्वारा नहीं, लेकिन प्राचीन निकाय (1 तीमुथियुस 4:14) द्वारा होना चाहिए ।

• सभी प्राचीन (प्रेरितों के काम 20:17) धर्माध्यक्ष (अधिदर्शक) और पादरी (चरवाह) उनके कार्यों (प्रेरितों के काम 20:28) के अनुसार कहलाये जाते हैं !

• सभी प्राचीन (तीतुस 1:5) अपने कार्य के अनुसार धर्माध्यक्ष (अधिदर्शक) (तीतुस 1:7) कहलाये जाते हैं ।

• सभी प्राचीन (1 पतरस 5:1) पादरी (चरवाह) और धर्माध्यक्ष (अधिदर्शक) (1 पतरस 5:2) उनके कार्य के अनुसार कहलाये जाते हैं और मुख्य पादरी के तहत कार्य करते हैं, जो यीशु मसीह है।

यह स्पष्ट रूप से दिखता है कि लूका, पौलुस और पतरस ने तीन शब्द प्राचीन , अधिदर्शक (धर्माध्यक्ष) और चरवाह (पादरी) अदले–बदले से इस्तेमाल किए !कलीसिया के इतिहास में इन शब्दों का कुछ मतलब और आज विभिन्न संप्रदायों में मतलब होने के बावजूद, नया नियम प्राचीनों, अधिदर्शकों और चरवाहों के बीच कोई फर्क नहीं करता है ! पुराने नियम में या नए नियम कलीसिया में अगुवों का कोई पदानुक्रम नहीं था !

कभी भी एक मण्डली का केवल एक ही अगुवा प्रभारी नहीं हुआ है, लेकिन हमेशा हर मण्डली के लिए स्थापित अगुवों का एक समूह था (प्रेरितों के काम 14:21; तीतुस 1:5) कलीसिया में, प्राचीन निकाय कहलाया[36] (1 तीमुथियुस 4:14) प्रत्येक अलग अलग मण्डली के लिए (प्रेरितों के काम 14:23; तीतुस 1:5)। प्राचीन निकाय के सभी प्राचीनों ने अपनी अलग अलग मण्डलियों के नेतृत्व की जिम्मेवारियों को साझा किया।

बाईबल में नेतृत्व हमेशा ''साझा नेतृत्व'' और ''सेवक नेतृत्व'' है (मत्ती 20:25–28; 1 पतरस 5:2–4) !

2. इन विभिन्न शब्दों के अर्थ।

तीन शब्दः प्राचीन, चरवाहे और अधिदर्शक तीन अलग–अलग कलीसिया कार्यालयों या तीन अलग–अलग कलीसिया पदों का वर्णन नहीं है। यह कलीसिया के एक कार्यालय का उल्लेख करते हैं, नामतः, प्राचीन का । यह कलीसिया के अगुवों के एक समूह का वर्णन दो दृष्टिकोण से करते हैं (उनका पद और उनके काम/कार्य) ।

---

[36] यूनानीः प्रेसबटेररिओं

• शब्द प्राचीन[37] पद का नाम है और आध्यात्मिक परिपक्वता, अनुभव और अगुवे की आज्ञा का अधिक से अधिक सम्मान व्यक्त करता है ।

• शब्द चरवाहा[38] और अधिदर्शक[39] प्राचीन के कार्यों की प्रकृति का वर्णन है। प्राचीन लोगों का नेतृत्व चरवाहों के रूप में करते हैं और अधिदर्शक कर के रूप में वे मण्डली की गतिविधियों और संपत्ति का प्रबंधन करते हैं ।

• निम्नलिखित शब्द उनके कार्य की प्रकृति का वर्णन भी करते हैंरू अगुवा या मार्गदर्शक[40] (इब्रानियों 13:7,17,24), मुखिया के रूप में व्यक्ति (शासक, निदेशक, प्रबंधक)[41] (रोमियों 12:8; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12; 1 तीमुथियुस 5:17) और घर भण्डारी या प्रबंधक (शाब्दिकः अर्थशास्त्री)[42] (तीतुस 1:7)।

नया नियम सिखाता है कि एक स्थानीय मण्डली के सभी प्राचीन चरवाहे और उस मण्डली के अधिदर्शक हैं । एक स्थानीय मण्डली के सभी प्राचीन उस मण्डली के आधिकारिक चारागाही, शिक्षण और प्रबंधकीय कार्यों को साझा करते हैं !

3. अस्थायी नेतृत्व दल ।

जब नई मण्डलियों की स्थापना होती है, नेतृत्व में धर्म प्रचारक, कलीसिया स्थापक या अन्य मण्डली का प्राचीन और कलीसिया स्थापित करने के लिए आवश्यक कौशल के साथ मसीही लोग (पौलुस, बरनबास, मरकुस, सिलास, तिमोथी, लूका और तीतुस प्रेरितों के काम 13:1–5; प्रेरितों के काम 15:36–41; प्रेरितों के काम 16:1–3; प्रेरितों के काम 16:6–10; 2 कुरिन्थियों 8:23 में) । इस दल को कलीसिया स्थापना दल, नेतृत्व दाल या सरलता से दल कह सकते हैं । वे सेवक नहीं बुलाया जाने चाहिए, क्योंकि सेवक केवल तब ही नियुक्त किये जाने चाहिए जब वहाँ पहले से ही प्राचीन परिषद हो ।

नेतृत्व दल के कार्य हैंः मण्डली के इकठे होने पर नेतृत्व प्रदान करें, सुसमाचार प्रचार, शिष्यत्व प्रशिक्षण, पासबानी देखभाल, विश्वासियों को कौशल प्रदान करें और कुछ पुरुषों को संभावित भविष्य के अगुवे बनने के लिए विकसित करें ।

पहली प्राचीन परिषद की नियुक्ती पर नेतृत्व दल को भंग कर देना चाहिए (प्रेरितों के काम 14:21–23) ।

4. निष्कर्ष ।

मसीही कलीसिया में नेतृत्व का विकास एक लंबी और अशांत अवधि के माध्यम से होकर गया है।
इतिहास के इस सारांश का आपके विशेष चर्च (संप्रदाय) में नेतृत्व संरचना को बदलने का इरादा नहीं है !
लेकिन यह अध्ययन आपकी और आपकी मण्डली की मदद कर सकता है कि आप अपने नेतृत्व में और अधिक बाईबल आधारित बन सको और बाईबल अगुवों के बाईबल आधारित स्वभाव को बढ़ावा देने के लिए, नामतः कि ''आपके मध्य में जो कोई भी महान बनना चाहे आपका सेवक को, और जो कोई भी प्रथम होना चाहे आपका गुलाम बने'' (मत्ती 20:25–28)।

---

[36] यूनानीः प्रेसबुटेरिओन
[37] यूनानीः प्रेसबुटेरोस, हिन्दीरू याजक
[38] यूनानीः पोईमेन, लैटिन और हिन्दीरू पादरी
[39] यूनानीः एपिस्कोपोस, हिन्दीरू धर्माध्यक्ष (अथर्रू अधिदर्शक)
[40] यूनानीः हैगोमेनोस
[41] यूनानीः प्रो–इस्तामेनोस
[42] यूनानीः ओइकोनोमोज

परिशिष्ट 20

नये नियम में डीकन

इस अध्ययन में हमने लगातार ग्रीक शब्द 'डाइकोनोस'(एकवचन) और 'डाइकानोई(बहुवचन) को इस्तेमाल किया है जिससे अग्रेजी भाषा के शब्द 'डीकन' और 'डीकंस' बने हैं। डीकंस होते कौन हैं?

नये नियम में हम केवल तीन ऐसी मण्डलियों के बारे में पढ़ते हैं जिनमें डीकन पाये जाते थे और तीनों मामलों में, वे प्राचीनों से जुड़े हुए हैं। तथापि वे चुने हुए और नियुक्त थे, किसी मण्डली का संचालन करने के लिए नहीं, परन्तु उन्हें कलीसिया में कुछ विशेष काम करने के लिए चुना गया था।

1. डीकनों की सीमाएं।

(1) डीकन अपने पद के साथ अधिकारों को लेकर सीमित थे।

बाइबल की शिक्षा। नया नियम डीकनों के अधिकारों को लेकर बहुत सी बातों के बारे में बताता है। हालांकि बाइबल में लिखा गया है कि मण्डली में प्राचीनों की नियुक्ति होनी चाहिए, लेकिन यह नहीं कहा गया है कि कलीसियाओं में डीकन को नियुक्त किया जाना चाहिए।

बाइबल का इतिहास। यरूशलेम की कलीसिया को छोड़कर(प्रेरितों के काम 6:1-7), बाइबल में केवल दो और ऐसी मण्डलियां थीं जिनमें डीकन थे, खासतौर पर फिलिप्पियों की कलीसिया(फिलिप्पियों 1:1) इफिसुस की कलीसिया(1तीमुथीयुस 3:8-13)। अत: नये नियम के अनुसार हर कलीसिया में डीकन का होना जरूरी नहीं है। यरूशलेम की कलीसिया में डीकनों को किसी खास काम और एक निर्धारित समय के लिए चुना गया था। उदाहरण के लिए, फिलिप्पुस एक नियत समय के लिए डीकन था(प्रेरितों 6:5; 8:4-5)।

(2) डीकन अगुवाई को लेकर अपने अधिकारों के साथ सीमित थे।

डीकन कभी प्राचीन का स्थान नहीं ले सकते। डीकर का काम, प्राचीन के काम से फरक है। डीकन का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण मण्डली की अगुवाई करना नहीं है। डीकनों का परिषद सम्भवत: कलीसिया की अगुवाई करने के नज़रियों से प्राचीनों(प्रेस्बूटेरियन, 1तीमुथीयुस 4:14) के परिषद का स्थान नहीं ले सकता। इस लिए बेहतर तो यह होगा कि डीकनों का कोई बोर्ड या परिषद हो ही नहीं। होने दें कि डीकन प्राचीनों की अधीनता में होकर कार्य करें। डीकन का काम कलीसिया का मार्गदर्शन करना नहीं मार्गदर्शन में सुझाये गये कामों को करना है।

प्राचीन चाहे तो किसी व्यक्ति या डीकन को विशेष कार्यभार सौंप सकता है। जब कभी प्राचीन डीकनों को कोई जिम्मेदारी सौंपते हैं,तब भी प्राचीन सम्पूर्ण कलीसिया का और उसमें होने वाली सारी गतिविधियों का ज़िम्मेदार होता है।

(3) डीकन अपने कामों के दायरे में सीमित थे।

डीकनों के काम मण्डली के सदस्यों के काम से भी फरक हैं। डीकन शब्द का अर्थ सेवक है। प्रेरितों 6:1-7 के अनुसार डीकनों को मण्डली के अतिविशेष कामों के लिए चुना गया था। तथापि, 1 पतरस 4:10-11के अनुसार मण्डली के सभी सदस्यों को अपनी योग्यतओं और अपने आत्मिक वरदानों का इस्तेमाल करते हुए कलीसिया में सक्रियता के साथ काम करना चाहिए। अत: डीकन मण्डली में कार्य दूसरे सदस्यों का स्थान नहीं ले सकता था।

2. बाइबल के अनुसार डीकन की दो योग्यताएं।

प्रेरितों 6:3; 1 तीमुथीयुस 3:8-13।

खोजें व चर्चा करें । बाइबल के अनुसारे एक डीकन की क्या योग्यताएं हैं?

ध्यान दें। डीकन का चुनाव उनके पद, शक्ति, समाज में उनकी सम्पत्ति के आधार पर नहीं होता वरन उनका चुनाव उनके व्यक्तिगत व्यवहार, उनके परिवारिक जीवन और सेवकाई की योग्यता के तहत होना चाहिए।

3. डीकन के काम।

प्रेरितों 6:1-2; याकूब 1:27; 2:15-17; 1 यूहन्ना 3:16-18; 2 कुरिन्थियों अध्याय 8-9।

खोजें व चर्चा करें। डीकन के विशेष काम क्या हैं?

ध्यान दें।

(1)डीकनों के काम प्राचीनों के काम से बिल्कुल भिन्न हैं।

डीकन, प्राचीन का स्थान नहीं ले सकते। डीकनों की परिषद को प्राचीनों की परिषद में रूपान्तरित नहीं किया जा सकता। डीकन का काम सेवा करना है, कलीसिया के कामों का मार्गदर्शन करना नहीं।

(2) डीकनों का काम कलीसिया के सदस्यों के कामों स भी बिल्कुल अलग है।

डीकन कलीसिया के सदस्यों का स्थान नहीं ले सकते और न ही वे कलीसिया के सभी कामों को भी नहीं कर सकते।

(3) डीकनों का मुख्य काम परमेश्वर के वचन के प्रचार किये जाने तथा मण्डली की बढ़ौतरी होने की वजह से उत्पन्न परिस्थितियों की देखभाल करना है।

प्रेरितों 6:1-7 पढ़ें।

ध्यान दें। यरूशलेम की प्रारम्भिक मण्डली में, डीकनों को एक विशेष काम के लिए चुना गया था। जब कलीसिया में लोगों की संख्या 5000 हो गयी तो कलीसिया में भिन्न भिन्न प्रकार की समस्याएं व जरूरतें सामने आने लगीं-जैसे बहुत से लोगों को प्रतिदिन भोजन देते समय नज़रअन्दाज़ किया जाता है। प्रेरितों ने मण्डली के बीच में से सात सुनाम पुरूषों को इस विशेष सेवा करने के लिए चुना। डीकनों को इसलिए चुना गया क्योंकि प्राचीनें के पास इतना समय या ताकत नहीं थी कि वे अपना प्रार्थना का काम छोडकर इस प्रकार के कामों में लगें। अत: डीकनों को सीमित काम ही दिये जाने चाहिए, जिसके लिए विशेष कौशल या जिसे अभी तक भी कलीसिया द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं है। अत: डीकन ऐसे विशेष अगुवे हैं जो कलीसिया के प्राचीनों द्वारा नियुक्त किये गये कामों को करते हैं। डीकंस मण्डली की अधीनता में आने वाले किसी खास समूह के अगुवे या शिक्षक हो सकते हैं: जवानों के अगुवे, सुसमाचार सभाओं या कृपा योजनाओं के सह-आयोजक, आर्थिक क्षेत्रों को प्रबन्ध करने वाले हो सकते हैं। प्राचीन मण्डली में अगुवाई करने के लिए हैं परन्तु डीकन योजनाओं के अर्न्तगत कामों को करने के लिए हैं।

(4) डीकनों का पारम्परिक काम मण्डली में जरूरत मन्दों की देखभाल करना।

प्रेरितो के काम 6:1-2; 1 कुरिन्थियों 16:2-3;याकूब 1:27;2:15-17; 1 यूहन्ना 3:16-18।

ध्यान दें। कि नये नियम में डीकनों का चुनाव सिर्फ इसलिए हुआ था कि प्राचीनों के पास लोगों की व्यवहारिक जरूरतों को पूरा करने या देखभाल करने के लिए समय और ताकत नहीं थी। डीकनों के कामों में से एक प्रमुख काम भेटें इकट्ठा करना है, जिसे मसीही लोग परमेश्वर को देते हैं, और फिर ईमानदारी के साथ उस मण्डली के सदस्यों की जरूरतों को पूरा करने के लिए खर्च कर दिया जाता है। 2 कुरिन्थियों अध्याय 8और 9(8:4,20; 9:1,12,13)उन्होंने अपने वरदानों के द्वारा जरूरत पड़ने पर दूसरी कलीसियाओं की भी सहायता की ।

साराशं। यदि डीकनों का चुनाव किया गया तो उनका चुनाव मण्डलियों की अगुवाई करने के लिए नहीं किया गया था, वे कलीसिया में विशेष कामों को करने के लिए चुने गये थे। वे कलीसिया के दूसरों सदस्यों की सेवा का स्थान नहीं ले सकते,परन्तु उन क्षेत्रों में अपनी सेवा प्रदान कर सकते हैं जिसमें उनको महारथ हासिल है या जिन क्षेत्रों में मण्डली के लोग काम करना नहीं चाहते हैं। वे तब तक काम करते हैं जब तक कि काम पूरा नहीं हो जाता है।